प्रस्तुत पुस्तक में अमरीका के प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन द्वारा घोषित 'चतुर्थ-लक्ष्य-योजना का विवरण देकर पूर्ण प्रमाण और आँकड़ों के आधार पर यह प्रदर्शित किया गया है कि भारत और विश्व के कम उन्नत देश अपने यहाँ फैली गरीबी और निरक्षरता को किस प्रकार दूर कर सकते हैं।

सूची

पहला भाग

दूसरा भाग

पहला भाग

परिचय

चतुर्थ-लक्ष्य-योजना, संसार के पिछड़े हुए इलाकों की उन्नति को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेसीडेंट ट्रूमैन की इस नई निर्भीक योजना, ने व्यापारियों और राजनीतिक सिद्धान्त-शास्त्रियों को एक साथ ला मिटाया। लेकिन दोनों बेचैन हैं। सिद्धान्त-शास्त्री को डर है कि या तो व्यापारी काम ही बन्द कर देंगे या राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हित का ध्यान किये बिना ही मुनाफा कमाने की कोशिश करेंगे। और व्यापारी इसलिए बेचैन है कि जहाँ तक संभव हो वह अपनी पूँजी को राजनीति से दूर रखना चाहता है। वह पहले भी छला जा चुका है, इसलिए फूँक-फूँककर आगे बढ़ता है।

सिद्धान्त-शास्त्री को 'न्यूयार्क टाइम्स' के व्यापार-वाणिज्य के स्तम्भ तथा दूसरे साधारण स्तम्भों में लगातार गरीबी और युद्ध को दूर करने की योजनाओं की खबरें पढ़कर उलझन होती है। वह अपने-आपको व्यापारियों के बीच एक ही मेज पर बैठा पाकर परेशान होता है। उसे व्यापारियों पर उतना ही सन्देह है जितना कि व्यापारी को सरकारी योजनाओं पर।

यह सब होते हुए भी नई निर्भीक योजना की महान् सम्भावनाएं इसी बात पर निर्भर हैं कि इस शताब्दी के अगले पचास वर्षों में शान्ति और विश्व-समृद्धि के लिए संसार की एक बहुत बड़ी चालक शक्ति को अपनाया जाय और वह शक्ति है अमरीकन व्यापारी का निजी स्वार्थ। यह मार्शल

योजना नहीं है, जिसके अन्तर्गत सरकारी पैसा पहले से उद्योगों में बढ़े हुए राष्ट्रों को पूर्व स्थिति पर लाने के लिए खर्च किया जा रहा है। मार्शल-योजना का हमारा पहला वार्षिक बजट २५ अरब रुपए से ऊपर गया, जब कि चतुर्थ-लक्ष्य-योजना का हमारा पहले साल का बजट २५ करोड़ रुपए भी न होगा। बाद में तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आयात-निर्यात बैंक के कर्ज देने के अधिकार को बढ़ाना होगा, लेकिन तो भी सरकार का खास काम सिर्फ रास्ता दिखाना, काम को आगे बढ़ाना, सामान आदि जुटाना और टेकनीकल सहायता देना होगा। पिछड़े हुए इलाकों को औद्योगीकरण के रास्ते पर लाने का महान् कार्य तो इन इलाकों को स्वयं ही करना होगा, हाँ, सहारा मिलेगा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के व्यापारियों की व्यक्तिगत पूँजी का।

व्यक्तिगत पूँजी को यह महान् कार्य करने का अवसर दिया जा रहा है, जो और कोई इतनी अच्छी तरह नहीं कर सकता। लेकिन इस रास्ते में काँटे भी हैं। अगर व्यापारीगण चतुर्थ-लक्ष्य-योजना में सहयोग देने से इनकार करेंगे तो भी काम बन्द न होगा, अन्तर केवल यह हो सकता है कि व्यक्तिगत पूँजी के साथ न होने से कहीं काम उसके विरुद्ध न हो जाय।

हालाँकि व्यक्तिगत पूँजी को अन्तर्राष्ट्रीय हित के लिए काम में लाया जा सकता है, लेकिन ऐसा जबरदस्ती नहीं किया जा सकता; ऐसा करने से तो वह फिर व्यक्तिगत पूँजी ही न रहेगी। जहाँ मुनाफे की प्रथा है वहाँ व्यापारी अपनी पूँजी केवल देश-प्रेम के कारण ही किसी काम में नहीं लगाता। वह नये कल-कारखाने सिर्फ अमरीका या विश्व-प्रेम के खातिर नहीं खड़े करता। वह रुपया कमाने के लिए ही तो ऐसा करता है। आज से ज्यादा स्थायी परिस्थितियों में भी अमरीकन पूँजीपति ज्यादातर अपनी पूँजी अमरीका में ही लगाना पसन्द करता था, क्योंकि वह अपने देश के कायदे-कानून और अपने देशवासियों की मनोवृत्ति से परिचित था। जब कभी उसने हिम्मत करके विदेश में पूँजी लगाई जैसे कि १९२० के बॉण्ड इशू (Bond Issues) में, तो उसे ज्यादातर अफसोस ही उठाना पड़ा।

ऊपर रोक-टोक लगाने से कैसे रोकेंगे ? जो काम वैदेशिक पूँजी से शुरू हुए हैं उन्हीं कामों से अगर विदेशियों को निकाल दिया गया तो आप क्या कर लेंगे ? और अगर कोई देश युद्ध ही करना चाहे तो आप उसे कैसे रोक सकेंगे ?

चाहे कितने ही प्रयत्न और विस्तार से योजनाएं बनाई जायं, इस प्रकार के बहुत-से सवालों का जवाब शुरू में नहीं दिया जा सकता। गलतियाँ जरूर होंगी, पर काम के दौरान में ही ऐसी समस्याओं को हल किया जा सकेगा।

सुखी, सुन्दर और समृद्धिशाली बनाने के लिए, व्यक्तिगत पूँजी और टेकनीकल सहायता के अलावा पिछड़े हुए इलाकों को और भी बहुत-सी बातों की जरूरत होगी। चतुर्थ-लक्ष्य इसका नाम इसलिए पड़ा है कि अमरीकन वैदेशिक प्रोग्राम का यह चौथा लक्ष्य है।

प्रथम लक्ष्य है संयुक्त राष्ट्रों का सदा समर्थन। दूसरा लक्ष्य है मार्शल-योजना द्वारा आर्थिक सहयोग, आपस के व्यापारी समझौते और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-संगठन। तीसरा लक्ष्य उत्तर अटलांटिक संघ द्वारा सामूहिक सुरक्षा करना। इन तीनों लक्ष्यों से स्वतन्त्र होकर चतुर्थ-लक्ष्य सफल नहीं हो सकता, क्योंकि केवल औद्योगिक राष्ट्रों की संख्या ही तो हम नहीं बढ़ाना चाहते। हमारा उद्देश्य है संसार की अर्थ-व्यवस्था को सुधारना, जो कि पिछड़े और उन्नत इलाकों, सभी जगह एक-सी ही बिगड़ी हुई है। आज के युग में समृद्धि शांति की तरह ही अविभाज्य है।

चतुर्थ-लक्ष्य केवल एक सिद्धान्त-मात्र नहीं है; यह एक नीति और एक दृष्टिकोण है। इस रूप में यह बहुत दिनों से काम करता चला आ रहा है। उदाहरण के लिए सन् १९४९ ई० में राष्ट्रवादी चीन के लाखों किसानों की स्थिति आर्थिक-सहयोग-संघ द्वारा कम खर्च में सुधारी गई, हालाँकि राष्ट्रवादी चीन का इलाका दिन-पर-दिन कम होता जा रहा था। संयुक्त राष्ट्रों की प्रतिनिधि संस्थाएं अन्न, स्वास्थ्य और साक्षरता को बढ़ाने के लिए चतुर्थ-लक्ष्य के उद्देश्यों को लेकर बहुत पहले से काम कर रही हैं, जब कि लक्ष्य अमरीका में कानून-बद्ध भी न हुआ था। और इससे भी पहले,

ऊपर रोक-टोक लगाने से कैसे रोकेंगे? जो काम वैदेशिक पूँजी से शुरू हुए हैं उन्हीं कामों से अगर विदेशियों को निकाल दिया गया तो आप क्या कर लेंगे? और अगर कोई देश युद्ध ही करना चाहे तो आप उसे कैसे रोक सकेंगे?

चाहे कितने ही प्रयत्न और विस्तार से योजनाएं बनाई जायं, इस प्रकार के बहुत-से सवालों का जवाब शुरू में नहीं दिया जा सकता। गलतियाँ जरूर होंगी, पर काम के दौरान में ही ऐसी समस्याओं को हल किया जा सकेगा।

सुखी, सुन्दर और समृद्धिशाली बनाने के लिए, व्यक्तिगत पूँजी और टेकनीकल सहायता के अलावा पिछड़े हुए इलाकों को और भी बहुत-सी बातों की जरूरत होगी। चतुर्थ-लक्ष्य इसका नाम इसलिए पड़ा है कि अमरीकन वैदेशिक प्रोग्राम का यह चौथा लक्ष्य है।

प्रथम लक्ष्य है संयुक्त राष्ट्रों का सदा समर्थन। दूसरा लक्ष्य है मार्शल-योजना द्वारा आर्थिक सहयोग, आपस के व्यापारी समझौते और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-संगठन। तीसरा लक्ष्य उत्तर अटलांटिक संघ द्वारा सामूहिक सुरक्षा करना। इन तीनों लक्ष्यों से स्वतन्त्र होकर चतुर्थ-लक्ष्य सफल नहीं हो सकता, क्योंकि केवल औद्योगिक राष्ट्रों की संख्या ही तो हम नहीं बढ़ाना चाहते। हमारा उद्देश्य है संसार की अर्थ-व्यवस्था को सुधारना, जो कि पिछड़े और उन्नत इलाकों, सभी जगह एक-सी ही बिगड़ी हुई है। आज के युग में समृद्धि शांति की तरह ही अविभाज्य है।

चतुर्थ-लक्ष्य केवल एक सिद्धान्त-मात्र नहीं है; यह एक नीति और एक दृष्टिकोण है। इस रूप में यह बहुत दिनों से काम करता चला आ रहा है। उदाहरण के लिए सन् १९४९ ई० में राष्ट्रवादी चीन के लाखों किसानों की स्थिति आर्थिक-सहयोग-संघ द्वारा कम खर्च में सुधारी गई, हालाँकि राष्ट्रवादी चीन का इलाका दिन-पर-दिन कम होता जा रहा था। संयुक्त राष्ट्रों की प्रतिनिधि संस्थाएं अन्न, स्वास्थ्य और साक्षरता को बढ़ाने के लिए चतुर्थ-लक्ष्य के उद्देश्यों को लेकर बहुत पहले से काम कर रही हैं, जब कि चतुर्थ-लक्ष्य अमरीका में कानून-बद्ध भी न हुआ था। और इससे भी पहले,

बरसों से, व्यक्तिगत और सरकारी संस्थाएं पिछड़े हुए देशों के रहन-सहन के स्तर को उठाने के लिए काम करती चली आ रही हैं।

इस पुस्तक का ध्येय यह दिखाना है कि आज के समाज में हमें किसी-न-किसी रूप में नई निर्भीक योजना को अपनाना होगा, नहीं तो इसके एवज में हमें मिलेगा युद्ध और डिक्टेटरशिप; कि अमरीकन व्यापार का इतिहास चतुर्थ-लक्ष्य की ओर उसी प्रकार बढ़ रहा है जैसे कि छोटा कीड़ा अपने ऐतिहासिक विकास में तितली बन जाता है; कि न केवल अमरीकन जनता के साधन ही, बल्कि उनकी पृष्ठभूमि और उनका स्वभाव इस योजना को कार्यान्वित करने का नेतृत्व लेने के उपयुक्त है—साथ ही हमें उस अमूल्य सहयोग के प्रति श्रद्धा है जो कि दूसरे देशों से प्राप्त होगा; कि पिछड़े हुए इलाकों के विकास के लिए बहुत-सी व्यावहारिक योजनाएं तैयार हैं, सिर्फ काम शुरू कर देने की देर है; कि इन सब तैयारियों का फल होगा एक सुखी, शान्तिपूर्ण संसार।

यह पुस्तक, इसलिए सुख का सन्देश देने वाली है।

मैं आज अपने चारों ओर 'विनाश'-'विनाश' की आवाजें सुनाता हूँ—अखबारों और किताबों में, रेडियो और दोस्तों की पार्टियों में। वे बात-बात में हाइड्रोजन बम इधर-उधर लुढ़काते-फिरते हैं; बिना भुखमरी की बात किये खाना नहीं खाते, जहरीले कीटाणु युद्ध की चर्चा किये बिना हाथ-मुँह हीं धोते। उन्हें कहीं भी आशा नहीं दिखाई देती। वे यहाँ अमरीका में चिल्ला-चिल्लाकर पूछते हैं—क्या दिन-पर-दिन बढ़ते सरकारी अंकुशों स्वतन्त्रता न मर जायगी? क्या फिर आर्थिक संकट नहीं आ रहा? क्या युनिस्ट सब जगह नहीं हैं?

मेरे आस-पास के लोगों को इस बात की आशंका है कि जिस ताना-ाही के विरुद्ध आज हम जीवन-मरण के युद्ध में जुटे हुए हैं, इतिहास उसी नाशाही के साथ पक्षपात कर रहा है। उन्हें इस बात का डर है कि तानाशाही धीरे-धीरे सब जगह छा जायगी और हम डूबते ही जायंगे।

अगर आज विनाश की हवा बह रही है तो यह स्वतन्त्रता के विनाश

ऊपर रोक-टोक लगाने से कैसे रोकेंगे ? जो काम वैदेशिक पूँजी से शुरू हुए हैं उन्हीं कामों में अगर विदेशियों को निकाल दिया गया तो आप क्या कर लेंगे ? और अगर कोई देश युद्ध ही करना चाहे तो आप उसे कैसे रोक सकेंगे ?

चाहे कितने ही प्रयत्न और विचार से योजनाएं बनाई जायें, इस प्रकार के बहुत-से सवालों का जवाब शुरू में नहीं दिया जा सकता। गलतियाँ जरूर होंगी, पर काम के दौरान में ही ऐसी समस्याओं को हल किया जा सकेगा।

सुखी, सुन्दर और समृद्धिशाली बनाने के लिए, व्यक्तिगत पूँजी और टेकनीकल सहायता के अलावा पिछड़े हुए इलाकों को और भी बहुत-सी बातों की जरूरत होगी। चतुर्थ-लक्ष्य इसका नाम इसलिए पड़ा है कि अमरीकन वैदेशिक प्रोग्राम का यह चौथा लक्ष्य है।

प्रथम लक्ष्य है संयुक्त राष्ट्रों का सदा समर्थन। दूसरा लक्ष्य है मार्शल-योजना द्वारा आर्थिक सहयोग, आपस के व्यापारी समझौते और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार-संगठन। तीसरा लक्ष्य उत्तर अटलांटिक संघ द्वारा सामूहिक सुरक्षा करना। इन तीनों लक्ष्यों से स्वतन्त्र होकर चतुर्थ-लक्ष्य सफल नहीं हो सकता, क्योंकि केवल औद्योगिक राष्ट्रों की संख्या ही तो हम नहीं बढ़ाना चाहते। हमारा उद्देश्य है संसार की अर्थ-व्यवस्था को सुधारना, जो कि पिछड़े और उन्नत इलाकों, सभी जगह एक-सी ही बिगड़ी हुई है। आज के युग में समृद्धि शान्ति की तरह ही अविभाज्य है।

चतुर्थ-लक्ष्य केवल एक सिद्धान्त-मात्र नहीं है; यह एक नीति और एक दृष्टिकोण है। इस रूप में यह बहुत दिनों से काम करता चला आ रहा है। उदाहरण के लिए सन् १९४९ ई० में राष्ट्रवादी चीन के लाखों किसानों की स्थिति आर्थिक-सहयोग-संघ द्वारा कम खर्च में सुधारी गई, हालाँकि राष्ट्रवादी चीन का इलाका दिन-पर-दिन कम होता जा रहा था। संयुक्त राष्ट्रों की प्रतिनिधि संस्थाएं अन्न, स्वास्थ्य और साक्षरता को बढ़ाने के लिए चतुर्थ-लक्ष्य के उद्देश्यों को लेकर बहुत पहले से काम कर रही हैं, जब कि चतुर्थ-लक्ष्य अमरीका में कानून-बद्ध भी न हुआ था। और इससे भी पहले,

को अंकुरित करके आशा और विश्वास की नई बहार ला सकता है। चतुर्थ-लक्ष्य संसार को जैसा हम चाहते हैं ठीक वैसा ही नहीं बना सकता, क्योंकि स्वतन्त्र व्यक्तियों के नाते हमें अपनी त्रुटियों का आभास है। केवल पूँजी और कौशल का निर्यात ही पिछड़े देशों की रुके हुए जल के मानिन्द अर्थ-व्यवस्था में प्रवाह न ला सकेगा। हम केवल पिछड़े देशों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित-भर कर सकते हैं और वह भी हमेशा अपनी पसन्द के मुताबिक नहीं—इसके लिए भी हमें स्वयं अपने-आपको धन्यवाद देना चाहिए, क्योंकि हम डिक्टेटर नहीं केवल साहसी व्यापारी हैं।

और न हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि चतुर्थ-लक्ष्य सोवियत पद्धति का अन्त निकट ला देगा। रूसियों के काम करने के अपने अलग तरीके हैं जैसे कि चीनियों के और अमरीकनों के।

लेकिन चतुर्थ-लक्ष्य हमेशा के लिए एक बात प्रमाणित करता है और वह है कि संसार का भविष्य रूस पर नहीं हम पर निर्भर करता है।

: १ :

नई निर्भीक योजना की पृष्ठभूमि

चतुर्थ-लक्ष्य से सम्बन्धित १६४६ ई० के भाषण में प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन ने राष्ट्रीय नीति बताते हुए कहा था, "हमें एक नई निर्भीक योजना आरम्भ करनी होगी ताकि हम अपनी वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति से पिछड़े हुए इलाकों की उन्नति कर सकें।" उन्होंने अमरीकन व्यापार, कृषि और श्रम से सहयोग की माँग की। उन्होंने दूसरे देशों को भी इन इलाकों में 'मुख्य विकास को बढ़ावा' देने के लिए आमंत्रित किया ताकि 'सारे संसार के प्रयत्न से शांति, समृद्धि और स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सके।'

प्रेसीडेण्ट ने अपने इस महान् प्रस्ताव का साधारण शब्दों में उल्लेख किया। उनके विचार में न किन्हीं खास इलाकों की सूची थी, न खर्चे के ब्योरे की और न कोई तैयार योजना ही उनके पास थी। कुछ आलोचकों

की नहीं है। कम्युनिज्म, जो मेरे साथियों को भयभीत किये हुए है, निश्चय ही भविष्य का अग्रदूत नहीं है। मानव की युगों से चली आई सर्वशक्तिमान राष्ट्र की दासता की आखिरी माँग कम्युनिज्म है। आज की हवा में क्रान्ति ज़रूर है, लेकिन यह ऐसी भी क्रान्ति हो सकती है, जिसने कि सन् १७७६ ई० के युद्ध को प्रेरित किया और जिसने दूसरे महायुद्ध में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उत्पादन को रातों-रात दुगना कर दिया।

कम्युनिज्म के बढ़ने का परिणाम होगा स्वतन्त्र मानव की सुप्त शक्तियों का जाग पड़ना। हम अपनी कमजोरियों को पहचान रहे हैं, हमें इन्हें दूर करना होगा और अपनी शक्तियों को बढ़ाना होगा। कम्युनिज्म लोकतन्त्र को नष्ट नहीं कर रहा, वह लोकतन्त्र को पूर्ण बनने के लिए बाध्य कर रहा है।

अगर हम चतुर्थ-लक्ष्य को केवल कम्युनिज्म को रोकने का साधन समझें तो यह हमारी बहुत बड़ी भूल होगी। सच तो यह है कि अगर आज रूस और अमरीका में घनिष्टता भी होती तो भी चतुर्थ-लक्ष्य की आवश्यकता कम न होती, जो कि अमरीकन बुद्धि की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

फौजी तैयारियों के बदले नई निर्भीक योजना पेश नहीं की जा रही है। हमें आशा है कि जंगी सामान, जो हम बना रहे हैं, काम में लाने की ज़रूरत न पड़ेगी, क्योंकि चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा हम एक नई शांति-मदिरा तैयार कर रहे हैं।

लेकिन यह मदिरा एक दिन में ही असर न दिखायगी। निरक्षरता जादू के डंडे से या रुपये के नोट हिलाने से नहीं भाग जायगी, ऊसर जमीन सिर्फ खाद लगाने से ही नहीं हरी हो जायगी। अन्तर्राष्ट्रीय वैमनस्य राष्ट्रों का आर्थिक स्तर ऊँचा हो जाने पर भी बना रहता है। अमरीकन पूँजी दुनिया को बचा नहीं सकती, वह सिर्फ स्थानीय पूँजी को काम में लगवा सकती है।

लेकिन सब-कुछ कहने-सुनने के बाद यह तो मानना ही होगा कि अमरीकन राष्ट्र ने अपनी भौतिक शक्ति के मुकाबले में एक बौद्धिक विचार-धारा का भी विकास किया है। चतुर्थ-लक्ष्य विभिन्न देशों के आपसी विरोध को दूर करने में सफल हो सकता है। चतुर्थ-लक्ष्य संसार की व्यापारिक तंत्रियां

शिक्षा और स्वास्थ्य की उन्नति को प्रोत्साहित किया है।

इन्टरनेशनल जनरल इलेक्ट्रिक कम्पनी बहुत-से देशों में स्थानीय पूँजी के साथ साझेदारी में काम कर रही है। यह विदेशों में टेकनिकल पुस्तिकाएं बांटती है और उसके एवज़ में दूसरे देशों के कला-कौशल से लाभ उठाती है जो कि अमरीका में प्राप्य नहीं है।

भारत में विलियम डी० पॉले ने ट्रावनकोर में ४ करोड़ रुपए के खर्च पर एमोनियम सलफेट का कारखाना खोला है। खाद के रूप में इसके प्रयोग से चावल की उपज दुगनी हो जायगी। निकट भविष्य में ट्रावनकोर निवासियों को अकाल का भय न होगा—इसका श्रेय अमरीका की साहसिक कर्तव्य-निष्ठा को है।

बंगलौर में श्री पॉले ने एक हवाई जहाज़ का कारखाना खोला है जिसमें कि मजदूरी और दूसरी सुविधाएं वैसी ही हैं जैसी कि अमरीका के अच्छे-से-अच्छे कारखानों में। तीन साल के बाद अब यह कारखाना अपने जैसे दूसरे अमरीका के कारखानों के मुकाबले में २३ प्रतिशत तेज़ी से हवाई जहाज बना रहा है।

भारत में फायरस्टोन कम्पनी अपने मजदूरों को उतना ही वेतन देती है जितना कि दूसरी रबर-फैक्टरियाँ अमरीका में देती हैं। और देखा गया है कि काम अमरीकनों से ज्यादा निपुणता से होता है।

कैरिनियन इलाके में यूनाइटेड फ्रूट कम्पनी न केवल स्थानीय मजदूरी से ज्यादा मजदूरी देती है बल्कि फलों के बागों में काम करने वालों को कम कीमतों पर अनाज भी देती है और उनके लिए स्कूल, मकान और डाक्टरी इलाज का भी प्रबन्ध करती है। इसके अलावा वहाँ के लोगों को कृषि-विज्ञान की शिक्षा भी दी जाती है जिससे कि यह इलाका पश्चिमी गोलार्ध के लिए भरपूर अण्डाकार बन सकता है।

यह जरूरी नहीं कि विदेश में अमरीकन कम्पनियाँ बहुत बड़ी हों या आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हों तभी लाभदायक सिद्ध हो सकती हैं। उनका अपना उदाहरण ही बहुत बड़ा सहयोग सिद्ध हुआ है। उन्होंने यह दिखा

ने इस भाषण को केवल निर्जीव वाक्-प्रवाह बताते हुए कहा, "आखिर कुछ-न-कुछ तो प्रेसीडेंट को कहना ही था।"

शीघ्र ही यह विदित हो गया कि वे आलोचक वही भूल कर रहे थे जो कि उनके साथियों ने जनरल मार्शल के सन् १९४७ ई० के भाषण को सुनकर की थी, जिसमें कि यूरोपीय देशों को पूर्व स्थिति पर लाने की योजना का श्रीगणेश था। संयुक्त राष्ट्र अमरीका का बेड़ा एक बार फिर अनजान समुद्र पर चल पड़ा जहाँ से लौटना आसान न था। कुछ अमेरिकन इसकी अहमियत समझ गए। उनकी प्रतिक्रिया वैसी ही हुई जैसी कि हिरोशिमा पर एटम पड़ने की खबर सुनकर हुई थी। वे जानना चाहते थे कि सरकारी नीति में इतना बड़ा परिवर्तन एक साथ बिना पूर्व चेतावनी दिये कैसे हो गया।

उत्तर था कि नई निर्भीक योजना चाहे कितनी भी निर्भीक क्यों न हो—, नई नहीं है। पिछड़े इलाकों की दरिद्रता पश्चिमी कार्य-कौशल द्वारा दूर करने का विचार वुडरो विल्सन के जमाने से चला आ रहा है जब कि वाल्टर हाइन्स पेज ने सुझाव पेश किया था कि यूरोप की फौजें गरम देशों की बीमारियों से लड़ने के काम में लगाई जायं। हरबर्ट हूवर और उनके बाद फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट और बाद में पिछले महायुद्ध से पहले तक इस भविष्य के स्वप्न पर विचार-विनिमय होता रहा।

इस काम की नींव अमरीकन व्यापारियों, मिशनरियों, गैर-मुनाफे वाली संस्थाओं, टेकनिकल विशेषज्ञों और सरकारी संस्थाओं ने डाली है।

यद्यपि हाल में थोड़ी-सी कम्पनियों ने ही विदेश में पूँजी लगाई है, फिर भी आज करीब दो-तीन हजार अमरीकन कम्पनियाँ और उनकी वैदेशिक शाखाएं काम कर रही हैं।

अरब की तेल-कम्पनियों ने अपने कर्मचारियों के आर्थिक स्तर को बहुत ऊँचा उठा दिया है। वेनजुला की तेल-कम्पनियाँ उस देश की आय का सबसे बड़ा साधन बनी हुई हैं। उन्होंने अपनी मिसाल से दूसरे उद्योग-धन्धों में काम करने वालों की भी मजदूरी बढ़वा दी है। इस प्रकार उन्होंने

अमरीकन माल के लिए योरोप में बाज़ार नहीं रहेगा। वैमनस्य-भरी आपसी प्रतियोगिता का नतीजा होगा व्यापारिक युद्ध; जिसके कारण कभी भी शांति और समृद्धि की नींव संसार में न डाली जा सकेगी। इसके बदले एशिया, अफ्रीका, दक्षिणी अमरीका और मध्य पूर्व में नए बाज़ार बनाने की योजना अर्थशास्त्रियों, व्यापारियों और समाज-शास्त्रियों के अनुसार कम-से-कम योरोप के बाजार निकल जाने की कमी पूरी कर देगी और ज्यादा-से-ज्यादा एक सुखी, शान्तिपूर्ण संसार का द्वार खोल सकेगी।

आज आधी से ज्यादा मानवता भूखी और दरिद्र है। उनकी शक्तियाँ जिन्दा बने रहने में ही खत्म हो जाती हैं। वे गन्दगी, गरीबी और अज्ञानता में अपने दिन काट रहे हैं। वे उस उम्र में मरने के लिए तैयार हैं जब कि औसत अमरीकन उस उम्र में शायद विवाह करने के लिए भी तैयार न हो।

लेकिन हमें क्या लेना-देना? हाँ, मानव-सहानुभूति तो है ही, लेकिन केवल सहानुभूति के बल पर सरकारी नीतियाँ नहीं बनाई जातीं। हमारा पिछड़े हुए देशों की मदद करना इसलिए जरूरी है कि वे दूसरे देशों की प्रगति में बाधक हैं। अगर ये पिछड़े देश अपनी वर्तमान दशा में ही रहें तो युद्ध और क्रान्ति को बुलावा देना होगा। अगर इन्हें प्रजातन्त्रीय प्रगति नहीं प्राप्त हुई तो वे अन्त में अपनी सामाजिक अव्यवस्था के कारण कम्यु-निज़्म या और किसी प्रतिक्रिया के शिकार होंगे और हम प्रतिक्रिया के उमड़ते समुद्र में स्वतन्त्रता के डूबते द्वीप के समान होंगे।

यदि इसके विपरीत अकाल की जगह अन्न की बहुतायत हो जाय, लकड़ी के हल की बजाय लोहे के हल चल जायं, बैलों की जगह ट्रैक्टर लें तो मानवता की बेहतरी के लिए सोई हुई शक्तियाँ जाग उठेंगी।

आर्थिक दृष्टि से असीम सम्भावनाएं मौजूद हैं। अगर आज अमरीकनों- । साबुन सारी दुनिया के लोग खर्च करने लगें तो साबुन की माँग से चौगुनी हो जायगी। अगर हमारे-जितना कपड़ा वे खर्च करने लगें गुना कपड़ा चाहिए। अगर दो करोड़ मील नई सड़कें दुनिया में और तो भी अमरीकन सड़कें अधिक ही रहेंगी। अगर दूसरे देश

दिया है कि अपने कर्मचारियों और वहाँ के लोगों के हित का ध्यान रखना ही बहुत बड़ी बात है।

उदाहरण के लिए इक्वेडोर की 'एम्बोटेलागरी नेशनल' नाम की छोटी कम्पनी को ही लीजिए। सन् १९४६ ई० में इस कम्पनी ने बोतलों से पेप्सी कोला नामक पेय भरने के लिए करीब १०० इक्वेडोर निवासियों को लगाया। न केवल मजदूर ही बल्कि इञ्जीनियर, मिस्त्री और जनरल मैनेजर भी इक्वेडोर के ही थे।

पेप्सी कोला सिर्फ एक मीठा शर्बत है, इसके बिना भी इक्वेडोरवासी रह सकते थे। वह खाने की जरूरी चीज नहीं। फिर भी इस कम्पनी ने इस देश के मजदूरों की कम सेवा नहीं की। मालिक और मजदूर का एक नया, सुखप्रद सम्बन्ध कायम किया गया है।

कम्पनी शुरू होने के बाद ही देखा गया कि सिर्फ ४० प्रतिशत मजदूर काम करने आ रहे हैं। उनको बुरा-भला कहने के बजाय कम्पनी ने मजदूरों को देखने के लिए एक डॉक्टर नियुक्त किया। थोड़े ही दिन में चार मरीज आतशक के, दो सुज़ाक के और छः तपेदिक के पाये गए।

बीमार मजदूरों को नौकरी से हटाने के बजाय उनका आधुनिक ढंग से इलाज किया गया—उन्हें विश्रामालयों में भेज दिया गया। इस अवधि के लिए उन्हें वेतन भी दिया गया। वे शीघ्र ही स्वस्थ होकर काम पर वापस आ गए।

ये मजदूर फिर भी खुराक की कमी के कारण पूरा काम नहीं कर पाते थे। एक डॉक्टर की देख-रेख में उनको मुफ्त खाना दिया गया। नतीजा क्या हुआ—९५ प्रतिशत मजदूर काम पर आने लगे और उत्पादन दुगना हो गया। पहले चोरियाँ होती थीं, वेतन बढ़ा देने के बाद से चोरियाँ भी बन्द हो गईं।

चूँकि मजदूरों को अपने वेतन के अलावा मुनाफे का ७ प्रतिशत भाग भी मिलता है अतः वे मालिकों-जैसी ही मेहनत करते हैं। सन् १९४७ के अन्त में उन्हें बताया गया कि लापरवाही से बोतलें भरने से कम्पनी को ७५

मजदूरों को बेहतर तरीकों से अपना काम करने की शिक्षा देना ही ठीक होगा।

संयुक्त राष्ट्रीय खाद्य और कृषि-संगठन के प्रमुख नॉरिस ई० डाड ने एक बार तीन आदमियों को एक नहर से पानी निकालते हुए देखा। वे धीरे-धीरे एक चमड़े की बाल्टी से पानी निकालकर अपने खेत में डाल रहे थे। सारे दिन में जितना पानी उन तीन किसानों ने निकाला उससे कहीं ज्यादा एक मामूली पम्प एक घंटे में निकाल सकता था। इसलिए मिस्टर डाड का कहना कि लोग बड़े बाँधों की प्रतीक्षा करते हुए भी कुएं बना सकते हैं, बड़े कारखानों के खुलने से पहले छोटे कारखानों में खेती के औजार बनाए जा सकते हैं; नए अस्पतालों के न होने पर भी लोग यह तो सीख सकते हैं कि किस प्रकार सफाई-सुथराई और थोड़ी दवा-दारू से मलेरिया को रोका जा सकता है। जिसने कि सिर्फ भारत में पिछले साल १० करोड़ आदमियों को बेकार किया। सन् १९५० के अमरीका की आर्थिक बराबरी करने से पहले पिछड़े हुए देशों को हमारे सन् १८०० के टेकनिकल स्तर के बराबर पहुँचने की कोशिश करनी चाहिए।

जब पिछड़े हुए इलाकों की उत्पादन गति उनके अपने साधनों द्वारा बढ़ जायगी तब ही उन्हें बड़ी योजनाओं की आवश्यकता हो सकती है जो कि सरकारी सहायता के बिना नहीं चल सकतीं।

इन्हें शुरू में चतुर्थ-लक्ष्य से प्रेरणा मिल सकती है, पूँजी नहीं। आयात-निर्यात या विश्व-बैंक से पूँजी भी मिल सकती है लेकिन बैंक तब ही पूँजी देते हैं जब कि उनकी पूँजी डूबने का खतरा न हो।

ऐसे देश, जिनका औद्योगीकरण अधूरा है, आज अमरीकन इंजीनियरों की सहायता से बड़ी योजनाएं कागज पर बना रहे हैं लेकिन पूँजी और मशीनरी के बिना ये योजनाएं चालू नहीं हो सकतीं। सन् १९४६ ई० में हर्बर्ट हूवर ने बताया कि ईराक में जहाँ ईसा से पूर्व ३ करोड़ आदमी रहते थे अगर सिंचाई का ठीक इन्तजाम किया जाय तो फिर उस सरसब्ज इलाके में करोड़ों आदमियों को बसाया जा सकता है। वाल्टर लाउडमिल्क की

२५ करोड़ नए टेलीफोन, ४५ करोड़ मोटर कार और ६० करोड़ रेडियो और भी बना लें तो भी प्रत्येक अमरीकन के पास दूसरे देशवासियों से ज्यादा टेलीफोन, ज्यादा मोटरकार और ज्यादा रेडियो होंगे। और अगर पिछड़े हुए देशों के लोग पहले से अच्छी स्थिति में रहेंगे तो हम भी पहले से अच्छे रह सकेंगे।

3913

नई निर्भीक योजना की घोषणा होने पर इस बात से तो सब अमरीकन सहमत थे कि उनकी कार्य-प्रवीणता और व्यक्तिगत पूँजी व्यापारिक आधार पर संसार की उन्नति के काम में लाई जा सकती है।

लेकिन फिर भी बहुत-सी मुश्किलें दूर करनी थीं। व्यापारियों को डर था कि कहीं चतुर्थ-लक्ष्य यों ही रुपया खर्च करने की सरकारी योजना तो नहीं है। उदारवादियों को डर था कि कहीं यह आर्थिक और राजनीतिक साम्राज्यवाद का नया तरीका तो नहीं है।

इसलिए चतुर्थ-लक्ष्य के निर्माताओं ने बहुत सँभलकर कदम बढ़ाया। सरकार से पुराने अनुभवों के आधार पर सहायता माँगी गई। व्यापारियों की पूँजी की सुरक्षा की भी गारण्टी दी गई।

प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन के भाषण और अमरीकन सहायता की आशा से प्रोत्साहित होकर संयुक्त राष्ट्रीय मंडल ने टेकनिकल सहायता की अपनी अलग योजना बनाई जो कि सर्वसम्मति से सन् १९४९ में स्वीकृत हुई। संयुक्त राष्ट्रीय योजना और चतुर्थ-लक्ष्य अलग होते हुए भी दोनों एक ही बृहत् योजना के अंग हैं और संयुक्त राष्ट्रीय योजना भी अमरीकन पूँजी और कौशल का सहारा पायगी।

संसार की उन्नति के लिए पहले कदम में, जहाँ तक चतुर्थ लक्ष्य का सम्बन्ध है हम ज्यादा बड़ी और खर्चीली योजनाएँ चालू नहीं कर सकते। औद्योगीकरण से पहले बहुत-से सुधारों की आवश्यकता होती है जिन्हें हम थोड़े खर्च से और कभी-कभी बिना खर्च के भी कर सकते हैं। बाद में चाहे कितनी ही बड़ी योजनाओं की आवश्यकता हो, शुरू में तो किसान और

न काम सीखे हुए इतने आदमी ही हैं। पर थोड़ी पूँजी और सीमित साधन नई अर्थ-व्यवस्था में जान फूँक सकते हैं।

अगर नई निर्भीक योजना के अन्तर्गत आवश्यकता और व्यावहारिकता की कसौटी पर काम चुने जायं, और वे काम व्यापारियों के निरीक्षण में ऐसे देशों में शुरू किये जायं जहाँ कि राजनीति में स्थिरता हो जो कम खर्च पर ज्यादा काम किया जा सकता है और पूँजी भी सुरक्षित वापस लौट सकती है।

सरकारी सहायता, पड़ोसी देशों के मैत्री और स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और यातायात के साधनों का थोड़ी मात्रा में भी होना, व्यक्तिगत पूँजी के लिए महत्वपूर्ण कार्य करने का रास्ता बना सकता है।

अब पूँजीपतियों को नई नाजुक परिस्थितियों में काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए जहाँ शोषण और स्वार्थ-सिद्धि कठिन ही नहीं वरन् असम्भव होगी; यहाँ तक कि उन कामों पर स्थानीय कब्जा न हो पाने की संभावना है। संयुक्त राष्ट्रों ने इस बात पर जोर दिया है कि यह सहायता "दूसरे देशों की आर्थिक और राजनीतिक अन्दरूनी मामलों में दखल देने का कारण न बन जाय।" जहाँ तक सम्भव हो स्थानीय पूँजी को लगाया जाय और स्थानीय कला-कौशल का विकास करके उसका उपयोग किया जाय।

सहायता प्राप्त करने वाले देशों को भी यह जानना होगा कि बड़े तरीके से काम करना ही हमेशा सबसे अच्छा तरीका नहीं होता। अपनी पूँजी से ही सुदृढ़ औद्योगीकरण किया जा सकता है, इमारत नीचे से ही बनाई जाती है।

इन देशों को वैदेशिक पूँजी के लिए रास्ता सुगम बनाना होगा और उसके लिए पहले से ही आपस में समझौता हो जाना जरूरी है। जिन देशों को आर्थिक सहायता की विशेष आवश्यकता है उन्हें अपनी अर्थ-व्यवस्था के मूल सुधार में काफी समय लगाना होगा।

हम अपने अगले परिच्छेदों में यह पता लगाने का प्रयत्न करेंगे कि मूल सुधार के लिए इतना महान् प्रयत्न करना लाभदायक भी है या आगे

आईन धारी योजना सारे निकट पूर्व की सूरत बदल सकती है। भारत ने एक नई योजना बनाई है जिसके अनुसार ४० करोड़ भारतवासियों की आर्थिक दशा पन्द्रह वर्षों में आज से दुगुनी अच्छी हो जायगी। ●

दक्षिण अमरीका के दिन-पर-दिन बदलते देशों में तो बड़े-बड़े काम शुरू भी किये जा चुके हैं। और दूसरे इलाके अपनी उन्नति के लिए सामान और पूँजी के इन्तजार में तैयार बैठे हैं। उदाहरण के लिए इनमें सबसे बड़ी योजना यांगट्सी बाँध या उवेंगी के जल-प्रवाहों से बिजली पैदा करना अभी तो केवल स्वप्न ही है; लेकिन भविष्य में ये योजनाएं कार्यान्वित अवश्य होंगी।

इन योजनाओं को चालू करने से पहले पूँजी इकट्ठी करने के साधन चाहिएं, उन इलाकों में शांति चाहिए और यह भी देखना जरूरी है कि हरेक नया काम किसी सही मौजूदा जरूरत को पूरा करने के लिए ही है। संसार की पूँजी और टैकनिकल साधन सीमित हैं। जरूरी-से-जरूरी योजनाओं में भी यह देखना होगा कि पहले कौन-सा काम शुरू किया जाय। विकास हो जाने के बाद भी उसका सही असर भारत-जैसे पिछड़े देशों में कम-से-कम आधी पीढ़ी बाद और इथोपिया और चीन में एक पीढ़ी बाद मालूम होगा।

अपने सीमित साधनों को दाँव पर लगा देने का हम पर जोर डाला जा सकता है। उदाहरण के लिए तुर्क अपने कारबुक में लोहे के कारखाने और खानों के बीच रेल की दोहरी लाइन की जरूरत महसूस कर सकते हैं। वे यह भी चाहेंगे कि हम उसके लिए पूँजी खर्च करें जब कि दर-असल चाहिए यह कि मौजूदा लाइन का इस्तेमाल सही तरीकों से किया जाय। लाखों खर्च करके एक नई लाइन बनाने के बजाय थोड़े खर्च पर अगर तुर्की रेलवे के अधिकारियों को काम सिखा दिया जाय तो ज्यादा फायदा हो सकता है।

अगर संसार के सारे प्राप्त साधन जुटा भी दिए जायं तो भी संसार की दरिद्रता को दूर करने के लिए वे पर्याप्त न होंगे। न इतना पैसा है और

है ? क्या यह सत्य नहीं कि रूसी रीछ का डर दूर होते ही हम एक राहत की साँस लेकर अपने घर में न घुस जायंगे, जहाँ हम पड़े-पड़े अभी तक मोटे होते रहे हैं ?

चर्चिल का यह कहना निःसन्देह सच है कि "कम्युनिज़्म के दबाव से स्वतन्त्र राष्ट्र आपस में ऐसे मिल गए हैं जैसे कि न पहले थे और न कभी हो सकते हैं, लेकिन इसका कारण केवल बाहरी दबाव ही है।" दूसरे के डर से हुआ आपसी मेल अक्सर डर दूर होते ही टूट जाता है जब तक कि मेल के दौरान में स्थायी काम न किये जायं।

आज नहीं, १९२० में फ्रेंकलिन लेन ने कहा था कि "जब तक व्यक्ति ही नहीं, विभिन्न राज्य भी व्यापारियों की तरह माल बनाने और बेचने का काम न करेंगे तब तक व्यापारिक वैमनस्य से उत्पन्न हुए झगड़ों के दूर होने की सम्भावना नहीं है।"

कोई भी शक्तिशाली केन्द्रित सरकार अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए अपने प्रत्येक साधन की सहायता लिये बिना नहीं रह सकती। चाहे डाकुओं से अपने नागरिकों की रक्षा करनी हो या जगह-जगह चुंगी की चौकियाँ बनानी हों या अपनी मुद्रा का मूल्य घटाना-बढ़ाना हो। ऐसी ही सब सेवाओं से सरकारें पनपती हैं और शक्तिशाली बनती हैं।

स्थानीय तत्कालीन हितों और विश्व के अन्तिम हितों के पारस्परिक संघर्ष को सुलझाना भी आसान नहीं है। उदाहरण के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने धीरे-धीरे अपनी गलतियों से सबक सीखकर आज एक प्रभावशाली और दूरदर्शी वैदेशिक नीति का विकास किया है। लेकिन फिर भी हर साल कृषि-सम्बन्धी कीमतों की सहायतार्थ सरकार को लगभग पचास अरब रुपए खर्च करने पड़ते हैं, जिसका मतलब है—बाहर से आये हुए माल पर बिना किफायत की रोक-टोक और अपने बचे हुए माल को सस्ते दामों में बाहर भेजने की प्रवृत्ति; जो कि मक्खन, ऊन, चीनी, गेहूँ, रुई आदि चीज़ों के लिए लागू होती है। सस्ते दामों पर बाहर माल भेजना अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री को बढ़ाना नहीं है, बल्कि जैसा कि जान डेवनपोर्ट ने 'फ़ार्च्यून'

जाकर इस महान् प्रयत्न का परिणाम और भी ज्यादा लोगों को भूखा मारना होगा। पिछली शताब्दी के ब्रिटिश अनुभवों का हम अध्ययन करेंगे ताकि यह जान सकें कि विदेशों में पूँजी लगाना कब लाभदायक और कब हानिकारक होता है।

हम अपनी ऐतिहासिक प्रगति को भी देखेंगे कि हम गतिहीनता से साम्राज्यवाद, साम्राज्यवाद से डालर-कूटनीति, डालर-कूटनीति से पड़ोसियों के प्रति भलाई की नीति और पड़ोसियों के प्रति भलाई की नीति से नई निर्भीक योजना तक किस प्रकार पहुँचे हैं।

सबसे पहले हमको अपने-आपसे यह पूछना चाहिए कि क्या यदि हम चाहें तो अपने आगे बढ़े हुए कदम पीछे लौटा सकते हैं, कि क्या जो काम हमने शुरू किये हैं उनको अधूरा छोड़कर संसार के रंगमंच से हम पीछे हट सकते हैं?

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि इन झंझटों से दूर रहने का प्रलोभन बहुत बड़ा है। लेकिन अगर हम इस प्रलोभन में फँस गए तो क्या होगा?

: २ :

झंझटों से दूर रहने का प्रलोभन

अच्छे पड़ोसी की नीति (गुड नेबर पॉलिसी) के परिणाम-स्वरूप अमरीका ने पिछले महायुद्ध के समय करोड़ों रुपए हर महीने दक्षिणी अमरीका के देशों को दिये। जापान की हार के छः महीने बाद ही यह सहायता बन्द कर दी गई। १९४९ के अन्त तक उन सरकारों का अस्तित्व मिट गया जो केवल आर्थिक सुधार की आशा पर निर्भर थीं।

ऐसे उदाहरणों के होते हुए नई निर्भीक योजना पर अपना भविष्य आधारित करने वाले देशों का विशेष आश्वासन माँगना स्वाभाविक है। क्या पड़ोसी के साथ भलाई बरतने की नीति रूजो रीज़ के डर से तो नहीं

हमेशा के लिए यह प्रमाणित करने को बाध्य करे कि हम भी संसार के देशों के परिवार के एक विश्वसनीय सदस्य हैं। यह निर्णय, जो बाद में प्रकट होगा, आज १५ करोड़ अमरीकनों के दैनिक विचारों में मौजूद है। लेकिन हम स्वार्थी हैं क्योंकि हम मनुष्य हैं। यदि हमें सचमुच इस बात का विश्वास है कि हम दुनिया के दुःख-दर्द में बिना भाग लिये सुख-चैन से अपने देश में अलग रह सकते हैं तो हम भी अपना लौह-आवरण बना लेंगे, चाहे फिर दुनिया पर इसका कैसा ही असर क्यों न हो। आइए ज़रा देखें कि स्वयं परिपूर्ण अमरीका की क्या सम्भावनाएं हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका कृषि और खनिज पदार्थों की उपज और खपत में संसार के सब देशों में बढ़ा-चढ़ा है। हमारी सीमाओं के अन्दर ही या पास ही वे सब धातुएं और पेड़-पौधे मिलते हैं जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं और जिनके हम आदी हैं।

कई क्षेत्रों में तो हमने अपने घरेलू साधनों को काम में लाना हाल में ही शुरू किया है। कृषि-विभाग ने १९३८ में बताया कि आधुनिक तरीकों से बिना नुकसान पहुँचाये पहले से दुगुनी जमीन काश्त में ला सकते हैं। पिछली लड़ाई के दौरान में हमने ३० करोड़ एकड़ नई जमीन ली और इस प्रकार पैदावार एक-तिहाई बढ़ा ली। यह हिसाब लगाया गया है कि नए तरीकों से १९५४ तक हमारी अनाज की उपज २० प्रतिशत बढ़ जायगी। इन बातों से तो यह नहीं मालूम होता कि हमें पूर्वी गोलार्ध की विशेष आवश्यकता है।

सन् १८६१ और १९४१ के बीच के अस्सी वर्षों में अमरीका ने ऐसे बड़े मिल-कारखाने खड़े किए हैं जैसे कि संसार ने पहले कभी न देखे थे। पिछले चार सालों में ही इन कारखानों की उत्पादन-शक्ति दुगुनी हो गई। इससे तो नहीं मालूम होता कि हमें पूर्वी गोलार्ध की आवश्यकता है।

जिन खनिज पदार्थों की हमारे यहाँ कमी है, वे हमें अपने ही गोलार्ध में प्राप्त हो जाते हैं। बाल-बियरिंग, बैट्री और बन्दूक की गोलियों के लिए एण्टीमोनी सुरमा-जैसी धातु, हमें पेरू, मेक्सिको और बोलिविया से मिलती

वका में लिखा था, "पारस्परिक व्यापार और कम चुंगी की सरकारी तियों को व्यर्थ सिद्ध करना है और विश्व के व्यापार की प्रगति की मौलिक ा करनी है।"

यह नहीं समझना चाहिए कि यदि अमरीका में घरेलू संकट पैदा हो य तो वह दुनिया से मुँह मोड़ लेगा। लेकिन ऐसी स्थिति में वैदेशिक यदों को कम करने का प्रलोभन अवश्य ही बहुत अधिक होगा। सच तो ह है कि इस प्रलोभन को दृष्टि मे रखते हुए ही रूस की लड़ाई के द की वैदेशिक नीति बनाई गई मालूम होती हैं।

हैवरी हैजलिट-जैसे मत-निर्माता हमें उसी रास्ते पर ले जाना चाहते जिसे मास्को ने हमारे लिए चुना है। नई निर्भीक योजना बढ़ने हुए म्युनिज़्म को गहरी चोट पहुँचा सकती है। हैजलिट की राय में इसका श्रेय म्युनिस्ट पार्टी को है। उसकी शिकायत है कि जितनी पूँजी हम बाहर जते हैं उतना ही हमारा अपना मुख्य विकास पीछे रह जाता है।

अमरीका में सचमुच आर्थिक संकट आने पर बहुत लोगों का यह चार होगा कि विदेशों से अमरीका को अपना हाथ खींच लेना चाहिए और केवल निजी स्वार्थ का खयाल करना चाहिए। तब लोग यह कहेंगे कि हम सिर्फ एक राष्ट्र नहीं, हमारा तो एक महाद्वीप वरन् पूरा गोलार्ध है। हमें अपना बचा हुआ माल बाहर बेचने की जरूरत नहीं, उसकी खपत तो हम अपने देश में ही कर सकते हैं—इसके लिए हमारे पास हजारों तरीके मौजूद हैं। तब यह दलील पेश की जायगी कि पूर्वी संसार, जिसके लाखों भूखे-नंगे, जिसकी लड़ाइयाँ और लड़ाइयों के खतरे और दुःखदायी रूस— यह सब हमारे लिए आर्थिक दृष्टि से जरूरी नहीं है बल्कि सर-दर्द हैं।

यह कहा जायगा और साथ में प्रमाण भी पेश किया जायगा कि अगर केवल पूर्वी गोलार्ध टूट-फूटकर दुनिया से गायब भी हो जाय तो हमारा क्या बिगड़ेगा, हम ऐसी कौन-सी चीज को देंगे जिसके बिना हमारा गुजारा नहीं हो सकता?

यह कोई नहीं जानता कि कब ऐसी स्थिति पैदा हो जाय जो हमें

जमीन को बरबाद होने से बचाना है तो २२ अरब ५० करोड़ रुपए खर्च करने होंगे।

३—१ करोड़ १५ लाख एकड़ जमीन, जिस पर ५ लाख किसान-परिवार रहते हैं, को ठीक बनाने में २ अरब २५ करोड़ रुपए खर्च होंगे।

४—पश्चिम में २ करोड़ १० लाख एकड़ जमीन पर सिंचाई होती है। इससे दुगुनी जमीन को सिंचाई में लाने के लिए १५ अरब रुपए चाहिएं, जिसके फलस्वरूप १ लाख ८० हजार किसान-परिवारों में से हरेक को १२० एकड़ ज़मीन मिल सकेगी।

५—३५ अरब रुपए खर्च करके हम ५ करोड़ एकड़ जमीन को सिंचाई द्वारा खेती के लायक बना सकते हैं और ४ करोड़ २० लाख एकड़ जमीन के जंगल—झाड़ साफ़ करके नियमित रूप से उन जंगलों का विकास कर सकते हैं।

६—चरागाहों के सुधार के लिए ५ अरब रुपए खर्च होंगे।

७—१५ अरब रुपए खर्च करके हम बाढ़ों को रोक सकते हैं। ७५ अरब रुपया खर्च करके हम छः गुनी ज्यादा बिजली पैदा कर सकते हैं।

इन रकमों में १ खरब १५ अरब रुपए और जोड़ दीजिए और दो हजार मील लम्बी नहर बनवा लीजिए जिसमें समुद्री जहाज आ-जा सकेंगे।

इन सब कामों में पचास बरस लगेंगे और १ अरब डॉलर से ऊपर खर्च होगा और अभी भी यह पूरी सूची नहीं है।

तब क्या अरबों रुपए, जो हमारी सरकार विदेशों में खर्च कर रही है, अपने ही देश में ज्यादा लाभदायक सिद्ध न होंगे? क्या व्यक्तिगत पूँजी पेरू या हिंद एशिया के आकारहीन विकास पर खर्च करने के बजाय अमरीका की फैक्ट्रियों पर नहीं लगानी चाहिए?

ऊपर दी हुई दलील देखने में जितनी ठीक मालूम होती है शायद उतनी र्क की कसौटी पर ठीक न उतरे।

यह कहना कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपनी आर्थिक आवश्यकताएं वयं पूरी कर सकता है, तब ही सम्भव हो सकता है जब कि दक्षिण अमरीका

है। बॉक्साइट-एलुमिनियम का एक भाग—ब्रिटिश और डच गिनी से; ताँबा चिली पेरू और क्यूबा से; प्लेटिनम कनेडा और कोलम्बिया से; रांगा—जिसके बिना मोटर, हवाई जहाज, रेल और पानी के जहाज चलने बंद हो जायं—बोलिविया से; टंगस्टेन—भूरे रंग की भारी धातु—बोलिविया और पेरू से प्राप्त होती हैं। मैंगेनीज—एक अति आवश्यक धातु—अभी हाल ही में बड़ी तदाद में ब्राजील में पाई गई है। यह धातु हमारे पश्चिमी राज्यों में भी पाई जाती है। यहाँ तक कि कोबेल्ट—गिलट-जैसी सफेद धातु—और क्रोमाइट हमारे यहाँ इडाहो में (हालाँकि थोड़ी तदाद में) पाई जाती है।

बहुत-सी जरूरी खेती-सम्बन्धी चीजें, जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सीमा में नहीं पैदा होतीं पर वे हमारे दक्षिण के देशों में बहुतायत में पाई जाती हैं। केला, कॉफी, चाय, कपूर, गरम देशों के तेल, सीसल और कुनेन—सब दक्षिण अमरीका के देशों में पैदा होते हैं। कई चीजों के एवज में (जो हमारे देश में नहीं मिलतीं) नई चीजें बनाने की कोशिश हमारे वैज्ञानिक कर रहे हैं। और रबड़-जैसी आवश्यक चीज के एवज में तो दूसरी चीज बनाई भी जा चुकी है। गरम देशों की उपज को संयुक्त राष्ट्र अमरीका में उगाने का प्रयत्न भी किया जा रहा है। शायद कुछ दिनों बाद केले भी अमेरीकनों की छत से झूलते नजर आयं।

स्वयं परिपूर्ण अर्थ-व्यवस्था का क्या असर होगा? हम अपने बढ़ते उत्पादन के साथ जनता के रहने के स्तर को कैसे ऊँचा कर सकेंगे? उनकी माँगों को कैसे पूरा कर सकेंगे? इसके कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

१—आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ७५ लाख मकान ऐसे हैं जो स्वास्थ्य और सुरक्षा की दृष्टि से इतने गिरे हुए हैं कि रहने लायक नहीं हैं। इन मकानों की जगह नए मकान बनाने में २५ खरब रुपए खर्च होंगे। यह काम पचास साल तक चलता रहेगा और इस प्रकार लाखों आदमी रोजगार में लग जायंगे।

२—अगर ३० करोड़ एकड़ से भी ज्यादा उपजाऊ और चरागाह

के देशों को संयुक्त राष्ट्र अमरीका का भाग मान लिया जाय। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता, हालाँकि सुरक्षा की दृष्टि से ये देश हमारी प्राकृतिक सीमा में ही हैं। न यह कहा जा सकता है कि युद्ध होने पर किसी वैदेशिक शक्ति को इन देशों में अपने फौजी अड्डे बनाने से हम रोक सकते हैं और ऐसी हालत में न हम खनिज पदार्थ और न दूसरी उपज आसानी से अपने यहाँ मँगा सकते हैं। यहाँ तक कि कैनेडा का उत्तरी भाग, जहाँ यूरेनियम-जैसी महत्त्वपूर्ण धातुएं मिलती हैं, लड़ाई होने पर हमले के खतरे से खाली नहीं है।

दक्षिणी अमरीका के साधनों पर कब्जा रखने का केवल यही एक तरीका है कि पश्चिमी और पूर्वी सीमाओं का आपसी युद्ध होने पर हम इन देशों को अपने अधीन कर लें। इसलिए दुनिया से अलग रहने का मतलब है डिक्टेटरशिप को अपनाना।

केवल अपने साधनों पर निर्भर रहकर खनिज पदार्थों की अपनी पैतृक सम्पत्ति हम शीघ्र ही खत्म कर डालेंगे और जिसको फिर कभी पूरा न कर सकेंगे। यह अनुमान लगाया गया है कि हमारी खानों से ताँबा चौबीस वर्ष, जस्ता उन्नीस वर्ष, केडमियम सोलह वर्ष और सीसा सिर्फ बारह वर्ष तक निकाला जा सकता है। एण्टीमनी, टंग्स्टन, प्लेटिनम और पारा केवल पाँच वर्ष से भी कम के लिए हमारे पास हैं।

हम अपनी वर्तमान औद्योगिक स्थिति पर बिना दूसरे देशों की सहायता के नहीं पहुँच सकते थे हालाँकि हमारे अपने साधन भी कम न थे। क्रोमाइट-इस्पात और रासायनिक तेलों के लिए आवश्यक धातु रूस, तुर्की और दक्षिणी रोडेसिया से प्राप्त होती है। कोबेल्ट-गिलट-जैसी सफेद धातु के लिए हम अब तक बेलजियम कांगो, उत्तरी रोडेसिया और फ्रैञ्च मोरक्को पर निर्भर हैं।

अपने उद्योगों को चालू रखने के लिए हमें ६७ प्रतिशत कच्चा माल विदेशों से मँगाना पड़ता है। अक्सर बाहर से मँगाई गई एक थोड़ी-सी चीज बहुत बड़े उद्योग को चलाने में सहायक होती है। खाने की चीजें

जबरदस्ती इस अन्न को खायं, या इसका पैदा करना बन्द कर दें, इसे नष्ट कर दें—या इसे विदेशों में भेज दें।

पिछले आर्थिक संकट से पहले भी हम अपनी आधी रुई, गेहूँ का पाँचवाँ हिस्सा, तम्बाकू का २/५, सुअर की चर्बी का १/३, सेबों का १/६, मेवों का २/५, टीन के डब्बों में बन्दफलों का २/५, और कृषि की मशीनों का १/४, भाग विदेशों में बेचते थे। हमारे यहाँ की बनी हुई ४० प्रतिशत टाइपराइटर मशीनें, ३० प्रतिशत छापेखाने और १४ प्रतिशत मोटरकार बाहर भेजी जाती थी। आज हम इनसे ज्यादा चीजें विदेशों में भेज रहे हैं।

हमारे सामाजिक और आर्थिक व्यवहार और विचारों में उतनी उन्नति नहीं हुई जितनी कि हमारी कृषि और औद्योगिक उत्पादन में हाल में हुई है। हमने नए कारखाने और नई काश्त केवल अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए नहीं तैयार किये बल्कि विदेशों की माँग की पूर्ति के लिए।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सबसे बड़े कई कारखाने इतनी ज्यादा तादाद में माल इसीलिए बनाते हैं कि उसका कुछ हिस्सा विदेशों में बेचने से विशेष लाभ होता है। बिना उस लाभ के हमारे अधिकांश लोगों की हैसियत मोटरकार, रेडियो, रेफ्रीजरेटर और हजारों दूसरी चीजें रखने की नहीं रह सकती। अगर दक्षिण से रुई बाहर न भेजी जाय तो वहाँ के लोग इतनी ज्यादा घरेलू काम की चीजें नहीं खरीद सकते जितनी कि अब खरीदते है। अगर लाखों किसान अपनी उपज विदेशों में न भेजें तो वे खेती-बाड़ी के लिए इतनी मशीनें नहीं खरीद सकते जितनी कि अब खरीद रहे हैं।

हमारा इस्पात का उत्पादन १६४६ में लड़ाई के पहले से १२ प्रतिशत बढ़ गया। हम दुगुने जूते और दुगुनी कृषि की मशीनें बनाने लगे। उत्पादन की वृद्धि के साथ-साथ ही विदेशों में माल भेजने की आवश्यकता भी बढ़ती है।

अगर विदेशों में हमारा माल भेजना बन्द हो जाय तो न हम इतनी बड़ी तादाद में उत्पादन कर सकेंगे और न लाखों, करोड़ों मजदूरों को रोजी

असुविधा बन जाए तो इसका परिणाम राष्ट्र-विध्वंस के अलावा और क्या हो सकता है?

उदाहरण के लिए मान लीजिए कि पिट्सबर्ग में जिम पीबॉडी नाम का एक आदमी रहता है जो एक इस्पात के कारखाने में मजदूर है।

जिम पीबॉडी को एक बुरी आदत है। वह सुबह बिस्तर छोड़ने से पहले सिगरेट पीता है। विश्व से पूर्वी गोलार्ध गायब हो जाने के बाद एक दिन वह अपनी मेज से सिगरेट उठाकर जलाता है, एक दो कश लगाने के बाद ही झुँझलाकर सिगरेट खिड़की के बाहर फेंक देता है। तम्बाकू में न तासीर था, न खुशबू। अब तो यह है कि हमारे यहाँ के तम्बाकू में फूँस-जैसा स्वाद आता है। पीबॉडी को उन सिगरेटों की याद है जिनके तम्बाकू में दस प्रतिशत तम्बाकू यूनान, टर्की और सीरिया का मिला रहता था और जिनमें ५० देशों के तरह-तरह के मसाले पड़ते थे।

पीबॉडी की पत्नी सुन्दर है। अपने चर्म को सुन्दर बनाये रखने के लिए वह जानती है कि कितने उपचारों की आवश्यकता है। लेकिन दुःख है कि आज श्रीमती पीबॉडी की क्रीम की शीशी खाली है और न डिब्बियों में गालों और होठों की लाली ही है—इन चीजों को बनाने के लिए मुख्य सामग्री तो पूर्वी गोलार्ध से ही आती थी।

सुबह का नाश्ता करने जब मिस्टर और मिसेज पीबॉडी बैठे तो उनकी तबियत में मलाल था। मिसेज पीबॉडी चाय की आदी हैं जो भारत से पहले और किसी देश में मिलती ही नहीं। मिस्टर पीबॉडी ने तो अपनी कॉफी में चीनी मिलाकर पी ली लेकिन उन्हें इस बात का बड़ा खतरा है कि अगर योरोप और एशिया संसार से गायब हो गए तो क्या कारण है कि एक दिन ब्राजील और क्यूबा भी खतम न हो जायगे जहाँ से कॉफी और चीनी आती है।

पीबॉडी जिस कारखाने में काम करता है, वह भी विशेष धातुओं की कमी के कारण बन्द है। हाई ग्रेड इस्पात बनाने में ४० विभिन्न धातुएँ लगती हैं, जो ५० से ज्यादा विभिन्न देशों से लाई जाती हैं।

पीढ़ीयाँ हैं और उनकी सम्मिलित असुविधाएं अमरीका का भविष्य बिगाड़ सकती हैं।

बढ़ती हुई व्यक्तिगत असुविधाओं का अर्थ होगा—गुलामी और युद्ध।

अगर कल अमरीका दुनिया में अकेला रह जाय तो उसके जरूरी उद्योग केवल सरकार के बल पर ही चल सकेंगे और अन्त में सब उद्योगों को सरकार अपना लेगी। कार्य-दक्षता कम हो जायगी, कीमतें बढ़ जायंगी, व्यक्तिगत व्यापार खत्म हो जायगे। व्यक्ति के दैनिक जीवन में सरकार का दखल बढ़ जायगा। औसत अमरीकन अपनी अर्थ-व्यवस्था में सरकारी सहायता पसन्द कर सकता है पर अपने-आपको पूर्णतया सरकार को बेचना स्वीकार नहीं कर सकता।

लेकिन हम अकेले नहीं रह सकते; दूसरे राष्ट्र भी बने रहेंगे। और बाहरी दुनिया को अपने यहाँ आने से रोकने का मतलब होगा सरकारी अंकुशों का बढ़ाना। तब हममें और डिक्टेटरों के देशों में क्या अन्तर रहेगा ?

संयुक्त राष्ट्र अमरीका पहले सवा सौ बरस अलग रह सका, क्योंकि तब संसार सुव्यवस्थित था और तब संसार में पुलिस का काम इंगलैंड करता था। आज संसार की व्यवस्था बिगड़ी हुई है और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अलावा ऐसा कोई देश नहीं है जो सुव्यवस्था कायम कर सके। हम सिर्फ एक सुव्यवस्थित संसार में ही अकेले रह सकते हैं और जिस संसार मे हम अकेले रहेंगे वह सुव्यवस्थित नहीं हो सकता। यह भी अच्छी सुविधा है। अगर भविष्य में अकेले रहने की रत्ती-भर भी सम्भावना कभी हो सकती है तो तब ही जब हम दूसरे देशों के कामों में पूरा सहयोग दें और लगातार दशाब्दियों, पीढ़ियों और शताब्दियों तक देते रहें।

अगर जादू से रूस सीधी-सादी गऊओं का देश बन जाय तो भी अमरीका का स्वयं-परिपूर्णता का प्रयास युद्ध को न्योता देना होगा क्योंकि आज दो-तिहाई दुनिया मे जो हालात है वे युद्ध के लिए बहुत मौजूं हैं। रूस रहे या न रहे, जहाँ संसार में दरिद्रता होगी वहाँ कम्युनिस्ट या उनके-जैसे दूसरे

पोषक हैं और उनकी सम्मिलित असुविधाएं अमरीका का भविष्य बिगाड़ सकती हैं।

बढ़ती हुई व्यक्तिगत असुविधाओं का अर्थ होगा—गुलामी और युद्ध।

अगर कल अमरीका दुनिया में अकेला रह जाय तो उसके जरूरी उद्योग केवल सरकार के बल पर ही चल सकेंगे और अन्त में सब उद्योगों को सरकार अपना लेगी। कार्य-क्षमता कम हो जायगी, कीमतें बढ़ जायंगी, व्यक्तिगत व्यापार खत्म हो जायंगे। व्यक्ति के दैनिक जीवन में सरकार का दखल बढ़ जायगा। औसत अमरीकन अपनी अर्थ-व्यवस्था में सरकारी सहायता पसन्द कर सकता है पर अपने-आपको पूर्णतया सरकार को बेचना स्वीकार नहीं कर सकता।

लेकिन हम अकेले नहीं रह सकते; दूसरे राष्ट्र भी बने रहेंगे। और बाहरी दुनिया को अपने यहाँ आने से रोकने का मतलब होगा सरकारी अंकुशों का बढ़ाना। तब हममें और डिक्टेटरों के देशों में क्या अन्तर रहेगा?

संयुक्त राष्ट्र अमरीका पहले सदा ही बस अलग रह सका, क्योंकि तब संसार सुव्यवस्थित था और तब संसार में पुलिस का काम इंगलैंड करता था। आज संसार की व्यवस्था बिगड़ी हुई है और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अलावा ऐसा कोई देश नहीं है जो सुव्यवस्था कायम कर सके। हम सिर्फ एक सुव्यवस्थित संसार में ही अकेले रह सकते हैं और जिस संसार में हम अकेले रहेंगे वह सुव्यवस्थित नहीं हो सकता। यह भी अच्छी सुविधा है। अगर भविष्य में अकेले रहने की रत्ती-भर भी सम्भावना कभी हो सकती है तो तब ही जब हम दूसरे देशों के कामों में पूरा सहयोग दें और लगातार दशाब्दियों, पीढ़ियों और शताब्दियों तक देते रहें।

अगर जादू से रूस सीधी-सादी गऊओं का देश बन जाय तो भी अमरीका का स्वयं-परिपूर्णता का प्रयास युद्ध को न्योता देना होगा क्योंकि आज की निराई दुनिया में जो हालात हैं वे युद्ध के लिए बहुत मौजूं हैं। रूस रहे या न रहे, जहाँ संसार में दरिद्रता होगी वहाँ कम्युनिस्ट या उनके-जैसे दूसरे

आपसी समझौते या अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का कोई भी प्रयत्न व्यर्थ है। यह है उग्र मालथसवादी का दृष्टिकोण।

इसके विपरीत दूसरे सिरे पर वे लोग खड़े हैं जो कहते हैं पृथ्वी की उत्पादन शक्ति असीम है और व्यक्ति अपने प्राप्त ज्ञान को काम में लाने से ही इस बात की चिन्ता छोड़ देगा कि जन-संख्या कैसे कम की जाय, बल्कि उसे फिर चिन्ता होगी इसकी कि लोगों का मुटापा कैसे दूर किया जाय।

क्या जन-संख्या का प्राप्य खाद्य-सामग्री से अधिक रहना आवश्यक है? अगर ऐसी बात है तो फिर अमरीका को अपनी खाद्य-सामग्री जोड़नी चाहिए और अपनी तोपों में बारूद भरनी चाहिए।

क्या टेकनीकल कौशल अवश्य ही उतना अन्नोत्पादन कर सकेगा जो सारी मानवता के लिए पर्याप्त हो? अगर ऐसा है तो दुनिया के दो तिहाई हिस्से की भूख के बारे में सोचना फिजूल है क्योंकि यह एक अस्थायी संकट है जो जल्दी ही दूर हो जाना चाहिए।

या फिर पिछड़े देशों में जन-संख्या और खाद्य-सामग्री की पारस्परिक दौड़ प्राकृतिक नियम नहीं बल्कि उन देशों की अव्यवस्थित और पिछड़ी हुई अर्थ-व्यवस्था का लक्षण है? अगर यह है तो उन पिछड़े हुए देशों की अर्थ-व्यवस्था को दूसरे देशों की बराबरी में लाने का क्या कोई कारगर तरीका भी है?

हमारी मौजूदा खेती से और कितना ज्यादा अनाज उपजाया जा सकता है?

आज संसार के किसान करीब ७० लाख वर्ग मील या करीब ४ अरब एकड़ जमीन जोतते हैं। अगर सारी दुनिया का पूरी तरह पेट भरना है तो इससे आधी जमीन और जोतनी पड़ेगी।

अगर फसलों का परिमाण बदल दिया जाय जैसे एक फसल जो अब [illegible] —पर जो मनुष्य के लिए ज्यादा आवश्यक है—ज्यादा

: ३ :

दो रास्ते—औद्योगीकरण या भुखमरी

जो अमरीकन दुनिया से दूर रहकर अपना राग अलग ही अलापना चाहते हैं, उनका शायद सबसे बड़ा हिमायती मालथस नामक एक अंग्रेज पादरी था। यह मालथस ही था जिसने आज से डेढ़ सौ बरस पहले यह हिसाब लगाया था कि दिन-पर-दिन बढ़ती जनसख्या के लिए संसार की खाद्य-रसद कभी पर्याप्त न होगी और संतुलन बनाए रखने के लिए महामारी, अकाल और युद्ध की हमेशा आवश्यकता होगी।

मालथसवाद के अनुसार किसी भूखे देश को अन्न या रुपए देना उस देश की तकलीफें बढ़ाना होगा। जितना ज्यादा लोगों के पास खाना होगा उतनी ही ज्यादा उनकी संतान होगी; जितनी ज्यादा संतान होगी उतने ही ज्यादा पेट भरने होंगे; जितने ज्यादा पेट भरने होंगे उतने ही ज्यादा पेट भूखे भी रहेंगे। इस प्रकार खाद्य और भुखमरी बराबर परिमाण में बढ़ते हैं।

इस बात का डर इस कारण और भी बढ़ जाता है कि १७वीं शताब्दी से अब तक दुनिया की आबादी पाँच गुनी बढ़ चुकी है; पिछले सौ वर्षों में दुगनी हो गई और दस वर्षों में ही २० करोड़ व्यक्ति और बढ़ गए। अगर इस रफ्तार से आबादी बढ़ती गई तो २१वीं शताब्दी के शुरू में संसार की आबादी साढ़े चार अरब होगी जब कि अब भी हर साल २ करोड़ व्यक्ति भूख से मरते हैं।

अपने साधनों का ऐसे संसार को हिस्सा देना जो कि मालथसवादी बालू में बुरी तरह धँस रहा है ऐसी गलती होगी जो माफ नहीं की जा सकती, कम-से-कम अपव्ययता तो अवश्य होगी। ऐसी हालत में व्यापारी का रुपए लगाना या सरकार का उधार या दान-स्वरूप रुपए देना या व्यक्तिगत दान भी उन मुश्किलों को बढ़ाता है जिनको कम करने के लिए ये काम लिये जा रहे हैं। इस प्रकार मार्शल योजनाएं, अन्तर्राष्ट्रीय बैंक, स्वतन्त्र व्यवसाय के

कि पैदावार से ही दुनिया की भूख और भूख से पैदा हुई दुर्बलता दूर की जा सकती है। मनुष्य को स्वस्थ रहने के लिए कितनी तादाद मे खाना चाहिए यह इस बात पर निर्भर है कि खाना किस प्रकार का है।

उदाहरण के लिए, पिछले युद्ध मे कुछ लोगों ने एक जहाज भरकर अनाज और दूसरी खाद्य-सामग्री योरुप भेजनी चाही। उन्होंने एक वैज्ञानिक से पूछा कि किस परिमाण मे गेहूँ, मूँगफली का तेल आदि भेजा जाय ताकि भेजी हुई खाद्य-सामग्री ज्यादा-से-ज्यादा पौष्टिक सिद्ध हो। वैज्ञानिक के बताये हुए अनुपात से माल भेजने मे उतनी ही खाद्य-सामग्री का ५० प्रतिशत पौष्टिक मूल्य बढ़ गया।

अगर इसी प्रकार दुनिया की फसलें सन्तुलित तरीके से उगाई जाय तो हमारी मौजूदा अनाज की कमी पूरी करने के लिए सेर-भर अनाज भी और नहीं जोड़ना पड़ेगा।

सन्तुलित उत्पादन और व्यय अभी तो भविष्य के स्वप्न ही हैं। आज की आदतों को देखते हुए संसार की आबादी को पर्याप्त मात्रा मे भोजन देने के लिए हमको ५० प्रतिशत अनाज और चाहिए।

क्या ७० लाख वर्ग मील जमीन की, जो अब काश्त मे है, उपज बढ़ाई जा सकती है?

किर्टले एफ० माथेर, हारवर्ड के भूगर्भ-विज्ञान-विभाग के अध्यक्ष का कहना है हाँ, उपज बढ़ाई जा सकती है। वे बताते हैं कि पिछले पचीस वर्षों में जिस तेजी से आबादी बढ़ी है उससे ज्यादा तेजी से जीवित रहने के साधन भी बढ़े हैं। जब अमरीका में १९०० में प्रति एकड़ ६० बुशल (एक बुशल = करीब ३० सेर) अनाज पैदा होता था तो आज अच्छे बीजों से १०० बुशल उतनी ही जमीन में पैदा होता है। आज औसत अमरीकन खेत में १७.९ बुशल गेहूँ प्रति एकड़ होता है लेकिन एक खेत में १४५ बुशल प्रति एकड़ तक पैदावार हो चुकी है। रूस ने घोषणा की—हालाँकि यह खबर पक्की नहीं है कि सर्दी की गेहूँ की फसल में, प्रति एकड़ १२० बुशल अनाज हुआ।

बन सकती है। कृषि-विभाग के एक अधिकारी का दावा है कि ५ अरब एकड़ अछूती जमीन, जो दुनिया की मौजूदा काश्त से भी ज्यादा है, रासायनिक साधनों की सहायता से ईख, चावल और दूसरी फसलें पैदा करने के लायक बनाई जा सकती है।

इसलिए अगर आज आधुनिक साधनों से सारे संसार का पेट भरा जा सकना सम्भव है तो भविष्य में बढ़ने वाली आबादी के लिए वैज्ञानिक साधनों द्वारा नई ज़मीन भी काश्त में लाई जा सकती है।

लेकिन अगर आबादी लगातार बढ़ती ही रहे तो क्या और कहीं से भी दूसरी खाद्य-सामग्रियाँ पर्याप्त मात्रा में मिल सकती हैं?

हाँ, जल और थल दोनों जगह मिल सकती हैं—वैज्ञानिक साधनों से। वैज्ञानिक साधनों की महत्ता को हमें नहीं भूलना चाहिए। मांस की कमी पूरी करने के लिए खमीर और दाने की कमी पूरी करने के लिए भूसा है। ऐसे तरीके भी हैं कि जिनसे पेड़-पौधे सूर्य से अधिक मात्रा में शक्ति ग्रहण कर सकें। रसायन-शास्त्र द्वारा लकड़ी से चीनी बनाई जा सकती है। बिना जमीन के खेत भी है। चूँकि पौधे कारबन डाई ऑक्साइड से बढ़ते हैं इसलिए यह भी सुझाव है कि कारखानों की चिमनियों से निकला हुआ धुआँ साफ करके पौधों को बढ़ाने के काम में लिया जा सकता है।

समुद्र के छिछले जल में खास तरह के पौधे उगाये जा सकते हैं, जिन्हें बाद में पानी की सतह से निकाला जा सकता है।

हमारे चारों ओर बहुत-से स्वादिष्ट और पुष्टिकारक पदार्थ अनजाने ही पैदा होते हैं। बहुत पुरानी बात नहीं है, आज भी ऐसे अमरीकन जिंदा हैं जिन्हें याद होगा कि टमाटर को ज़हर समझा जाता था। अभी कुछ बरसों पहले तक अमरीकन यह नहीं जानते थे कि सोयाबीन खाने के काम में लाया जा सकता है, जब कि सोयाबीन गेहूँ के आटे से १०-१५ गुना ज्यादा पौष्टिक है। सोयाबीन से कम खर्च में ही तरह-तरह की खाने की चीज़ें बनाई जा सकती हैं।

मैक्सिको में 'मलना' नामक एक खास पौधा होता है जिसे अभी तक

अगर आज हम अपने नये तरीकों से दुनिया की आबादी के लिए पूरा-पूरा अनाज पैदा कर सकते हैं और नई ज़मीन पर अपने पेड़ों और पौधों के लिए भी उगा सकते हैं और विज्ञान और समुद्र की सहायता से अरबों आदमियों का पेट भर सकते हैं तो हमें माल्थस के सिद्धान्तों का डर नहीं।

चिन्ता हमें सिर्फ इस बात की है कि हमारे ज्ञान और उसके प्रयोग में बहुत अन्तर है। आज दुनिया में ५० करोड़ किसान हैं; इनमें बहुत-से पढ़ना-लिखना नहीं जानते और बहुत-से तब्दीलियों से डरते हैं। दस बरस से ज्यादा तो इन किसानों को मशीनों का प्रयोग, खाद और सिंचाई के नये नियम आदि समझाने में ही लग जायंगे। इस बीच दुनिया की आबादी बढ़ती ही रहेगी और साथ ही भुखमरी भी। पिछड़ी हुई दुनिया के लिए माल्थस का सिद्धान्त सही था। जितने ज्यादा भूखे, अनपढ़ और बीमार लोग होंगे उतना ही मुश्किल उनको नए तरीके सिखाना होगा, और केवल इन्हीं नए तरीकों से वे बच सकते हैं। अगर संसार पर एक नया संकट आ जाता है तो फिर इस समस्या का हल हमारे हाथ से निकल जायगा।

औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों में अगर पर्याप्त भोजन और सफाई-सुथराई का प्रबन्ध किया जा सके तो आबादी कितनी जल्दी बढ़ती है, इसका उदाहरण प्यूरेटोरिको में पायंगे। अगर भारत की मृत्यु-संख्या प्यूरेटोरिको के स्तर पर लाई जा सके तो अपनी वर्तमान जन्म-संख्या की रफ्तार से एक शताब्दी में ही हमारी जैसी पाँच दुनियाओं को भारतवासी भर देंगे। ऐसा ही चीन में होगा और रूस और दक्षिणी अमरीका के देश भी पीछे न रहेंगे।

वर्न और कोल्ट-जैसे विशेषज्ञों के अनुसार बढ़ती हुई जन-संख्या को रोकना चाहिए। लेकिन क्या भारत-जैसे देशों में ऐसी योजनाएं सफल हो सकती हैं जहाँ अर्थशास्त्र, धर्म और स्त्री-पुरुष के यौन-सम्बन्ध सब इतने मिले-जुले हैं; ऐसे देशों में ये योजनाएं धीरे-धीरे और मुश्किल से सफलता पा सकेंगी। जन-संख्या को सीमित रखना अगले सालों में आवश्यक हो सकता है पर यह रहन-सहन सुधारने का कारण न होकर उसका फल होगा।

जन्म-संख्या कई पेचीदा बातों पर निर्भर होती है। जिन लड़कियों की शादी १२ वर्ष की उम्र में होगी उनके बच्चे २५ वर्ष की उम्र में शादी हुई लड़कियों से ज्यादा होंगे। जो लोग गरीब हैं प्रकृति उन्हें ज्यादा सन्तान देती है। जर्मन-रूसी-कैम्पों में जो लोग खाने की कमी के कारण काम भी नहीं कर सकते थे और पूरी तरह बोल भी नहीं सकते थे, वे काम-वासना में लिप्त रहते थे। ऐसे आदमियों द्वारा भी, जो कुछ हफ्तों या कुछ दिनों बाद काफी खाना न मिलने के कारण मरने वाले थे, स्त्रियों ने गर्भ ग्रहण किये।

इसके विपरीत अगर सम्भोग के अलावा इस संसार में मनोरंजन के दूसरे भी साधन प्राप्य हों तो सन्तान कम होने लगेगी। जैसे जैसे शिक्षा और जीवन का स्तर ऊंचा उठेगा और लोगों को गर्भ-रोक के साधनों का ज्ञान होगा वैसे-ही-वैसे जन्म-संख्या कम होने लगेगी।

जितने ही आराम से आदमी रहेगा और जितनी ही उसे अपने बच्चों का भविष्य बनाने की आशा होगी उतनी ही कम सन्तान वह पैदा करेगा। १८७६ और १६२६ के पचास वर्षों में योरोप और अमरीका की जन्म-संख्या आधी से ज्यादा गिर गई।

जन्म-संख्या केवल इसी कारण कम नहीं हुई कि खाना बहुतायत में था। अगर पश्चिम में औद्योगिक क्रान्ति ने लोगों को ज्यादा खाना और अच्छे स्वास्थ्य के साधन प्रदान किये तो जन्म-संख्या को घटने के बजाय बढ़ना चाहिए था।

औद्योगीकरण और नए शहरों के बसने के परिणाम-स्वरूप बड़े परिवार

...छ विशेषज्ञों का विश्वास है कि अगली शताब्दी के मध्य में पहुँचकर भारत की जन्म-संख्या और मृत्यु-संख्या संतुलित हो जायगी और तब आबादी ७० करोड़ पर जाकर रुक जायगी।

लेकिन आबादी को स्थिर करने के लिए औद्योगीकरण में प्रगति करनी होगी। जो बात भारत के साथ लागू होती है वही जापान के साथ भी, जहाँ ...क माथरे के अनुसार पिछले पच्चीस वर्षों में जन्म-संख्या कम होती जा रही है।

भारत के प्रसिद्ध जन-संख्या-विशेषज्ञ डॉ० राधाकमल मुखर्जी का विश्वास ...कि भारत और जापान की जन-संख्या पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्रों के रास्ते ... चल रही है, सिर्फ अन्तर इतना ही है कि वे पश्चिमी देशों से तीस वर्ष ...छे हैं।

इस विषय के अमरीका के सबसे प्रसिद्ध विशेषज्ञ रेमण्ड पर्ल ने १६६० ...लेकर १६३७ तक की संसार की आबादी की गति का अध्ययन किया ... इनके आँकड़ों के अनुसार इस शताब्दी के अन्त में एक गोरी चमड़ी के ...दमी के मुकाबले में दो काले या पीले आदमी होंगे।

औद्योगीकरण और नए शहर बसाना ज्यादा आदमी और कम खाने ...समस्या का नाटकीय हल नहीं है जो एक रात में, एक वर्ष में या दो ...में भी पूरी तरह हल की जा सकें। तो भी इस समस्या का सिर्फ यही ...सही उत्तर है।

...चतुर्थ-लक्ष्य कारखानों में न शुरू होकर खेतों में शुरू होता है; लेकिन ...-लक्ष्य के कोई माने न होंगे, अगर उसका अन्तिम ध्येय औद्योगीकरण ...। हरेक पिछड़े इलाके में खेती के नए तरीके काम में लाने होंगे और ...की हत्या की तरह दंडनीय होनी चाहिए, लेकिन सिर्फ यही काफी नहीं

बर्न और वोग्ट-जैसे विशेषज्ञों के अनुसार बढ़ती हुई जन-संख्या को रोकना चाहिए। लेकिन क्या भारत-जैसे देशों में ऐसी योजनाएं सफल हो सकती हैं जहाँ अर्थशास्त्र, धर्म और स्त्री-पुरुष के यौन-सम्बन्ध सब इतने मिले-जुले हैं; ऐसे देशों में ये योजनाए धीरे-धीरे और मुश्किल से सफलता पा सकेंगी। जन-संख्या को सीमित रखना अगले सालों में आवश्यक हो सकता है पर यह रहन-सहन सुधारने का कारण न होकर उसका फल होगा।

जन्म-संख्या कई पेचीदा बातों पर निर्भर होती है। जिन लड़कियों की शादी १२ वर्ष की उम्र में होगी उनके बच्चे २५ वर्ष की उम्र में शादी हुई लड़कियों से ज्यादा होंगे। जो लोग गरीब हैं प्रकृति उन्हें ज्यादा सन्तान देती है। जर्मन-बन्दी-कैम्पों में जो लोग खाने की कमी के कारण काम भी नहीं कर सकते थे और पूरी तरह बोल भी नहीं सकते थे, वे काम-वासना में लिप्त रहते थे। ऐसे आदमियों द्वारा भी, जो कुछ हफ्तों या कुछ दिनों बाद काफी खाना न मिलने के कारण मरने वाले थे, स्त्रियों ने गर्भ ग्रहण किये।

इसके विपरीत अगर सम्भोग के अलावा इस संसार में मनोरंजन के दूसरे भी साधन प्राप्य हों तो सन्तान कम होने लगेगी। जैसे जैसे शिक्षा और जीवन का स्तर ऊँचा उठेगा और लोगों को गर्भ-रोक के साधनों का ज्ञान होगा वैसे-ही-वैसे जन्म-संख्या कम होने लगेगी।

जितने ही आराम से आदमी रहेगा और जितनी ही उसे अपने बच्चों का भविष्य बनाने की आशा होगी उतनी ही कम सन्तान वह पैदा करेगा। १८७६ और १६२६ के पचास वर्षों में योरोप और अमरीका की जन्म-संख्या आधी से ज्यादा गिर गई।

`जन्म-संख्या केवल इसी कारण कम नहीं हुई कि खाना बहुतायत में था। अगर पश्चिम में औद्योगिक क्रान्ति ने लोगों को ज्यादा खाना और अच्छे स्वास्थ्य के साधन प्रदान किये तो जन्म-संख्या को घटने के बजाय बढ़ना चाहिए था।

औद्योगीकरण और नए शहरों के बसने के परिणाम-स्वरूप बड़े परिवार

काम-कौशल से कपड़ा, मशीन, कागज, जस्ता आदि की अनेक मिल और कारखाने खड़े किए। हर जगह अंग्रेजों ने स्थानीय पूँजी में काम करने की गति ला दी। १८१५ की संधि के बाद बीस वर्षों में ही अंग्रेजों ने पश्चिमी योरोप में औद्योगिक क्रान्ति का प्रसार कर दिया।

१८२० के लगभग दक्षिणी अमरीका में ब्रिटिश व्यवसाय मेक्सिको से लेकर हार्न अन्तरीप तक फैल गया। मिसाल के लिए कोलम्बिया में एक अंग्रेज का ताँबे की खानों पर पूरा अधिकार था, दूसरे का नमक के ... और तीसरे का बोलिवर की सारी व्यक्तिगत जागीरों के खनिज पदार्थों पर। दो अंग्रेजों को समुद्र से मोती निकालने के विशेषाधिकार प्राप्त थे। बोगा... और कारकस में ब्रिटिश हितों की वृद्धि के लिए समाचार-पत्र निकाले जाने लगे। यहाँ तक कि अंग्रेजों ने निकारगुअन नहर निकालने की योजना भी बना ली थी।

१८१५ और १८३० के बीच ३० करोड़ रुपया दक्षिणी अमरीका में लगाया गया। थोड़े मुनाफे की गुन्जाइश पर भी बड़ी-बड़ी रकमें कर्ज में दी जाने लगीं। कई सौदों में पब्लिक को नुकसान भी हुआ, पर बैंकों ने हमेशा ही रुपया बनाया। उदाहरण के लिए १८२४ के कोलम्बियन कर्ज को स्वीकार करने पर बी० ए० गोल्डस्मिथ कम्पनी को "रुपए इकट्ठे करने, खर्च करने और लौटाने के लिए—हर काम के लिए—अलग-अलग कमीशन मिला।"

ब्राजील के अलावा दूसरे दक्षिणी अमरीका के कर्जदार देशों ने (स्पेन, पुर्तगाल और योरोप में यूनान की बात तो अलग ही है) व्याज की रकम नहीं चुकाई। इस विशिष्ट असफलता का परिणाम दक्षिणी अमरीकन देशों के विकास के लिए बहुत ही विनाशकारी सिद्ध हुआ। इसी विषय पर टिप्पणी

है। शिक्षा और स्वास्थ्य के नये साधन काम में लाने चाहिएं, लेकिन सिर्फ यह भी काफी नहीं है। यातायात में भी सुधार होना चाहिए ताकि दुनिया ईरान या पेरू से फायदा उठा सके और ईरान और पेरू दुनिया के दूसरे देशों से फायदा उठा सकें। दैनिक व्यवहार की चीजें पर्याप्त मात्रा में सबको प्राप्त होनी चाहिएं; लेकिन ये सब बातें भी काफी नहीं हैं। इन सब बातों से ज्यादा-से-ज्यादा यह होगा कि दुनिया की गाड़ी ज़रा तेज चलने लगेगी, असली बात है स्वस्थ औद्योगीकरण। औद्योगीकरण हमारी मंज़िल है, चतुर्थ-लक्ष्य पहला ज़रूरी कदम है।

: ४ :

साम्राज्य से चतुर्थ-लक्ष्य तक

बेंजेमिन फ्रेंकलिन ने अपने एक युवक मित्र को दस मुद्राएं भेजते हुए यह पत्र लिखा: "मैं यह नहीं कह सकता कि यह रकम हमेशा के लिए तुम्हें दे रहा हूँ; सिर्फ उधार दे रहा हूँ। जब तुम अपने देश लौटोगे तो अवश्य ही किसी व्यवसाय में लगोगे और धीरे-धीरे अपने सब कर्ज चुका सकोगे। ऐसी हालत में जब तुम किसी दूसरे ईमानदार आदमी को ऐसी ही तकलीफ में पाओ तो उसको यह रकम देकर मेरा कर्ज उतार सकते हो और उसको भी यह समझाना कि वह भी तुम्हारा कर्ज इसी तरह चुकाए जब उसे ऐसा अवसर प्राप्त हो; जो कि उसे अवश्य होगा। मुझे आशा है कि इस तरह यह रकम बहुत-से लोगों के हाथों से निकलेगी जब तक कि कोई धूर्त इसकी प्रगति न बन्द कर दे।"

जब कि अमरीका अपनी नई निर्भीक योजना की तैयारी कर रहा है, हमें बेंजेमिन फ्रेंकलिन के उपदेश पर गौर करना चाहिए। अक्सर हम यह मान बैठते हैं कि हम स्वयं-निर्मित राष्ट्र हैं; किसी दूसरे देश के आभारी नहीं। यथार्थता इसके विपरीत है। हमारी स्वतन्त्रता का शंखनाद फूकने से पहले ही विदेशी पूँजीपति अमरीकन अर्थ-व्यवस्था को बच्चों की तरह इसे

- अमज. का ज्यादा व्यय किया
मरीकनों को। प्रत्येक अमरीकन राज्य ने शीघ्र ही तय किया कि वह भी
र्क से पीछे न रहेगा। सन् १८३६ तक नहरों और खेतों पर ही
ोड़ रुपया खर्च किया गया। ज्यादातर यह रुपया अंग्रेजों का था,
अमरीकन सीक्योरिटीज में लगा हुआ था। दो साल बाद ही अम-
ने लगी हुई ब्रिटिश बैंक के सैम्युल जोदन ने इंगलैंड में १० करोड़
की सीक्योरिटीज और १० करोड़ रुपए के बौंड सोना उधार लेने के
। इस प्रकार पूँजी लगाकर किये हुए कामों में सबसे ज्यादा लाभ-
ईरी नहर ही रही है।

टिश पूँजी ने न केवल अमरीकन औद्योगिक विकास को ही प्रोत्सा-
कया; बल्कि साथ-ही-साथ सार्वजनिक कार्यों को भी आगे बढ़ाया।
व्यापारी महाजन ब्रिटिश माल का निर्यात पसन्द करते थे, न कि
गता को बढ़ाना। लेकिन एक बार कर्ज देने पर, कर्ज से होने वाले कामों
(रखने के व्यावहारिक तरीके मौजूद न थे। सन् १८३६ में 'न्यूयार्क
' नामक समाचार-पत्र ने घोषित किया कि "वैदेशिक पूँजी के करोड़ों
देश के उद्योग-धन्धों में लगे हुए हैं।"

ँकि वैदेशिक पूँजी ने समय से ५० वर्ष पहले अमरीका में एक
क क्रान्ति ला दी लेकिन कुछ लोगों के लिए इसका परिणाम बुरा
जब अमरीका का विकास हो रहा था और व्यापारी महाजन रुपया
तो इंगलैंड की विधवाओं और अनाथों द्वारा खरीदी हुई हुंडियों
न हुआ और इस प्रकार उन्होंने अपनी बचाई हुई पूँजी खो दी।
मरीका के राज्यों की तरह अमरीकन राज्यों ने भी आसानी से कर्ज
नहर खूब रुपया उधार ले लिया और जब कठिन समय आया तो

करते हुए एक अधिकृत सूत्र का कहना है कि "लंदन के पूँजी-बाजार की शुरू की शिथिलता का कारण था उन्नीसवीं सदी के ज्यादा भाग में दक्षिणी अमरीकन जनतंत्रों का उत्पात और भ्रष्टता, उनकी अस्थिरता और आर्थिक असावधानी।"

ब्रिटिश साहसी व्यवसायियों की दक्षिणी अमरीका की असफलता और उसके फलस्वरूप लिये हुए उनके योरोपीय औद्योगिक विकास की सफलता की पारस्परिक तुलना करना शिक्षाप्रद है। योरोप में कपड़े की मिलें और मशीनों के कारखाने जरूरत देखकर खोले गए; जब तक कि इन मिल-कारखानों से मुनाफा न हुआ, किसी को भी एक पैसा न दिया गया। जब कि, इसके विपरीत दक्षिणी अमरीका में कर्ज देने के लिए ही दिये गए और इस बात का खयाल नहीं रखा गया कि कर्ज पाने वाले देश रुपए लौटा सकेंगे या नहीं या वे कर्ज पाने के योग्य हैं या नहीं। किसी भी देश का आर्थिक बाजार एक उपयोगी सेवक है और साथ ही-साथ कठोर स्वामी भी।

जिस समय ब्रिटिश पूँजीपतियों ने अपनी दृष्टि संयुक्त राष्ट्र अमरीका की ओर डाली, उस समय हमारे देश में स्वतन्त्र पूँजी नाम की कोई चीज न थी; अपनी जरूरतों को पूरा करने के बाद जो कुछ भी खेती की उपज से बचता था उसे नई फसलों और नई खेती में लगा दिया जाता था। इतनी बचत कभी न होती थी कि सड़कें, नहरें, बन्दरगाह और रेलवे बनाने पर रुपया खर्च किया जा सके। लेकिन अपने भाग्य के निर्माण के लिए ये सब कार्य आवश्यक थे; और लन्दन में उस वक्त सोने की भरमार थी। १८१५ और १८३० के बीच अंग्रेजों ने अमरीका में सिर्फ ५० लाख पौंड लगाए लेकिन अगले दस वर्षों में ही यह रकम ४ करोड़ पौंड तक पहुँच गई।

पूँजी लगाने की प्रेरणा बहुत-कुछ ईरी नहर की अद्वितीय सफलता से प्राप्त हुई जो कि सन् १८२५ में जाकर पूरी हुई। बफैलो और अलबनी के बीच की ३२६ मील की लम्बी नहर ७१४३७८९ पौंड खर्च पर बनाई गई, जिसके लिए पूँजी एकत्रित करने के लिए न्यूयार्क राष्ट्रीय बॉंड बेचे गए, जो कि करीबन सब-के-सब शीघ्र ही अंग्रेजों द्वारा खरीद लिये गए।

वे कर्ज न चुका सके। सन् १८३६ की खलबली के बाद तो स्वतन्त्र राज्यों ने अपनी जिम्मेदारियों से यानी ५० करोड़ रुपया चुकाने से इन्कार कर दिया और केन्द्रीय सरकार ने राज्यों के लिए कर्ज के प्रति अपनी जिम्मेदारी न होने का साफ-साफ एलान कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि विदेशों में अमरीकन पूँजी आसमान से एक साथ जमीन पर आ पड़ी। जब अमरीकन प्रेसीडेण्ट टाइलर के प्रतिनिधि डफ ग्रीन पेरिस पहुँचे तो रोथ्सचाइल्ड ने उन्हें यह उदासीनतापूर्ण जवाब दिया, "आप अपनी सरकार से जाकर कह सकते हैं कि आप उस व्यक्ति से मिल चुके जो कि योरोप के पूँजी सम्बन्धी मामलों में सबसे बड़ा है, और उसने आपसे यह कहा कि वे एक डालर भी कर्ज लेने के लिए तैयार नहीं हैं।"

रोथ्सचाइल्ड के जवाब ने वैदेशिक पूँजी के साथ अमरीकन सम्बन्ध के प्राथमिक अव्यावहारिक परिच्छेद को बन्द कर दिया। प्रथम महायुद्ध के बाद ही जाकर हमारी पूँजी पूरी तरह पनप सकी।

इस बीच, इंगलैंड को अपनी ६ करोड़ पौंड की सालाना बचत को लगाने के लिए दूसरी जगह देखनी पड़ी। सन् १८४० में उन्होंने अपने ही देश में रेलवे के विकास पर रुपया खर्च किया और सन् १८५० में रेल बनाने के इस काम को योरुप, कैनेडा, भारत और फिर दक्षिणी अमरीका और संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ले गए।

ब्रिटिश पूँजी के विकास को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र अमरीका चुप नहीं बैठ सकता था। अमरीका में ठेकेदार और टेकनीकल विशेषज्ञों की कमी नहीं थी; अंग्रेजों को सिर्फ पूँजी देनी थी और उन्होंने यह पूँजी दी भी। सन् १८६६ तक उन्होंने अमरीका में साढ़े १५ लाख रुपया लगा दिया और सन् १८७० और सन् १६०० के बीच के वर्षों में अमरीका में ब्रिटिश पूँजी का कार्य बहुत ही दर्शनीय रहा, विशेषतः हमारे पशु-साम्राज्य की वृद्धि के लिए।

सन् १८४० के बाद बीस वर्षों तक गाय, बैल, भेड़, घोड़े आदि दिन-पर-दिन बढ़ती तादाद में इंगलैंड से अमरीका आने लगे। और जब

कहना है कि "अमरीका के इस पश्चिमी इलाके में वैदेशिक पूँजी ने बहुत ही बड़ा काम किया है। रेल, खान, चक्की और कृषि-सम्बन्धी कार्य पर ब्रिटिश पूँजीपति ने अमरीका के आर्थिक विकास में एक बहुत बड़ा सहयोग दिया है।"

वैदेशिक औद्योगिक विकास का भार जो ब्रिटेन के भाग में पड़ा था, सन् १६०० तक बहुत-कुछ पूरा हो चुका था। अब इस दिशा में ब्रिटेन सर्वप्रधान न रहा, बल्कि वह आधे दर्जन औद्योगिक देशों में हो गया। ब्रिटेन के पुराने इस्पात के कारखाने विदेश में ब्रिटेन की पूँजी से ही खड़े किये गए दूसरे आधुनिक कारखानों से मुकाबला न कर सके। अब निर्यात के लिए अधिक पूँजी भी न थी। यहाँ तक कि खाद्य के लिए हरे-भरे ब्रिटिश द्वीप-समूह को दूसरे देशों पर निर्भर रहना पड़ता था।

लेकिन ब्रिटेन अपनी गलतियों और अपने साम्राज्यवादी कारखानों के बावजूद अमरीका के पश्चिमी इलाके के रहन-सहन के स्तर को दुगुना ऊँचा करने में सहायक हुआ है। उसने उद्योग और व्यापार-वाणिज्य में एक ऐसी जान फूँकी है जिसकी शक्ति अभी तक कायम है।

१६वीं शताब्दी के ब्रिटिश अनुभव के बहुत-से अंगों का पूरा विश्लेषण करना आवश्यक है, किन्तु यहाँ सम्भव नहीं। कुछ बातें फिर भी आसानी से संक्षेप में इस प्रकार कही जा सकती हैं।

१. ऐसे इलाकों में पूँजी और कौशल का लगाना जो कि इस सहायता को प्राप्त करने के उपयुक्त थे, जैसे कि पश्चिमी योरप—जहाँ पूँजी लगाना और पूँजी पाना दोनों सफल हुए।

२. ऐसे देश, जो कि आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पूँजी पाने और काम में लाने के उपयुक्त न थे जैसे कि सन् १८२० के दक्षिण अमरीका के देश—जहाँ न सिर्फ पूँजीपति को ही नुकसान हुआ, बल्कि उन देशों को भी।

३. ऐसे देश, जो कि पूँजी का सदुपयोग तो कर सकते थे पर जिनकी अर्थ-व्यवस्था न तो स्थिर थी और न जिन्हें पर्याप्त अनुभव था; जैसे कि १८३०

सकता है। पूँजी उन पिछड़े हुए देशों में जाने लगती है जहाँ मोटे मुनाफे की गुन्जाइश है और शीघ्र ही विशेषाधिकारों की माँग शुरू कर देती है। यदि वे विशेषाधिकार नहीं मिलते तो पूँजीपति अपनी सरकार से सहायता की अपील करते हैं और यह सहायता उन्हें सैनिक हस्तक्षेप के रूप में प्राप्त होती है। अन्त में पिछड़े हुए इलाके पूँजीपतियों के अधीन हो जाते हैं—अपनी सत्ता के सीमित हो जाने पर या अपने देश की भूमि पूँजीपतियों द्वारा खरीदी जाने पर या युद्ध में हार जाने पर।

सन् १८७५ और १९२५ के बीच संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने जिस मार्ग को पकड़ा वह इसी सिद्धान्त का द्योतक है। जैसे ही हमारी रेलें, बन्दरगाह, पुल—हमारे यातायात के साधन विकसित हो गए, हम विदेशों मे आर्थिक विस्तार के लिए तैयार थे।

इस अवधि में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपने देश की सीमाओं से बाहर निकलकर अलास्का को अपने अधीन कर लिया, समोआ को तटस्थ रहने के लिए बाध्य कर दिया, हवाई थिपका पर कब्जा कर लिया और स्पेन से लड़कर प्यूरटो रीको फिलीपाइन्स छीन लिए। क्यूबा, पनामा, डोमिनिकल जनतन्त्र, हैटी, एल सेल्वाडोर, मेक्सिको, ग्वाटामाला, होण्डुराज कोस्टारीका, कोलम्बिया और वेनजुला हमारे अंकुश के नीचे रहने लगे।

इसके बाद विरोधाभास आरम्भ हुआ। प्रथम महायुद्ध के बाद से संयुक्त राष्ट्र अमरीका की शक्ति बढ़ती ही गई और यह आशा करना गलत न होता कि डालर कूटनीति भी इसी परिमाण में बढ़ेगी। लेकिन दर-असल, दूसरे महायुद्ध का भारी दबाव पड़ने पर भी हम विपरीत दिशा में बढ़ते रहे। क्यूबा प्लाट-संशोधन के बन्धनों से मुक्त हो चुका है। फिलीपाइन्स भी स्वराज्य पा चुका है। दक्षिण अमरीकन देशों में हमारे नाविकों की चढ़ाई पिछले पन्द्रह वर्षों से केवल एक ऐतिहासिक कथा बनकर रह गई है। प्यूरटोरीको, हवाई और अलास्का स्वतन्त्रता की ओर अग्रसर हो रहे हैं। हमने योरोप के पुनरुत्थान के लिए बहुत पूँजी खर्च की, जो कि आगे हमारा प्रतियोगी बना। अन्त में और शायद सबसे महत्वपूर्ण कार्य नई

था ५२। हमने ७५ आज़ाद ता दी पर साथ में रोक लगा दी। ३५
वजात जनतंत्र को अपने संविधान में संशोधन करने के लिए हमने बाध्य
किया—न तो वह कोई ऐसी सन्धि कर सकता था जिससे कि उसकी स्वतन्त्रता
को खतरा हो और न वह अपनी आय से ज्यादा सार्वजनिक कर्ज़ ले सकता
था। इन धाराओं के अन्तर्गत, जो कि 'प्लाट' संशोधन के नाम से मशहूर हैं,
हमने क्यूबा के अन्दरूनी मामलों में बार बार दखल दिया।

कैरेबियन इलाके में जिस परिमाण में अमरीकन स्वार्थ दाँव पर लगा था, यह समझना कठिन नहीं है; चाहे इसका समर्थन न किया जा सके कि क्यूबा को हमें केवल आधी स्वतन्त्रता देनी चाहिए थी। इतना ही यह भी समझने योग्य है कि हमें क्यूरटो टीको को अपने कब्ज़े में कर लेना चाहिए था।

इसके अलावा सन् १८९८ की पेरिस-सन्धि द्वारा स्पेन को एक अरब रुपया देकर सुदूर-स्थित फिलिपाइन्स को संयुक्त राष्ट्र ने अपने अधीन कर लिया। हमारे इस प्रभाव के बढ़ते हुए नग्न रूप के समर्थन में वाइटलॉ रीड ने कहा:

"प्रशान्त महासागर अब हमारे हाथों में है। करीब आधे से ज्यादा समुद्र-तट हमारा है, बाकी के ऊपर हमारा प्रभुत्व है और बीच-बीच में सैंडविच और एलूशियन द्वीपों पर अड्डे हैं। फिलिपाइन्स के महान् द्वीप-समूह पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का अधिकार हो जाने से अब हम प्रशान्त महासागर के दूसरे तट पर भी प्रभुत्वशाली स्थिति में हो गए हैं......"

यह था हमारा अधपका साम्राज्यवाद, जो शराब की तरह हमारे दिमागों में चढ़ गया। लाखों अमरीकनों को इसने गहरी अशान्ति भी पहुँचाई।

लेकिन दक्षिण अमरीकन देशों में, खास तौर पर कैरेबियन इलाके में, हम अपनी शक्तियों का इच्छापूर्वक प्रयोग कर सके। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:

पर कृपा कर सकें—इस कार्य की आलोचना अमरीकन जनता बीस बरस तक करती रही। प्रशान्त महासागर में भूमध्य रेखा के दक्षिण में समोआ नामक राज्य से हमने सन् १८७८ में चुपचाप एक सन्धि कर ली जिसके अनुसार पागो-पागो नामक बन्दरगाह में हमें अपना नाविक अड्डा बनाने का अधिकार प्राप्त हो गया, और जब अमरीका के सरकारी प्रतिनिधि ने उन द्वीपों पर अमरीकन संरक्षण-शासन की घोषणा कर दी तो हमने फौरन ही अपने प्रतिनिधि का परित्याग कर दिया।

और इसी तरह जब हमने बिना सोचे-समझे पटाखों के बक्स में हाथ डालकर निकाला तो हमें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि हमारे हाथ में हवाई का इलाका था। सन् १८८७ तक हवाई हमको हर साल १ अरब रुपए की चीनी देता था और गन्ने के खेत ज्यादातर अमरीकनों के ही थे और जब सन् १८९० में मैकिनले टैरिफ एक्ट द्वारा चीनी-व्यापार की स्थिति सुरक्षित न रह सकी तो व्यापारियों ने अमरीकन संरक्षण-शासन द्वारा स्थिति काबू में करने का निर्णय किया। अमरीकन सरकार ने खुशी से मदद दी। अमरीकन विचार वाले हवाई-निवासियों ने सन् १८९३ की जनवरी में सार्वजनिक सुरक्षा के लिए एक समिति का संगठन किया। हमने दया करके अपनी नौ सेना भेजी और हमारी तोपों के नीचे इस सार्वजनिक सुरक्षा-समिति ने हवाई-राज-तन्त्र के अन्त की घोषणा की। इस खबर को पाकर रानी को आश्चर्य हुआ जो कि शान्ति से अपने महल में बैठी हुई हवाई द्वीपों पर राज्य कर रही थी। एक घंटे में ही इस नई सरकार को अमरीकन मन्त्री की स्वीकृति प्राप्त हो गई और महीना भी न बीता होगा कि अमरीकन सिनेट को हवाई द्वीप-समूह को अपने अधीन करने की सन्धि की सूचना दी गई।

यहाँ भी आप देखेंगे कि अमरीकन अपनी भाग्य-पूर्ति करने में हिचकते थे। अमरीकनों को सम्राट् बनने की आकांक्षा नहीं थी। विस्तारवादी और अविस्तारवादी मतों में इस सन्धि को लेकर आपस में बहुत दिनों तक झगड़ा चलता रहा।

सन् १८९८ के स्पेनिश-अमरीकन युद्ध ने हमारे विस्तार को बहुत बढ़ावा

दाँव लगा रखा था, चाहे उसका कितना ही नाटकीय प्रदर्शन हमने क्यों न किया हो, वह बाहरी दुनिया में हमारी बढ़ती दिलचस्पी का द्योतक था। सन् १९१४ तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका का दूसरे देशों पर १८ अरब ४३० करोड़ रुपयों का कर्ज चढ़ा हुआ था। सन् १९१९ में यह कर्ज बढ़कर ६३ अरब २६० करोड़ रुपए हो गया और सन् १९२९ में ९८ अरब ८१५ करोड़ रुपए तक पहुँच गया। हम लोग ज्यादातर आशावादी पूँजीपति थे। हमने सन् १९२० के लगभग वही काम किया जो कि अंग्रेजों ने सौ बरस पहले किया था—पहले रुपए लगा दिए और बाद में सोचा-देखा कि क्या करना है।

इस काल में सरकार का अधिकाधिक महत्वपूर्ण कार्य पूँजीपति की सहायता करना था। यह अनुमान करना गलत नहीं है कि सरकार का यह मुख्य कार्य न तो बदला है और न कभी बदल सकता है। लेकिन, फिर भी अचानक, हमारी शक्ति के शिखर पर पहुँचकर डालर-कूटनीति अशक्त हो गई। सन् १९३३ तक वह मर चुकी थी। आखिर ऐसा क्या हो गया था?

रुपया लगाने वाले देश के नाते से हमें यह देखना था कि जिन देशों में हम रुपए लगा रहे हैं वे स्थायी, समृद्धिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण बने रहें ताकि वे रुपया लौटा सकें। नाविकों के प्रयोग के बजाय अच्छे बर्ताव से मुनाफा बनाना ज्यादा सस्ता पड़ता था और यह था भी ज्यादा निपुण तरीका।

हमने अपने स्वार्थ को एक नई रोशनी में देखा और साथ ही अपने किये हुए कामों पर पछतावा भी किया। इतिहास में प्रायः पहली बार ही एक बढ़ता हुआ राष्ट्र अलग खड़ा होकर निष्पक्ष भाव से देख सका और इस निर्णय पर पहुँच सका कि वह अपने कार्यों द्वारा लाभ की बजाय अपनी हानि ज्यादा कर रहा है। जोर-जबरदस्ती की नीति पुरानी पड़ चुकी थी, से अब काम नहीं निकल सकता था। राष्ट्रीयता की भावना बढ़ रही थी।

१. पनामा—पनामा भू-डमरूमध्य से नहर निकालने के लिए १९०३ में कांग्रेस ने प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट को कोलम्बिया से बातचीत करने का अधिकार दिया। भाग्यवश इसी समय पनामा ने अपनी पचासवीं क्रान्ति शुरू कर दी—पचास वर्षों में यह पचासवीं क्रान्ति थी। इस क्रान्ति में कोलम्बिया-सरकार को हस्तक्षेप करने से संयुक्त राष्ट्र अमरीका की नौ-सेना ने रोका। दस दिन बाद ही पनामा की नई सरकार ने नहर का इलाका संयुक्त राष्ट्र अमरीका को दे दिया।

२. सैण्टो डोमिनगो—सन् १९०३ में अपनी अव्यवस्थित अर्थ-व्यवस्था के कारण सैण्टो डोमिनगो की यह दशा हो गई कि उसकी आय कुल २५ लाख रुपए थी और इसी में से ८५ लाख रुपए का कर्ज और ब्याज चुकाना था, जो कि उसने विदेशों से लिया था। शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने राज्य-कर-सम्बन्धी व्यवस्था अपने हाथ में ले ली। इसके बाद राजनीतिक हस्तक्षेप हुआ, और कई वर्षों के बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका की नौ-सेना ४ मई सन् १९१६ को सैण्टो डोमिनगो पर उतरी। अगले आठ वर्षों तक सैण्टो डोमिनगो संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सैनिक डिक्टेटरशिप के अधीन रहा।

३. हैटी—जब सन् १९१५ की क्रान्ति के फलस्वरूप फ्रांसीसी हस्तक्षेप का खतरा था, संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अपनी नौ सेना भेजकर हैटी निवासियों को बाध्य कर दिया कि वे एक अमरीकन मिलिट्री हाई कमीशन चुंगी वसूल करने के लिए एक अधिकारी और एक आर्थिक परामर्श-दाता रखें, साथ ही अमरीकन निरीक्षण में पुलिस-दल रहे।

४. निकारागुआ—संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १९०९ में फोनसेका की खाड़ी में एक दूसरी नहर बनाने और अपना नाविक अड्डा रखने के लिए निकारागुआ-सरकार के सामने प्रस्ताव रखा, जिसका कि निकारागुआ-सरकार ने विरोध किया। एक बार फिर भाग्यवश क्रान्ति फूट पड़ी। क्रान्ति को दबाने के सरकारी प्रयत्नों को एक बार फिर संयुक्त राष्ट्र अमरीका के नाविकों ने रोका। अमरीका को नहर बनाने और नाविक अड्डा खोलने का अधिकार दे दिया, साथ ही नहर के ऊपर संयुक्त राष्ट्र अमरीका को ९९ वर्षों के लिए सम्पूर्ण अधिकार प्राप्त हुए।

लोगों के विचार बदल चुके थे; अब हमारी आत्मा पुराने आदर्शों को सहन नहीं कर सकती थी।

"संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने दक्षिणी अमरीका में अपने को उसी स्थिति में पाया," इस काल के एक विशेषज्ञ का कहना है, "जो स्थिति ब्रिटेन की फारस, चीन, आयरलैंड, दक्षिणी अफ्रीका और भारत में थी। दक्षिणी अमरीका के प्रति हमारी नई नीति का प्रथम प्रयास सख्ती बरतने के बजाय मेल-जोल से काम लेना, अनुशासक होने के बजाय मित्र होना और शोषण के बजाय सहयोग देना था।"

सहयोग का प्रथम संकेत प्रेसीडेण्ट कूलिज की ओर से आया जब उन्होंने सन् १९२७ में हेनरी एल० स्टिमसन को निकारागुआ इस उद्देश्य से भेजा कि वह विरोधी राजनीतिक दलों को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के निरीक्षण में चुनाव लड़ने के लिए तैयार करे। यह प्रयोग आंशिक रूप में सफल रहा। चार वर्ष बाद दोनों दलों ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका से चुनाव का निरीक्षण करने के लिए कहा।

मेक्सिको में प्रेसीडेण्ट कूलिज एक नया तरीका काम में लाये। अमरीकन तेल के कारखानों पर मेक्सिको कब्जा करना चाहता था—संयुक्त राष्ट्र अमरीका के समाचार-पत्र सशस्त्र हस्तक्षेप की बात करने लगे। इस झगड़े को निबटाने के लिए प्रेसीडेण्ट कूलिज ने ड्वीट मारो को मेक्सिको में अपना राजदूत बनाकर भेजा और जब मेक्सिको के प्रेसीडेण्ट कालेस ने मारो से पूछा कि इस समस्या का क्या हल है तो उन्हें बताया गया कि मेक्सिको का सर्वोच्च न्यायालय सन् १९१७ से पहले दिये हुए तेल के अधिकारों की सुरक्षा मान चुका है। इस प्रकार मेक्सिको इस सिद्धान्त को निबाह सका कि मेक्सिको की भूमि पर उसका ही अधिकार है और साथ ही संयुक्त राष्ट्र अमरीका भी इस सिद्धान्त की रक्षा कर सका कि सन् १९१७ से पहले दिये हुए अधिकारों को नए कानूनों से नहीं छीना जा सकता। जब यह सवाल फिर सन १९३८ में सामने आया तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने हस्तक्षेप की किसी भी प्रकार की धमकी देकर मेक्सिको की मैत्री का बलिदान करने से इनकार कर दिया।

उसका उद्देश्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, वस्तुतः शक्ति की नीति को अपनाना है जो कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका की आत्मा के विरुद्ध है...।"

इसी समय सन् १६२० ई० में समनर वेल्स नामक युवक कूटनीतिज्ञ ने डालर-कूटनीति के साथ अपना प्रबल बौद्धिक मतभेद बताया। उसने लिखा :

"जहाँ तक संयुक्त राष्ट्र अमरीका के हितों का सम्बन्ध है, डोमीनियन जनतन्त्र के मिलिट्री कब्जे के फलस्वरूप जो लाभ प्राप्त हुआ है वह बहुत नगण्य है। यदि हम उसकी तुलना उस सन्देह, भय और घृणा की भावनाओं से करें, जो कि हमारे कब्जे के कारण सारे अमरीकन महाद्वीप में पैदा हो गई है,...हरेक सशस्त्र हस्तक्षेप या कब्जे का यही परिणाम होता है।

"व्यावसायिक सम्बन्धों को बढ़ाना, शिक्षा-सम्बन्धी सुविधा देना, उत्पादन के ध्येय से पूँजी लगाना, जरूरत पड़ने पर टेकनीकल सहायता देना—इन बातों से संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने इच्छित फल को प्राप्त कर सकता है, न कि सशस्त्र कब्जे, सशस्त्र हस्तक्षेप या चुनावों के सशस्त्र निरीक्षण से।"

वेल्स के इस नए प्रोग्राम का अर्थ था साम्राज्यवाद को एक नए स्तर पर उठा देना, जहाँ कि 'साम्राज्यव—' —— छिपी हुई भावनाएं लुप्त हो सकें। वेल्स को अपनी योजना को [illegible] रिणत करने का मौका तब मिला जब नए प्रेसीडेण्ट फ्रैंक[illegible] वेल्ट ने उनको सन् १६३३ में असिस्टेंट सेक्रेटरी आफ स्टेट ब[illegible]

नए प्रेसीडेण्ट ने अपने प्रार[illegible] में इस बात का जिक्र करते हुए वह बात कही जिस पर इतिह[illegible] रेत होना था : "विश्व-नीति के सम्बन्ध में," उन्होंने कहा, '[illegible] अच्छे पड़ोसी की नीति बरतने के लिए समर्पित करता[illegible] ड़ोसी जो दृढ़तापूर्वक आत्म-सम्मान कायम रखता है और इस[illegible] के अधिकारों का भी आदर

करता है—ऐसा पड़ोसी जो अपने उत्तरदायित्व की पवित्रता का और अपने पड़ोसियों द्वारा किये हुए समझौतों का आदर करता है।"

कुछ हफ्तों बाद ही अच्छे पड़ोसी की नीति से दक्षिणी अमरीका के देशों को देखा जाने लगा और यह नीति पूरी तरह सन् १९३३ से बरती जाने लगी जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने वह कदम उठाया जिसने दक्षिणी अमरीका के शत्रु-देशों को मित्रों में परिणत कर दिया। सन् १९३३ के पैन-अमरीकन सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की भी वर्ष पुरानी नीति को बदलते हुए कार्डेल हल ने इस घोषणा का समर्थन किया, "किसी भी राज्य को दूसरों के अन्दरुनी या बाहरी मामलों में दखल देने का हक नहीं है।" शीघ्र ही प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने इसका समर्थन करते हुए कहा, "अब संयुक्त राष्ट्र अमरीका की स्पष्ट नीति सशस्त्र हस्तक्षेप के विरुद्ध है।" पाँच महीने बाद ही 'प्लाट संशोधन' रद्द कर दिया गया और थोड़े दिन बाद ही नौ-सेना को हैटी से वापस बुला लिया गया। अच्छे पड़ोसी की नीति पूरी तरह चालू हो चुकी थी।

निकटवर्ती स्वार्थों को देखते हुए इस नीति का परिणाम यह हुआ कि दूसरे महायुद्ध में हमारे दक्षिण में विश्वसनीय मित्रों का समूह था। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस नीति द्वारा साम्राज्यवाद और डालर कूटनीति के अन्त की जागरूकता प्राप्त हुई और हम यह समझने लगे कि भविष्य में हमारा भला अच्छे विश्व-नागरिक बनने से ही हो सकता है। फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट, कार्डेल हल, समनर वेल्स की अच्छे पड़ोसी की नीति में वह बीज थे जो अब चतुर्थ-लक्ष्य नई निर्भीक योजना में पल रहे हैं।

: ५ :

अच्छे पड़ोसी की नीति : चतुर्थ लक्ष्य की अग्रदूतिका

"एक किसान बीज बोने निकला," ईसा ने कहा, "और जब वह बोने चला तो कुछ बीज रास्ते में गिर गए, जिन्हें मुर्गियों ने आकर खा डाला।

[illegible]
और तब बढ़े हुए झाड़ों ने उन्हें दबा ही डाला। लेकिन
कुछ बीज अच्छी भूमि पर गिरे और उन्होंने फल दिया—कहीं तो सौ गुना फल
कहीं ने साठ गुना और कहीं ने तीस गुना फल आया।"

अच्छे पड़ोसी की नीति द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने ठीक-ठीक इसी प्रकार बीज बोए हैं जैसे कि ईसा के किसान ने। हमने भी पथरीली, कँटीली और अच्छी भूमि पर समान रूप से बीज बोए हैं। हमारे बीज बोने की सफलता और असफलताओं से नई आर्थिक योजना के निर्माताओं के मस्तिष्क पर गहरी छाप पड़ती है चाहे सरकारी कर्ज, निजी पूँजी या टेकनीकल सहायता के रूप में ये बीज बोए गए हों। अच्छे पड़ोसी की नीति की आर्थिक क्षेत्र में सफलताएँ-असफलताएँ सारे संसार के लिए भी हमारी नई वृहत् योजनाओं की उपयोगिता का मापदण्ड हैं। अगर हम, मिसाल के तौर पर, अच्छे पड़ोसी की नीति का प्रयोग पीपे में लगे हुए नल की तरह करें, जिसे जब चाहा बन्द किया, जब चाहा खोला, तो हमारी चतुर्थ-लक्ष्य की सुदूरवर्ती योजना में पिछड़े हुए इलाकों का विश्वास करना कठिन होगा। इसलिए यह देखना शिक्षाप्रद होगा कि किस प्रकार पिछले पन्द्रह वर्षों में हमारी नीति ने दक्षिणी अमरीका में प्रगति की है।

अच्छे पड़ोसी की नीति का प्राथमिक रूप आर्थिक न होकर राजनीतिक था। शुरू में लोगों की भावनाओं से इसका सम्बन्ध था, और चूँकि लोगों की भावनाओं का अपनी जेब के बटुए से घनिष्ट सम्बन्ध है, इसलिए यह केवल दैवयोग न था कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका की पूँजी दक्षिण अमरीका में बढ़ती ही रही, यहाँ तक कि सन् १६४० में २० अरब रुपए की लड़खड़ा देने वाली रकम तक पहुँच गई; इस रकम का करीब आधा रुपया व्यापार मे लगाई गई व्यक्तिगत पूँजी, सीक्योरिटीज और जमीन-जायदाद से आया। दूसरे महायुद्ध के पहले ही अर्जेण्टाइना-सरकार को रेडेण्डो इस्पात

करता है—ऐसा पड़ोसी जो अपने उत्तरदायित्व की पवित्रता का और अपने पड़ोसियों द्वारा किये हुए समझौतों का आदर करता है।"

कुछ हफ्तों बाद ही अच्छे पड़ोसी की नीति में दक्षिणी अमरीका के देशों को देखा जाने लगा और यह नीति पूरी तरह सन १९३३ से बरती जाने लगी जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने वह कदम उठाया जिसने दक्षिणी अमरीका के शत्रु-देशों को मित्रों में परिणत कर दिया। सन् १९३३ के पैन-अमरीकन सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सौ वर्ष पुरानी नीति को बदलते हुए कार्डेल हल ने इस घोषणा का समर्थन किया, "किसी भी राज्य को दूसरों के अन्दरूनी या बाहरी मामलों में दखल देने का हक नहीं है।" शीघ्र ही प्रेसीडेंट रूज़वेल्ट ने इसका समर्थन करते हुए कहा, "अब संयुक्त राष्ट्र अमरीका की स्पष्ट नीति सशस्त्र हस्तक्षेप के विरुद्ध है।" पाँच महीने बाद ही 'प्लाट संशोधन' रद्द कर दिया गया और थोड़े दिन बाद ही नौ-सेना को हैटी से वापस बुला लिया गया। अच्छे पड़ोसी की नीति पूरी तरह चालू हो चुकी थी।

निकटवर्ती स्वार्थों को देखते हुए इस नीति का परिणाम यह हुआ कि दूसरे महायुद्ध में हमारे दक्षिण में विश्वसनीय मित्रों का समूह था। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से इस नीति द्वारा साम्राज्यवाद और डालर कूटनीति के अन्त की जागरूकता प्राप्त हुई और हम यह समझने लगे कि भविष्य में हमारा भला अच्छे विश्व-नागरिक बनने से ही हो सकता है। फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट, कार्डेल हल, समनर वेल्स की अच्छे पड़ोसी की नीति में वह बीज थे जो अब चतुर्थ-लक्ष्य नई निर्भीक योजना में फल रहे हैं।

: ५ :

अच्छे पड़ोसी की नीति : चतुर्थ लक्ष्य की अग्रदूतिका

"एक किसान बीज बोने निकला," ईसा ने कहा, "और जब वह बोने चला तो कुछ बीज रास्ते में गिर गए, जिन्हें मुर्गियों ने आकर खा डाला।

युद्ध में बीमार, निरक्षर -

समय," 'न्यूयार्क टाइम्स' के एक संवाददाता का कहना ९
अपनी जनता के लिए पर्याप्त अन्नोत्पादन नहीं करते थे। कुछ
क्षरता ७५ प्रतिशत तक पहुँची हुई थी। ८० प्रतिशत लोगों
बीमारियाँ थीं और १० प्रतिशत को मलेरिया। हर पाँच बच्चों में
ता था और औसत आयु की अवधि पैंतालीस वर्ष तक थी।"

दिनों बाद ही संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने तीन संस्थाएं स्थापित
का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों में टेकनीकल और दूसरी आवश्यक सहायता
जैसे कि अस्पताल और स्कूल-निर्माण, पानी पहुँचाने और नालियाँ
घ, प्राथमिक शिक्षा, और आधुनिक कृषि-सम्बन्धी शिक्षा आदि को
पहुँचाना।

किन युद्ध के बाद सूरत बदल गई। जैसे ही योरोप और जापान के
बनाने के केन्द्रों में फिर जान आई, जैसे ही खरीदारों के बजाय
वाले ज्यादा हो गए दक्षिण अमरीका के देश उतनी ही गति और
ता से माल बनाने में असमर्थ रहे, जो कि स्वस्थ विकास के लिए
आवश्यक था। कई बार तो उनका बनाया हुआ माल विदेशी माल से
। होता था और कीमत ज्यादा होती थी। इस सबका परिणाम हुआ—
नीय बाजार की मन्दी, मजदूरों की बेकारी और अन्त में सामाजिक
र आर्थिक अशान्ति।

विदेशों से मशीनें और कच्चा माल खरीदने के लिए पर्याप्त पूँजी न
ही। पूँजी का अधिक भाग भोग-विलास की वैदेशिक सामग्रियों पर खर्च
हो गया और इस कारण या तो औद्योगीकरण धीमा पड़ गया या बिलकुल

मिलों के बनाने के लिए एक अरब रुपया आयात-निर्यात बैंक द्वारा प्राप्त हुआ था।

सुमनर वेल्स ने व्याख्या करते हुए कहा कि "यह कर्ज इस विश्वास पर आधारित है कि इन गोलार्द्ध की सामाजिक प्रगति और राजनीतिक स्थिरता लोगों के रहने-सहने के स्तर को ऊँचा करने पर ही निर्भर है, और सच्चे लोकतन्त्र के विकास के लिए आहार, सफाई, शिक्षा और यातायात आवश्यक हैं। हमारे शुरू किये हुए आर्थिक और पूँजी सम्बन्धी सहयोग के कार्य न केवल राजनीतिक और सैनिक सुरक्षा की सम्भावना बढ़ा देंगे बल्कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका के निर्यात की माँग और क्रय-शक्ति बढ़ा देंगे।"

जब कि सरकार दक्षिण अमरीका को कर्ज-पर-कर्ज दे रही थी, व्यक्तिगत पूँजीपतियों ने सारे देश में औद्योगीकरण की लहर ला दी। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की पूँजी स्थानीय पूँजी के साथ बड़े-बड़े कारखाने बनाने लगी, खास तौर पर दैनिक व्यवहार की चीजें जैसे कि कपड़ा, चमड़ा और टीनों में बन्द खाद्य-सामग्रियों के कारखाने। कीमतों पर कंट्रोल न था इसलिए मुनाफा बहुत होने लगा। माल बनाने पर कितना खर्च होता है, इसकी परवाह न थी; जितनी माँग थी उतना माल न बन पाता था। सन् १९३५ और १९४१ के बीच सिर्फ अर्जेण्टाइना ने ४ लाख ६२ हजार से मजदूरों की संख्या ८ लाख २६ हजार तक बढ़ा ली और अपने बने हुए माल की कीमत लगभग दुगुनी कर ली।

सरकारी कर्ज और व्यक्तिगत पूँजी के अलावा संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने दक्षिण अमरीका को इस दौरान में कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा-सम्बन्धी कार्यों में सहायता दी। इस सहायता से हमारी व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक पूँजी पर कोई असर न पड़ा।

सन् १९३८ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने वैज्ञानिक और सांस्कृतिक सहयोग के लिए एक पारस्परिक विभागीय समिति स्थापित की जिसमें इस समय २५ केन्द्रीय विभागों के प्रतिनिधि हैं। उदाहरण के लिए, कृषि-विभाग अपने विशेषज्ञों को दक्षिण अमरीका भेजता है ताकि वहाँ के जनतन्त्रों

ना चाहिए तरना साए

र न हों जब तक कि वह तरना सीए
की बात है कि अच्छे पड़ोसी की नीति के आर्थिक पहलू म
श्रेय राजनीतिज्ञों को नहीं वरन् व्यवसायियों को है — उन्होंने
में प्रथम व्यावहारिक प्रस्ताव पेश किये। दक्षिणी जनतन्त्रों
वसायियों ने दिन-पर-दिन ज्यादा पूँजी खर्च की। संयुक्त राष्ट्र
। सन् १९४८ में बाहर भेजे हुए ४ अरब ५० करोड़ रुपयों का
ग दक्षिण अमरीका गया। दिन-पर-दिन बढ़ती सामाजिक
र नित्य की क्रांतियों ने पूँजी लगाने में और पहले की लगी हुई
लिए रुकावट पैदा की चूँकि हस्तक्षेप की नीति एक-चौथाई
रानी हो चुकी थी इसलिए दक्षिण अमरीका के आर्थिक स्वास्थ्य
सहायता देने के अलावा और कोई चारा न था।

दक्षिण अमरीकनों ने पश्चिमी गोलार्ध के लिए मार्शल-योजना-
दूसरी योजना की माँग की जिसके द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमरीका की
पूँजी दक्षिण अमरीकन देशों के सुधार पर खर्च की जानी थी। यह
री अमरीका के व्यवसाय-समुदाय को पसन्द न आई हालाँकि कर्कवुड
नामक अधिकारी का मत था कि आयात-निर्यात-बैंक "पानी से
। पैदा करने, यातायात और खेती की जमीन को सुधारने के बुनियादी
" की शर्त के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है। जगह-जगह
ल-योजनाएं आरम्भ करने पर उत्तरी अमरीकनों को जो आपत्ति थी
संक्षेप में समझाते हुए दूसरे अधिकारी जेम्स एस० केम्पर ने कहा कि
कामों का मतलब है "सरकारों द्वारा ऐसे आर्थिक प्रबन्ध जिनकी परिधि

रुक गया। मुद्रा का मूल्य गिर गया। मुद्रा-बाहुल्य ने उद्योग और व्यव-साय को हानि पहुँचाई, मजदूरों को भयभीत और क्रोधित किया; दक्षिण अमरीकन देशों पर मौत की तलवार झूलने लगी।

परिणाम हुआ क्रान्ति और डिक्टेटरशिप का पुनः आगमन। समनर वेल्स ने बताया कि "सन् १९४८ में कोलम्बिया में राजनीतिक बलवे हुए, कोस्टा में क्रान्ति हुई, मध्य अमरीका में भयंकर अशांति फैली, पनामा, पैराग्वे और बोलविया में कई असामयिक बलवे हुए, चिली में राजनीतिक और सामाजिक उपद्रव बने रहने लगे...और फिलहाल पेरू में प्रजातन्त्रवाद का गला घोंटा जा चुका है।"

दूसरे महायुद्ध और सन् १९४९ के बीच हमारी सीमा के दक्षिण में बारह विप्लव और क्रांतियाँ हुईं। लड़ाई के बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका और दक्षिणी अमरीका के देशों के बीच बहुत अच्छे सम्बन्ध न रहे, दक्षिण अम-रीकनों का शायद यह ख्याल था कि हमने उनकी पूरी मदद नहीं की।

इतना सब होते हुए भी यह प्रत्यक्ष है कि दक्षिण अमरीका अच्छे पड़ोसी की नीति के आरम्भ होने के पूर्व से अब कहीं ज्यादा अच्छा है। दक्षिण अमरीकन देशों के मामलों में हस्तक्षेप न करने का सिद्धान्त अब भी हमारी नीति का मुख्य पथ-प्रदर्शक है और इसकी अपनी ऐतिहासिक महत्ता है। दक्षिणी अमरीका सन् १९३९ से तिगुनी ज्यादा डालर-मूल्य की चीजें बाहर बेच रहा है। योरोप से युद्ध-पूर्व व्यवसाय वस्तुतः फिर स्थापित हो चुका है; इसका बहुत-कुछ कारण मार्शल-योजना है, जिसने योरोप की क्रय-शक्ति को बढ़ा दिया है।

दस साल पहले हमने दूसरे अमरीकन जनतन्त्रों से सिर्फ २५ करोड़ रुपए का माल मँगाया। सन् १९४४ में यह रकम साढ़े सात अरब तक बढ़ गई। सन् १९४८ में साढ़े ग्यारह अरब रुपए तक पहुँची—इसमें २ अरब २६ करोड़ ५० लाख रुपए की वह रकम शामिल नहीं है जो योरोपीय-सुधार-योजना और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के फौजी कब्जे के इलाकों की खरीद और वायदों द्वारा दक्षिण अमरीका को प्राप्त हुई। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के

जील में दो संस्थाए स्था ... कि औद्योगीकर
ाने नहीं खड़े किए। उनका विश्वास था कि औद्योगीकर
ट के लिए पहले ठीक तरह के पुरुष और स्त्रियों की आव-
अच्छे यातायात के साधन होने चाहिएं और अच्छे ही टेक-
। इन सब बातों का विकास करने वे निकले।
य बुनियादी अर्थ-व्यवस्था-संघ और वेनजुला बुनियादी अर्थ-
स समय राकफेलर भाइयों के साढ़े तीन करोड़ और वेनजुला
दूसरी अमरीकन संस्थाओं और व्यक्तिगत पूँजी द्वारा प्राप्त
रोड़ रुपयों से काम कर रहे हैं। सन् १९४९ तक ऐसी नौ
गईं जो कि राकफेलर के बुनियादी सिद्धान्त पर चल रही थीं,
के स्वयं सहायतार्थ लाखों रुपए पर दान स्वरूप एक भी पैसा
पनियों के विशेषज्ञों ने ब्राजील और वेनजुला से पूछा, "आपको
ों की आवश्यकता है? आपकी खास मुश्किल क्या है?" इसके
ने तय किया कि स्थिति मुनाफा बनाते हुए सुधारी जा सकती है या
अधिकतर उन्होंने पाया कि यह सम्भव है।
राष्ट्रीय बुनियादी अर्थ-व्यवस्था-संघ तथा वेनजुला बुनियादी अर्थ-
-संघ द्वारा किये हुए कुछ कार्य निम्नलिखित हैं:
. ब्राजील को ज्यादा अनाज की जरूरत थी। राकफेलर ने सेण्टा रीटो
फार्म खोला और विभिन्न नसलों को मिलाकर एक ऐसे पौधे की खेती
कृषि-सम्बन्धी बीमारियों को मारने वाली थी।
२. अनाज बोरों में भरने से सड़ जाता था और भरने की मजदूरी भी

में वाणिज्य-व्यापार, उत्पादन, विभाजन, व्यय आदि सब ही आ जाते हैं—ये सब हमें एक व्यवस्थाबद्ध संसार की ओर ले आते हैं।" जिस सम्मेलन में ये वाद-विवाद हो रहे थे, एक दक्षिण अमरीकन वक्ता ने प्रस्ताव पेश किया कि सरकारी कर्ज़ के बजाय एकत्रित व्यक्तिगत पूँजी औद्योगिक विकास के लिए लगाई जाए। संयुक्त राष्ट्र अमरीका की आम प्रतिक्रिया थी कि ऐसा करना सम्भव हो सकता है लेकिन यह तब ही जब कि पूँजी लगाने वालों को इस बात का विश्वास दिलाया जा सके कि पूँजी वापस न मिलने पर पूरा-पूरा मुआवज़ा दिया जायगा।

दक्षिणी अमरीकनों के प्रतिनिधि डॉ० अलबर्टो लोस कमारगो ने, जो कि कोलम्बिया के भूतपूर्व प्रेसीडेण्ट थे, और बाद में अमरीकन राज्यों के संगठन के सेक्रेटरी जनरल थे, उत्तरी अमरीकन सदस्यों को याद दिलाया कि जहाँ व्यक्तिगत पूँजी नहीं होती वहाँ राष्ट्र को बहुत-से आर्थिक कार्य अपने हाथ में ले लेने होते हैं चाहे वह यह चाहे या न चाहे। उन्होंने कहा, "जब किसी शहर में बिजली नहीं होती तो वह मौका राजनीतिक सिद्धान्त बघारने का नहीं होता...असली बात तो यह है कि व्यक्तिगत पूँजी के प्राप्त न होने पर हरेक इस बात की माँग करेगा कि सरकार वह ज़रूरी काम अपने हाथ में ले जिसे आगे के लिए टाला नहीं जा सकता।"

इस सम्मेलन ने अन्त में निम्नलिखित बातों पर विरोध प्रगट किया : दण्ड के रूप में लगाए करों द्वारा वैदेशिक पूँजी और राष्ट्रीय पूँजी में अन्तर पैदा करना; बिना उचित मुआवज़ा दिये हुए पूँजी को हड़प लेना; आवश्यक टेक्नीकल और शासन-सम्बन्धी लोगों को आने से रोकना; और वैदेशिक पूँजी से शुरू हुए कामों से अनावश्यक सरकारी प्रतियोगिता।

एक अमरीकन व्यापारी ने तो दक्षिण अमरीका में अपनी पूँजी लगाने से पहले इस बात की भी प्रतिज्ञा न की कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकार उसके लिए रास्ता साफ़ कर दे। दूसरे महायुद्ध के दौरान में नेलसन राकफैलर अमरीकन मामलों के पारस्परिक सम्बन्ध रखने वाली संस्था के अध्यक्ष थे या संक्षेप में वह दक्षिण अमरीका के लिए सेक्रेटरी आफ स्टेट थे। उनका कार्य

हज तरीका । जहाँ उद्योग लिए परिस्थितियाँ अनुकूल हैं वहाँ पूँजी गाने के लिए भी यह संस्था तत्पर है।

यह संस्था बड़े कामों के बजाय छोटे कामों पर ज्यादा जोर दे रही है। दि प्रयोग असफल रहे तो भी कम लोगों को हानि पहुँचेगी; यदि सफल हुए कार्यों को बढ़ाया जा सकता है और लाखों व्यक्तियों को काम सीखने में भी हायता की जा सकती है। यह संस्था यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न कर ही है कि जिन विकास के क्षेत्रों में व्यक्तिगत पूँजी काम कर रही है वे धारणतः विचार से ज्यादा बड़े हो सकते हैं।

इस ध्येय-पूर्ति के लिए यह संस्था न केवल स्थानीय कर्मचारियों को र्य-दक्षता में प्रवीण करके स्थानीय साधनों से मुनाफा बनाने का प्रयत्न कर ही है बल्कि वेनजुला और ब्राजील के व्यापारियों को अपनी निज की पूँजी गाने के लिए भी प्रेरित कर रही है। इस संस्था की कम्पनियाँ जब लाभ दृष्टि से स्थायी रूप में स्थापित हो सकेंगी तब इनको स्थानीय व्यवसायियों बेच दिया जायगा और मूलधन को दूसरे विकास के कार्यों के लिए अन्य ानों में लगाया जायगा। ऐसी कम्पनियाँ जिनसे मुनाफा न होगा बन्द कर जायंगी। राकफेलर का मत है कि जो कम्पनी अपने कार्य से रुपया न कमा के, वह न अपने लिए और न दूसरों के लिए कभी लाभप्रद हो सकती है।

राकफेलर को यह कहने का शौक है कि "आर्थिक दृष्टि से संसार के जर इलाकों के लिए हम पूँजीवाद का सिंचाई के रूप में प्रयोग करना ाहते हैं।" यह कहना शायद ज्यादा ठीक होगा कि वह पूँजीवाद का एक र के रूप में प्रयोग करना चाहते हैं जो कि काफी गहरा खुदा होने पर जर भूमि के भीतरी जल-स्थानों को खोल देगा, क्योंकि अन्त में पिछड़े हुए ताके केवल अपने साधनों और शक्तियों के अनुपात में ही जीवित रह कते हैं और समृद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

बेहद ज्यादा होती थी। राकफेलर ने ऐलीवेटर बनाए जहाँ अनाज सुखाकर और सुरक्षित करके एक साथ जहाजों में भरा जा सकता था। परिणाम यह हुआ कि अनाज को भरने-उठाने का खर्च ५० प्रतिशत कम हो जाने की सम्भावना है।

३. सन् १९४७ में ब्राज़ील के आधे से ज्यादा सूअर हैजे से मर गए। राकफेलर ने सूअरों की एक नई नसल मँगवाई, जिन्हें हैज़ा नहीं हो सकता था। राकफेलर के कर्मचारियों ने एक ३०० एकड़ के फार्म में यह दिखा दिया कि किस निपुणता से इस दिशा में कार्य किया जा सकता है। शीघ्र ही ब्राज़ील-भर में किसानों ने राकफेलर के सूअर खरीदे और उसी के सिखाये हुए तरीके अपनाये।

४. ब्राज़ील का किसान-वर्ग अपनी खेती के लिए मशीनरी नहीं खरीद सकता। राकफेलर मशीनें किराये पर देता है और मशीनें चलाना भी सिखाता है।

५. ब्राज़ील की कॉफी के पेड़ों में एक खास तरह की बीमारी पैदा हो जाती थी जिससे लाखों रुपए साल की कॉफी बरबाद होती थी। राकफेलर ने वायुयानों का एक दस्ता भेजकर बीमारी मारने वाली दवा कॉफी के पेड़ों पर छिड़कवा दी।

६. वेनजुला में खाद्य एक बड़ी समस्या है, आधे से ज्यादा अनाज बाहर से मँगवाया जाता है। यद्यपि वेनजुला के तटवर्ती जल में मछली बहुतायत से पाई जाती है फिर भी वह रेफ्रिजरेशन के आधुनिक साधन न होने के कारण अब तक प्रधान खाद्य का स्थान न ले सकी थी। बाजार तक पहुँचने के पहले ही मछलियाँ खराब हो जाती थीं। राकफेलर ने मछली पकड़ने वाली नावों में बरफ का प्रबन्ध किया ताकि चन्द घंटों के बजाय कई दिनों और महीनों तक मछलियाँ रह सकें। इसके बाद ठंडी लारियों और बरफ से भरे हुए हवाई जहाजों में मछलियाँ को वेनजुला-वासियों तक पहुँचाया जाता है और कीमत पहले से आधी पड़ती है। इस प्रकार हरेक को लाभ हुआ, मिस्टर राकफेलर को भी।

लेरिया-विनाशक ... । ...
नय-समय पर डी० डी० टी० छिड़कती है और
प्रातशक रोगों को रोकने की योजनाएं शुरू कर दी हैं और
क रोग (कोलम्बिया की एक विशेष समस्या) को दूर करने
ारम्भ होने वाली है।
में कृषि-सहायक-योजना के अन्तर्गत २७ हजार एकड़ भूमि
शुशाला में प्रबन्ध-सम्बन्धी कार्यों का अभ्यास कराया जाता है
कीटाणु दूर करना बताया जाता है; राष्ट्रीय कृषि-संस्था के पास
ड़ का फार्म है; किसानों को रुपया उधार देने का काम पेराग्वुअन
द्वारा किया जाता है। एलीवेटर और कोल्ड-स्टोरेज का प्रयोग
ा है।"
कार्यों के प्रति दक्षिण अमरीकन देशों की पुनः स्वीकृति का सूचक
। खुद ज्यादा खर्च बर्दाश्त करना।
ह थी वह कम खर्च की योजना जो सचमुच सार्थक हुई, जिसने सहा-
ाने वाले देशों को अपने हाथ से नहीं खिलाया बल्कि उन्हें स्वयं अपने
। से खाना सिखाया। यह यथार्थ में नई निर्भीक योजना के एक
यक अंग का गतिरूप था। इस बात को प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन ने भी माना
न्होंने फरवरी, सन् १९४९ में कांग्रेस के सम्मुख इस योजना की अवधि
वर्ष और बढ़ाने तथा वार्षिक बजट २५ लाख रुपए से ५ करोड़ बढ़ाने
प्रस्ताव रखा। प्रेसीडेण्ट ने कहा—
"यह ऐसी योजनाएं हैं जो बरसों से चल रही हैं, जिन्हें जाँचा और
ा जा चुका है और जो सफल पाई गई हैं।...मैंने कुछ ही दिन पहले

दक्षिण अमरीका में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकार के दिये हुए सहयोग के तीन रूपों में टेक्नीकल सहायता सबसे सस्ती और सबसे ज्यादा सफलतापूर्वक काम करती हुई प्रतीत हुई। कृषि विभाग की दसवर्षीय पुरानी योजना के अन्तर्गत, उदाहरणार्थ, संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने केवल २० लाख रुपया प्रति वर्ष खर्च किया फिर भी सन् १९४६ तक १५ दक्षिण अमरीकन देशों में जगह-जगह अनुसंधानशालाएं खोली जा सकीं।

दक्षिण अमरीकन सरकारों ने अन्नोत्पादन में वृद्धि देखकर सन् १९४३ और सन् १९४८ के बीच आर्थिक सहायता २५ लाख रुपए से ५८ लाख ६० हजार रुपए तक बढ़ा दी—औसतन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के एक रुपए के बदले उनने तीन रुपए लगाए। इससे हमारा कृषि-विभाग भी प्रसन्न था। सहयोग केवल अच्छे पारस्परिक सम्बन्धों के कारण ही लाभदायक सिद्ध न हो रहा था बल्कि अच्छे व्यापार से भी लाभान्वित कर रहा था। इसलिए, पूर्वी गोलार्द्ध के देशों को भी कृषि-सम्बन्धी सहायता देने का निश्चय किया गया। सन् १९४९ में अफगानिस्तान, ईरान, फिलीपाइन्स, स्याम, सीरिया, चीन, लेबनान, ईराक, सौदी अरेबिया, मिस्र और यूनान में शिष्ट-मंडल भेजे गए।

इस दिशा में अन्तर-अमरीकन-विषयक-संस्था ने कम प्रभावशाली कार्य नहीं किया है। डिलन एस० मायर की अध्यक्षता में एक सरकारी कारपोरेशन २५ लाख डालर सालाना के खर्च पर काम कर रहा है। इस काम में करीब ३०० मर्द-औरत लगे हुए हैं जिनमें से दो-तिहाई अपना सारा समय दक्षिण अमरीका की सैकड़ों योजनाओं पर लगे हुए १० हजार मिस्त्रियों से काम कराने में व्यतीत करते हैं। ये योजनाएं अक्सर तीन से पाँच साल तक की होती हैं, और पहले से ही इस संस्था और स्थानीय सरकार के बीच कार्य-सम्बन्धी लिखित समझौते हो जाते हैं।

इस प्रकार के रचना-कार्यों का प्रतिरूप कोलम्बिया और पेरेग्वुए में भी मिलेगा। १२ फरवरी सन् १९४९ के 'न्यूयार्क टाइम्स' नामक समाचार-पत्र ने सूचित किया :

। रिण पारि स्थितियों विर के उ न

रण परिस्थितियों में अपने कारखाने छोड़ भी दिए—ऐसी पूँजी उत
ही लाभदायक हुई है जैसे कि ब्रिटेन ने सन् १८२० के लगभग दक्षिण अमरीक
में उद्देश्य-रहित कर्ज-पर-कर्ज दिये, जिसका परिणाम हानिकारक ही हुआ।

बाद के काम को पहले करने का नतीजा वेनजुला में पायंगे जहाँ लड़ा
के दौरान में एक रेशम की फैक्टरी खोली गई जो २० प्रतिशत घरेलू जरूरत
को पूरा करने के लिए बनाई गई थी। मिलों को चालू रखने के लि
वेनजला को विदेशी रेशम पर १५० प्रतिशत अधिक चुंगी लगानी पड़ी
लेकिन अंडों के उत्पादन—जैसी सीधी-सादी और बुनियादी जरूरत की ची
के लिए कोई उद्योग न था। वेनजुला-वासियों का लाभ अंडे पैदा करने क
फिक्र से ज्यादा होता न कि रेशमी कपड़ा पैदा करने से।

दक्षिण अमरीका में हमारे अनुभवों का विचित्र पहलू यह नहीं कि
इतना थोड़ा काम हुआ है, बल्कि यह है कि इतना ज्यादा काम हो चुक
है। दक्षिण अमरीकनों के बहुत-से दुःख और भयों की तुलना उस नावि
से हो सकती है जो बरसों तक एक खाड़ी में खेते रहने के बाद खुले समुद्र म
भाग गया हो। ऐसे नाविक के लिए आत्म-विश्वास और कौशल प्रा
करने का कोई आसान तरीका नहीं है, लेकिन खुले समुद्र में आकर उस
एक आवश्यक कदम उठाया है। पुरानी समस्याओं के हल न होने से य
नई समस्याएं पैदा होने के कारण पिछले वर्षों की प्रगति को भूलना गलत
है। इसके माने यह नहीं कि दक्षिण अमरीका की समस्याएं वास्तव म
गम्भीर नहीं हैं लेकिन औद्योगीकरण का पथ, जैसा कि कोई भी हाल म
औद्योगीकरण हुआ देश जानता है, एक के बाद दूसरे तूफानी संकटों स
भरा है।

यह आशा की जाती है कि अगले महीनों में अच्छे पड़ोसी की नीति

कहा था कि हमको एक ऐसी योजना शुरू करनी होगी जिसके द्वारा हम अपनी वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति का पिछड़े हुए इलाकों के विकास के लिए उपलब्ध कर सकें। पश्चिमी गोलार्द्ध में तो हम इस योजना की मज़बूत नींव बना भी चुके हैं और दिखा भी दिया है किसी योजना से क्या लाभ हो सकते हैं...प्रत्येक अमरीकन जनतन्त्र ने, जिसमें संयुक्त राष्ट्र अमरीका भी शामिल है, दूसरों की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति करके अपनी स्वयं प्रगति की है। अमरीका की सारी जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करने के लिए इस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को बनाए रखकर संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपनी नीति के उच्च उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप दे सकता है।"

यह प्रमाणित किया जा चुका है कि अगर खेल के बीच मे खेल के नियमों के बदलने की सम्भावना है तो अमरीकन पूँजीपति अपना रुपया दाँव पर अब न लगायगा। साथ ही यह भी प्रमाणित किया जा चुका है कि पिछड़े हुए इलाकों मे एक ऐतिहासिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए वैदेशिक पूँजी पहुँच सकती है लेकिन सुरक्षित रहने की गारंटी पर ही।

पिछली लड़ाई के दौरान में आयात-निर्यात कर्जों ने दक्षिण अमरीकन अर्थ व्यवस्था के विकास के लिए उपयोगी कार्य किये हैं। लेकिन किसी हद तक यह खतरनाक भी साबित हुए है क्योंकि जिन देशों को यह कर्ज दिये जाते थे वे अपने विकास के लिए और ज्यादा कर्ज पर निर्भर रहते थे—नशेबाजी-जैसी यह आदत घातक ही होती अगर हमारी नीति कर्ज माँगते ही रुपया दे देने की होती, जो कि अभी न थी।

अच्छे पड़ोसी की नीति ने हमें यह भी बताया है कि औद्योगीकरण वैदेशिक शोषण से पिछड़े हुए इलाकों की मुक्ति का कारण होते हुए भी जबर्दस्ती नहीं विकसित किया जा सकता। ऐसा देश, जहाँ स्वतन्त्र व्यापार का क्षेत्र न हो और जहाँ के नागरिकों की क्रय-शक्ति काफी न हो, यदि नए उद्योग-धन्धे खड़े करने का खतरा मोल लेता है, तो बिना बड़ी संख्या में माल खरीदने वालों के उद्योगों के लाभप्रद होने की सम्भावना नहीं।

कौशल और उनकी प्रेरणा ऐसा फल दे सकते हैं जो दरिद्रता, शत्रु
नैराश्य को दूर करके सुख, शान्ति और समृद्धि को ला सकते हैं ।

को नई निर्भीक योजना की अग्रदूतिका के रूप में विशेष ध्यान दिया जायगा। एक गुमनाम अधिकारी ने, जिसे दक्षिण अमरीका का कई वर्षों का अनुभव है, एक तीन वर्षीय योजना बनाई है जो ध्यान देने योग्य है। इस अधिकारी ने निम्नलिखित सुझाव पेश किए हैं :

१. कुछ सरकारी रुपया उन दक्षिणी अमरीकन देशों में सहायक कार्यों के लिए अलग रख दिया जाय तो ऐसा ठोस काम करने के लिए तैयार हों, जिससे संयुक्त राष्ट्र अमरीका और दूसरे देशों की पूँजी को प्रोत्साहन मिले।

२. दक्षिण अमरीका में व्यापार करने वाले व्यक्तियों और व्यावसायिक समूहों को आय-कर में सुविधा प्राप्त हो।

३. व्यापार-वाणिज्य और उद्योग-धन्धों के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका से व्यक्तिगत कर्ज प्राप्त करना।

४. सफाई-सुथराई और स्वास्थ्य-सम्बन्धी योजनाओं को पुरानी संस्थाओं द्वारा बढ़ाना और ऐसी संस्थाओं का बनाना जो कि नए कामों को हाथ में ले सकें।

५. संयुक्तराष्ट्र अमरीका की कम्पनियों और कारपोरेशनों में दक्षिण अमरीकन छात्रों की औद्योगिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना।

६. ऐसी सड़कों के लिए रुपया देना जो उत्पादक क्षेत्रों को खोल सकें जबकि स्थानीय पूँजी भी इस कार्य में बराबरी की सहायता दे।

भविष्य में दक्षिण अमरीका के साथ सहयोग का कोई भी रूप क्यों न हो, यह स्पष्ट है कि हमारी पूँजी और टेकनीकल सहायता की मात्रा इस बात पर निर्भर करेगी कि कितने परिमाण में दक्षिण अमरीका अपनी रचनात्मक शक्तियों को जाग्रत कर सकता है। अगर दक्षिण अमरीकनों का भविष्य हमारी सार्वजनिक या व्यक्तिगत पूँजी पर निर्भर है तो उनका अपना कोई भविष्य ही नहीं। अगर हमारी सारी व्यक्तिगत पूँजी, जो विदेशों में लगाई जाती है, केवल दक्षिण अमरीकन देशों को भेज दी जाय और दूसरे देशों की परवाह न की जाय तो भी वह बाल्टी में एक बूँद के समान होगी। रास्ते

लगाने के अवसर सीमित है, इसका कारण है
रुग्ण और स्थानीय स्वास्थ्य, श्रम, खाद्य, यातायात, क्रय, शक्ति और सार्व-जनिक शासन की कमजोरी। औद्योगीकरण के ध्येय से सार्वजनिक या व्यक्तिगत पूँजी लगाने से पहले इन बुनियादी बातों के सुधार की आवश्यकता है और साथ ही आवश्यकता है निपुण इञ्जीनियरिंग योजनाओं और आर्थिक तथा कर-सम्बन्धी नीति को निपुणता से कार्यान्वित करने की।

अतः इस पुस्तक के आगामी परिच्छेदों में चतुर्थ-लक्ष्य तथा नई निर्भीक योजना के विकास की दो विभिन्न धाराओं का वर्णन किया जायगा। उन महत् विकास-कार्यों की चर्चा की जायगी जो बहुत-से देशों में हो रहे हैं या होने वाले हैं, साथ ही मूल अर्थ-व्यवस्था के सुधार के हेतु किये हुए कार्यों की सूची भी दी जायगी जो बड़े विकास के कार्यों के अनिवार्य अंग हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत यह देखना आवश्यक होगा कि किन कार्यों को पहले किया जाय। प्रथम वर्षों में इसका कार्य सीमित होगा। सब स्थानों के लिए पर्याप्त मात्रा में टेकनीकल विशेषज्ञ न होंगे और न पर्याप्त पूँजी ही होगी। पूँजी और टेकनीकल विशेषज्ञों के उपलब्ध होने पर भी संसार के बहुत-से इलाके अपने संकल्प के कारण नई निर्भीक योजना से लाभान्वित न हो सकेंगे। उदाहरणार्थ चतुर्थ-लक्ष्य चीन, रूस या पूर्वी योरोप में कार्य न करेगा।

किन्तु इन इलाकों का भी (इनमें सब देशों का नहीं) आगे के पृष्ठों में जिक्र होगा चूँकि चतुर्थ-लक्ष्य के सिद्धान्तानुसार रूस या चीन की आव-श्यकताओं का भी महत्व है जो कि अफ्रीका या मध्यपूर्व की आवश्यकताओं का है। हम पश्चिमी योरोप का भी निरीक्षण करेंगे; टेकनीकल सुधार तथा व्यक्तिगत पूँजी के सम्मिलित सिद्धान्त उन्नत अथवा पिछड़े हुए इलाकों पर एक-से ही लागू होते हैं।

दूसरा भाग

परिचय

सन् १५५० में जब पुर्तगाली नाविक अन्तानियो गलवाओ ने पनामा इस्थमस के बीच नहर बनाने का सुझाव पेश किया तो उसे मालूम न था कि उसकी योजना को पूरे होने में तीन सौ चौंसठ वर्ष लगेंगे। सन् १८८० में जब फरडीनेण्ड लेसप्स नामक फ्रांसीसी द्वारा वास्तव में कार्य शुरू हुआ तो उस समय कार्य की पूर्ति के लिए आवश्यक इन्जीनियरिंग कौशल उपलब्ध था किन्तु फिर भी अतिव्यय, भ्रष्टाचार और पीले बुखार के कारण कार्य असफल रहा।

पनामा नहर को बनाने की व्यावहारिक सम्भावना से पूर्व आरोग्य शिविरों का होना, बीमारियों का न रहना, रेलों का आधुनिकीकरण, खाद्य और जल का परिपूर्ण मात्रा में प्राप्त होना, और सुयोग्य शासन का होना आवश्यक था। इन बातों के बिना इन्जीनियरिंग कौशल और अरबों रुपए लगाकर नहर खोदना ऐसा था जैसे छलनी में पानी रोकना।

इसी प्रकार अधिकतर पिछड़े हुए इलाकों में इन्जीनियरिंग अथवा औद्योगिक कार्यों में एक साथ बहुत-सी पूँजी लगाना व्यर्थ होगा। पहले छलनी के छेद बन्द करने होंगे। विश्व-बैंक के अरबों रुपए इच्छा न होने के कारण नहीं रुके हैं बल्कि ऐसे कार्यों की कमी के कारण रुके हैं, जिन पर बैंक का रुपया सुरक्षित रहे। अगर कोई देश पाँच करोड़ या पचास करोड़ रुपए की

, हाल कि जापान ने लार्ड को एक छोटी मशीन से दु[illegible]
। जनरल डगलस मैकार्थर ने श्री [illegible] के सुझाव पर इस मशीन को जापान स्थित एक भारतीय प्रतिनिधि को उपहार स्वरूप भेंट किया। भारत में इस मशीन का प्रयोग आरम्भ हो गया है और अगले दस वर्षों में चावल के उत्पादन पर इस छोटी मशीन का प्रभाव सिंचाई की बड़ी योजनाओं से ज्यादा पड़ सकता है।

चावल संसार की आधी जन-संख्या का प्रधान खाद्य है। अगर प्रति एकड़ भूमि से जापान जितना चावल का उत्पादन एशिया के दूसरे देश कर सकें तो सुदूरपूर्व का उत्पादन १३ करोड़ से ३० करोड़ टन बढ़ जायगा।

सबसे प्रथम और आवश्यक कार्य है छलनी के छेद बन्द करना। चतुर्थ-लक्ष्य अतएव उन व्यक्तियों को निराश करेगा जो यह सोचते हैं कि संसार को एकाएक विकास की योजना में जुट जाना चाहिए ताकि इन्सान के हाथ शरारत से दूर रहें। इनमें से कुछ व्यक्ति ऐसे हैं जो यह नहीं समझना चाहते कि अमरीकनों के महान् औद्योगिक और टेकनीकल कार्य, जिन पर अमरीकनों को सबसे ज्यादा गर्व है, आज सब पिछड़े हुए देशों में लागू नहीं हो सकते; कि इन देशों की आवश्यकताएं तुलनात्मक दृष्टि से अभी मालूम हैं जब कि हम पेचीदा मशीनों से काम करने के आदी हो चुके हैं; कि आरम्भ में हमारे टेकनीकल ज्ञान का केवल २० प्रतिशत भाग ही विदेशों में लागू हो सकता है।

बहुत-से पिछड़े हुए इलाकों को स्वयं अपनी आर्थिक सम्भावनाओं का ज्ञान नहीं। एक सरकारी विभाग की हाल की खोज से मालूम हुआ कि दक्षिण अमरीका, मध्य-पूर्व और पूर्व एशिया के ३२ देशों में कितने लोग नौकरियों में लगे हुए हैं इसके विश्वसनीय आँकड़े नहीं हैं। केवल आठ देश ऐसे हैं जिन्हें अपने वैदेशिक व्यापार या राष्ट्रीय आय के आँकड़े मालूम हैं।

करती हैं।"

आज भी स्वप्न कार्य का अग्रदूत है। यदि पिछड़े हुए इलाकों के न
नारियों ने स्वप्न का मादा खो दिया है तो उनका भविष्य अन्धकारमय है
लेकिन नहीं, वे अब भी स्वप्न देखते हैं और उनके स्वप्न एक दिन निश्च
ही यथार्थ में परिणत होंगे जैसे कि आन्तोनियो गलवाओ का पनामा नह
का स्वप्न पूरा हुआ। हाँ, यह जरूर है कि हमारी सहायता और मैत्री से
काम शताब्दियों से रुके हुए हैं दशाब्दियों में पूरे हो जायंगे।

मूल अर्थ-व्यवस्था के तैयार हो जाने पर विभिन्न प्रकार का और विभि
मात्राओं में औद्योगीकरण अनिवार्य रूप में बढ़ा है—स्वस्थ उद्योग जीवि
रहे, अस्वस्थ मुरझा गए। समाज के आर्थिक शरीर में गम्भीर दोष हो सकत
है लेकिन फिर भी वह अपने सम्पूर्ण अंगों सहित एक जानदार जीव है
पिछड़े इलाकों के भविष्य के ढाँचे में अधिकाधिक मात्रा में सरकार का अधि
कार और सरकार द्वारा व्यवस्थित योजनाएं होंगी। अक्सर अप्रस्तुत क्षेत्रों
केवल कानून जारी करके औद्योगीकरण लादने का तीव्र प्रलोभन भी होग
—यह नाजुक काम खतरे से खाली नहीं। यह उसी प्रकार होगा जैसे कि
कोई शिल्पी एक सुन्दर मूर्ति बनाकर उसमें हृदय की तंत्रियाँ बनाना भूल
जाय।

नई निर्भीक योजना के अंतिम उद्देश्यों में व्यस्त रहने के कारण कठि
आरम्भिक कार्यों को भूल जाना आसान है और इसी प्रकार सब जरूरी बारी
कियों का ध्यान रखकर अपने महान् उद्देश्यों को भूल जाना भी आसान है
चतुर्थ-लक्ष्य की सफलता अथवा असफलता इस पर निर्भर करती है कि हम
इन विपरीत भूलों को किस खूबी से दूर कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए किस प्रकार ज्वार को यह नहीं मालूम कि कहाँ टेरिन, ब्यवक और दूसरे संकेत उनमें किसी भाषा में उपलब्ध हैं उसी प्रकार ग्रामीण को इस बात का पता नहीं कि उनके अंचल में कितना तेल है।

पहले तो पिछड़े हुए इलाके सबसे यह पता लगायें कि धन्नोत्पादन में कैसे वृद्धि की जाय, कैसे अपनी भूमि और पूंजी की रक्षा की जाय, कैसे अपने औजारों को बेहतर बनाया जाय, कैसे मण्डियाँ बढ़ाई जायें। उनके यहाँ व्यापक व्यवस्था नहीं है ताकि जनता को अन्न हासिल कराई जा सके; उनके यहाँ सड़कें नहीं हैं ताकि वे अपने माल को बाजार तक पहुँचा सकें। संसार के १० करोड़ व्यक्तियों की उत्पादन शक्ति मलेरिया के कारण कम हो जाती है; १० करोड़ व्यक्ति खून की कमी के कारण या तो बीमार रहते हैं या मर जाते हैं; इतने बच्चे खराब खुराक के कारण या तो अन्धे पैदा होते हैं या बचपन से ही व्याधियों के शिकार होते हैं, एक अरब प्रौढ़ व्यक्ति न पढ़ सकते हैं, न लिख सकते हैं, और न जोड़ना जानते हैं, न घटाना।

इसलिए पिछड़े हुए इलाकों के लिए सबसे आवश्यक कार्य है स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और सामाजिक परिस्थितियों का मूल सुधार। कई जगह शब्दशः ही प्राकृतिक और मानव-साधनों को काम में लगाने के लिए टी० वी० ए०-जैसी योजनाएँ आरम्भ करना भी संभव हो सकता है। बहुत-सी ऐसी योजनाएँ हैं जिन पर काफी विचार-विमर्श हो चुका है लेकिन फिलहाल वे भविष्य के गर्भ में ही कई वर्षों तक छिपी रहेंगी। यू० एन० ओ० के आर्थिक विभाग का कहना है :

"पहली बात—कई योजनाएं कागज पर जितनी प्रभावशाली प्रतीत होती हैं, उतनी वास्तविकता में नहीं। कार्य-योजना बनाना और फिर उसे संचालन के रूप में कार्यान्वित करने में बहुत-सी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।"

"दूसरी बात—कई योजनाएं इतनी अधिक आवश्यक होती हैं कि बिना इस बात का पूरा विचार किये ही कि उनका सम्बन्धित क्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ेगा उन योजनाओं को शुरू करना पड़ता है। यद्यपि ऐसा करने

ी तिगुनी भूमि है। इसकी आबादी हमारी तरह ही करीब १५ करोड़ ९
यादातर दक्षिण अमरीकनों में गोरों और इंडियनों का रक्त निश्चित है।
ई देशों में, जैसे कि ब्राजील में, हब्शी रक्त का सम्मिश्रण अधिक मात्रा
पाया जाता है, अन्य देशों में अधिकतर लोग गोरे हैं।

पारस्परिक विभिन्नता के होते हुए भी दक्षिण अमरीकनों के दिमाग में एक
ात समान रूप से है। वे किसी भी तरह अपने-आपको खींचकर बीसवीं
दी में ले आना चाहते हैं। हरेक दक्षिण अमरीकन सरकार, चाहे उसका
ेश कितना ही छोटा या गरीब क्यों न हो, अपनी-अपनी आर्थिक और
औद्योगिक विकास की योजनाएं बनाये हुए है।

दक्षिण अमरीकनों के लिए बिजली अलादीन के चिराग की तरह है जो
फिर औद्योगिक संसार के सब सुखों को उपलब्ध कर देगी। इस स्वप्न की
पूर्ति में राष्ट्रीय सीमाओं को बाधा उपस्थित करने नहीं दिया जा सकता।
सन् १९४९ में यू० एन० ओ० के सामाजिक और आर्थिक सम्मेलन में
चिली के सदस्य ने कहा कि दक्षिण अमरीका के लिए केवल अलग-अलग
विकास की योजनाओं का होना ही काफी नहीं है बल्कि "आर्थिक विकास
की एक संयुक्त योजना होनी चाहिए, जो स्वास्थ्य, शिक्षा, वेतन और
सामाजिक सुरक्षा का विशेष ध्यान रखे।"

इस समय तो अधिकतर दक्षिण अमरीकन देश विकास की अपनी-अपनी
अलग योजनाओं को चला रहे हैं, और खूब खूबी के साथ चला रहे हैं।
ऐसा प्रतीत होता है कि विकास का भूत उन पर चढ़ बैठा है जो दिन-पर-
दिन उनको आगे बढ़ा रहा है।

अधिकतर दक्षिण अमरीकन देश राष्ट्रीय अथवा स्थानीय विकास-
कारपोरेशनों द्वारा अपनी प्रगति को गति दे रहे हैं। काम की बारीकियों में
ये कारपोरेशन एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं लेकिन सबका उद्देश्य एक ही है।

: १ :

गतिशील दक्षिण अमरीका

हाल ही मे पेरू के अपरा पार्टी के नेता विक्टर राऊल हाया द ला तोरे प्रसिद्ध वैज्ञानिक एलबर्ट आइन्स्टाइन से मिले। आइन्स्टाइन स्वीकृति में सिर हिलाने लगे जब हाया द ला तोरे 'अन्यपेक्षा के सिद्धान्त' को इतिहास पर लागू करते हुए बताने लगे कि सयुक्त राष्ट्र अमरीका और पश्चिमी योरोप के साथ ही बीसवीं शताब्दी मे तटवर्तीय पेरू रह रहा है, जिसका पहाड़ी इलाका अभी १६वीं शताब्दी की स्थिति में है और अमेजन जलाशय तो प्राग ऐतिहासिक स्थिति में ही है। हाया द ला तोरे का कहना था कि पिछड़े हुए इलाकों के विकास की योजनाएं कानून के जोर से चालू नहीं की जा सकतीं; उन्हें हर इलाके के ऐतिहासिक विकास का ध्यान रखना होगा।

यह स्पष्ट है कि जलवायु, मानव शक्ति, साधन, और आर्थिक और सामाजिक प्रगति में बीसियों दक्षिण अमरीकन जनतन्त्र सर्वथा भिन्न हैं। अर्जेण्टाइना, ब्राजील, चिली, क्यूबा, मेक्सिको और यूराग्वे औद्योगीकरण की प्रथम सीढ़ी पार कर चुके हे जब कि मध्य अमरीका अब भी वस्तुतः शत-प्रतिशत कृषि प्रधान है।

वैसे सम्पूर्ण दक्षिण अमरीका में दो-तिहाई जनता कृषि पर निर्भर है। सन् १९३८ में जब अमरीकनों (संयुक्त राष्ट्र अमरीका) की प्रति व्यक्ति आय १५५० रुपए थी तो अर्जेण्टाइना की ७८० रुपए, चिली की ६३० रुपए, मेक्सिको-वासियों की ३०० रुपए, बोलिविया की १६५ रुपए और ब्राजील की केवल १६५ रुपए थी।

सामूहिक रूप से यह पिछड़े इलाके संसार के सबसे धनाढ्य भण्डारों में से हैं। दक्षिण अमरीका संसार को अपनी सारी केले, कॉफी और सोमल की उपज देता है—अपनी चाँदी का ४३ प्रतिशत भाग, कोको का ३१ प्रतिशत, चीनी का २६ प्रतिशत, ताँबे का २० प्रतिशत, चमड़े का भी २० प्रतिशत, टीन का १८ प्रतिशत, ऊन का १६ प्रतिशत और पैट्रोल का १५

में सन् १६५६ में एक दुकान खुल

बनी हुई थीं। दुकान खुलने के दिन सुबह से ही भीड़ लगी हुई थी और पहले दिन ही १ लाख २३ हजार ग्राहक आये और २७ लाख ५० हजार रुपए की बिक्री हुई। मालिक ने खुश होकर कहा, "हम दक्षिण अमरीका के हर शहर में दुकान खोलेंगे।"

इससे भी ज्यादा उत्तेजक कहानी लॉरो कारवालहो नामक ब्राजीलियन व्यापारी की है। कारवालहो ग्यारह वर्ष की उम्र में चीजें बेचना सीख गया। एक सड़क के कोने पर उसकी छोटी-सी सिगार की दुकान थी। कारोबार इतना अच्छा था कि उसने सिगार की दुकान के बदले बहुत-सी नारंगियाँ खरीद लीं; पर शीघ्र ही उसके पिता ने उसे स्कूल भेज दिया।

१९३१ में उसने अपनी निजी दुकान खोली। उस जमाने में और अब भी ब्राजील के लोगों का किसी हद तक यह खयाल है कि रुपया कमाने के लिए कुछ चीजें मँहगे दामों पर अमीरों को बेचना जरूरी है। कारवालहो ने महसूस किया कि इस सिद्धान्त में कहीं गलती जरूर है। वह अमरीका आया और वूलवर्थ तथा मेसी के उदाहरण से प्रेरित होकर इस निश्चय को लेकर घर लौटा कि जरूरी चीजों को ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को सस्ते दामों पर बेचना चाहिए।

उसने अपने माल की कीमत बहुत कम रखी ताकि जल्दी बेचकर नया माल लाया जा सके। फिर भी बिक्री कम होती थी, क्योंकि ब्राजीलियनों के पास पैसे की कमी थी। इस समस्या का उत्तर था—किस्त पर माल बेचना; पर इस तरीके को भी बिगाड़ दिया गया था और इसमें बू आने लगी थी। कारवालहो ने इस दुविधा का हल किया 'क्रेडेरियो' नामक नया तरीका ईजाद करके। जिसके अनुसार ग्राहकों को ऐसे कार्ड मिलते थे जिससे जो चीज जब चाहें वे खरीद सकते थे और रुपए दस महीने के अन्दर चुकाना

वे दक्षिण अमरीका में कृषि और उद्योग का विकास एक ही पीढ़ी में करना चाहते हैं जिसे संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने १५० वर्ष में पूरा किया।

आइए देखें इसकी क्या सम्भावनाएं हैं।

ब्राज़ील

अगर तराजू के एक पलड़े में राकफेलर के बुनियादी सुधार-सम्बन्धी व्यक्तिगत प्रयत्न हैं तो दूसरे पलड़े में ब्राज़ील सरकार द्वारा जारी की हुई आधुनिकीकरण की बड़ी-बड़ी योजनाएं हैं। ब्राज़ीलियनों का कहना है कि यह तो ठीक है कि नए उद्योगों से पहले कृषि सुधार किया जाय पर चूंकि ब्राज़ील दुनिया का तीसरा बड़ा देश है और पश्चिमी गोलार्ध में सबसे बड़ा है इसलिए हम औद्योगीकरण के साथ-साथ ही कृषि-सुधार भी करेंगे। ब्राज़ील आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा चाहे उसके अपने इस्पात की कीमत संयुक्त राष्ट्र अमरीका से मँगाए हुए इस्पात से दुगुनी ही क्यों न हो। सन् १९५४ में ब्राज़ील के आर्थिक-व्यवस्था-कमीशन ने उस योजना की रूपरेखा बनाई जिसके अनुसार पन्द्रह वर्षों में राष्ट्रीय आय पाँच गुनी बढ़ जानी चाहिए।

जबर्दस्ती औद्योगीकरण करने के दोष ब्राज़ील के सामने अक्सर अप्रिय बनकर प्रस्तुत हुए हैं। उदाहरण के लिए, अभी हाल में ही एक अमरीकन मोटरकार बनाने वाले से ब्राज़ील में कारखाना खोलने के लिए कहा गया क्योंकि नई वोल्टा रोडना मिल में इस्पात तैयार होता था। मोटरकार बनाने वाले व्यवसायी ने इन्कार कर दिया, क्योंकि, उसने कहा, "मैं मोटर की बाडी और एञ्जिन तो बना लूँगा, पर स्पार्क-प्लग का क्या होगा? और दूसरी छोटी चीजों का क्या होगा? इन लोगों को अभी यह सीखना बाकी है कि बहुत-से हल्के उद्योगों के मेल से ही भारी उद्योग बनते हैं।"

लेकिन रेफ्रीजरेटर, मोटर, रेडियो, अस्पताल, स्कूल और लाइब्रेरी—संतुलित औद्योगीकरण की सब सुविधाओं की माँग आज ब्राज़ील में एक सिरे से दूसरे सिरे तक व्याप्त है, इसलिए कभी-न-कभी ब्राज़ील की अपनी मोटरकार-फैक्ट्रियाँ भी अवश्य होंगी।

...ादन। और संसार के प्रत्येक पिछड़े हुए इलाके में कारखाने ... ते हैं।

ब्राजीलियन स्वास्थ्य, ब्राजीलियन साक्षरता, ब्राजीलियन-क्रय-शक्ति के ...र्माण के लिए सरकारी योजना कई भागों में चल रही है।

अभी तक सबसे बड़ा काम हुआ है वोल्टा रेडोण्डा का नया इस्पात का ...रखाना, जिसमें ३५ करोड़ रुपए लगे हैं, जिसका कुछ अंश संयुक्त-राष्ट्र ...मरीका के आयात-निर्यात बैंक ने दिया है और बाकी ब्राजीलियन सरकार और ब्राजीलियन व्यक्तियों ने। ब्राजील अपने इस्पात से रेलें और दूसरे ...द्योग-धन्धे बढ़ा सकेगा और आधे दक्षिण अमरीका को अपना इस्पात दे ...केगा।

ब्राजील की शक्ति का दूसरा साधन उसकी सानफ्रांसिस्को नामक नदी है ...ो बिजली पैदा करने के लिए संसार के सबसे बड़े साधनों में से है। यह अनुमान लगाया गया है कि इस नदी द्वारा साढ़े सात लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति पैदा की जा सकती है। इस नदी से लाभ उठाकर ब्राजील का उत्तर-पूर्वी भाग औद्योगीकरण के लायक बनाकर लोगों को बसाने के काम में लाया जा सकता है। इस बारे में ब्राजीलियनों को इतना उत्साह है कि उन्होंने सानफ्रांसिस्को की घाटी के विकास के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों का जिक्र अपने संविधान में भी किया है और अपनी राष्ट्रीय आय का एक नियत भाग इस ध्येय की पूर्ति के लिए अलग रख रहे हैं।

सानफ्रांसिस्को नदी तट के समानान्तर बहती है और इस प्रकार उत्तर से दक्षिण के कॉफी के मैदानों के बीच प्राकृतिक जल-पथ बनाये हुए हैं। एक अमरीकन का कथन है :

"सम्भवतः आज संसार में कहीं भी कृषि और उद्योग के इतने विकास की सम्भावनाएं मौजूद नहीं जितनी कि प्रकृति ने सानफ्रांसिस्को नदी को

होता था; हरेक कार्ड पर एक नियत रकम भी लिखी होती थी जिससे ज्यादा का माल उधार नहीं मिल सकता था।

क्रेडेरियो-ऑफिस की शाखाएं सारे शहर में खोली गईं—आज इसका ७० प्रतिशत व्यापार उधार पर चलता है; २ लाख ब्राज़ीलियन परिवार क्रेडोरियो इस्तेमाल में लाते हैं।

१६४० तक यह रायो द जनेरियो का सबसे बड़ा व्यवसाय हो गया। ब्राज़ीलियनों को बने-बनाए कपड़ों से चिढ़ थी; कारवालहो ने एक दर्ज़ी-विभाग खोलकर यह साबित कर दिया कि न सिर्फ तैयार कपड़े दर्ज़ी के सिले हुए कपड़ों की खूबी ही रखते हैं बल्कि बहुत सस्ते भी पड़ते हैं। ब्राज़ीलियन अपने मित्रों या सम्बन्धियों को क्रिसमस के उपहार नहीं भेजा करते थे; *कारवालहो ने अपने हरेक ग्राहक को उपहार भेजकर ब्राज़ीलियनों को* उपहार देने की आदत डाली। अमरीकन विज्ञापनों की वह प्रशंसा करता था, लेकिन वह अमरीकनों से भी एक कदम आगे बढ़ गया; रेडियो पर सिर्फ चन्द घण्टे न खरीदकर एक पूरा महीना रेडियो का प्रतिवर्ष वह लेने लगा। १६४८ में उसकी दुकान के सामने घण्टों तक मर्द-औरतों की लम्बी लाइनें लगी रहा करती थीं। एक दिन उसकी दुकान का नारी-विभाग दिन में सात बार बन्द हुआ, ताकि ग्राहकों को चोट न पहुँच सके और खाली आलमारियाँ सामान से फिर भरी जा सकें।

कारवालहो ने अपने माल का ८३ प्रतिशत भाग अपने सम्बन्धियों को दे दिया है और जो-कुछ उसके पास बचा है उस पर वह पहले से कहीं ज्यादा मुनाफा कमा रहा है। उसके कर्मचारी सबसे ज्यादा वेतन पाते हैं, मुफ्त डॉक्टरी इलाज बिना मुनाफे की कीमतों पर खाद्य-सामग्री, पेन्शन और हरेक नए बच्चे पर प्रतिमास लगभग साढ़े तेरह रुपए की वेतन में वृद्धि होती है।

और अब वह एक बिज़नेस-कॉलिज की योजना बना रहा है जहाँ ब्राज़ील के युवक-युवतियाँ आधुनिक व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

लोरो कारवालहो की कहानी विशेष ध्यान देने योग्य है—इसलिए नहीं

है जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका जितने बड़े क्षेत्र को सींचती है। इसके ११० शाखाएं हैं, जिनमें सात तो इतनी बड़ी हैं कि अगर वह दुनिया में किसी और जगह पर होतीं तो अपने बड़ेपन के कारण ही मशहूर हो गई होतीं। अमेजन के जलाशय में कई बहुमूल्य पदार्थों के ढेर-के ढेर पाए जाते हैं जैसे कि रबर, कड़े छिलके के फल, ताड़ के रेशे, तरह-तरह के तेल और लकड़ी।

निश्चयपूर्वक यह कोई नहीं कह सकता कि क्या कभी अमेजन-प्रदेश संसार के लिए परिपूर्ण भंडार बन सकेगा या कीचड़ और मलेरिया तथा हारिन को निगल जाने वाले जितने बड़े सर्पों और आदिवासियों का प्रदेश ही रहेगा। लेकिन यह चुनौती है जिसके प्रति इस अर्ध शताब्दी के मार्ग-प्रदर्शक आँखें नहीं मूँद सकते। संसार में पहली बार यूनेस्को की हाईलिन संस्था के अनुसंधानियों के दल-के-दल सारे अमेजन प्रदेश की समस्याओं और सम्भावनाओं का व्यवस्थित रूप से अध्ययन कर रहे हैं। आगामी कल इन अनुसंधानियों के झोलों में है।

मेक्सिको

यदि आप मेक्सिको शहर को पार करते हुए वीराक्रूज़ा तथा ओएक्साका के धूमिल वनों में पहुँचें तो आपको वहाँ ऐसी कार्यवाही दिखाई देगी जिसे देखने के आप आदी न होंगे। इस उष्ण प्रदेश के सुदूर भीतर दलदली, रोग-ग्रस्त १७ हजार वर्गमील भूमि को उपजाऊ बनाने वाले मजदूरों की फौज-की-फौज की देख-रेख के लिए जगह-जगह कार्य-शिविर और अस्पताल स्थित हैं।

इस उष्ण प्रदेश में टैनेंसी वैली आथेरिटी-जैसे महत् कार्य-निर्माण करने के लिए मैक्सिको निवासी अपनी रमणीक पापालोआपाम नदी से लाभ उठा रहे हैं। इस नदी की शाखाओं पर चार भीषण बाँध खड़े हो रहे हैं जो नदी के जल को बड़ी झीलों से परिणत कर रहे हैं। यदि पापा-

प्रदान की है—जहाँ की जलवायु शाम, जहाँ की भूमि उत्पादनशील, जिसका क्षेत्र असीम, विद्युत्-शक्ति जितनी चाहो उतनी उपलब्ध और जहाँ उत्पादन के लिए यातायात की कमी नहीं।

"काम इतना बड़ा है कि साधारणत: लोग समझ बैठते है कि यह कभी पूरा न हो सकेगा लेकिन जो नील नदी या कॉलोरैडो नदी की शक्तियों को बोतने या पनामा नहर की खुदाई के इतिहास से परिचित है, या जिसने अन्य असम्भव प्रतीत होने वाले कामों को पूरा होते देखा है। वह मानेगा कि आधुनिक संसार और ब्राज़ील की अर्थ-व्यवस्था जब चाहेगी तभी इस काम को भी पूरा कर सकेगी।"

ब्राज़ील में जल से विद्युत्-शक्ति उत्पादित करने के अन्य भी बड़े साधन मौजूद हैं। दक्षिण में उदाहरणार्थ, पराना नदी से १० लाख किलोवाट से भी ज्यादा शक्ति पैदा की जा सकती है। कुक का कहना है कि इगुआसू का जल-प्रपात इसी नाम की नदी पर स्थित है जो कि पराना नदी से मिलता है—यह जल-प्रपात संसार के सबसे बड़े चार जल-प्रपातों में से है और इसके द्वारा विद्युत्-शक्ति उत्पादित करने की संभावनाएं असीम हैं।

ब्राज़ील में ८० प्रतिशत बिजली जल से प्राप्त होती है लेकिन अपनी सम्भावित जल-शक्ति का केवल ७ प्रतिशत भाग ब्राज़ील प्रयोग में लाता है; ब्राज़ील की नदियों से २ करोड़ १० लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति उत्पादित करने की सम्भावना है जब कि [संयुक्त राष्ट्र अमरीका से केवल २॥ करोड़ किलोवाट की सम्भावना। लेकिन जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपनी सम्भावित शक्ति का ७० प्रतिशत भाग विकसित कर चुका है, ब्राज़ील का राष्ट्र-व्यापी उत्पादन केवल १५ लाख हार्स पावर है। उसकी एक नई योजना के अन्तर्गत २ अरब ५० करोड़ के खर्च पर अगले छः वर्षों में १३ लाख किलोवाट विद्युत्-शक्ति उत्पादित की जा सकेगी।

निश्चय ही संसार की सबसे बड़ी नदी एमेजन ब्राज़ील का सबसे बड़ा विवादास्पद साधन है। ऐमेजन सम्बन्धी आँकड़े बहुत ही बड़े हैं—यहाँ इस नदी में आप दुनिया के ताजे पानी का पाँचवाँ हिस्सा पायगे। दुनिया

किया सरकार ... [illegible]
इस कारपोरेशन के छः सदस्यों में से तीन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आयात-निर्यात बैंक द्वारा नियुक्त किये गए हैं; जो सब कार्यों का टेक्नीकल निरीक्षण करते हैं और उनकी स्वीकृति पर ही कर्ज दिया जाता है और काम शुरू होता है। इसके अलावा कर्ज देने का कायदा होते हुए भी बैंक कर्ज की रकम रोक सकता है जब तक कि बोलिवियनों द्वारा कार्य में असली पूँजी न लगाई जाय।

मैक्सिको और चिली-निवासी अपने देशों को औद्योगिक राज्यों में परिणत करने के लिए नई-नई युक्तियाँ निकालने में व्यस्त हैं; इनकी तुलना में बोलिविया का कोई भी उद्योग वर्णन करने योग्य नहीं है। उसके तात्कालिक साधन हैं—दिन-पर-दिन कम होता रांगा और ऐसा पेट्रोल जो अभी निकाला नहीं गया है। उसकी वर्तमान आवश्यकताएं उद्योग की दिशा में कम होकर अन्नोत्पादन के सुधार की ज्यादा हैं—और इसे सबसे अधिक आवश्यकता है अच्छे यातायात की; ताकि समुद्र तक पहुँच न होने के कारण वह बाहरी दुनिया से यातायात द्वारा सम्बन्धित हो सके।

सन् १९४२ में एक अमरीकन शिष्ट-मंडल ने सुझाव पेश किया कि बोलिविया को सड़कें बनाने पर २० करोड़ रुपया खर्च करना चाहिए जब कि कृषि पर ७ करोड़ ५० लाख और सिंचाई पर ४ करोड़ रुपया खर्च होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सार्वजनिक पथ-प्रशासन ने इंजीनियरिंग सहायता देना स्वीकार कर लिया है। देश को दो भागों में विभाजित करती हुई एक बड़ी सड़क पूरी होने ही वाली है। अर्जेण्टाइना और ब्राजील से एक समझौते के फलस्वरूप रेल की ऐसी लाइनें बनना सम्भव हो गया है जो बोलिविया को समुद्र से मिला देंगी। ये नई सड़कें संसार के एक अति उपजाऊ प्रदेश के द्वार खोल देंगी।

लोग्रापाम में खुदाई हो तो इसके मुहाने से मैक्सिको की खाड़ी तक के १४६ मील का फासला जहाजों के लिए खुल सकता है।

पापालोग्रापान की प्रस्तावित योजना, जिस पर कार्य प्रारम्भ भी हो चुका है, पाँच वर्षों में समाप्त होगी। यह मैक्सिको की वर्तमान विद्युत्-शक्ति को २५ प्रतिशत बढ़ा देगी। बाहर से लोगों के आकर बसने से इस प्रदेश की जनसंख्या तिगुनी हो जायगी।

सन् १६४० और सन् १६४५ के बीच मैक्सिको ने अपने कारखानों की संख्या १३,५१० से २८,५१२ बढ़ा ली। अब वह देश की इस मूल समस्या की ओर तेजी से बढ़ रहा है कि किस प्रकार कुल २ करोड़ १० लाख आबादी के ७० प्रतिशत भाग (जो कि मैस्टिजोज और इण्डियन हैं) को व्यापारिक अर्थ व्यवस्था का अंग बनाया जाय। १ करोड़ ४० लाख मैक्सिको के रहने वाले अपने पिछड़े हुए यातायात के कारण संसार से अलग हैं, इनका नए उद्योगों पर कोई प्रभाव न पड़ेगा। स्वास्थ्य और सामाजिक सुधार जैसे कार्य अभी इन लोगों तक नहीं पहुँचे हैं। कारनेग संस्था ने सन् १६४२ में युकाटान के सुदूर प्रदेश का निरीक्षण करने पर पाया कि ७७ प्रतिशत निवासी १५ वर्ष की आयु तक पहुँचने से पहले ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं!

आज मैक्सिकन निवासियों के पाँचवें भाग को भी मुश्किल से विद्युत्-शक्ति उपलब्ध होती है। सन् १६४५ के अन्त में एक मैक्सिकन को एक अमरीकन के मुकाबले में बिजली का दसवाँ हिस्सा मिलता था। इस स्थिति को सुधारने के लिए फैडरल इलैक्ट्रिक कम्पनी ने सन् १६४७ में एक योजना को जन्म दिया! जिसके द्वारा सन् १६५२ तक १३ करोड़ २५ लाख ५० हजार रुपए के खर्चे पर ८ लाख किलोवाट शक्ति देने वाले यंत्र लगाए जा सकेंगे।

३० लाख एकड़ उपजाऊ भूमि की सिंचाई से मैक्सिको के सम्पूर्ण कृषि-उत्पादन का ५० प्रतिशत भाग प्राप्त होता है। देश को मूल खाद्यों में आत्म निर्भर बनाने के लिए छः गुनी अधिक भूमि जोतने की योजना है। सन्

तथा

विया सरकार के डवलपमेंट कारपोरेशन ने भली भाँति [illegible]
इस कारपोरेशन के छः सदस्यों में से तीन संयुक्त राष्ट्र अमरीका के आ
निर्यात बैंक द्वारा नियुक्त किये गए हैं; जो सब कार्यों का टेकनीकल नि
करते हैं और उनकी स्वीकृति पर ही कर्ज दिया जाता है और काम
होता है। इसके अलावा कर्ज देने का कायदा होते हुए भी बैंक क
रकम रोक सकता है जब तक कि बोलिवियनों द्वारा कार्य में असली पूँ
लगाई जाय।

मैक्सिको और चिली-निवासी अपने देशों को औद्योगिक र
परिणत करने के लिए नई-नई युक्तियाँ निकालने में व्यस्त हैं; इनक
में बोलिविया का कोई भी उद्योग वर्णन करने योग्य नहीं है। उस
लिक साधन हैं—दिन-पर-दिन कम होता राँगा और ऐसा पेट्रोल
निकाला नहीं गया है। उसकी वर्तमान आवश्यकताएं उद्योग
कम होकर अन्नोत्पादन के सुधार की ज्यादा हैं—और इसे र
आवश्यकता है अच्छे यातायात की; ताकि समुद्र तक पहुँच न
वह बाहरी दुनिया से यातायात द्वारा सम्बन्धित हो सके।

सन् १९४२ में एक अमरीकन शिष्ट-मंडल ने सुझाव
बोलिविया को सड़कें बनाने पर २० करोड़ रुपया खर्च कर
कि कृषि पर ७ करोड़ ५० लाख और सिंचाई पर ४ क
होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सार्वजनिक प
नियरिंग सहायता देना स्वीकार कर लिया है। देश को ट
करती हुई एक बड़ी सड़क पूरी होने ही वाली है। अर्जे
से एक समझौते के फलस्वरूप रेल की ऐसी लाइनें ब
जो बोलि [illegible] हैं [illegible] ये नई सड़कें

सैंटा नदी, जो पेरू के पश्चिमी तट के समानान्तर बहती है, फिरो पर जरूर छोटी दिखाई देती है पर उसमें भला करने की भीषण शक्ति है। सैंटा नदी के जलाशय का विकास टी० वी० ए० की ही भाँति पेरुवियन सैंटा कारपोरेशन द्वारा हो रहा है, जिसका क्षेत्रफल ४० हजार वर्ग किलो-मीटर है। संयुक्त राष्ट्रों के आर्थिक विभाग के कथनानुसार इस कारपोरेशन का "निकट ध्येय सैंटा—नदी प्रदेश के औद्योगिक विकास को बढ़ाना है लेकिन उन कार्य-क्षेत्रों का उल्लंघन नहीं करना है जो कि व्यक्तिगत पूँजी के दायरे में पड़ते हैं। यह ध्येय-पूर्ति उन कामों को शुरू करने से होगी जो बहुत बड़े होने के कारण या तत्काल मुनाफा मिलने की सम्भावना न होने के कारण साधारण पूँजीपति को आकृष्ट नहीं करते; साथ ही व्यक्तिगत उद्योग और कार्यों को हर सम्भव तरीके से प्रोत्साहित करना होगा।" ब्राज़ील की सान-फ्रांसिस्को नदी के विकास की ही तरह केन्द्रीय आय का कुछ भाग (१० लाख रुपया प्रतिमास जो कि पेरू के लिए बहुत बड़ी रकम है) इस कारपो-रेशन को दिया जा रहा है। जो काम पूरे हो चुके हैं या हो रहे हैं उनमें से कुछ ये हैं—५५ हजार टन प्रतिवर्ष उत्पादन करने वाले लोहे और इस्पात के कारखाने खोलना; पेरू में बहुतायत में पाये जाने वाले कोयले को निकालना; चिमोटे खाड़ी के बन्दरगाहों का विकास; सिंचाई और जल द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति का विकास।

सैण्टा नदी से जिस जगह एक अर्ध-मरुभूमि के बीच से निकलती हुई समुद्र को जाती है, उस प्रदेश की १५ हजार एकड़ भूमि की सिंचाई जा रही है।' अपने प्रस्तावित उद्योगों के लिए विद्युत्-शक्ति प्राप्त करने के लिए पेरू ने सैण्टा नदी के पथ को परिवर्तित कर दिया है। सैण्टा नदी द्वारा १ लाख २५ हजार किलोवाट बिजली पैदा करने की योजना है, जिसमें से ५० हजार किलोवाट तो इस समय भी उत्पादित होती है।

पेरुवियन सरकार द्वारा जल से शक्ति पैदा करने वाली अन्य भव्य योजनाओं का निरीक्षण किया जा चुका है : उरुबाम्बा नदी से १ लाख २०

आर्थिक गठन को ही बदल देगी।

प्यूरटो रीको

यद्यपि प्यूरटो रीको संयुक्त राष्ट्र अमरीका के अधीन एक द्वीप है फिर भी मुख्यतः वह दक्षिण अमरीकन ही है। पिछले दस वर्षों में इसका ऐसा रूप परिवर्तित हुआ कि संसार के प्रत्येक पिछड़े हुए इलाके को यह आशा प्रदान करता है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रति वर्ग मील में जब कि ५० व्यक्ति रहते हैं, प्यूरटो रीको में ४०० व्यक्ति रहते हैं। भूखे, दरिद्र, रोग-ग्रस्त प्यूरटो रीको-निवासी सचमुच हड्डी के ढाँचे हैं।

लेकिन फिर भी प्यूरटो का जलवायु अत्यन्त सुन्दर, उसके कृषि-साधन अत्यधिक सम्पन्न (विशेषतः चीनी में) और उसके ऊपर संयुक्त राष्ट्र अमरीका का परोपकारी प्रभुत्व है। सन् १९३६ में यह छोटा गन्दा प्यूरटो रीको ही था जो कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका का छठा सबसे बड़ा ग्राहक था—हमने भी प्यूरटो रीको की खरीदी हुई चीजों के एवज में उससे उत्साहपूर्वक चीनी, शराब, तम्बाकू और नींबू की जाति के फल खरीदे। चीनी की मिलों में काम करने वाले प्रति मजदूर की औसत मजदूरी ७५० रुपए प्रतिवर्ष से कम ही थी—लेकिन फिर भी मजदूरों में सबसे ज्यादा रईस चीनी की मिलों में काम करने वाले मजदूर ही थे। इस बुनियादी कानून के बावजूद कि कोई भी कारपोरेशन या व्यक्ति ५०० एकड़ से ज्यादा जमीन नहीं रख सकता, जमींदारों के पास अक्सर ५० हजार एकड़ तक के गन्ने के खेत थे। प्यूरटो रीकनों का कहना है चूँकि अमरीकनों ने चीनी-व्यवसाय में २० करोड़ रुपया लगाकर पिछले १५ वर्षों में ५० करोड़ रुपए का मुनाफा दिया है इसलिए यह स्पष्ट है कि चीनी-उद्योग ने देश की अर्थ-व्यवस्था सुधारने की अपेक्षा देश की पूँजी को खींचा है।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने ५०० एकड़ से अधिक भूमि न रखने के सिद्धान्त की मान्यता को स्वीकृत किया, जिसके परिणामस्वरूप प्यूरटो रीको ने गन्ने के बड़े खेतों को तोड़ना आरम्भ किया। १६४८ तक ७० हजार एकड़ जमीन सरकार को मिली और तत्पश्चात् जमींदारों और कोआपरेटिव द्वारा चालित फार्मों को प्राप्त हुई। सन् १६३६ और १६४५ के बीच विद्युत्-शक्ति का उत्पादन तिगुना बढ़ गया। करों द्वारा आय सन् १६४० से २६० प्रतिशत ज्यादा बढ़ गई। प्यूरटो रीको के औद्योगिक विकास संघ ने प्यूरटो रीकन शराब के लिए काँच की बोतलें बनाने का कारखाना खोला, सीमेण्ट की फैक्ट्री अपना ली और चीनी की मिलों के बचे हुए माल से कागज के गत्ते बनाना शुरू किया। औद्योगिक विकास संघ अपने खर्चे से कारखानों की इमारतें बनाकर व्यक्तिगत पूँजीपतियों को दे रहा है, जो अगर चाहें तो इन इमारतों को खरीद भी सकते हैं।

उपरोक्त बातों के परिणामस्वरूप अधिकाधिक मात्रा में अमरीकन पूँजी प्यूरटो रीको में आ रही है। सन् १६४२ के बाद ४० से अधिक अमरीकन उद्योग-धन्धे प्यूरटो रीको में खुल चुके हैं, प्यूरटो रीकन पूँजी भी व्यवसाय में लग रही है। शिक्षा का प्रसार बढ़ रहा है—प्राइमरी स्कूलों में पहले से कहीं ज्यादा बच्चे भरती हो रहे हैं। मलेरिया और दूसरी पेट की बीमारियों से होने वाली मौतें अब आधी हो गई हैं। सन् १६४० और १६४८ के बीच पैदा होते ही मरने वाले बच्चों की संख्या २५ प्रतिशत कम हो गई है।

अभी भी प्यूरटो रीको महल न बनकर एक गरीब के घर के समान ही है। अभी भी वहाँ की जनसंख्या अधिक है, जिसे कम करने के लिए लोगों को विदेशों में जा बसना होगा। लेकिन अब से दस वर्ष बाद चाहे प्यूरटो रीको अमरीका का ही अंग बना रहे या स्वाधीन हो, इसमें सन्देह नहीं कि यह देश फलेगा-फूलेगा, इसकी सामाजिक प्रगति होगी। प्यूरटो रीको ने साबित कर दिया है कि कोई भी आर्थिक या सामाजिक दुविधा ऐसी नहीं है जिसका हल करना सम्भव न हो।

चतुर्थ-लक्ष्य योजना में प्यूरटो रीको का बहुत बड़ा स्थान होगा। उसकी

चतुर्थ-लक्ष्य की प्रविधियाँ सीखने का मैदान बना दिया है
अपने खर्च पर अपने देश में दक्षिण अमरीकनों को चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्ग
औद्योगिक प्रविधियों की शिक्षा देगा। उसका निश्चय है कि वह चतुर्थ
लक्ष्य योजना के दोनों सिरों पर रहेगा--सहयोग देगा और प्राप्त भी करेगा

अर्जेण्टाइना

अर्जेण्टाइना की वर्तमान पंचवर्षीय योजना उसे सम्पूर्ण आर्थिक आत्म
निर्भरता के बहुत करीब पहुँचा देगी। औद्योगिक विकास की एक योजना के अ
सार, जो सन् १६४३ से चल रही है, सन् १६५१ तक अर्जेण्टाइना के उद्यो
का मूल्य ४३·५ प्रतिशत बढ़ जाना चाहिए; वेतनों में ५२·८ प्रतिशत
कार्य-शक्ति में ३४ प्रतिशत और विद्युत्-शक्ति में ५० प्रतिशत वृद्धि हो
चाहिए। बाहर से कम मूल्य का माल मँगाने के इरादे से कपड़ा, काग
रासायनिक और खनिज पदार्थों से माल बनाने की कई प्रस्तावित योजना
हैं और ज्यादा मूल्य का माल बाहर भेजने के लिए जैसे कि वनस्पति तेल
चमड़ा, जस्ता आदि उद्योगों की भी योजनाएं हैं। लोहे की तीन न
भट्टियाँ काम कर रही है, जिस कारण अर्जेण्टाइना की इस्पात-मिलों का ध्ये
प्रति वर्ष ७५,००० टन लोहे की ईंटों का उत्पादन करना है।

प्रायः प्रत्येक दक्षिण अमरीकन देश में विकास-संघ स्थापित हो चुके
जो कि सम्पूर्ण या आंशिक रूप में सरकारी होते हैं और जिनका विशेष उद्दे
प्राकृतिक साधनों का विकास करना है। विकास-संघ की सहायता से कोल
म्बिया रसायन, खनिज और विद्युत्-सम्बन्धी उद्योग खोल रहा है, यूरे
विद्युत्-शक्ति प्राप्त करने के लिए रायोनीशरो पर काम कर रहा है; औ
वेनज़ुला अपनी अति आवश्यक समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करके तरह
तरह के उद्योग खोल रहा है और कृषि और पशु-उत्पादन में वृद्धि क
रहा है।

लेकिन स्थायी प्रभाव पैदा करने के लिए किसी भी योजना को शु

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सर्वोच्च न्यायालय ने ५०० एकड़ से अधिक भूमि न रखने के सिद्धान्त की मान्यता को स्वीकृत किया, जिसके परिणाम-स्वरूप प्यूरटो रीको ने गन्ने के बड़े खेतों को तोड़ना आरम्भ किया। १९४८ तक ७० हजार एकड़ जमीन सरकार को मिली और तत्पश्चात् जमींदारों और कोआपरेटिव द्वारा चालित फार्मों को प्राप्त हुई। सन् १९३९ और १९४५ के बीच विद्युत्-शक्ति का उत्पादन तिगुना बढ़ गया। करों द्वारा आय सन् १९४० से २९० प्रतिशत ज्यादा बढ़ गई। प्यूरटो रीको के औद्योगिक विकास संघ ने प्यूरटो रीकन शराब के लिए काँच की बोतलें बनाने का कार-खाना खोला, सीमेण्ट की फैक्ट्री अपना ली और चीनी की मिलों के बचे हुए माल से कागज के गत्ते बनाना शुरू किया। औद्योगिक विकास संघ अपने खर्चे से कारखानों की इमारतें बनाकर व्यक्तिगत पूँजीपतियों को दे रहा है, जो अगर चाहें तो उन इमारतों को खरीद भी सकते हैं।

उपरोक्त बातों के परिणामस्वरूप अधिकाधिक मात्रा में अमरीकन पूँजी प्यूरटो रीको में आ रही है। सन् १९४२ के बाद ४० से अधिक अमरीकन उद्योग-धन्धे प्यूरटो रीको में खुल चुके हैं, प्यूरटो रीकन पूँजी भी व्यवसाय में लग रही है। शिक्षा का प्रसार बढ़ रहा है—प्राइमरी स्कूलों में पहले से कहीं ज्यादा बच्चे भरती हो रहे हैं। मलेरिया और दूसरी पेट की बीमारियों से होने वाली मौतें अब आधी हो गई हैं। सन् १९४० और १९४८ के बीच पैदा होते ही मरने वाले बच्चों की संख्या २५ प्रतिशत कम हो गई है।

अभी भी प्यूरटो रीको महल न बनकर एक गरीब के घर के समान ही है। अभी भी वहाँ की जनसंख्या अधिक है, जिसे कम करने के लिए लोगों को विदेशों में जा बसना होगा। लेकिन अब से दस वर्ष बाद चाहे प्यूरटो रीको अमरीका का ही अंग बना रहे या स्वाधीन हो, इसमें सन्देह नहीं कि यह देश फलेगा-फूलेगा, इसकी सामाजिक प्रगति होगी। प्यूरटो रीको ने साबित कर दिया है कि कोई भी आर्थिक या सामाजिक दुविधा ऐसी नहीं है जिसका हल करना सम्भव न हो।

चतुर्थ-सूत्र योजना में प्यूरटो रीको का बहुत बड़ा स्थान होगा। उसकी

अपने खर्च पर अपने देश में दक्षिण अमरीकनों को चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत औद्योगिक प्रविधियों की शिक्षा देगा। उसका निश्चय है कि वह चतुर्थ-लक्ष्य योजना के दोनों सिरों पर रहेगा--सहयोग देगा और प्राप्त भी करेगा।

अर्जेण्टाइना

अर्जेण्टाइना की वर्तमान पंचवर्षीय योजना उसे सम्पूर्ण आर्थिक आत्म-

बातों का खयाल रखना पड़ता है। बिना स्वस्थ व्यक्तियों—स्वस्थ शरीर और मस्तिष्क के बिना—कोई भी देश स्वस्थ नहीं हो सकता।

चतुर्थ-लक्ष्य दक्षिण अमरीका को टेक्नीकल सहायता तो देगा ही लेकिन साथ ही गुरू की बातों का भी खयाल करेगा।

उदाहरण के लिए, ब्रॉजील की बाल्य-मृत्यु-संख्या हमारी अपेक्षा पाँच गुनी ज्यादा है। सारे मेक्सिको में सन् १९४९ में केवल दस सुशिक्षित सार्वजनिक परिचारिकाएं (नर्स) थीं और ६२ प्रतिशत घरों में न तो सफाई-सुथराई के साधन थे और न पीने योग्य जल प्राप्त था। फ्रांसीसी गाइना के दस प्रतिशत निवासी कुष्ठ रोग से पीड़ित हैं; इसी प्रकार इक्वेडोर में भी हजारों व्यक्ति इस भीषण रोग के शिकार हैं। प्रत्येक उष्ण प्रदेश में चेचक की भरमार है। दक्षिण अमरीका के बन्दरगाहों में आतशक रोग इतना प्रचलित है कि अन्य किसी बन्दरगाह की अपेक्षा नाविकों को इन बन्दरगाहों में रोग पकड़ने का तीन गुना ज्यादा डर है। इक्वेडोर के कुछ भागों में ७५ प्रतिशत लोगों तक को मलेरिया हो जाता है। अमेजन प्रदेश तब तक लोगों को बसाने लायक नहीं बनाया जा सकता जब तक कि पीले बुखार का अन्त न किया जाय, जो कि उत्तर की ओर बढ़ रहा है। चेचक तब तक दूर नहीं की जा सकती जब तक कि इस उष्ण प्रदेश को गर्मी रोकने वाले इंजेक्शन न पहुँचाये जायंगे।

दक्षिण अमरीका की अर्थ-व्यवस्था को स्वस्थ बनाने से पहले वहाँ की जनता का स्वास्थ्य सुधारना अत्यन्त आवश्यक है। इस आवश्यकता की पूर्ति में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का उतना ही स्वार्थ है जितना कि एक कालिज के लड़के का अपने कमरे में रहने वाले साथी को संक्रामक रोगों से बचाने में। दक्षिण अमरीका की अर्थ-व्यवस्था स्वस्थ हो जाने पर संसार की अर्थ-व्यवस्था को स्वस्थतर बनाना आसान होगा।

चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत दक्षिण अमरीका के स्वास्थ्य और उत्पादन-शक्ति के सुधारार्थ किये जाने वाले कार्यों की व्यावहारिकता प्रतिदिन दिखाई दे रही है।

एक व्यापक रोग के सफल डॉक्टरी इलाज का नाटकीय उदाहरण आप

बीमारी और मौत फैलनी शुरू हो गईं। सिर्फ सन् १९३९ में ही १ लाख १४ हज़ार रोगियों का इलाज किया गया। लेकिन जब ब्राज़ीलियन सरकार ने राकफेलर फाउण्डेशन के विशेषज्ञों को बुलाया तो दो साल से कम अरसे में ही मच्छरों को नष्ट कर दिया गया।

सन् १९४३ में वेनजुला के मराके नामक प्रदेश में २२ प्रतिशत लोगों को मलेरिया होता था। मच्छरों के पैदा होने के स्थानों को नष्ट करके अन्तर-अमरीकन विषयक संस्था ने सन् १९४७ में मलेरिया को एक प्रतिशत तक घटा दिया। अब उस इलाके में, जिसका आर्थिक उपयोग नहीं किया जा सकता था, फसलें हो रही हैं और जानवर चराये जाते हैं। पेरू के चिम्बोटे प्रदेश में इसी प्रकार की एक योजना ने चार वर्ष में मलेरिया को २५ प्रतिशत से २ प्रतिशत पर ला दिया है; जिसके फलस्वरूप पेरू के तट का सबसे अच्छा बन्दरगाह आर्थिक विकास के लिए खुल गया है। इसी प्रकार हैटी में अन्तर-अमरीकन विषयक संस्था ने १० हज़ार एकड़ भूमि में मच्छरों और और मलेरिया का अन्त कर दिया है। किसान अब इस साफ की हुई भूमि पर आकर रहने लगे हैं, जिसका मूल्य २ लाख रुपए से ३५ लाख रुपए हो गया है।

इसी प्रकार कृषि के क्षेत्र में टेकनिकल सहायता द्वारा होने वाले कार्यों की सम्भावनाएं कम प्रभावोत्पादक नहीं हैं। गुटेमाला में उदाहरणार्थ, अमरीकन और गुटेमाला कृषि-विशेषज्ञों ने कॉफी की उपज दुगुनी-तिगुनी बढ़ा दी है।

एल सेलवाडोर में एक अमरीकन विशेषज्ञ ने एक किसान को सोडियम नाइट्रेट द्वारा अपना खेत उपजाऊ बनाना सिखाया जिसके फलस्वरूप किसान के खेत की उपज तिगुनी बढ़ गई। इसी देश में अमरीकन विशेषज्ञों ने कॉफी के बीजों के गूदे को जानवरों के खाने के काम में लाना सिखाया।

क्यूबा में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कृषि और वाणिज्य-विभागों ने एक मशीनरी बनाने वाले अमरीकन तथा फ्लोरिडा के विश्वविद्यालय और एक व्यापार-संघ और क्यूबा-सरकार के सहयोग से केनफ नामक पौधे का विकास किया है जो कि चीनी के बोरे बनाने वाले एशिया के पटसन का स्थान लेगा। केनफ शीघ्र ही उष्ण अमरीका की एक प्रमुख उपज बन जायगा।

अभी कुछ दिन पहले ब्राज़ील में नींबू और संतरों के बगीचों को ट्रीस्टेज़ा नामक बीमारी से खतरा पैदा हो गया। हमारे कृषि-विभाग के एक विशेषज्ञ ने ढाई वर्ष के अध्ययन के बाद इस बीमारी के कारण का पता लगाया। इस खोज के कारण लाखों रुपए का यह उद्योग बचाया जा सका है जब कि इस अध्ययन में केवल डेढ़ लाख रुपया खर्च हुआ।

इक्वेडोर के कोको का उत्पादन पिछले बीस वर्षों में एक रहस्यमयी बीमारी के कारण ७५ प्रतिशत घट गया था। अमरीकन और इक्वेडोरियनों ने एक संयुक्त प्रयोगशाला स्थापित की। दो वर्षों में ही ऐसी दो विशेष विधियाँ निकाली गईं जिनसे बीमारी दूर हो रही है।

चतुर्थ-लक्ष्य जैसी ही इस प्रकार की दूसरी योजनाएं सिंचाई, जमीन-सुधार, औद्योगिक प्रविधियों, खनिज पदार्थ, श्रम, शिक्षा और यातायात के क्षेत्रों में काम कर रही हैं। इन योजनाओं की गति बढ़ेगी और साथ ही इनका क्षेत्र भी। सन् १९५० के अन्त तक सार्वजनिक स्वास्थ्य-सम्बन्धी बीसों कार्य हो रहे होंगे। ग्रामीण दक्षिण अमरीकन सीखेंगे कि सफाई का ख्याल रखते हुए टट्टी-पाखाने बनाने का रोमान्स-रहित पर अति आवश्यक कार्य कैसे किया जाता है। वे उन नए इलाजों को भी सीखेंगे जिनसे कुष्ठ रोग की संक्रामकता दूर रखी जा सके। शहर और गाँव में समान रूप से डी०डी० टी० के प्रयोग से मलेरिया और मच्छरों को नष्ट किया जायगा। जंगल के बुखारों से विशेषज्ञ लड़ रहे हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य स्वयं बड़े कारखानों के लिए पूँजी न दे सकेगा पर वह वेनज़ुएला की मछलियों से विटामिन उत्पादित करने वाली मशीनों और पैराग्वुए की लकड़ी का मूल्य बढ़ाने के लिए अनुसंधानशालाएं स्थापित

क्यूबा में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कृषि और वाणिज्य-विभागों ने एक मशीनरी बनाने वाले अमरीकन तथा फ्लोरिडा के विश्वविद्यालय और एक व्यापार-संघ और क्यूबा-सरकार के सहयोग से केनफ नामक पौधे का विकास किया है जो कि चीनी के बोरे बनाने वाले एशिया के पटसन का स्थान लेगा। केनफ शीघ्र ही उष्ण अमरीका की एक प्रमुख उपज बन जायगा।

अभी कुछ दिन पहले ब्राजील में नींबू और संतरों के बगीचों को ट्रीजटेजा नामक बीमारी से खतरा पैदा हो गया। हमारे कृषि-विभाग के एक विशेषज्ञ ने ढाई वर्ष के अध्ययन के बाद इस बीमारी के कारण का पता लगाया। इस खोज के कारण लाखों रुपए का यह उद्योग बचाया जा सका है जब कि इस अध्ययन में केवल डेढ़ लाख रुपया खर्च हुआ।

इक्वेडोर के कोको का उत्पादन पिछले बीस वर्षों में एक रहस्यमयी बीमारी के कारण ७५ प्रतिशत घट गया था। अमरीकन और इक्वेडोरियनों ने एक संयुक्त प्रयोगशाला स्थापित की। दो वर्षों में ही ऐसी दो विशेष विधियाँ निकाली गईं जिनसे बीमारी दूर हो रही है।

चतुर्थ-लक्ष्य जैसी ही इस प्रकार की दूसरी योजनाएं सिंचाई, जमीन-सुधार, औद्योगिक प्रविधियों, खनिज पदार्थ, श्रम, शिक्षा और यातायात के क्षेत्रों में काम कर रही हैं। इन योजनाओं की गति बढ़ेगी और साथ ही इनका क्षेत्र भी। सन् १९५० के अन्त तक सार्वजनिक स्वास्थ्य-सम्बन्धी बीसों कार्य हो रहे होंगे। ग्रामीण दक्षिण अमरीकन सीखेंगे कि सफाई का खयाल रखते हुए टट्टी-पाखाने बनाने का रोमांच-रहित पर अति आवश्यक कार्य कैसे किया जाता है। वे उन नए इलाजों को भी सीखेंगे जिनसे कुष्ठ रोग की संक्रामकता दूर रखी जा सके। शहर और गाँव में समान रूप से डी०डी०टी० के प्रयोग से मलेरिया और मच्छरों को नष्ट किया जायगा। जंगल के बुखारों से विशेषज्ञ लड़ रहे हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य स्वयं बड़े कारखानों के लिए पूँजी न दे सकेगा पर वह वेनजुला की मछलियों से विटामिन उत्पादित करने वाली मशीनों और पेराग्वे की लकड़ी का मूल्य बढ़ाने के लिए अनुसंधानशालाएं स्थापित

प्रकार तय नहीं किया जा सकता कि जिससे प्रत्येक व्यक्ति को संतोष हो। औद्योगिक दृष्टि से बढ़े हुए देशों को इस रवैये से चिढ़ होगी पर उन्हें धैर्य रखना होगा। नये औद्योगीकरण में इन राष्ट्रों का यह रवैया अन्त में न तो औद्योगीकरण को रोक सकेगा और न ही इन देशों को दूसरे राष्ट्रों के आर्थिक भाईचारे से स्थायी रूप से अलग रख सकेगा।

अमरीकनों को यह मान लेना चाहिए कि दक्षिण अमरीकन देशों की विकास की योजनाएं साधारणतः उन देशों की सरकारों द्वारा निर्देशित होंगी। प्रत्येक देश की अपनी-अपनी पंचवर्षीय, दसवर्षीय अथवा बीसवर्षीय योजनाएं हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य सर्वसाधारण का हित है, न कि राष्ट्रीयकरण अथवा व्यक्तिगत पूंजी को सहारा देना। लेकिन ऐसे आर्थिक वातावरण का निर्माण करना सरकार का उत्तरदायित्व माना जा चुका है, जिससे आर्थिक विकास की प्रगति को प्रोत्साहन मिले।

सबसे जरूरी यह सीधी-सादी बात है- कि यथार्थ में काम हो रहा है, लेकिन इस बात पर ज्यादा जोर देना कठिन है। जंगलों में सड़कें, रेगिस्तानों में बिजली की लाइनें बन रही हैं; कारखानों की चिमनियों से धुआं निकल रहा है और किसान अपने जानवरों को अच्छा खिला-पिला रहे हैं। आर्थिक संकट आते-जाते रहते हैं, सरकारें बनती-बिगड़ती रहती हैं और जब कि कूटनीतिज्ञ वार्ताएं करते हैं और राजनीतिज्ञ शपथें खाते हैं, दक्षिण अमरीकन विकास उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है।

दक्षिण अमरीका को अलादीन का चिराग मिल गया है। सन् १९५५ के अन्त तक मेक्सिको, चिली, ब्राजील और अर्जेण्टाइना को पिछले दस वर्षों से ५० लाख किलोवाट अधिक विद्युत्-शक्ति प्राप्त हो सकेगी; जिसके माने हैं इन चारों देशों के प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बच्चे को हर समय एक गुलाम की सेवाएं उपलब्ध होंगी। दक्षिण अमरीकन पेटों में ज्यादा अन्न होगा, उनके जिस्मों पर बेहतर कपड़े होंगे, और उनकी जेबों में ज्यादा पैसे खनखनाते होंगे। हम देखते ही रहेंगे लेकिन उनकी प्रगति न रुकेगी।

हम किसी अंश तक अपने अनुभवों से उनको लाभान्वित कर सकते हैं।

और इस ग्रोथ का [illegible]
के लिए जिन मुख्य धातुओं की आवश्यकता होती है वे सभी पूरी अफ्रीका में प्राप्य हैं, सिवाय तेल के जो कि पास ही लाल सागर के पार से लाया जा सकता है। उत्तरखण्ड में सामरिक महत्त्व की धातु यूरेनियम इतनी बड़ी तादाद में मिल सकती है कि कल्पना नहीं की जा सकती।

'न्यूयार्क टाइम्स' ने अफ्रीका और मध्यपूर्व को संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बाहर लगाई जाने वाली पूँजी के उपयुक्त स्थान बताया है।

इस दिलचस्पी का एक कारण यह भी है कि इस श्यामल महाद्वीप में बढ़ती हुई कम्युनिस्ट उत्तेजना के बावजूद भी इस लोक-प्रसिद्ध अविश्वसनीय संसार का तुलनात्मक दृष्टि से यह ऐसा विश्वसनीय भाग है कि जहाँ पूँजी लगाई जा सकती है। यहाँ के ब्रिटिश, फ्रैंच और बेलजियन सामन्तों द्वारा विदेशी उद्योगों को हड़पे जाने की सम्भावना नहीं है।

सन् १९४७ में केवल दक्षिण अफ्रीका में ही ३७२१ नई कम्पनियाँ खुलीं जिनकी कुल पूँजी २ अरब रुपए थी। इस पूँजी का अधिकांश भाग ब्रिटेन तथा पश्चिमी योरोप से आया। दक्षिण अफ्रीका को सन् १९४८ में अमरीका से ५० करोड़ रुपए मिले।

अमरीकन और योरोपीय व्यवसाय नए बाज़ारों का उपयोग कर सकते हैं। अमरीकन और योरोपीय पूँजीपति अपनी-अपनी पूँजी का सदुपयोग कर सकते हैं। २० करोड़ अफ्रीका-वासियों को धनी देखना हमारे लिए अवश्य ही सुखप्रद होगा।

अगर अमरीकन या अन्य कोई पूँजीपति इस खयाल से अफ्रीका पहुँचता है कि उसे वही पुराना, चिन्ता-रहित औपनिवेशिक शोषण मिलेगा तो उसे भ्रम दूर करके तथा स्वस्थ होकर घर को लौटना पड़ेगा।

यह प्रश्न किया जा सकता है कि क्या साम्राज्यवादी शोषण अफ्रीका के भविष्य के लिए खर्च किये गए उन लाखों-करोड़ों रुपयों से भी बुरा है जो कि योरोपीय सरकारों ने सद्भावित किन्तु कुव्यवस्थित योजनाओं पर खर्च

प्रकार तय नहीं किया जा सकता कि जिससे प्रत्येक व्यक्ति को संतोष हो। औद्योगिक दृष्टि से बढ़े हुए देशों को इस रवैये से चिढ़ होगी पर उन्हें धैर्य रखना होगा। नये औद्योगीकरण में रत राष्ट्रों का यह रवैया अन्त में न तो औद्योगीकरण को रोक सकेगा और न ही इन देशों को दूसरे राष्ट्रों के आर्थिक भाईचारे से स्थायी रूप से अलग रख सकेगा।

अमरीकनों को यह मान लेना चाहिए कि दक्षिण अमरीकन देशों की विकास की योजनाएं साधारणतः उन देशों की सरकारों द्वारा निर्देशित होंगी। प्रत्येक देश की अपनी-अपनी पंचवर्षीय, दसवर्षीय अथवा बीसवर्षीय योजनाएं हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य सर्वसाधारण का हित है, न कि राष्ट्रीयकरण अथवा व्यक्तिगत पूंजी को सहारा देना। लेकिन ऐसे आर्थिक वातावरण का निर्माण करना सरकार का उत्तरदायित्व माना जा चुका है, जिससे आर्थिक विकास की प्रगति को प्रोत्साहन मिले।

सबसे जरूरी यह सीधी-सादी बात है कि यथार्थ में काम हो रहा है, लेकिन इस बात पर ज्यादा जोर देना कठिन है। जंगलों में सड़कें, रेगिस्तानों में बिजली की लाइनें बन रही हैं; कारखानों की चिमनियों से धुआँ निकल रहा है और किसान अपने जानवरों को अच्छा खिला-पिला रहे हैं। आर्थिक संकट आते-जाते रहते हैं, सरकारें बनती-बिगड़ती रहती हैं और जब कि कूटनीतिज्ञ वार्ताएं करते हैं और राजनीतिज्ञ शपथें खाते हैं, दक्षिण अमरीकन विकास उत्तरोत्तर बढ़ता ही जा रहा है।

दक्षिण अमरीका को अलादीन का चिराग मिल गया है। सन् १९५५ के अन्त तक मेक्सिको, चिली, ब्राजील और अर्जेण्टाइना को पिछले दस वर्षों से ५० लाख किलोवाट अधिक विद्युत्-शक्ति प्राप्त हो सकेगी; जिसके माने हैं इन चारों देशों के प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बच्चे को हर समय एक गुलाम की सेवाएं उपलब्ध होंगी। दक्षिण अमरीकन पेटों में ज्यादा अन्न होगा, उनके जिस्मों पर बेहतर कपड़े होंगे, और उनकी जेबों में ज्यादा पैसे खनखनाते होंगे। हम देखते ही रहेंगे लेकिन उनकी प्रगति न रुकेगी।

हम किसी अंश तक अपने अनुभवों से उनको लाभान्वित कर सकते हैं।

की मशीनें, जो हम शुरू में लाये, उन परिस्थितियों के अनुपयुक्त
जिनका हमें सामना करना पड़ा। कई जगहों को, जिन्हें हमने शुरू में पसन्द किया था, पानी की कमी के कारण छोड़ना पड़ा। अब हमें मोन हो गया कि ब्रिटेन की खाद्य-समस्या को हल करने में यह योजना सम्भवतः सहायक न हो सके। हमारे पैदा किये हुए खाद्य का एक बड़ा भाग पूर्वी अफ्रीका में खप जायगा। अगर कभी इतनी बचत भी हो कि माल बाहर लाया जा सके तो ब्रिटिश द्वीप-समूह से कहीं नजदीक दूसरे स्थानों में बेचा जा सकता है।"

और जब कि मूँगफली की पैदावार पर ब्रिटेन करोड़ों रुपया खर्च कर रहा था, ३ लाख टन मूँगफली का ढेर पड़ा सड़ रहा था, क्योंकि नाइगेरियन रेलवे इतनी जल्दी मूँगफलियों को नहीं उठा पा रही थी।

अभी तक तो टांगानिका की मूँगफली-योजना असफल ही रही है। अभी भी कुछ बचाया जा सकता है, लेकिन वक्त बहुत लगेगा और कीमत भी बेहद ज्यादा पड़ेगी।

उपरोक्त उदाहरण से हम एक बार फिर यही सीख पाते हैं कि पिछड़े हुए इलाकों को चलना सीखने से पहले दौड़ाना नहीं चाहिए, बड़ी-बड़ी योजनाओं को बिना जाँचे शुरू नहीं करना चाहिए। चतुर्थ लक्ष्य के अन्तर्गत टांगानिका-योजना स्वीकृत होने से पूर्व, विशेषज्ञों ने जमीन के उपजाऊपन और नमी को जाँचा होता, यह देखा होता कि वहाँ से बाजार कितनी दूर है; किस मात्रा में काम सीखे हुए व्यक्ति और मशीनें प्राप्य हैं—वे सब सैंकड़ों बातें देख ली होतीं जिन पर ऐसे कार्यों की सफलता निर्भर करती है।

इसके समानान्तर और इसके विपरीत ही लाइबेरिया-जनतन्त्र में व्यक्तिगत पूँजी से शुरू की हुई एडवर्ड आर० स्टेटिनियस की एक योजना है, जिसका उद्देश्य नये तरीकों से देश के प्राकृतिक साधनों का विकास करना है। कम्पनी की २५ प्रतिशत मूल सामग्री सरकार को मिलनी थी जिसकी आय को सड़कें बनाने आदि के बुनियादी कामों पर खर्च करना था। मूल

किए हैं। ऐसी एक योजना, जो आरम्भिक आशा को निराशा में परिणत करती प्रतीत होती है, ब्रिटिश योजना है; जिसके अन्तर्गत टैंगानिका में मूँगफली उगाने के लिए जमीन साफ की जा रही है—यह पश्चिमी संसार का सबसे बड़ा कृषि-सम्बन्धी समाजवादी प्रयोग है।

इस योजना के आरम्भिक दिनों में लन्दन के 'टाइम्स' ने लिखा था कि यह योजना पिछड़े हुए इलाकों की उन्नति के लिए शुरू की गई योजनाओं में सबसे निर्भीक और विस्तृत है।

विचार सुन्दर था। आज संसार में जरूरत से ६० लाख टन कम तेल और चर्बी पैदा होती है। ब्रिटेन की अपनी खपत १० लाख टन प्रति वर्ष है। मूँगफली पैदा करने की इस योजना द्वारा ६ लाख टन की कमी पूरी की जा सकती थी। सन् १९५६ के अन्त तक ५,००० वर्ग मील भूमि की झाड़ियाँ साफ हो जाती थीं।

अफ्रीका-वासियों में से अधिक लालसा रखने वाले लोगों को मशीनों का काम सिखाया जायगा। वे लोग ट्रैक्टर और मशीनें चलायेंगे। मूँगफली उगाने के लिए ८००० ट्रैक्टर और हजारों मोटर लारियों तथा दूसरी मशीनों का प्रयोग किया जायगा—इस सामान का अधिक भाग पिछले युद्ध में अमरीका द्वारा दक्षिण प्रशान्त सागर में छोड़े हुए सामान से लिया जायगा।

योजना यह थी कि अन्त में ३०-३० हजार एकड़ के १०७ फार्म बनाए जायेंगे। प्रत्येक फार्म पर ७० काम सीखे हुए अफ्रीकन और २३० दैनिक मजदूर होंगे। ३०० आदमियों के प्रत्येक समूह के लिए एक गाँव होगा जिसका अपना स्कूल, अस्पताल और स्टोर होगा।

लेकिन १९४६ के आरम्भ से सिद्धान्त और व्यवहार के बीच खाई पैदा हो गई है जो दिन-पर-दिन बड़ी हो रही है। मूँगफलियों का कोई उपयोग नहीं यदि उन्हें दूर तक न पहुँचाया जा सके—जिसके माने हैं रेलवे और बन्दरगाह का होना, जो अब तक तैयार नहीं हुए हैं। जैसा कि ब्रिटेन के खाद्य मंत्री ने १९४९ में खेद सहित स्वीकार किया, "हमारे अनुमान

किया और बहुमूल्य विकास सुझाव शा कि ।

एक अधिकारी का कथन है कि "शिष्ट मंडल के सदस्यों ने आदिवासियों द्वारा तत्परतापूर्वक नए विचार, नए तरीके और नई खुराक अपनाने की उत्कट इच्छा पर आश्चर्य प्रगट किया। करीब बीस गाँवों के एक प्रयोग-क्षेत्र में, जहाँ की जनता कट्टर रूढ़िवादी समझी जाती थी, लोगों ने कृषि के नए तरीकों को उत्साहपूर्वक अपनाया। मनुष्यों के सिर पर बोझ लादने की पुरानी परम्परा को छोड़कर इन लोगों ने अमरीकनों द्वारा लाए हुए खच्चरों को काम में लाना शुरू किया।"

लाइबेरिया भीषण वनों का देश है; यहाँ सोना, काथाओ, गन्ना और तरह-तरह के तेल बहुतायत में पाये जाते हैं। तट के निकटवर्ती प्रदेश में लोहा, जस्ता, ताँबा, कोरण्डम, क्रोमाइट, बॉक्साइट, मैंगेनीज आदि धातुओं के पाने की बहुत सम्भावनाएं हैं जिनकी अभी तक पूरी तरह खोज नहीं की गई है।

मोनरोविया के ११ करोड़ रुपए के खर्च पर बना हुआ बन्दरगाह समुद्र पर जाने वाले बड़े जहाजों के लिए तैयार हो चुका है, और अधिकाधिक मात्रा में अमरीकन कम्पनियाँ पूँजी लगाने की सम्भावनाएं ढूँढ़ रही हैं जिसके परिणामस्वरूप आर्थिक उन्नति की आने वाली लहर के लिए लाइबेरिया तैयार है। यह आशा की जाती है कि अगले पाँच वर्षों में लाइबेरिया का वैदेशिक व्यवसाय २५ प्रतिशत बढ़ जायगा।

ब्रिटेन के खाद्य-मंत्री श्री स्ट्रेची ने अभी हाल ही में बताया कि "यूरोपीय पुनःसुधार योजना यदि पश्चिमी योरोप तक ही सीमित रहेगी तो सफल न हो सकेगी क्योंकि न तो पश्चिमी यूरोप आर्थिक दृष्टि से आत्म-निर्भर है और न कभी हो सकता है......पश्चिमी यूरोप के प्राचीन संसार का संतुलन बिगड़ चुका है और इस संतुलन को ठीक बनाए रखने के लिए अफ्रीका के प्राचीनतम संसार की हमें सहायता लेनी चाहिए और साथ ही

सामग्री का १० प्रतिशत लाइबेरिया-निवासियों के लिए अलग रख दिया गया। इसके बदले में स्टेटिनियस का लाइबेरिया के बहुत-से प्राकृतिक साधनों पर वस्तुतः एकाधिपत्य हो गया। हवाई जहाज चलाने वाली कम्पनियों, कोका के बगीचों, रेफ्रीजरेटर के कारखानों और अन्य व्यापारिक कम्पनियों को स्थापित करने के लिए आर्थिक सहायता दी गई।

लेकिन कम्पनी कमजोर होती जा रही है। श्री स्टेटिनियस की मृत्यु से उनके आकर्षक नेतृत्व की अनुपस्थिति में ऐसा प्रतीत होता है कि कम्पनी को अपनी आरम्भिक योजना घटानी होगी।

स्टेटिनियस और टांगानिका-योजनाएं कागज पर बहुत बड़ी दिखाई देती थीं पर अन्दाज में सिकुड़कर छोटी रह गई हैं। लेकिन स्टेटिनियस की योजना की गलतियों का भार व्यक्तिगत व्यापारियों को उठाना पड़ा है न कि करदाताओं को, और जब योजनाएं सफल होती नहीं दिखाई दीं तो वे रोक दी गईं। राजनीतिक स्वाभिमान के कारण अव्यावहारिक योजनाओं को भी चलाते रहने का यहाँ सवाल नहीं था।

लाइबेरिया

सन् १८२२ में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पुराने गुलामों से लदकर एक जहाज अफ्रीका के पश्चिमी तट पर पहुँचा—इन्हीं लोगों की बस्ती का बाद में लाइबेरिया नाम पड़ा; अफ्रीका में केवल यही नीग्रो-प्रधान जनतन्त्र है। सौ बरसों तक ये पश्चिमी लाइबेरियन सहमे हुए, तट के करीब ही रहकर, अफ्रीका की अन्दरूनी जातियों से लड़ते रहे। १९२० के लगभग जाकर इन लाइबेरियनों ने काफी दूर तक अपना अधिकार जमा लिया और इसके बाद ही उन्होंने फायर स्टोन रबर कम्पनी को सुविधाएं दीं। हो सकता है रबर के ये बड़े बगीचे अस्त होते हुए आर्थिक उपनिवेशवाद के प्रतीक रहे हों, पर फिर भी इनके द्वारा सफाई-सुथराई, अस्पताल, स्कूल आदि सुविधाएं प्राप्त हुई हैं और हजारों लाइबेरिया-वासियों को उन्नति के सुअवसर मिले हैं।

पिछले महायुद्ध के दौरान में अमरीकनों ने लाइबेरिया की राजधानी मोनरोविया से ६० मील दूर रोबर्ट्स फील्ड नामक स्थान बनाया और मोन-

हैं। इन चारों में बेलजियम और पुर्तगाल अपने अफ्रीकन उपनिवेशों के आधुनिकीकरण में व्यक्तिगत पूँजी का सबसे ज्यादा सहारा ले रहे हैं। व्यक्तिगत पूँजी ने बेलजियम काँगो के तीन शहरों के चारों ओर यातायात, बिजली के तार और हल्के उद्योगों का जाल बिछा दिया है। सोना, ताँबा, कोयला, टीन, हीरे, मैंगनीज आदि की खानों का आधुनिकीकरण हो रहा है—साथ ही काँगो के यूरेनियम का भी, जिसे कि अमरीका अपने अणु-शस्त्रों के लिए ले रहा है। एक करोड़ काँगो-वासियों को इस योजना के अन्तर्गत लाया जा रहा है जो अब तक जंगली झाड़ियों में रहते रहे हैं और जिन्हें अब मकान-शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं मिलेंगी। लीवर आदर्श टेकनकिल स्कूल खोल रहा है और आरा-मिल प्लाइवुड और साबुन की फैक्ट्रियाँ आरम्भ कर रहा है।

ब्रुसेल्स-सरकार ने ४ अरब, २३ करोड़ ५० लाख रुपए का एक सार्वजनिक हित-कोष बेलजियन काँगो और रुआण्डा उरिंडी इलाके के लिए बनाया है। लेकिन विस्तृत औद्योगिक तथा कृषि-विकास की योजनाओं के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सहायता की आवश्यकता होगी। चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत किन शर्तों पर बेलजियन उपनिवेशों को व्यक्तिगत अमरीकन पूँजी मिल सकेगी इस सम्बन्ध की बातचीतें अभी हाल में ही हुई हैं।

औद्योगीकरण शुरू करने के लिए सीमेण्ट मूल पदार्थ है जिसके बिना सड़कें, बाँध, सिंचाई के काम, नालियाँ, हवाई अड्डे, बन्दरगाह आदि बनाना सम्भव नहीं है। सन् १९४९ में अमरीकन कम्पनियों ने अफ्रीकन इतिहास के सबसे बड़े सीमेण्ट बनाने के कारखाने के लिए मशीनें दी हैं। पुर्तगाली पूर्व और पश्चिमी अफीका के नए कारखाने सीमेण्ट का उत्पादन तिगुना बढ़ा देंगे।

फ्रांसीसी और ब्रिटिश दोनों सरकारें अफ्रीकन उपनिवेशों के विकास

अफ्रीका को भी परिवर्तित करने का रास्ता निकालना चाहिए। ऐसा अफ्रीका, जिसकी अर्थ-व्यवस्था कुदाली और फावड़े जैसे पुराने हथियारों पर आधारित है, हमारे लिए भार ही रहेगा; लेकिन ऐसा अफ्रीका जिसकी अर्थ-व्यवस्था ट्रैक्टरों पर आधारित है पश्चिम के लिए एक अनिवार्य मित्र सिद्ध होगा।"

अफ्रीका की चार बड़ी औपनिवेशिक शक्तियाँ—ब्रिटेन, फ्रान्स, बेलजियम, पुर्तगाल—आज इस श्यामल महाद्वीप की आधुनिकता में व्यस्त हैं। इनका कार्य बहुत-कुछ अमरीकन सहायता पर निर्भर है।

उदाहरणार्थ ई० सी० ए० ने पूर्वी अफ्रीका की खनिज पदार्थ-सम्बन्धी सम्भावनाओं के अन्वेषण के लिए ५ करोड़ रुपया अलग निकाल दिया है। यातायात की लाइनों की देख-भाल और मरम्मत के लिए ई० सी० ए० के विशेषज्ञ सलाह देते हैं। १९४८ में ई० सी० ए० ने उत्तरी रोडेशिया के रोमाना कारपोरेशन को ताँबे से गिलट-जैसी सफेद वस्तु—कोबेल्ट निकालने के लिए २७ लाख ५० हजार रुपया दिया। इसी प्रकार केन्या कार्इनाइट लिमिटेड को कर्ज दिया गया। इन दोनों उदाहरणों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका को यह अधिकार प्राप्त हुआ कि अगर वह चाहे तो माल इकट्ठा करने की योजना के अन्तर्गत उपरोक्त कम्पनियों के उत्पादन को खरीद सकता है।

ई० सी० ए० के अन्तर्गत अमरीकन विशेषज्ञ अन्य ब्रिटिश विशेषज्ञों के साथ मलेरिया तथा कीटाणु-जनित अन्य रोगों का अन्वेषण कर रहे हैं। ये योजनाएं चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत अधिकाधिक बढ़ेंगी।

औपनिवेशिक अफ्रीका के विकास के लिए ई० सी० ए० ने बहुत-सी प्रमुख योजनाओं को आर्थिक सहायता दी है। उदाहरण के लिए, यदि लायन्स का पीयरे ड्यूक्लोस नामक व्यक्ति अमरीकन हारवेस्टिंग मशीन खरीदना चाहता है तो वह अपनी सरकार को मशीन का मूल्य अपने देश की मुद्रा में देगा और उसकी सरकार मशीन खरीदने के लिए अमरीका को डॉलर में भुगतान करेगी पर पीयरे ड्यूक्लोस की पूँजी अलग एक कोष में जमा होती रहेगी। इस कोष के एकत्रित धन का उपयोग

के पथ पर ६०० फीट चौड़ा जल-प्रवाह बहने लगा, जि...
खड़े-खड़े ताज्जुब के साथ निहारने लगे।

यह जल-प्रवाह नाइगर वैली ऑथेरिटी के प्रारम्भिक कार्य का फल था। यह नदी अर्ध-गोलाकार बनाकर बहती है। इसके तटों पर शताब्दियों की उपज एकत्रित है जहाँ किसी भी प्रकार का उष्ण पौधा पैदा हो सकता है।

फ्रांसीसी सरकार के नाइगर नदी-सम्बन्धी एक अधिकारी ने बताया कि "एन० बी० ए० का उद्देश्य सामाजिक है क्योंकि इधर-उधर बिखरी हुई आबादी को समूहों में एकत्रित किया जायगा; उनको जीवन-यापन की विशेष सुविधाएं दी जायंगी......"

उन्होंने आगे बताया कि "एन० बी० ए० का उद्देश्य आर्थिक भी है क्योंकि वह देश, जो स्वयं पर निर्भर रहा, (और बुरी तरह चलता रहा) जिसने कभी कोई माल बाहर नहीं भेजा आज एक उपजाऊ इलाका बनाया जा रहा है जो कि पश्चिमी अफ्रीका के और संसार के अन्य भागों से भविष्य में अपनी उपज का आदान-प्रदान करेगा।"

शायद ही विकास की अन्य योजनाओं को ऐसी बाधाओं का सामना करना पड़ा हो जैसा कि अफ्रीकन योजनाओं को करना पड़ता है। दूसरे महाद्वीपों पर टेकनीशियन इस बात की शिकायत कर सकते हैं कि किसान को जानवरों की बजाय मशीन का प्रयोग सिखाना मुश्किल था कि मनुष्य की शारीरिक शक्ति की अपेक्षा जानवरों का प्रयोग करना उचित है।

नाइगेरियन बैल मेहनत करने का आदी नहीं है। वह स्वेच्छापूर्वक जंगल में घूमता है। उसको काम में लगाना कष्टसाध्य और धीरे होने वाला काम है। लेकिन यह काम इतना कष्टसाध्य नहीं है जितना कि किसान को यह समझाना कि वह अपनी छोटी मूँठ वाली कुदाली को हल और बैल से बदलकर ज्यादा फसलें पैदा कर सकता है। जब उसको सिखाने वाला चला

के लिए व्यक्तिगत पूँजी की अपेक्षा सार्वजनिक पूँजी पर ज्यादा जोर दे रहे हैं। १६४७ मे फ्रांस ने अपने अधीन इलाकों में १० अरब रुपया खर्च किया। नई फ्रासीसी योजनाओं के अन्तर्गत २५ लाख एकड़ भूमि को सिंचाई द्वारा खेती के लायक बनाया जायगा। सरकारी ट्रॉपिकल आयल कम्पनी इतनी मूँगफलियाँ उगा रही है कि सन् १६५२ तक पैदावार १ लाख टन बढ़ जायगी और अगले पाँच साल बाद ५ लाख टन हो जायगी। ये योजनाएँ तो चल ही रही हैं, लेकिन साथ ही फ्रासीसी अफ्रीका के सुदूर स्थित स्थानों में नए स्कूल भी स्थापित हो रहे हैं; पौष्टिक स्तर भी ऊँचा उठाया जा रहा है। सन् १६५१ के अन्त तक काले अफ्रीका और मेडागास्कर में २ करोड़ १५ लाख व्यक्तियों को बीमारियों से बचाने के लिए टीके लगाये जा चुके होंगे। अस्पतालों मे पिछले पॉच वर्षों से ३२ प्रतिशत अधिक जगह हो गई है।

उपरोक्त योजनाओं में बहुत-सी केवल कागज पर ही हैं इसलिए यह नही कहा जा सकता कि सब सम्पूर्णतः पूरी होंगी ही। लेकिन इनमें से एक योजना—नाइगर वैली ऑथेरिटी—सन् १६३२ से काम कर रही है। एन० वी० ए० ने दिखा दिया है कि इसके द्वारा लिये हुए कार्यों का महत्व केवल अफ्रीका के लिए ही नहीं बल्कि सारे ससार के लिए इस बात में है कि उचित तरीकों से काम करने पर अफ्रीकन किसान अपना अन्नोत्पादन १५ गुणा बढ़ा सकता है।

नाइगर वैली ऑथेरिटी

फ्रासीसी पूर्वी अफ्रीका की एक धूप से झुलसी हुई घाटी के एक गॉव में इंजीनियरो ने पाया कि एक पौराणिक कथा घर किये हुए है। वहाँ के वृद्ध जनों का कहना है कि एक जमाना था कि एक बड़ी नदी यहाँ बहा करती थी जो धन-धान्य देने वाली थी। एक दिन अचानक नदी सूख गई, जैसे कि किसी ने उसे चूस लिया हो। फसलें गायब हो गईं, तब से इस प्रदेश के लोग भूखे और गरीब हैं।

इञ्जीनियर मुस्करा दिए। वे जानते थे कि यह पौराणिक कथा सत्य पर

जाता है तो वह फिर अपने पुराने औजारों को काम में लाने लगता है। इसे नए साधनों पर विश्वास न होगा जब तक कि लम्बे अनुभव से इन साधनों का लाभ सिद्ध न हो जाय।

नाइगर वैली ऑथेरिटी की प्रगति में एक दूसरी बाधा थी पिछला महायुद्ध। फ्रांस के पास इतनी शक्ति न बची थी कि जिसे वह औपनिवेशिक प्रयोगों पर लगा सके, फिर भी सारी लड़ाई के दौरान में काम चलता ही रहा। पहला बड़ा काम-सैनसेंडिंग का बाँध १९४१ में पूरा हुआ। जर्मनी के आत्म-समर्पण के समय तक ५० हजार एकड़ ऊसर, और ऐसा जंगल, जहाँ लोग पहले कभी नहीं रहते थे, साफ करके सिंचाई द्वारा ऐसा बना दिया गया है जहाँ आस-पास के समान जलवायु के रहने वाले २० हजार स्त्री-पुरुषों को लाकर बसाया गया है।

एन० वी० ए० न केवल सिंचाई ही करेगा बल्कि बिजली, रेफ्रीजरेशन और अन्य हल्के उद्योगों की सुविधाएं भी प्रदान करेगा। नाइगर नदी का यदि सही उपयोग किया जाय तो फ्रांसीसी नाइगेरियनों के रहन-सहन का स्तर इतना ऊँचा उठाया जा सकता है कि वे इन शुरू हुए कामों को स्वयं ही आगे बढ़ा सकते हैं।

ब्रिटिश नाइगेरिया

अफ्रीकन विकास की ब्रिटिश योजनाएं दो सरकारी संस्थाओं में केन्द्रित हैं—ओवरसीज फूड कारपोरेशन और कॉलोनियल डवलपमेण्ट। पहली संस्था का काम अन्नोत्पादन को प्रोत्साहित करना है। यही वह संस्था है जो कि निराशाजनक टांगानिका-मूँगफली-योजना को चला रही थी। गैम्बिया में भी ५० हजार एकड़ जमीन पर मूँगफली उगाई जा रही है। दूसरी संस्था औपनिवेशिक इलाकों की आर्थिक प्रगति के सब पहलुओं को देखती है। गैम्बिया में इस संस्था द्वारा २ करोड़ अंडे प्रतिवर्ष पैदा करने की भी एक दिलचस्प योजना है। मुर्गियों के लिए दाना पैदा करने के लिए १० हजार एकड़ जमीन साफ की जा रही है, साथ ही अंडों और मांस को देखने के लिए कोल्ड स्टोरेज की सुविधाएं भी बनाई जा रही हैं। इस

स ९

होगा ।

यह समस्या विशेषतः ब्रिटिश नाइगेरिया में ज्यादा बड़ी ह जा ९

इलाज से अब भी ब्रिटिश द्वीप-समूह के लिए रोटी की टोकरी बन सकती

है । अतः यदि कुछ अँग्रेजों की यह शिकायत है कि फांसीसियों की नाइगर

वैली ऑथेरिटी से उनको नुकसान है तो इसमें आश्चर्य नहीं, क्योंकि

नाइगर नदी की उपयोगिता उनके इलाके में पहुँचकर कम हो जाती है,

किसी हद तक यह शिकायतें सही हैं, क्योंकि नदी-घाटियों का विकास राष्ट्रीय

आवश्यकता के देखते हुए नहीं बल्कि भौगोलिक आवश्यकताओं पर

आधारित होना चाहिए ।

ब्रिटिश नाइगेरिया में कुल १८०० औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा-

शासन-कार्य चलाया जाता है । यातायात के साधन इतने पिछड़े हुए है

कि बहुत बड़े इलाकों में तार भेजने का कोई प्रबन्ध नहीं । चिट्ठियाँ डाक

के हरकारों द्वारा भेजी जाती हैं । मीलों तक जल नहीं दिखाई देता, लोगों

को प्रतिदिन पानी की एक बाल्टी लाने के लिए १० मील चलना पड़ता

है, जिसे वह सिर पर रखकर लाते हैं । जंगलों में रहने वाले जड़ी-बूटी औ

बड़े-बड़े घोंघों को खाकर जीवित रहते हैं । कई इलाकों में मानव-बलि

चढ़ाने की बर्बर रीति अभी तक कायम है । नींद की बीमारी, कुष्ट रोग

आतशक रोग और मलेरिया-जैसे रोग बहुत प्रचलित हैं । साक्षरता

प्रतिशत से भी कम है, प्रत्येक ५,००० व्यक्तियों के लिए अस्पताल में केव

एक पलंग है जब कि इंग्लैंड में एक पलग प्रत्येक २५० व्यक्तियों पर है

विशाल मक्खियों ने कई इलाकों में कुत्ते के अलावा दूसरा जानवर रख

असम्भव बना दिया है ।

किन्तु अज्ञान, दारिद्र्य और रोगों से भरे हुए इस देश में अ

विरोधी बातें दिखाई देती हैं। अफ्रीकन उपनिवेशों के दौरे से लौटते हुए आलडस हक्सले ने इस अन्तर का उल्लेख करते हुए लिखा : "नाइगेरिया के पूर्वी प्रांतों की राजधानी इनेगू के पास मैंने एक बूढ़े सरदार के साथ ताड़ की शराब पी, पास ही फैटिश और जूजू था जिस पर बलि चढ़ाई हुई मुर्गियों का खून था। मैंने गाँव का बड़ा नगाड़ा देखा......मिट्टी की रँगी हुई मूर्तियाँ देखीं और नवयुवकों का एक नृत्य देखा .....मैं विश्वास न कर सका कि मैं बीसवीं शताब्दी में ही हूँ।" लेकिन राजधानी में हक्सले ने देखा कि हजारों अफ्रीकन अंग्रेजी भाषा सीख रहे हैं और टेकनिकल कामों और व्यवसायों में लगे हुए हैं। खानों में काम करने वाले अफ्रीकन आधुनिक तरीकों से काम करते हैं और साफ-सुथरे मकानों में रहते हैं।

विगत कल और आगामी कल के अन्तर का वर्णन 'न्यूयार्क टाइम्स' के एक संवाददाता ने इन शब्दों में किया है : "एक अफ्रीकन हाथ में धनुष लिये हुए और एक स्त्री कुछ पत्तियों से अपने तन को ढके हुए एक बड़े गड्ढे के पास खड़े उस बड़ी अमरीकन मशीन को देख रहे हैं जो एक बार में ही उनकी भूमि से पाँच गज ठोस मिट्टी को निकाल देती है जिसमें से कि राँगा निकलता है।"

टेकनिकल दृष्टिकोण से नाइगेरिया की समस्याएं ऐसी नहीं हैं जिनको हल नहीं किया जा सकता। जहाँ खाद नहीं मिलती वहाँ वनस्पतियों से खाद बनाई जा सकती है। बाँध बनाकर और पेड़ों को उगाकर भूमि नष्ट होने से बचाई जा सकती है। ५०० वर्ग मील के इलाके में अंग्रेजों ने झाड़ियाँ साफ करके विशाल मक्खी को नष्ट कर दिया है। डॉक्टरी, कृषि और शासन-सम्बन्धी सावधानी से बनाई गई योजनाओं द्वारा नाइगेरिया के स्वास्थ्य का स्तर दुगुना ऊँचा हो गया है।

उपरोक्त सफलताओं से प्रेरित होकर ब्रिटिश और नाइगेरियन सरकारों ने नाइगेरिया के विकास के लिए एक दसवर्षीय योजना बनाई है जिस पर एक अरब रुपया खर्च होगा। इस योजना के अन्तर्गत सरकार सेकेण्डरी स्कूलों को बढ़ायगी ताकि शिक्षा की संख्या बढ़ाई जा सके। स्थानीय व्यक्तियों को

भी मिल सकेगा। इस सबका प्रभाव यह आशा की जाती है कि, केवल प्राकृतिक साधनों के विकास पर ही न पड़ेगा बल्कि ज्यादा लोगों को इन इलाकों में बसाकर एक आधुनिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था का निर्माण किया जा सकेगा। दक्षिण रोडेसिया के हाई कमिश्नर का कथन है कि "अगर जल द्वारा विद्युत्-शक्ति उत्पादित करने की योजना सफल हुई तो उपनिवेश के उत्तरी तथा मध्य भाग के आबाद इलाकों और उत्तरी रोडेसिया में सस्ती बिजली पहुँचाना सम्भव हो जायगा और बहुत बड़े इलाके की सिंचाई की जा सकेगी...।" दक्षिणी रोडेसिया में साबी घाटी का विकास टी० वी० ए० के सिद्धान्तों पर ही आधारित होगा जिसके द्वारा १ लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की जा सकेगी। साबी घाटी के खनिज पदार्थों की भी खोज की जायगी।

यूगेण्डा में जिन्जा के पास ओवन जल-प्रपात पर नील नदी का बड़ा बाँध बनाने के प्रस्ताव में बड़ी भीषण सम्भावनाएं निहित हैं। इस बाँध द्वारा इतनी ज्यादा विद्युत्-शक्ति उपलब्ध हो सकेगी जितनी कि समूचे संयुक्त राष्ट्र अमरीका में १६२५ में थी।

औद्योगीकरण-योजना के आरम्भिक काल में ही इतने बड़े बाँध बनाने के खिलाफ ठोस दलीलें मौजूद हैं; एक भीषण बाँध की अपेक्षा छोटे-छोटे कार्य संतुलित अर्थ-व्यवस्था बनाने में ज्यादा कामयाब होंगे। सस्ती मजदूरी से केन्द्रित विद्युत्-शक्ति के उत्पादन का तात्कालिक प्रभाव बुरा हो सकता है।

अफ्रीका के विकास-जैसी महत् योजनाओं में वास्तविकताएं कागज पर बनी योजनाओं को बदलती रहती हैं। धीरे-धीरे ब्रिटिश, फ्रांसीसी और बेलजियन इस नतीजे पर पहुँचे हैं कि अफ्रीका-जैसे महाद्वीप में, जहाँ शत-प्रतिशत व्यक्ति रोग-ग्रस्त हैं आधुनिक औद्योगिक समाज का निर्माण करना आसान नहीं है, इसका रास्ता लम्बा और कष्टसाध्य है।

विरोधी बातें दिखाई देती हैं। अफ्रीकन उपनिवेशों के दौरे से लौटते हुए आलडस हक्सले ने इस अन्तर का उल्लेख करते हुए लिखा: "नाइगेरिया के पूर्वी प्रांतों की राजधानी इनेगू के पास मैंने एक बूढ़े सरदार के साथ ताड़ की शराब पी, पास ही फैटिश और जूजू था जिस पर बलि चढ़ाई हुई मुर्गियों का खून था। मैंने गाँव का बड़ा नगाड़ा देखा......मिट्टी की रँगी हुई मूर्तियाँ देखीं और नवयुवकों का एक नृत्य देखा......मैं विश्वास न कर सका कि मैं बीसवीं शताब्दी में ही हूँ।" लेकिन राजधानी में हक्सले ने देखा कि हजारों अफ्रीकन अंग्रेजी भाषा सीख रहे हैं और टेकनिकल कामों और व्यवसायों में लगे हुए हैं। खानों में काम करने वाले अफ्रीकन आधुनिक तरीकों से काम करते हैं और साफ-सुथरे मकानों में रहते हैं।

विगत कल और आगामी कल के अन्तर का वर्णन 'न्यूयार्क टाइम्स' के एक संवाददाता ने इन शब्दों में किया है: "एक अफ्रीकन हाथ में धनुष लिये हुए और एक स्त्री कुछ पत्तियों से अपने तन को ढके हुए एक बड़े गड्ढे के पास खड़े उस बड़ी अमरीकन मशीन को देख रहे हैं जो एक बार में ही उनकी भूमि से पाँच गज ठोस मिट्टी को निकाल देती है जिसमें से कि राँगा निकलता है।"

टेकनिकल दृष्टिकोण से नाइगेरिया की समस्याएं ऐसी नहीं हैं जिनको हल नहीं किया जा सकता। जहाँ खाद नहीं मिलती वहाँ वनस्पतियों से खाद बनाई जा सकती है। बाँध बनाकर और पेड़ों को उगाकर भूमि नष्ट होने से बचाई जा सकती है। ५०० वर्ग मील के इलाके में अंग्रेजों ने झाड़ियाँ साफ करके विशाल मक्खी को नष्ट कर दिया है। डॉक्टरी, कृषि और] शासन-सम्बन्धी सावधानी से बनाई गई योजनाओं द्वारा नाइगेरिया के स्वास्थ्य का स्तर दुगुना ऊँचा हो गया है।

उपरोक्त सफलताओं से प्रेरित होकर ब्रिटिश और नाइगेरियन सरकारों ने नाइगेरिया के विकास के लिए एक दसवर्षीय योजना बनाई है जिस पर एक अरब रुपया खर्च होगा। इस योजना के अन्तर्गत सरकार सेकेण्डरी स्कूलों को बढ़ायगी ताकि शिक्षकों की संख्या बढ़ाई जा सके। स्थानीय व्यक्तियों को

अगर उनको अप ...

यूरोपियन माल को उत्साहपूर्वक खरीद सकें, अगर उन्हें स्वा...
की सुविधाएं प्रदान करके गोरों के समान बना दिया जाय जो कि अब उनके मालिक हैं, तो निश्चय ही हमें अपने कार्य का पुरस्कार मिल जायगा।

यदि २० करोड़ काले अफ्रीकनों का २५ प्रतिशत भाग भी सुव्यवस्थित टेकनिकल तथा औद्योगिक पथ-निर्देशन द्वारा अपने प्राकृतिक साधनों का विकास कर सके तो जागृत अफ्रीका को न केवल एक नूतन समृद्धि का अनुभव होगा बल्कि यह अपने पीछे सारे यूरोप को ले जा सकेगा और यूरोप के पीछे सारा संसार है।

: ३ :

अफ्रीकन मध्य-पूर्व—सहारा मरुभूमि के लिए उपवन

यदि आप जिब्राल्टर के जल डमरूमध्य से अफ्रीका के वनों को दाहिने हाथ छोड़ते हुए स्थल-मार्ग से पूर्व की ओर बढ़ें तो ४००० मील चल लेने पर आप भारत की सीमा पर पहुँच जायंगे। इस बीच आप संयुक्त राष्ट्र अमरीका का दुगुना इलाका पार कर चुके होंगे जहाँ संसार के साढ़े बाईस करोड़ मुसलमानों में से बीस करोड़ रहते हैं। निकट और मध्य पूर्व में ही सभ्यता का पहले-पहल जन्म हुआ था। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि यहीं सभ्यता पर मृत्यु-प्रहार भी होगा।

मध्य-पूर्व में बेबिलोनियन, असीरियन, मिस्री, मेडीज़ तथा फारसी लोग फले-फूले। मध्य-पूर्व के पार यूनानी, रोमन और मंगोल साम्राज्यी विजय-पताका फहराते हुए आगे बढ़े। मध्य-पूर्व में सामरिक जीवन के बीच ओटोमन साम्राज्य का उत्थान हुआ।

दक्षिण अफ्रीका के भूतपूर्व प्रधान मंत्री जनरल स्मट्स से जब पूछा गया कि अगर उनके पास पाँच अरब रुपया हो तो वह अफ्रीका के लिए क्या करेंगे तो उन्होंने बड़े-बड़े बाँध बनाने की बात न कही, बल्कि इसके विपरीत उन्होंने कहा—

"मैं इस रुपए को स्वास्थ्य-सुधार में लगाऊँगा—मानव-स्वास्थ्य, पशु-स्वास्थ्य और भूमि-स्वास्थ्य के लिए। अफ्रीका एक सिरे से दूसरे सिरे तक रोग-ग्रस्त है। हमारे यहाँ हर प्रकार के चौपायों की बीमारी है जिससे कि किसान को बहुत नुकसान होता है। और अभी तो हमने भूमि की सतह को खुरचा ही है। अफ्रीका कुछ साल तक जमीन को जोतता है, उसका उपजाऊपन खतम कर देता है, जमीन को देता कुछ नहीं है और फिर आगे बढ़ जाता है। इस सबका नतीजा यह है कि अफ्रीकन रेगिस्तान दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं।"

जनरल स्मट्स ने यह भी कहा कि चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमरीका अफ्रीका को इन बुनियादी सुधारों की ओर अग्रसर कराने में सहायता दे सकता है।

इस दिशा में जो कदम उठाए जा रहे हैं उसके प्रभाव का यूरोपियनों को पूर्व-ज्ञान हो रहा है। मार्शल-योजना पर पूँजी समाप्त हो जाने पर योरोप को कच्चे माल और बाजारों के लिए अफ्रीका में आना होगा। अमरीका ने भी अपने विशेषज्ञों और पूँजी की सहायता से यह बता दिया है कि उसे भी अफ्रीका द्वारा भविष्य में मुख्य पार्ट अदा किये जाने का भान है।

चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा न केवल संयुक्त राष्ट्र अमरीका ही बल्कि प्रत्येक स्वतन्त्र राष्ट्र, जो अपनी पूँजी और कौशल दे सकता है, सम्पन्न हो सकेगा। पहले कदम उठाना सम्भव है, ऐसे कदम, जो अफ्रीका को समृद्धिशाली और उत्पादनशील बनाने के अन्त में ध्येय को दृष्टि से ओझल न कर सकें। हमारे ज्ञान और हमारे सहारे की हमेशा जरूरत पड़ेगी। जब तक कि पश्चिमी यूरोप अफ्रीका और मध्य-पूर्व की ओर पुनः पूर्ति के लिए न मुड़ेगा तब तक

...रने की आव...

आपको कभी भी सुरक्षित महसूस नहीं कर...

प्रभाव बालकान से दक्षिण की ओर यूनान, तुर्की और ईरान की ओर बढ़ाए। यूनान, तुर्की और ईरान रूसी परिधि में आ जाने के बाद हिन्द महासागर के अलावा अन्य किसी स्थान पर रूस को रोकना सम्भव न होगा।

मास्को के लिए तेल उतना ही आवश्यक है जितना कि वाशिंगटन या लन्दन के लिए। रूसी सेना को अपने ट्रक और टैंकों के लिए और रूसी खेतों को ट्रैक्टर और दूसरी मशीनों के लिए अधिकाधिक मात्रा में तेल की ज़रूरत होती है।

अतः मध्यपूर्व की अस्थायी दशा द्वारा बाहरी हस्तक्षेप और अन्त में युद्ध को आमंत्रित करना है। अपने पैरों पर खड़ा होने वाला मध्य-पूर्व, सुव्यवस्थित समाज-संगठन और ऊँचे मानसिक तथा शारीरिक स्तर की ओर अग्रसर होने वाला मध्य पूर्व शांति के पलड़े को भारी बनायगा।

यह बात निश्चय ही प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन के मन में रही होगी जब कि उन्होंने सन् १९४६ में यह कहा था :

आज मध्य-पूर्व में लाखों-करोड़ों व्यक्ति मलेरिया के शिकार होते हैं, ट्रकोमा-जैसे चक्षु रोग से अन्धे होते हैं और आतशक से सड़ते रहते है। वे पिटे कुत्ते की तरह पड़े रहते हैं, चूहों की तरह बच्चे पैदा करते है, हड्डी के लिए लड़ते-मरते हैं और पचीस वर्ष की उम्र मे ही बूढ़े हो जाते हैं। अक्सर उनके शासक पतित और भ्रष्ट होते हैं; वे स्वयं भी साधारणतया निरक्षर होते हैं और भूख, बीमारी और गन्दगी उन्हें मूर्ख बना देती है। प्राचीन नगरों की सार्वजनिक अट्टालिकाओं के भग्न-भागों मे आज अति दीन गाँव दिखाई देते हैं। जहाँ किसी जमाने में बाँध और नहरें थीं वहाँ आज बंजारों की बकरियाँ सूखी घास चरती हैं।

लेकिन यही वह स्थान है जहाँ साम्राज्यो का पथ मिलता है, यह संसार का हृदय-स्थल है।

एक अमरीकन के लिए यह सोचना अजीब है कि उसके देश की शक्ति, सम्मान और शांति उस सुदूर स्थित रेतीले, बकरियों और खजूर के पेड़ों वाले देश पर निर्भर है। किन्तु हमारी सुरक्षा के लिए मध्य-पूर्व इतना आवश्यक है कि आक्रमण अथवा क्रान्ति से वह कम्युनिस्टों के हाथो पड़ जाय तो यह हमारे सशस्त्र प्रत्युत्तर देने का संकेत होगा।

किसी भी भावी युद्ध के लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन को भू-मध्यसागर और स्वेज नहर के बीच का रास्ता अवश्य अपेक्षित होगा। उन्हें मध्य-पूर्व के हवाई अड्डों तक पहुँचना होगा। उन्हे भारत के भण्डार से जल तथा वायु द्वारा सम्बन्ध बनाये रखना होगा, ऐसा पथ जिस पर वे निर्भर रह सकें।

और सबसे ज्यादा तो उन्हे मध्य-पूर्व के तेल की आवश्यकता होगी। हमारे जल-थल-सेना पेट्रोल बोर्ड के मतानुसार इस सामरिक महत्व की सामग्री-पेट्रोल का भंडार हमारे देश में या दक्षिण अमरीका में नहीं है बल्कि रेतीले सौदी अरेबिया में है जहाँ तेल के हर कुएं से तेल फूट निकलता है।

रूस के लिए मध्य-पूर्व न केवल भूमध्य सागर के उष्ण जल वाले बन्दरगाहों तक पहुँचने का द्वार है बल्कि वह हिन्द महासागर तक पहुँचने का

कायम ९
कल अथवा आर्थिक सहायता।
सहायता पहले दी जायगी। मध्य-पूर्व की ता ।
अत्यल्प परिमाण में स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात, कृषि, हल्के
राजनीतिक शासन सुधारना।
लेबनान में नीयर ईस्ट फाउण्डेशन द्वारा चालित एक छोटी-सी
ा ने १६४२ में उस जन्तु का पता लगा लिया जो कि बेका घाटी
र की खेती को बर्बाद करता था, तो इस सफल प्रयोग ने न केवल
पए और मनों कीमती खाद्य-सामग्री को बचाया बल्कि उसने वह रास्ता
ाया जिस पर चतुर्थ-लक्ष्य आगे बढ़ेगा।
ब कि विश्व-स्वास्थ्य-संगठन (डब्ल्यू० एच० ओ०) ने सन् १६४७
त्र की बढ़ती हुई हैज़े की बीमारी को रोक दिया तो इसने भी यही रास्ता
ाया जिस पर चतुर्थ-लक्ष्य आगे बढ़ेगा। हैजे ने समूचे निचले मिस्र के
र्थिक जीवन को अव्यवस्थित कर दिया था। इससे सारे यूरोप को भी
ारा था। लेकिन डब्ल्यू० एच० ओ० ने डेढ़ महीने के अन्दर ही इस
ीमारी को मार भगाया।

मिस्र में ही मलेरिया के मच्छरों ने सन् १६४२ में एक भीषण आक्रमण
किया, यह आक्रमण उससे कहीं ज्यादा भयानक था जिसके द्वारा कुछ वर्ष
पूर्व ब्राज़ील की १२ हजार वर्गमील भूमि बरबाद हो चुकी थी। ऊपरी मिस्र
के कुछ भागों में ६० प्रतिशत व्यक्ति मलेरिया के शिकार बने। नील प्रदेश
के गांवों में भी यह बीमारी खूब फैली और दो वर्ष के अन्दर ही इस रोग
द्वारा मृत्यु-संख्या १ लाख ३५ हजार तक पहुंच गई।
सन् १६४४ में मिस्र-सरकार ने राकफेलर फाउण्डेशन से मदद मांगी;

स्वतन्त्र राष्ट्रों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए और दूसरे इन देशों के साधनों के विकास तथा रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करने में सहायता देनी चाहिए।

इस भाषण के समय राजनीतिक विश्लेषण-कर्ता यह समझ बैठे कि प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन की नीति-घोषणाएं अधिकांश व्याख्यान देने और राजनीतिक प्रभाव डालने के लिए की जाती हैं जो कि साथ-साथ भुलाई भी जा सकती हैं। लेकिन उनका भ्रम अब दूर हो चुका है। शायद ही सार्वजनिक जीवन का कोई भी अमरीकन अपनी बात का इतना पक्का होगा जितना कि प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन। अगर राजनीतिक विश्लेषण-कर्ताओं ने जरा गौर से प्रेसीडेण्ट के भाषण को पढ़ा होता तो उन्हें सन् १९४७ के ट्रूमैन-सिद्धान्त और सन् १९४९ की नई निर्भीक योजना पर आश्चर्य न होता।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका को पिछड़े हुए इलाकों के सामाजिक और आर्थिक विकास से ज्यादा जरूरी अन्य समस्याओं पर अपना ध्यान देना पड़ा। हमें यूनान और तुर्की को सैनिक सहायता देनी पड़ी, हमें उत्तर अटलांटिक समझौते और पश्चिमी यूरोप की आर्थिक सुधार सम्बन्धी समस्याओं पर ध्यान देना पड़ा। जरूरी बुनियाद कायम कर देने के बाद ही हम अपनी पीढ़ी की मुख्य समस्या पर ध्यान दे सके—वह समस्या है संसार की दो तिहाई जनता के दारिद्र्य को दूर करना।

ब्रिटेन ने लेबर पार्टी की सरकार के अन्तर्गत मध्य पूर्व की अर्थ-व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने की एक योजना बनाई परन्तु पर्याप्त टेकनिकल ज्ञान, पूँजी और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रोत्साहन बिना ऐसा प्रतीत होता था कि वह योजनाएं केवल योजना-मात्र ही रहेंगी।

इस बीच फिलस्तीन में यहूदियों का देश अरबों के क्रोध और उद्वेग के बावजूद भी यहूदी राष्ट्र बन गया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि जो बीज फिलस्तीन में बोया गया है वह मसीह के मतानुयायियों के बीच सुव्यवस्था, न्याय और शक्ति उत्पन्न करेगा। अगर यहूदी और अरबों का पारस्परिक युद्ध इस बात का द्योतक था कि मध्य पूर्व एक खतरनाक जगह बन गई है तो

यहाँ आधुनिक मिस्र है, जहाँ का सम्राट् सार उपजाऊ
का मालिक है और जहाँ की २ करोड़ जनता में से १ करोड़ ७० लाख के
पास १ वर्ग फुट जमीन भी नहीं है और जहाँ ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली है
जो साल में १२५ रुपए कमा ले ।

मोरक्को

बड़े पैमाने पर योजनाएं बनाना उत्तरी अफ्रीका के लिए कोई नई बात
नहीं है। ई० एच० रोटीवल ने, जो आजकल फ्रांसीसियों के लिए
मैडागास्कर में काम कर रहे हैं, बताया कि "विकास की सबसे बड़ी योज-
नाओं में से एक मोरक्को के विकास की योजना थी जो प्रथम महायुद्ध के
समय शुरू हुई और सन् १९३० में जाकर पूर्णतया विकसित हो सकी।
इस योजना में व्यक्तिगत समूह और सरकार दोनों ने सहयोग दिया। आज
मुझे विश्वास नहीं होता कि थोड़े-से यान्त्रिक साधनों से हमने किस तेजी
से मोरक्को का विकास किया। बीस साल से कम में ही इस देश में, जो वि
टैक्साज राज्य-जितना बड़ा है पूरी तरह बिजली लग गई और रेल के रास्तों
पर भी बिजली पहुँचाई जा सकी। सारे देश को सड़कों से छा दिया, पत्थ
से बन्दरगाह बनाये गए, और कैसे ब्लैन्का, फैज और मारकेश-जैसे आधुनि
सुन्दर नगर निर्माण किये गए; इन नए नगरों को बनाते वक्त पुराने इस्ला
शहरों को सावधानी पूर्वक अलग रखा गया......।"

सन् १९२० की योजनाएं सन्१९५० के पैमाने पर पूरी नहीं उत
हैं। सन्१९३६ और १९४७ के बीच मोरक्को की आबादी ४० प्रतिशत
गई—६३ लाख से ८९ लाख हो गई। इन नए पेटों को भरने के ि
फ्रांसीसियों ने एक दसवर्षीय योजना आरम्भ की जिसके द्वारा ८ लाख
हजार एकड़ जमीन खेती के लायक बनाई जायगी। फ्रांसीसी विद्युत्-श
को छः गुना बढ़ा रहे हैं और इसका उपयोग मोरक्को में हल्के उ
खोलने में करेंगे। फ्रांस तथा अन्य देशों की व्यक्तिगत पूँजी मोरक्क

सन् १६४५ के अन्त तक मलेरिया के मच्छर मारे जा चुके थे। आज मिस्र में मलेरिया का नाम भी नहीं है।

मलेरिया-रहित मिस्र उन्नत कृषि और औद्योगीकरण के लिए ईरान की अपेक्षा कहीं ज्यादा तैयार है जहाँ के ८२ प्रतिशत किसान अब भी मलेरिया के शिकार बनते हैं, जहाँ के किसान ऐसी झोपड़ियों में रहते हैं जिनमें खिड़कियाँ नहीं, फटे-पुराने कपड़े पहनते हैं और जिनका खयाल है कि मुर्गियाँ पालने से ईश्वर का कोप लगेगा या सब्जियाँ उगाने से जमीन का उपजाऊपन मारा जायगा।

मध्य-पूर्व के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि सुधार से यातायात की आवश्यकता कम नहीं है। सड़कें, नहरें, रेल और हवाई जहाज के बिना वाणिज्य-व्यापार गतिहीन हो जाता है—और राष्ट्रों का भी यही हाल होता है।

छोटे और आसान सुधारों से मध्य-पूर्व को कितना लाभ पहुँच सकता है, इसका उदाहरण आप मिस्र की अनाज जमा करने की समस्या में पायेंगे। अधिकांश मिस्री किसान अपना अनाज पटसन के बोरों मे बन्द करके खुले अहातों में रखते हैं, जिनके चारों ओर कँटीले तार और नालियाँ बनी रहती हैं। चूहों, कीड़ों आदि से अनाज को बचाने का कोई तरीका नहीं है। कंकरीट के भंडार बनाये जा सकते हैं जिनसे कीड़े-मकोड़ों का डर भी दूर हो जायगा और ये भंडार ५० वर्ष तक चलते भी रहेंगे।

ऐसे साधारण सुधारों के न होने से पिछले वर्ष सारे संसार में ३ करोड़ ३० लाख टन अनाज बर्बाद हुआ जिससे कि प्रतिदिन १२ करोड़ व्यक्तियों का पेट भरा जा सकता था।

यदि स्वास्थ्य, कृषि, यातायात और शिक्षा में सुधार किया जा सके तो मध्य-पूर्व की जनता अपने उस भविष्य के लिए तैयार हो जायगी जिसको आज स्वप्न में सोचा भी नहीं जा सकता लेकिन जो अनिवार्य है। वे एक बार फिर मध्य-पूर्व को उपवन-प्रदेश में परिणत कर देंगे।

अफ्रीकन महाद्वीप के काले जंगलों के उत्तर में बड़े रेतीले मैदान हैं

सीमेण्ट की फैक्ट्रियाँ, आटे की मिलें और चीनी साफ करने की मशीनें लगाने में मदद दे रही है। एलजीरिया में यह पूँजी फासफेट, मैंगेनीज तथा सीसे की खानों का विकास कर रही है और यह शीघ्र ही बहुतायत में पाया जाने वाला अल्फा द्वारा कागज बनाना शुरू कर देगी।

असवान

उत्तरी अफ्रीकन प्रदेश का औद्योगिक दृष्टि से सबसे उन्नत इलाका सम्भवतः मिस्र ही है। लेकिन उसकी दृष्टि भी भविष्य पर जमी है। ५ करोड़ पौंड की एक मिस्री योजना १९४५ में आरम्भ हुई है, जिसके अन्तर्गत विद्युत्-शक्ति का उत्पादन प्रति व्यक्ति २८ से १०० किलोवाट-घण्टे बढ़ जायगा, चूने को पीसकर प्रति वर्ष ४ लाख ३५ हजार टन खाद केलसियम नाइट्रेट से बनाई जायगी, एक इस्पात का कारखाना बनाया जायगा जिसकी शक्ति ६१५०० टन होगी; साढ़े सात लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की जा सकेगी।

काहिरा से ५०० मील ऊपर नील नदी पर मिस्र सरकार एक ऐसा यन्त्र बनाने में लगी है जो कि पूरा होने ही वाला है—जिसके द्वारा मिस्र-निवासियों को प्राप्य शक्ति अत्यधिक मात्रा में बढ़ाई जा सकेगी।

नया असवान बाँध मिस्र के उद्योग-धन्धों, सिंचाई और नागरिक कार्यों आदि के लिए २ लाख ८० हजार किलोवाट विद्युत्-शक्ति देगा। इस शक्ति द्वारा लोहे को पिघलाया जा सकेगा, भूखे खेतों को खाद दी जा सकेगी। अगर साथ ही भूमि-सुधार भी किया जा सके—दुर्भाग्यवश यह 'अगर' बहुत बड़ा है—तो पिछड़ा हुआ किसान आधुनिक किसान बन जायगा।

सूडान ऑथेरिटी

असवान बाँध की योजना इस प्रकार को अन्य योजनाओं में अग्रणी है जो कि न केवल मिस्र को ही समृद्धिशील आधुनिक प्रदेश बना देगी बल्कि यूगेण्डा और इथोपिया का भी विकास करेगी। अन्य योजनाओं में सबसे बड़ी योजना हाल ही में ब्रिटिश सरकार ने घोषित की है जिस पर

सीमेण्ट की फैक्ट्रियाँ, आटे की मिलें और चीनी साफ करने की मशीनें लगाने में मदद दे रही है। एलजीरिया में यह पूँजी फासफेट, मैंगेनीज तथा सीसे की खानों का विकास कर रही है और यह शीघ्र ही बहुतायत में पाया जाने वाला अल्फा द्वारा कागज बनाना शुरू कर देगी।

असवान

उत्तरी अफ्रीकन प्रदेश का औद्योगिक दृष्टि से सबसे उन्नत इलाका सम्भवतः मिस्र ही है। लेकिन उसकी दृष्टि भी भविष्य पर जमी है। ५ करोड़ पौंड की एक मिस्री योजना १९४५ में आरम्भ हुई है, जिसके अन्तर्गत विद्युत्-शक्ति का उत्पादन प्रति व्यक्ति २८ से १०० किलोवाट-घण्टे बढ़ जायगा, चूने को पीसकर प्रति वर्ष ४ लाख २५ हजार टन खाद केलसियम नाइट्रेट से बनाई जायगी, एक इस्पात का कारखाना बनाया जायगा जिसकी शक्ति ६१५०० टन होगी; साढ़े सात लाख एकड़ भूमि की सिंचाई की जा सकेगी।

काहिरा से ५०० मील ऊपर नील नदी पर मिस्र सरकार एक ऐसा यन्त्र बनाने में लगी है जो कि पूरा होने ही वाला है—जिसके द्वारा मिस्र-निवासियों को प्राप्य शक्ति अत्यधिक मात्रा में बढ़ाई जा सकेगी।

नया असवान बाँध मिस्र के उद्योग-धन्धों, सिंचाई और नागरिक कार्यों आदि के लिए २ लाख ८० हजार किलोवाट विद्युत्-शक्ति देगा। इस शक्ति द्वारा लोहे को पिघलाया जा सकेगा, भूखे खेतों को खाद दी जा सकेगी। अगर साथ ही भूमि-सुधार भी किया जा सके—दुर्भाग्यवश यह 'अगर' बहुत बड़ा है—तो पिछड़ा हुआ किसान आधुनिक किसान बन जायगा।

सूडान ऑथेरिटी

असवान बाँध की योजना इस प्रकार की अन्य योजनाओं में अग्रणी है जो कि न केवल मिस्र को ही समृद्धिशील आधुनिक प्रदेश बना देगी बल्कि यूगेण्डा और इथोपिया का भी विकास करेगी। अन्य योजनाओं में सबसे बड़ी योजना हाल ही में ब्रिटिश सरकार ने घोषित की है जिस पर

ब्रेमैन के निर्भीक विचारों की तुलना केवल फर्डीनेल द लैस्स् से ही हो सकती है जिसने कि स्वेज़ नहर खोली है। इस विषय पर 'लन्दन मार्निंग पोस्ट' ने लिखा था :

"ऐसा प्रदेश जो ऊसर हो और जहाँ लोग कभी न बसे हों, वहाँ दूध और शहद की नदियाँ बहने लगेंगी; गाय-भेड़ और समृद्धिशील जनता वहाँ बसने लगेगी......।

"यूरोप के लिए एक नया अन्न का भण्डार खोलने का विचार निश्चय ही आकर्षक है......।"

सहारा रेगिस्तान को उपजाऊ बनाने की योजना शुरू करने में अभी कई वर्ष लगेंगे क्योंकि इस समय मानव-शक्तियाँ तात्कालिक समस्याओं से हटाकर सहारा में नहीं लगाई जा सकतीं। इन सब बातों से पूर्व यह आवश्यक है कि लोगों के पास साबुन हो और कुनैन हो, काम सीखे विशेषज्ञ हों और सुव्यवस्थित शासन हो। सिर्फ तब ही भविष्य के ध्येय यथार्थता में परिणत किये जा सकते हैं जब कि मलेरिया और विषाक्त मक्खी का डर न हो, जब पर्याप्त मात्रा में खाद्य हो, जब पुरुष और स्त्री पढ़ना-लिखना और आकांक्षाएं रखना सीख जायं। नई निर्भीक योजना का तात्कालिक कार्य एक ऐसा आशामय वातावरण पैदा करना है कि जिसमें बेचैन जनता अपनी भलाई के लिए गतिशील बने।

यह एक बहुत लम्बी विधि है जो शायद दिल तोड़ने वाली भी हो। लेकिन यह आशा करना गलत न होगा कि गत महायुद्ध के योद्धा तीसरी लड़ाई देखने के लिए ज़िंदा रहने के बजाय एक पुनर्जीवित धरती को देखने के लिए ज़िंदा रहें—ऐसी धरती, जिसकी मरुभूमि गुलाब के फूल के मानिन्द खिल पड़े।

: ४ :

एशिया में मध्य-पूर्व

मध्य-पूर्व की आर्थिक समस्याएं तब तक हल नहीं हो सकतीं जब तक कि मध्य-पूर्वी राज्य स्वयं सहयोग करना न सीखें; जैसा कि प्रेसीडेंट ट्रूमैन ने सन् १९४९ के ग्रीष्मकाल में कहा था :

"प्रगति तब ही हो सकती है जब कि जनता की आन्तरिक परिस्थितियों को ऐसा सुधारा जाय कि जनता को अपने परिश्रम का, अपने मिल-कारखाने और अपनी भूमि का फल उचित परिमाण में मिल सके। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यदि निकट-पूर्वी राष्ट्र पारस्परिक संघर्षों को छोड़कर अपनी शक्तियाँ रचनात्मक सहयोग में लगायें तो वे स्थायी शान्ति और समृद्धि की नींव डाल सकेंगे। संयुक्त राष्ट्र अमरीका ऐसे प्रयत्नों की सहायता करने के लिए सर्वथा तत्पर है।"

लेकिन अगर यह मान भी लिया जाय कि इस प्रकार का सहयोग सम्भव है, फिर भी अभी इस विषय पर समझौता नहीं है कि मध्य-पूर्वीय अर्थ-व्यवस्था को सुधारने के लिए किन तात्कालिक एवं व्यावहारिक कार्यों की आवश्यकता होगी। बहुत-से देशों ने तो बड़ी-बड़ी राष्ट्र-व्यापी योजनाएं तैयार भी कर ली हैं जैसे कि ईरान की ३ अरब २५ करोड़ रुपए की योजना और फिलस्तीन की जार्डन घाटी की योजना। इन बड़ी योजनाओं के लिए बड़े पैमाने पर सोचने में अमरीकन इंजीनियर मदद दे रहे हैं।

यह ताज्जुब की बात नहीं कि बहुत-से मध्य-पूर्वीय राष्ट्र चतुर्थ-लक्ष्य को अपनी प्रिय राष्ट्रीय योजनाओं के लिए पूँजी और निरीक्षण प्रदान करने का साधन समझें और यह असम्भव नहीं कि इन राष्ट्रों को यह जानकर घोर निराशा हो कि चतुर्थ-लक्ष्य स्थापित बैंकिंग संस्थाओं के अतिरिक्त पूँजी न दे सकेगा। इन कामों में लगाने के लिए व्यक्तिगत पूँजी आसानी से न मिलेगी जब तक कि पिछड़े हुए इलाके अपनी योग्यता तथा अपनी स्थिरता द्वारा अपनी तत्परता प्रगट न करें।

अमरीकन निर्देशक मैक्स थार्नवर्ग ने बहुत पहले ही इस बात पर जोर दिया था कि स्थानीय मूल सुधारों के बजाय सरकार द्वारा बहुत ज्यादा रुपया खर्च करना गलत है। थार्नवर्ग के नेतृत्व में यह आशा की जा सकती है कि पहले व्यक्ति, भूमि, जल और सड़कों आदि पर ध्यान दिया जायगा; इस्पात की मिलें और रेल के एंजिनों की फैक्ट्रियाँ बाद में अच्छे वक्त के लिए इन्तजार कर सकती हैं। थोड़े पैमाने पर शुरू किया हुआ ईरानी विकास का कार्य चतुर्थ-लक्ष्य के लिए मध्य-पूर्व में काम करने का नमूना बन सकता है और क्रमानुसार थार्नवर्ग के लिए नमूना साबित होगा। तेहरान के आस-पास किये हुए नीयर ईस्ट फाउण्डेशन के विभिन्न प्रयोग।

गत महायुद्ध के बाद ही नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने ऐसे नये कृषि अभ्यास आरम्भ किए जिन पर ईरानी किसान को बहुत थोड़ा या नहीं के बराबर रुपया खर्च करना पड़ा। नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने अरबों रुपए के बाँध बनाने का इन्तजार न किया, बल्कि सस्ते मोटर पावर से चलने वाले कुएं खोदे, जिनसे पानी फूट-फूट कर निकलने लगा। पानी को देखकर गाँव वालों ने खुशी-खुशी कुओं की कीमत अदा। की वे खुले हौजों में सिंचाई की नालियों का पानी भरकर रखते थे जो दिन-पर-दिन बीमारी का घर बनता जाता था। फाउण्डेशन के स्थानीय निर्देशक लाइल जे० हाइडन ने करीब मिलने वाले सामान से ही एक ऐसी आसान और सस्ती टंकी बनाई कि जिसमें पानी छन-कर जाता था। अब ईरानी खुद बड़ी तादाद में इस टंकी को बना रहे हैं जिससे कि बीसों गाँवों के पीने के पानी को साफ किया जा रहा है।

कृषि-सुधार के कारण अन्य सुधार भी हो गए हैं। निरक्षरता को दूर करने के लिए बालक और प्रौढ़ दोनों के लिए प्राथमिक पाठशालाएं खोली गई हैं। चूँकि मलेरिया पैदावार को गिरा रहा था, नवयुवकों को मच्छरों के पैदा होने की जगहों को साफ करने के लिए भेजा गया। मकानों पर •डी•

डी० डी० टी० छिड़की गई जिसके फलस्वरूप न केवल मच्छर ही बल्कि मक्खी, जूँ और खटमल आदि सब खतम हो गए।

मिस्टर ईडन ने एक गाँव के किसान का मजाकिया किस्सा सुनाया: किसान ने यह तो माना कि मक्खी, मच्छर आदि सब गायब हो गए हैं लेकिन उसका खयाल था कि डी० डी० टी० खेती पर बुरा असर डालेगी। जब शिक्षक को यह बात समझ न आई तो उसने किसान से पूछा कि यह कैसे सम्भव है। किसान ने जवाब दिया, "कल दिन को खाने के बाद मैं थोड़े आराम के लिए लेट गया और मुझे नींद आ गई, क्योंकि मक्खी, जूँ या खटमल ने मुझे तंग नहीं किया, मैं सूरज डूबने के दो घण्टे पहले तक सोता रहा। अब बताइये मैं खेत पर क्या काम करता?'

तुर्की

बहुत-सी बातें, जिन्हें मैक्स थार्नबर्ग ईरान पर लागू करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्होंने तुर्की के तीन वर्ष के अध्ययन में सीखी हैं।

मध्य-पूर्व यातायात को कितना महत्वपूर्ण समझता है यह इस बात से विदित होता है कि तुर्की ने अपनी रेलों को विस्तारित करके ईरान और ईराक की रेलों से मिला दिया है। यह और आधुनिकीकरण की अन्य योजनाएं सरकारी संरक्षण में चल रही हैं।

आधुनिक बड़े कारखाने उन आवश्यकताओं के लिए स्थापित किये जा रहे हैं जिनका कि अभी अस्तित्व भी नहीं है जब कि लोहे की नोक वाले हल या साबुन बनाने वाले छोटे कारखानों की कमी है। जब तक कि आधुनिक कारखाने और लकड़ी के हलों के बीच की खाई न भरी जायगी स्वस्थ आर्थिक योजना की सम्भावना नहीं है।

थार्नबर्ग की दलील है कि अमरीकन पूँजी तब तक पूरी तरह तुर्की में नहीं लगाई जा सकती जब तक कि तुर्की अपने कार्यों से यह न साबित कर दे कि वैदेशिक पूँजी पर लगाए हुए पुराने प्रतिबन्ध हटा लिये गए हैं। इसका मतलब होगा तुर्की के एक-पार्टी राज्य में परिवर्तन करना; राजनीतिक विरोध को प्रोत्साहित करना और तुर्कियों को खुद पूँजी लगाने के लिए

५ . .
पादन को २०० प्रतिशत न. . कन्सलटैंएट्स म
इंजीनियरिंग कम्पनियाँ ओवरसीज़ कन्सलटैंएट्स में
जना को पूँजी प्राप्त होगी ईरान की तेल आय से जो लगभग २५
रुपए से भी ज्यादा है और दूसरे ईरानी कर्जों से।

ओवरसीज़ कन्सलटैंएट्स की रिपोर्ट है कि इस समय ईरान की केवल
प्रतिशत उपजाऊ भूमि पर खेती होती है जब कि प्राय: ८० प्रतिशत
ता कृषि पर निर्भर रहती है। इस नई योजना द्वारा ४ लाख एकड़
ीन की सिंचाई की जा सकेगी, कृषि का सामान, मकान, सड़कें, शिक्षा,
जली आदि की वृद्धि की जा सकेगी; खाद, साबुन, क्लोराइन और कारबन
दि बनाने के कारखाने खोले जा सकेंगे।

ईरान की यह योजना स्पष्टतया यह प्रश्न पैदा करती है : क्या बड़े
पैमाने पर शुरू किये हुए काम छोटी स्थानीय विकास की योजनाओं से पूर्व
सफलतापूर्वक चलाये जा सकते हैं? बड़ी योजनाओं में भविष्य के लिए
वर्तमान का बलिदान निहित है और ईरान-जैसे देश का वर्तमान ऐसा नहीं
है कि जिसका बलिदान किया जा सके।

हश्मत अली ने 'फारच्यून' में लिखते हुए समझ में आने वाली दलील
पेश की है कि बड़ी योजनाओं के बजाय "एक उत्पादनशील, रचनात्मक
और साहसपूर्वक आपत्तियों से लड़ने वाले मध्य वर्ग के विकास को प्रोत्सा-
हित किया जाना चाहिए।"

"जरूरी चीज यह है," हश्मत अली ने कहा, "कि वर्तमान गतिहीन
अर्थ-व्यवस्था को विस्तारित किया जाय। विस्तार का अर्थ है उत्पादन, क्रय
विक्रय, आय-व्यय तथा रहने-सहने की आदतों में तबदीली लाई जाय।"

इश्मत अली ने आगे चलकर कहा कि "ईरानियों के रहने के तरीके स्वयं ही उत्पादनशीलता के विपरीत है। किसी भी धान के खेत पर प्रायः प्रत्येक मजदूर घंटे-दो-घंटे की छुट्टी लेकर धूप में पड़कर मलेरिया ज्वर की सर्दी में कँपकँपाता है, इस प्रकार हर वर्ष हजारों घंटों का नुकसान होता है। अतः सफाई-सुथराई, शिक्षा और अन्य सामाजिक सुधारों की विशेष आवश्यकता है। इन कामों के लिए पूँजी या तो सरकार अपनी तरफ से दे या करों द्वारा प्राप्त की जानी चाहिए। इन कामों के लिए कर्ज उपयुक्त नहीं है क्योंकि कर्जों का मुआविजा इकट्ठा करना और चुकाना मुमकिन नहीं है।

"ट्रेकोमा चक्षु-रोग को, जो कि ईरान में बहुत प्रचलित है, दूर करना व्यक्तियों की निजी सफाई पर निर्भर है। सफाई के लिए सस्ता साबुन और काफी तादाद में पानी चाहिए और ये दोनों चीजें ईरान में मँहगी हैं और मुश्किल से मिलती हैं। इसलिए जरूरी यह है कि बुनियादी जरूरत की चीजें कम दामों और ज्यादा तादाद में दी जाय......

"विचार, अभिव्यक्ति और कार्य की स्वतन्त्रता भी आर्थिक विकास से सम्बन्धित है.........शासन से ईरानियों को कितना भय है, यह गत वर्ष नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने पता लगाया। नीयर ईस्ट फाउण्डेशन के प्रतिनिधियों ने तेहरान से २५ मील दूर वरामीन नामक एक कस्बे में कुछ किसानों को थोड़ा रुपया और कुछ गायें उधार दीं दूसरे दिन ही किसानों ने रुपया और गायें लौटा दीं। उन्हें गाँव के मुखिया और गायें उधार देने वाले 'गवर्नर' के अप्रसन्न हो जाने का भय था'।"

इश्मत अली ने लेख का अन्त करते हुए लिखा कि "सबसे बहुमूल्य पदार्थ, जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका भेज सकता है, अमरीका का धन नहीं बल्कि उसका कान्तिमय समाज है, जिसमें व्यक्तियों को अपनी किस्मत से खेलने का मौका है, अधिकारियों के विरुद्ध आवाज उठाने की उन्हें स्वतन्त्रता है और यदि उनके प्रयोग असफल रहें तो उन्हें दण्ड का भय नहीं, क्योंकि दुबारा प्रयत्न करने या नई चीज शुरू करने की उन्हें आजादी है। तरक्की

गोआम्गाय, इसकी महत्त्वपूर्ण योजना का [illegible]
अमरीकन निर्देशक विलम गार्नवर्ग ने बहुत पहले ही इस बात पर जोर दिया था कि स्थानीय मूल सुधारों के बजाय सरकार द्वारा बहुत ज्यादा रुपया खर्च करना गलत है। गार्नवर्ग के नेतृत्व में यह आशा की जा सकती है कि पहले व्यक्ति, भूमि, जल और पशुओं आदि पर ध्यान दिया जायगा; इस्पात की मिलें और रेल के एंजिनों की फैक्ट्रियाँ बाद में अच्छे वक्त के लिए इन्तजार कर सकती हैं। थोड़े पैमाने पर शुरू किया हुआ ईरानी विकास का कार्य चतुर्थ-लक्ष्य के लिए मध्य-पूर्व में काम करने का नमूना बन सकता है और क्रमानुसार गार्नवर्ग के लिए नमूना साबित होगा। तेहरान के आस-पास किये हुए नीयर ईस्ट फाउण्डेशन के विभिन्न प्रयोग।

गत महायुद्ध के बाद ही नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने ऐसे नये कृषि अभ्यास आरम्भ किए जिन पर ईरानी किसान को बहुत थोड़ा या नहीं के बराबर रुपया खर्च करना पड़ा। नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने अरबों रुपए के बाँध बनाने का इन्तजार न किया, बल्कि सस्ते मोटर पावर से चलने वाले कुएं खोदे, जिनसे पानी फूट-फूट कर निकलने लगा। पानी को देखकर गाँव वालों ने खुशी-खुशी कुओं की कीमत अदा। की वे खुले हौजों में सिंचाई की नालियों का पानी भरकर रखते थे जो दिन-पर-दिन बीमारी का घर बनता जाता था। फाउण्डेशन के स्थानीय निर्देशक लाइल जे० हाइडन ने करीब मिलने वाले सामान से ही एक ऐसी आसान और सस्ती टंकी बनाई कि जिसमें पानी छन-कर जाता था। अब ईरानी खुद बड़ी तादाद में इस टंकी को बना रहे हैं जिससे कि बीसों गाँवों के पीने के पानी को साफ किया जा रहा है।

कृषि-सुधार के कारण अन्य सुधार भी हो गए हैं। निरक्षरता को दूर करने के लिए बालक और प्रौढ़ दोनों के लिए प्राथमिक पाठशालाएं खोली गई हैं। चूँकि मलेरिया पैदावार को गिरा रहा था, नवयुवकों को मच्छरों के पैदा होने की जगहों को साफ करने के लिए भेजा गया। मकानों पर •डी०

इस्मत अली ने आगे चलकर कहा कि "ईरानियों के रहने के तरीके स्वयं ही उत्पादनशीलता के विपरीत हैं। किसी भी धान के खेत पर प्रायः प्रत्येक मजदूर घंटे-दो-घंटे की छुट्टी लेकर धूप में पड़कर मलेरिया ज्वर की सर्दी में कँपकँपाता है, इस प्रकार हर वर्ष हजारों घंटों का नुकसान होता है। अतः सफाई-सुथराई, शिक्षा और अन्य सामाजिक सुधारों की विशेष आवश्यकता है। इन कामों के लिए पूँजी या तो सरकार अपनी तरफ से दे या करों द्वारा प्राप्त की जानी चाहिए। इन कामों के लिए कर्ज उपयुक्त नहीं है क्योंकि कर्जों का मुआविजा इकट्ठा करना और चुकाना मुमकिन नहीं है।

"ट्रेकोमा चक्षु-रोग को, जो कि ईरान में बहुत प्रचलित है, दूर करना व्यक्तियों की निजी सफाई पर निर्भर है। सफाई के लिए सस्ता साबुन और काफी तादाद में पानी चाहिए और ये दोनों चीजें ईरान में मँहगी हैं और मुश्किल से मिलती हैं। इसलिए जरूरी यह है कि बुनियादी जरूरत की चीजें कम दामों और ज्यादा तादाद में दी जायं......

"विचार, अभिव्यक्ति और कार्य की स्वतन्त्रता भी आर्थिक विकास से सम्बन्धित है.........शासन से ईरानियों को कितना भय है, यह गत वर्ष नीयर ईस्ट फाउण्डेशन ने पता लगाया। नीयर ईस्ट फाउण्डेशन के प्रतिनिधियों ने तेहरान से २५ मील दूर अरामीन नामक एक कस्बे में कुछ किसानों को थोड़ा रुपया और कुछ गायें उधार दीं दूसरे दिन ही किसानों ने रुपया और गायें लौटा दीं। उन्हें गाँव के मुखिया और गायें उधार देने वाले 'गवर्नर के अप्रसन्न हो जाने का भय था'।"

इस्मत अली ने लेख का अन्त करते हुए लिखा कि "सबसे बहुमूल्य पदार्थ, जो संयुक्त राष्ट्र अमरीका भेज सकता है, अमरीका का धन नहीं बल्कि उसका क्रान्तिमय समाज है, जिसमें व्यक्तियों को अपनी किस्मत से खेलने का मौका है, अधिकारियों के विरुद्ध आवाज उठाने की उन्हें स्वतन्त्रता है और यदि उनके प्रयोग असफल रहें तो उन्हें दण्ड का भय नहीं, क्योंकि दुबारा प्रयत्न करने या नई चीज शुरू करने की उन्हें आजादी है। तरक्की

सम्बन्धी फ्रांसिस परकेंस की पुस्तक में उस वार्ता का उल्लेख है जो कि प्रेसी[illegible] और एक सैनिक इंजीनियर के बीच हुई थी जब कि वे याल्टा से लौटते स[illegible] सौदी-अरेबिया के रेगिस्तान के ऊपर उड़ रहे थे :

"ये लोग यहाँ कुछ पैदा क्यों नहीं करते ? क्या जमीन बिल[illegible] ऊसर है ?"

"नहीं," इंजीनियर ने जवाब दिया, "जमीन अच्छी है और काम में लाई जा सकती है अगर पानी हो तो।"

"क्या सिंचाई नहीं की जा सकती ?" प्रेसीडेंट ने पूछा।

"सिंचाई नहीं की जा सकती क्योंकि सिंचाई के लिए यहाँ पानी [illegible] नहीं है।"

"लेकिन" प्रेसीडेंट ने कहा, "कुछ तो पानी यहाँ होगा ही। आखि[illegible] आदमी और जानवर भी तो पानी पीते ही होंगे।

"हाँ, कहीं-कहीं कुएं और नखलिस्तान हैं, लेकिन जैसा कि आ[illegible] जानते हैं यहाँ पानी बड़े मँहगे दामों पर बिकता है।"

"अच्छा," उन्होंने कहा, "तो कुएं कैसे बने ? खोदे गए न ?"

"जी हाँ।"

"जमीन की सतह से कितने नीचे पानी निकलता है ?"

"करीब ५० फीट।"

"क्या वहाँ सचमुच काफी पानी है ?"

"हाँ, मेरा खयाल है कि ५० फीट नीचे बहुत पानी है।"

"तब तो इस समस्या का यह हल नजर आता है कि अच्छे पम्पों से पानी निकालकर जमीन को सींचा जाय।"

"इससे फायदा न होगा," इन्जीनियर ने कहा, "यहाँ बहुत गर्मी पड़ती

डी॰ टी॰ छिड़की गई जिसके फलस्वरूप न केवल मच्छर ही बल्कि मक्खी, जूँ और खटमल आदि सब खतम हो गए।

मिस्टर हेडन ने एक गाँव के किसान का मजाकिया किस्सा सुनाया : किसान ने यह तो माना कि मक्खी, मच्छर आदि सब गायब हो गए हैं लेकिन उसका खयाल था कि डी॰ डी॰ टी॰ खेती पर बुरा असर डालेगी। जब शिक्षक को यह बात समझ न आई तो उसने किसान से पूछा कि यह कैसे सम्भव है। किसान ने जवाब दिया, "कल दिन को खाने के बाद मैं थोड़े आराम के लिए लेट गया और मुझे नींद आ गई, क्योंकि मक्खी, जूँ या खटमल ने मुझे तंग नहीं किया, मैं सूरज डूबने के दो घण्टे पहले तक सोता रहा। अब बताइये मैं खेत पर क्या काम करता ?'

तुर्की

बहुत-सी बातें, जिन्हें मैक्स थार्नबर्ग ईरान पर लागू करने की कोशिश कर रहे हैं, उन्होंने तुर्की के तीन वर्ष के अध्ययन से सीखी है।

मध्य-पूर्व यातायात को कितना महत्वपूर्ण समझता है यह इस बात से निश्चित होता है कि तुर्की ने अपनी रेलों को विस्तारित करके ईरान और ईराक की रेलों से मिला दिया है। यह और आधुनिकीकरण की अन्य योजनाएं सरकारी संरक्षण में चल रही हैं।

आधुनिक बड़े कारखाने उन आवश्यकताओं के लिए स्थापित किये जा रहे हैं जिनका कि अभी अस्तित्व भी नहीं है जब कि लोहे की नोक वाले हल या साबुन बनाने वाले छोटे कारखानों की कमी है। जब तक कि आधुनिक कारखाने और लकड़ी के हलों के बीच की खाई न भरी जायगी स्वस्थ आर्थिक योजना की सम्भावना नहीं है।

थार्नबर्ग की दलील है कि अमरीकन पूँजी तब तक पूरी तरह तुर्की में नहीं लगाई जा सकती जब तक कि तुर्की अपने कार्यों से यह न साबित कर दे कि वैदेशिक पूँजी पर लगाए हुए पुराने प्रतिबन्ध हटा लिये गए हैं। इसका मतलब होगा तुर्की के एक-पार्टी राज्य में परिवर्तन करना; राजनीतिक विरोध को प्रोत्साहित करना और तुर्कियों को खुद पूँजी लगाने के लिए

गत महायुद्ध में अफगानिस्तान की सरकार ने, जो कि भारत और रूस के बीच स्थित है, सड़कें बनाने और औद्योगिक विकास के लिए एक योजना आरम्भ करना निश्चित किया। रूस को शायद यह पसन्द न आता कि अफगानिस्तान अमरीका से मदद माँग रहा है; पर चूँकि वह स्टालिनग्राद की रक्षा में व्यस्त था इसलिए उसने इस ओर ध्यान नहीं दिया। सार्वजनिक कार्यों के मन्त्री मोहम्मद कबीर लुदीन ने ठेकों का नीलाम किया—मॉरीसन नुडसन कम्पनी सफल रही। फौरन ही अफगानिस्तानी इलाके का निरीक्षण करने के लिए विशेषज्ञों के दल भेजे गए। सन् १९४६ में ८ करोड़ रुपए का ठेका मंजूर किया गया और बाद में सड़कें बनाने, जमीन की सिंचाई करने और हल्के उद्योगों को शुरू करने के लिए कुल ६७ करोड़ ५० लाख रुपए का बजट स्वीकृत किया गया। सड़कों पर सन् १९४७ में काम शुरू हुआ, आज २०० अमरीकन इंजीनियर स्थानीय सहयोग के साथ यह काम पूरा कर रहे हैं।

एक नई सड़क कंधार से पाकिस्तान की हद तक आती है। अब अफगानी लारियों में भरकर तरबूज और अंगूर आसानी से बाजार तक ले जाए जा सकते हैं, वक्त बारह घंटे की जगह तीन घंटे ही लगता है और इस प्रकार फलों के निर्यात को दुगुना-तिगुना बढ़ाया जाना सम्भव है। दूसरी ७५ मील लम्बी सड़क दक्षिण में गिरीश्क तक जाती है।

मॉरीसन नुडसन स्थानीय व्यक्तियों को टेकनिकल शिक्षा भी दे रही है ताकि सड़कों पर काम पूरा हो जाने पर अफगानी इन सड़कों की और सिंचाई की नहरों तथा मशीनों आदि की देख-भाल कर सकें। अमरीकन शिक्षक अफगानिस्तान जा रहे हैं और अफगानी छात्र अमरीका आ रहे हैं।

लेकिन अफगानिस्तान में भी ईरान की तरह यही खतरा है कि नींव बनाने से पहले मकान खड़ा करना न शुरू कर दिया जाय। चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत अफगानिस्तान में पहले छोटे पर जरूरी सुधार किये जायंगे। अधिकतर अफ-

है, पादप पहुँचाने से पहले ही सारा पानी सूरज सुखा देगा और जमीन सूखी-की-सूखी ही रह जायगी।"

"लेकिन रातें तो ठंडी होती हैं। पम्पों से पानी निकालकर रात को सिंचाई क्यों न की जाय ताकि जमीन में पानी रह सके? इन लोगों को किसी-न-किसी तरह अनाज पैदा करना ही चाहिए। अगर जमीन के नीचे पानी है तो कोई-न-कोई तरीका निकालना ही चाहिए।"

जब प्रेसीडेंट रूजवेल्ट रास्ते में बादशाह इब्न सऊद से जहाज पर मिले तो उन्होंने कहा कि उनके खयाल में अमरीकन कम्पनियाँ रेगिस्तान की सिंचाई करने के लिए मिल सकती हैं।

ऐसा मालूम होता था कि बादशाह को इस बात में दिलचस्पी न थी। बादशाह ने कहा, "मैं बूढ़ा आदमी हूँ, खेती बाड़ी मेरे लिए नहीं है। मेरा भतीजा जब गद्दी पर बैठे तो शायद उसे इस बात में दिलचस्पी हो।"

"लेकिन," प्रेसीडेंट ने यह सारी बात बताते हुए मुझसे कहा, "तुम जानते हो कि निकट पूर्व के विस्फोटक बने रहने का कारण है वहाँ की जनता की गरीबी। उनके पास खाना काफी नहीं है और न उनके पास काम ही है। उन्हें अपना खाना खुद उपजाना चाहिए। एक बात ऐसी है जो दूसरी बातों से कहीं ज्यादा इन इलाकों की विस्फोटकता कम कर सकेगी। देखो, यहूदियों ने फिलस्तीन में क्या कर दिखाया है।"

वे थोड़ी देर सोचते रहे, फिर बोले : मैं "सोचता हूँ कि जब मैं संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रेसीडेंट की मियाद पूरी कर चुकूँगा और जब यह बेहूदा लड़ाई खत्म हो जायगी तो मैं और मेरी बीबी निकट पूर्व में जाकर टेनेसी वैली-जैसा कोई बड़ा काम शुरू करने की कोशिश करेंगे...मैं ऐसा काम बहुत ज्यादा पसन्द करूँगा।"

अफगानिस्तान

मॉरीसन नुडसन नामक एक अमरीकन इंजीनियरिंग कम्पनी ऐसी है जो थोड़े मुनाफे पर किसी भी देश की औद्योगिक प्रगति को पाँच सौ वर्ष आगे बढ़ा देगी। यह कम्पनी आज एशिया, अफ्रीका तथा दक्षिणी अमरीका के

भाँति गरीबी और गन्दगी में पड़ रहा था। आज भी इजराइल का स्वतन्त्र राज्य गरीबी और गन्दगी में पड़ रहा है हालाँकि सन् १९४२ और १९४९ के बीच उत्पादन ६० प्रतिशत बढ़ गया है।

प्रथम महायुद्ध के पूर्व फिलस्तीन में प्रायः ६० हजार यहूदी थे; द्वितीय महायुद्ध के आरम्भ में यहूदियों की संख्या ५ लाख हो गई। आज १० लाख से भी अधिक यहूदी फिलस्तीन में हैं। इन लोगों ने दलदली मैदान को साफ करके सड़कें बनाईं, नई बस्तियाँ, कस्बे और शहर बनाये, स्कूल और विश्वविद्यालय स्थापित किए, जगह-जगह अस्पताल और स्वास्थ्य-केन्द्र खोले, आर्थिक और औद्योगिक कार्य आरम्भ किए, जार्डन की विद्युत्-शक्ति का उपयोग किया। इन्होंने फिलस्तीन में करीब ढाई अरब रुपया लगाकर तुर्की साम्राज्य के इस उजाड़ प्रान्त को पश्चिमी सभ्यता और यूरोपीय व्यवसाय की चौकी बना दिया।

यहाँ तक कि सन् १९४८ में अरबों के साथ लड़ते हुए भी इन्होंने रचनात्मक कार्य जारी रखे। जब कि मिस्री वायुयान इनके ऊपर गड़गड़ाते रहे, ये लोग ५० मील लम्बी पाइप लाइन बनाने में जुटे रहे। जब कि वाइज़मान वैज्ञानिक संस्था से सिर्फ दो मील दूर ईराकी लड़ाके डेरा डाले हुए थे, इस संस्था के वैज्ञानिक अध्यक्ष नये खेत-खलिहान, बाग-बगीचे और उद्योग-धन्धों के निर्माण में लगे हुए थे। इन कामों में आज उन हजारों यहूदियों को लगाया जाना सम्भव हो रहा है जो प्रति मास फिलस्तीन में पहुँचते हैं। वाइजमान संस्था के वैज्ञानिकों का एक दल नेगवे मरुभूमि में जल और तेल की खोज कर रहा है। दूसरा दल केरब नामक वृक्ष पर आनुसन्धानिक प्रयोग कर रहा है जिसके फल में ४५ प्रतिशत चीनी होती है।

लेकिन इज़राइल के आर्थिक विकास में वैदेशिक पूँजी न लगने के कारण बाधा पड़ रही है। आर्थिक सलाहकार रावर्ट आर० नाथन का

गानी मकान गीली मिट्टी के बने होते हैं जिनकी मिट्टी सूखकर तड़क जाती है। गन्दगी दूर की जा सकती है और स्वास्थ्य सुधारा जा सकता है यदि अफ़गानियों को मिट्टी से ईंटें बनाना सिखा दिया जाय। और अफ़गानिस्तान की शिक्षा-समस्या यह नहीं कि स्कूल की इमारतें ज्यादा सख्या में हों बल्कि यह है कि शिक्षकों की संख्या अधिक हो। जब तक यह न होगा अफ़गानिस्तान में आधुनिक शिक्षा का विस्तार न हो सकेगा और जब तक आधुनिक शिक्षा न होगी यह आशा नहीं की जा सकती कि अफ़गानी अपनी आर्थिक विकास की योजनाओं की जिम्मेदारी खुद सँभाल सकेंगे।

सीरिया

ठोस आर्थिक बुनियाद के बिना औद्योगीकरण करने का खतरा अभी हाल में सीरिया ने अनुभव किया है। पिछली लड़ाई के दौरान में सीरियन पूँजीपतियों ने कपड़े और काँच की मिलें खोलीं लेकिन सीरियनों के पास इतना पैसा न था कि वे कपड़े और काँच का सामान खरीद सकें और न पड़ोसी अरब देशों में ही उन्हें अपने माल के लिए बाजार मिला। नतीजा यह हुआ कि मध्य-पूर्व की गरीबी बढ़ती ही गई और ईराक के साथ सीरिया को मिलाने की आवाजें उठाई जाने लगीं जिसके फलस्वरूप एक साल से कम अरसे में तीन बार सरकारें बदलीं।

संयुक्त राष्ट्रों ने सीरिया की समस्या को एक नये पहलू से हल करने का सुझाव पेश किया है—सिंचाई की एक योजना द्वारा १ लाख ७५ हजार एकड़ भूमि खेती के लायक बनाई जायगी जिस पर साढ़े छः करोड़ रुपया खर्च होगा और इस प्रकार भूमि की सम्भावनाएं शत-प्रतिशत बढ़ाई जा सकेंगी। यदि आरम्भिक योजना कारगर हुई तो बाद में बड़ी योजनाएं शुरू की जायंगी।

फिलस्तीन

तीन हजार साल पहले फिलस्तीन "यह देश," मसीह ने मोसेज को बताया, "अच्छा देश है। यहाँ की घाटियों मे फव्वारे छूटते हैं, यह खजूर के तेल और शहद का देश है...यह ऐसा देश है जहाँ तुझे पेट-भर रोटी

जिसको कि बड़े चाव से जियोनिस्ट और भूमि-वैज्ञानिकों ने पढ़ा और बाद में यह पुस्तक ही विस्तारित योजनाओं की रूपरेखा सिद्ध हुई ।

इस योजना पर काम करने वाले विशेषज्ञों तथा अन्य व्यक्तियों के चुनाव में टेनेसी वैली ऑथेरिटी ने शुरू से ही मदद दी और शीघ्र ही योजना बनकर तैयार भी हो गई ।

जे० वी० ए० की निम्न लिखित आठ सीढ़ियाँ होंगी :

१. तटवर्ती समतल भूमि पर कुएं और जार्डन के मुहाने पर मध्यम पैमाने के बाँध बनाना । इससे १ लाख ७५ हजार एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए पर्याप्त जल मिल सकेगा; खर्च लगभग साढ़े १४ करोड़ रुपए होगा, और काम पूरा होने में करीब दो वर्ष लगेंगे ।

२. और लगभग २० हजार एकड़ दलदली भूमि की सिंचाई, विशेषतः हूले जलाशय की ।

३. बेसिन में स्थित २० हजार एकड़ भूमि की सिंचाई ।

४. भूमध्य सागर द्वारा बिजली पैदा करने का काम । इस काम को पूरी उपयोगिता प्राप्त करने के लिए यहूदी और अरब राज्यों के सहयोग की आवश्यकता होगी ।

खयाल है कि अगले चार वर्षों में १० अरब रुपए की आवश्यकता होगी। आयात-निर्यात बैंक ने सन् १९४९ मे केवल ५० करोड़ रुपया कृषि, टेलीफोन तथा यातायात के अन्य सामान खरीदने के लिए उधार दिया।

इज़राइली सरकार ने वैदेशिक व्यवसाय को नई इमारतों पर म्युनिसपल कर न लगाकर तथा मशीनों के आयात पर चुंगी माफ करके प्रलोभन देना चाहा है। इसके विपरीत विदेशी व्यवसायी देखते हैं कि मजदूरी उतनी ही मँहगी है जितनी कि अमरीका में; आधुनिक मशीनों की अनुपस्थिति में माल बनाने पर खर्च भी ज्यादा पड़ता है और अन्त में समाजवाद कायम होने की सम्भावना भी बनी हुई है।

इस बीच संयुक्त राष्ट्र गॉर्डन आर० क्लैप की रिपोर्ट पर विचार कर रहा है जो कि उसने मध्य-पूर्व की आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करके पेश की है। क्लैप मण्डल मुख्यतः अरबी शरणार्थियों को पुनः बसाने के काम पर भेजा गया था पर इसने मध्य-पूर्व के विकास की सम्भावनाओं का भी निरीक्षण किया जिनमें सबसे बड़ी तथा आशामयी योजना जार्डन वैली ऑथेरिटी (जे० वी० ए०) थी।

जे० वी० ए० का श्रेय डॉ० वाल्टर सी० लाउडरमिल्क नामक अमरीकन भूमि-वैज्ञानिक को है। इस समय इस योजना पर बड़े-बड़े अमरीकन इंजीनियर लगे हुए हैं। फिलस्तीन में इस समय एक लाख एकड़ भूमि सिंचाई के अन्तर्गत है; इस योजना द्वारा अगले दस वर्षों में भूमि की सिंचाई सात गुनी बढ़ जायगी जिससे कि २० लाख आदमियों को रहने की जगह और काम दिया जा सकेगा और प्रतिवर्ष ५० करोड़ किलोवाट-घण्टे बिजली पैदा की जा सकेगी। इस योजना का प्रस्तावित खर्च २ अरब ४० करोड़ रुपए है।

जे० वी० ए० का विचार मिस्टर लाउडरमिल्क के मस्तिष्क में उस समय आया जब कि फिलस्तीन की ऊसर भूमि के ऊपर वायुयान उड़ रहे थे। भूमध्य सागर और जार्डन घाटी की पारस्परिक ऊँचाई का अन्तर प्रत्यक्ष दिखाई देता था। लाउडरमिल्क ने स्वयं से प्रश्न किया कि क्यों न ऊपर जार्डन और उसकी शाखाओं का मीठा जल सिंचाई की नहरों के जल में

इस विकास-कार्य में जुट जायं तो मध्य-पूर्व के आधुनिक इतिहास की सबसे आशाजनक घटना फिलस्तीन में बढ़ेगी।

मरुभूमि के निकट ही फनाफूली एक ऐसा प्रदेश है जिसके प्रति आँखें नहीं मूँदी जा सकतीं। अरबी नेता भी यह चाहने लगेंगे कि उनके किसान और उनकी ग्रामीण जनता भी जे० वी० ए० से लाभ उठाएं। संयुक्त राष्ट्र अमरीका और संयुक्त राष्ट्रों द्वारा आर्थिक और राजनीतिक प्रलोभन भी अरबों को दिया जायगा।

अन्त में, जे० वी० ए० ऐसा राजनीतिक संगठन स्थापित करने में सहायक हो सकता है जो कि मध्य-पूर्व में शांति कायम रखने के लिए अति आवश्यक है। वह शुभ दिन आने से पूर्व जे० वी० ए० मध्य-पूर्व इंजीनियरों तथा कृषि, जंगलात आदि के विशेषज्ञों के लिए शिक्षण-स्थल के रूप में काम आयगा। इसके अतिरिक्त यह उस अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग से प्रोत्साहित करेगा जिसकी अन्य बड़ी योजनाओं के लिए, विशेषत: टिगरीस-यूफरेटिस घाटी में आवश्यकता होगी।

ईराट और टिगरीस-यूफरेटिस घाटी

"जब कि मैं बेबीलोन के निर्जन खण्डहरों के बीच खड़ा था," वाल्टर लाउडरमिल्क लिखते हैं, "जीवन का एक-मात्र चिह्न—एक भेड़िये को मैंने देखा, जो कि अपना सिर हिला रहा था मानो उसके कान में जूँ चल रही हो। प्राचीन संसार के सात आश्चर्यों में से एक—बेबीलोन के झूलते उपवनों के बीच वह भेड़िया लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपनी माँद की ओर चल पड़ा जहाँ कि २६०० वर्ष पूर्व भी एयर कण्डीशनिंग का प्रयोग होता था।"

प्राचीन बेबीलोनिया की जन-संख्या करीब ३ करोड़ रही होगी। प्राचीन

बेबीलोनिया के वासिस आंमान ईराक में उक्त जन-संख्या का केवल दसवाँ भाग रहता है। इतिहास की एक प्रमुख सभ्यता का पतन-शानो-शौकत से गरीबी और गन्दगी के गर्त में गिर जाने के कारणों को जानना निश्चय ही एक आश्चर्यजनक अध्ययन होगा। बेबीलोन का पतन, मिस्र के समान कृषि-योग्य भूमि न रहने के कारण न हुआ; साधारण सिंचाई से आज भी उसकी फसलें इतनी बहुतायत में हो सकती हैं जितनी कि ईसा से ५०० वर्ष पूर्व हुआ करती थीं।

ऐसा प्रतीत होता है कि धीरे-धीरे शक्ति क्षीण होने लगी; नहरों में मिट्टी जमने लगी और यह महसूस होने लगा कि पुरानी नहरों की मिट्टी खोदने के बजाय नई नहरों का बनाना ज्यादा आसान है। इन्जीनियरिंग ज्ञान न होने के कारण बेबीलोनिया-निवासी एक नहर के बाद दूसरी छोड़ने लगे। बगदाद और मोसल के बीच ही ऐसी ६८ नहरें गिनी जा सकती हैं। जब शताब्दियों पहले मगोलों ने सिंचाई के कार्यों को उसी प्रकार ध्वंस किया जिस प्रकार कि उन्होंने स्त्री-बच्चों को कत्ल किया तो इस सब मार-काट के बाद इतनी परवाह न की गई कि तोड़-फोड़ की मरम्मत की जा सके। यहाँ तक कि जो बाँध बचे थे उनकी देख-भाल भी न की गई और वह धीरे-धीरे बेकार हो गए। बगीचे रेगिस्तान बन गए और इंसान फिर जानवर बन गया।

सन् १९५४ में बगदाद के समाचार-पत्र सौटा-एल-अहाली (जनता की आवाज) ने ईराकी जीवन का वर्णन करते हुए लिखा था :

"......सारी आबादी का ६० फीसदी हिस्सा इन्सानियत की सतह से भी नीचे रहता है। उनकी जिन्दगी में भूख और बीमारियाँ ही बदी हैं। उन्हें किसी तरह की डॉक्टरी मदद भी नहीं मिलती......"

लेकिन धरती माता प्रतीक्षा में बैठी रही। सिंचाई के लायक करीब २ करोड़ एकड़ जमीन में से ५० लाख एकड़ को सन् १९३९ के बाद से पानी पहुँचाया जा चुका है। इन नये बाँधों द्वारा इसके अतिरिक्त ३ लाख ७५ हजार एकड़ जमीन पर और काश्त की जा सकेगी। ईराक अपनी सड़कें भी सुधार रहा है और रेलों को भी बढ़ा रहा है ताकि पूरब में ईरान और

चालीस साल पहले सर विलियम
प्राचीन इंजीनियरिंग कार्यों के बचे-खुचे भाग का निरीक्षण करके कहा था कि ७५ करोड़ रुपए के खर्च पर संसार की २८ लाख एकड़ सबसे उपजाऊ भूमि को काश्त के लायक बनाया जा सकता है इस विषय पर अपने विचार प्रगट करते हुए संयुक्त राष्ट्र अमरीका के भूतपूर्व प्रेसीडेंट तथा स्वयं प्रसिद्ध इञ्जीनियर हर्बर्ट हूवर ने कहा :

"मेरा अपना सुझाव है कि ईराक के भूमि-सुधार को पूरा करने के लिए पूँजी देनी चाहिए, चूँकि ईराक फिलस्तीन के अरबों को अपने यहाँ बसा रहा है जिसके फलस्वरूप फिलस्तीन के यहूदियों के बसने और औपनिवेशीकरण के लिए पूरी तरह खुल जायगा......

"आज लाखों आदमी एक देश से दूसरे देश में आ-जा रहे हैं; अगर इन देशों को सुव्यवस्थित बनाया जा सके तो यह आना-जाना इतिहास का आदर्श देशान्तर-गमन सिद्ध होगा। देशान्तर-गमन की समस्या का हल संघर्ष से नहीं बल्कि इञ्जीनियरिंग कार्यों द्वारा ही किया जा सकता है।"

तात्कालिक राजनीतिक वास्तविकताओं ने दुर्भाग्यवश अरबों को फिलस्तीन से न हटने दिया जिसके फलस्वरूप सन् १६४५ में युद्ध छिड़ गया। कम-से-कम ७ लाख अरब इजराइल छोड़कर चले गए; इजराइली उनको वापस पाने के इच्छुक भी नहीं हैं। भागे हुए अरब गुफा-कन्दराओं में संयुक्त राष्ट्रों द्वारा सहायतार्थ दी हुई पूँजी पर जिन्दा रह रहे हैं। इसकी तुलना में ईराक के खेत स्वर्ग-समान होंगे।

इस बीच ईराक, सीरिया, लेबनान, मिस्र तथा येमन के ढाई करोड़ यहूदियों को इजराइल में बसने के लिए समझाया जा सकता है। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् यूनान और तुर्की की जन-संख्याओं का देशान्तर-गमन

यद्यपि आरम्भ में भयानक प्रतीत होता था, बाद में एक पुराने गहरे घाव को भरने में पूर्णतया सफल हुआ।

ईराकी अरबों का अपने यहाँ आकर बसना पसन्द करेंगे या नहीं, यह अलग सवाल है। हाल ही में एक उच्च ईराकी अधिकारी ने कहा था, "हम बाहरी अरबों को भी अपने यहाँ बसाना नहीं चाहते—हम स्वयं अपनी जन-संख्या निर्माण करेंगे।"

ईराकी विकास की योजनाओं का होना तो अनिवार्य ही है। जैसे ही छलनी के छेद बन्द हो जायगे, संयुक्त राष्ट्रों तथा पश्चिम द्वारा सिंचाई तथा बिजली के विकास की योजनाएं प्रस्तावित की जायंगी जिनका प्रलोभन ईराकियों के लिए कम न होगा।

मेरे ख्याल में इस इलाके में जान-फूँकने वाली सबसे बड़ी तथा सबसे उपयुक्त योजना लजाल्स वाइट नामक अमरीकन इञ्जीनियर ने पेश की थी। वाइट की योजना न सिर्फ ईराक पर ही लागू होगी बल्कि सीरिया, लेबनान, ट्रांसजार्डन और तुर्की तथा जार्डन वैली ऑथेरिटी के तमाम इलाके पर ऐसी छा जायगी जैसे कि नदी गढ़हे को जलमग्न कर देती है।

वाइट का प्रस्ताव है कि सीरिया में मेसकीन के पास यूफ्रेटीस नदी पर बाँध बनाया जाय। पानी के इस बदले हुए रुख को नालियों और खाइयों द्वारा रेगिस्तान को चीरते हुए डैमस्कस तक पहुँचाया जायगा। रास्ते में इस जल-प्रवाह को जार्डन, लिटानी तथा चारमुक नदियों से जल प्राप्त होगा। ऐसे साधनों के उपलब्ध होने पर इजराइल को जल की कमी कभी न होगी। उसकी आबादी दुगुनी ही नहीं बल्कि चौगुनी बढ़ सकेगी। इससे अन्य देशों को भी कम लाभ न होगा।

यूफ्रेटीस ऑथेरिटी के खर्च का ब्योरा तब तक नहीं लगाया जा सकता जब तक कि वास्तविक स्थिति को पूरा अध्ययन करके नक्शे आदि न बना लिये जावें। सबसे पहले यह जरूरी है कि इजराइल, ट्रांसजार्डन, लेबनान, सीरिया, ईराक के प्रतिनिधि एक साथ एक जगह बैठें। इस दिशा में तो इन लोगों ने सोचना भी शुरू नहीं किया है बल्कि इसके विपरीत हर एक

आरम्भिक कार्य करने से पहले उन्हें उन व्यक्तियों का निर्णय स्वीकार करना चाहिए जिन्हें ऐसे संघर्षों को सुलझाने का वर्षों का अनुभव है, जो यह बता सकते हैं कि कहाँ कितना जल है और उसका कितनी मात्रा में प्रत्येक राज्य लाभ उठा सकता है।

विकास का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय हाथों में सौंपने का एक लाभ यह भी है कि इसमें सहयोग की शिक्षा मिलती है—ऐसी शिक्षा, जो किसी दिन आगे चलकर इन राष्ट्रों को एक संयुक्त राज्य में बद्ध कर दे।

यह सोचना गलत है कि किसी दिन अरब, चीन या अर्जेण्टाइना का दलित निवासी अमरीकन व्यापारी या अमरीकन टैक्सी-ड्राइवर का अनुकरण करने योग्य बन सकेगा। न ऐसा हो सकता है और न ऐसा होना ही चाहिए। ये लोग अपना पृथक् सांस्कृतिक व्यक्तित्व बनाये रखेंगे; इनकी राजनीतिक संस्थाएं भी हमारी शासन-प्रणाली से मेल न खा सकेंगी। यह भी ठीक ही है, क्योंकि अमरीकन तरह के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की प्रगति करने के लिए हमें किसी को भी अपने-जैसा बनने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

हम जो कर सकते हैं और हमें जो करना चाहिए वह यह है कि हम प्रत्येक उस कार्य को प्रोत्साहित करें जिससे कि संसार के पुरुष और स्त्री शक्तिशाली बनें, आत्म-निर्भर बनें और प्रत्येक उस कार्य को हतोत्साह करें जो इसके विपरीत हो। उदाहरण के लिए ईराकी सरकार ने निचली टिगरिस के इलाके में जमीन को ८५-८५ एकड़ के टुकड़ों में विभाजित कर दिया है। कोई भी व्यक्ति, जो इनमें से किसी खेत पर पाँच वर्ष तक काश्त करता रहा है, उस खेत का हकदार बन जाता है; उसे कृषि-शिक्षा, अच्छे बीज और अच्छे चौपाए दिये जाते हैं। यह अच्छी बात है और इसको बढ़ावा देना

चाहिए। मिस्र स्पारा अस्पताल नहीं बना सकता, अतः वह डॉक्टर और डॉक्टरी सामान देहातों में लारियों द्वारा भेजता है। यह अच्छी बात है और इसको भी बढ़ावा देना चाहिए। क्रमशः मध्यपूर्वी राष्ट्र एक साधारण नागरिक के प्रति अपना उत्तरदायित्व किसी मात्रा में स्वीकार कर रहा है; यह भी प्रोत्साहित करने योग्य बात है।

फिलस्तीन-युद्ध की कटुता के बावजूद भी मध्य-पूर्व संयुक्त राष्ट्र को अपना स्वार्थ-रहित मित्र समझता है। निःस्वार्थता सही मानों में उपयुक्त शब्द नहीं है। समृद्धिशील मध्य-पूर्व, समृद्धिशील दक्षिण अमरीका अथवा अफ्रीका की तरह संयुक्त राष्ट्र अमरीका और यूरोप के लिए एक लाभप्रद बाजार सिद्ध होगा।

लाभप्रद बाजार के अतिरिक्त मध्य-पूर्व आज हमें एक ऐतिहासिक महत्त्व का अवसर प्रदान कर रहा है। मध्य पूर्व सैनिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से हमारे लिए और संसार के लिए एक आवश्यक क्षेत्र है। न[illegible] निर्भीक योजना के अन्तर्गत अमरीकन मध्य-पूर्व में अधिक संख्या में स्कूल स्थापित कर सकेंगे, अधिक संख्या में शिक्षकों और छात्रों का आदान-प्रदान हो सकेगा, अधिक संख्या में टेकनिकल सलाहकारों, डॉक्टरों और पुस्तकों को भेजा जा सकेगा। इसके बाद, पूँजी लगाने, मिल-कारखाने खोलने की बारी आयगी और अन्त में शान्ति।

अगर इस अवसर का लाभ उठाया गया तो हम इस समय मध्य-पूर्व में शान्ति की नींव कायम कर सकेंगे। मध्य-पूर्व में शान्ति कायम करने का अर्थ है सर्वथा शान्ति के लिए कदम उठाना।

१० । बरसा से सीरियन, ईराकी और तुर्की अमरीका में उस हर एक व्यक्ति से मिलते रहे हैं जो उनके दावों को पुष्टि दे सके। एक बहुमुखी योजना पर आरम्भिक कार्य करने से पहले उन्हें उन व्यक्तियों का निर्णय स्वीकार करना चाहिए जिन्हें ऐसे संघर्षों को सुलझाने का वर्षों का अनुभव है, जो यह बात सकते हैं कि कहाँ कितना जल है और उसका कितनी मात्रा में प्रत्येक राज्य लाभ उठा सकता है।

विकास का कार्य अन्तर्राष्ट्रीय हाथों में सौंपने का एक लाभ यह भी है कि इसमें सहयोग की शिक्षा मिलती है—ऐसी शिक्षा, जो किसी दिन आगे चलकर इन राष्ट्रों को एक संयुक्त राज्य में बद्ध कर दे।

यह सोचना गलत है कि किसी दिन अरब, चीन या अर्जेण्टाइना का दलित निवासी अमरीकन व्यापारी या अमरीकन टैक्सी-ड्राइवर का अनुकरण करने योग्य बन सकेगा। न ऐसा हो सकता है और न ऐसा होना ही चाहिए। ये लोग अपना पृथक् सांस्कृतिक व्यक्तित्व बनाये रखेंगे; इनकी राजनीतिक संस्थाएं भी हमारी शासन-प्रणाली से मेल न खा सकेंगी। यह भी ठीक ही है, क्योंकि अमरीकन तरह के अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की प्रगति करने के लिए हमें किसी को भी अपने-जैसा बनने के लिए बाध्य नहीं करना चाहिए।

हम जो कर सकते हैं और हमें जो करना चाहिए वह यह है कि हम प्रत्येक उस कार्य को प्रोत्साहित करें जिससे कि संसार के पुरुष और स्त्री शक्तिशाली बनें, आत्म-निर्भर बनें और प्रत्येक उस कार्य को हतोत्साह करें जो इसके विपरीत हो। उदाहरण के लिए ईराकी सरकार ने निचली टिगरिस के इलाके में जमीन को ८५-८५ एकड़ के टुकड़ों में विभाजित कर दिया है। कोई भी व्यक्ति, जो इनमें से किसी खेत पर पाँच वर्ष तक काश्त करता रहा है, उस खेत का हकदार बन जाता है; उसे कृषि-शिक्षा, अच्छे बीज और अच्छे चौपाए दिये जाते हैं। यह अच्छी बात है और इसको बढ़ावा देना

चाहिए। मिस्र ज्यादा अस्पताल नहीं बना सकता, अतः वह डॉक्टर और डॉक्टरी सामान देहातों में लारियों द्वारा भेजता है। यह अच्छी बात है और इसको भी बढ़ावा देना चाहिए। क्रमशः मध्यपूर्वी राष्ट्र एक साधारण नागरिक के प्रति अपना उत्तरदायित्व किसी मात्रा में स्वीकार कर रहा है; यह भी पोत्साहित करने योग्य बात है।

फिलस्तीन-युद्ध की कटुता के बावजूद भी मध्य-पूर्व संयुक्त राष्ट्र को अपना स्वार्थ-रहित मित्र समझता है। निःस्वार्थता सही मानो में उपयुक्त शब्द नहीं है। समृद्धिशील मध्य-पूर्व, समृद्धिशील दक्षिण अमरीका अथवा अफ्रीका की तरह संयुक्त राष्ट्र अमरीका और यूरोप के लिए एक लाभप्रद बाजार सिद्ध होगा।

लाभप्रद बाजार के अतिरिक्त मध्य-पूर्व आज हमें एक ऐतिहासिक महत्त्व का अवसर प्रदान कर रहा है। मध्य-पूर्व सैनिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से हमारे लिए और संसार के लिए एक आवश्यक क्षेत्र है। नई निर्भीक योजना के अन्तर्गत अमरीकन मध्य-पूर्व में अधिक संख्या में स्कूल स्थापित कर सकेंगे, अधिक संख्या में शिक्षकों और छात्रों का आदान-प्रदान हो सकेगा, अधिक संख्या में टेकनिकल सलाहकारों, डॉक्टरों और पुस्तकों को भेजा जा सकेगा। इसके बाद, पूँजी लगाने, मिल-कारखाने खोलने की बारी आयगी और अन्त में शान्ति।

अगर इस अवसर का लाभ उठाया गया तो हम इस समय मध्य-पूर्व में शान्ति की नींव कायम कर सकेंगे। मध्य-पूर्व में शान्ति कायम करने का अर्थ है सर्वथा शान्ति के लिए कदम उठाना।

एशिया एशियावासियों द्वारा ही बचाया जाना चाहिए

(क) दक्षिण-पूर्वी एशिया

गत महायुद्ध के बाद की घटनाओं को देखते हुए यह सोचना गलत न होगा कि एशिया का सुदूर पूर्वी भू-खण्ड कम्युनिज्म से न बच सकेगा। कम-से-कम यह सोचना तो गलत ही है कि इसे संयुक्त राष्ट्र अमरीका बचायगा।

नागरिक आवश्यकताओं के सामान तथा शस्त्रों पर अरबों अमरीकन रुपए खर्च करने के बावजूद भी राष्ट्रीय चीनी सरकार सड़े हुए सेब की तरह सूखकर गिर पड़ी। हो सकता है हमें ज्यादा रुपया खर्च करना चाहिए था; हो सकता है हमें अधिक प्रोत्साहन देना चाहिए था; हो सकता है हमें चीन को सैनिक नेतृत्व और सशस्त्र दस्ते देने चाहिए थे।

पर असली बात तो यह है कि कम्युनिस्ट इतनी आसानी से चीन में कामयाब न हो सकते थे, अगर चीनी उनका उसी दृढ़ता से मुकाबला करते जैसा कि उन्होंने जापानियों का किया।

दूसरी असली बात यह है कि अगर हम अपने पैसे से और फौजों से चीन को कम्युनिस्टों से बचा भी लेते तो भी वह हमारे सिर पर एक रोषपूर्ण औपनिवेशिक भार होता।

यह बात इतनी ही सचाई से एशिया या अफ्रीका या मध्य-पूर्व या यूरोप पर लागू होती है कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका किसी को भी किसी चीज से बचा नहीं सकता। ज्यादा-से-ज्यादा हम यह कर सकते हैं कि इनको खुद अपना बचाव करने का मौका-भर दे सकें।

अगर हम अपने प्राचीन मित्र चीन को न बचा सके तो हम फ्रेञ्च हिन्द चीन या लंका या भारत या पाकिस्तान के लिए क्या आशा कर सकते हैं?

इन देशों से ज्यादा और कौन पक्के फल की तरह तोड़े जाने के लिए तैयार होगा? जहाँ की सरकारें अधिकतर भ्रष्ट होती हैं, जहाँ की जनता

चाहिए। मिस्र ज्यादा अस्पताल नहीं बना सकता, अतः वह डॉक्टर और डॉक्टरी सामान देहातों में लारियों द्वारा भेजता है। यह अच्छी बात है और इसको भी बढ़ावा देना चाहिए। क्रमशः मध्यपूर्वी राष्ट्र एक साधारण नागरिक के प्रति अपना उत्तरदायित्व किसी मात्रा में स्वीकार कर रहा है; यह भी प्रोत्साहित करने योग्य बात है।

फिलस्तीन-युद्ध की कटुता के बावजूद भी मध्य-पूर्व संयुक्त राष्ट्र को अपना स्वार्थ-रहित मित्र समझता है। निःस्वार्थता सही मानों में उपयुक्त शब्द नहीं है। समृद्धिशील मध्य-पूर्व, समृद्धिशील दक्षिण अमरीका अथवा अफ्रीका की तरह संयुक्त राष्ट्र अमरीका और यूरोप के लिए एक लाभप्रद बाजार सिद्ध होगा।

लाभप्रद बाजार के अतिरिक्त मध्य-पूर्व आज हमें एक ऐतिहासिक महत्त्व का अवसर प्रदान कर रहा है। मध्य-पूर्व सैनिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से हमारे लिए और संसार के लिए एक आवश्यक क्षेत्र है। नई निर्भीक योजना के अन्तर्गत अमरीकन मध्य-पूर्व में अधिक संख्या में स्कूल स्थापित कर सकेंगे, अधिक संख्या में शिक्षकों और छात्रों का आदान-प्रदान हो सकेगा, अधिक संख्या में टेकनिकल सलाहकारों, डॉक्टरों और पुस्तकों को भेजा जा सकेगा। इसके बाद, पूँजी लगाने, मिल-कारखाने खोलने की बारी आयगी और अन्त में शान्ति।

अगर इस अवसर का लाभ उठाया गया तो हम इस समय मध्य-पूर्व में शान्ति की नींव कायम कर सकेंगे। मध्य-पूर्व में शान्ति कायम करने का अर्थ है सर्वथा शान्ति के लिए कदम उठाना।

ही हम यह सहायता देंगे। लेकिन पूंजी का ...
इसका पैमाना सन् १९४५ और सन् १९४९ के बीच चीन को दिये हुए १५ अरब रुपए होने चाहिए।

३. हम क्रमशः आन्तरिक सुधारों को प्रोत्साहित कर सकते हैं—उसी तरह जैसे कि हमने चीन में किया।

४. हम राष्ट्रीयता की भावना को प्रोत्साहित कर सकते हैं। यह वक्त खरीदने का अच्छा तरीका है। इससे कितना वक्त खरीदा जा सकता है यह इस बात पर निर्भर करता है कि पहले के गुलाम देश कितने वक्त में यह महसूस करते हैं कि वे आजाद तो हैं, पर भूखे भी हैं।

५. हम एशिया में एक कोमिण्टर्न-विरोधी संघ निर्माण कर सकते हैं और उसकी सशस्त्र सहायता कर सकते हैं। पर चूँकि कम्युनिस्ट क्रान्तियाँ मनमानी शुरू हो जाती हैं, इसलिए आखिर हम लड़ेंगे किससे ?

उपरोक्त प्रस्तावों में से सब-के-सब या कुछ अक्सर उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं लेकिन कम्युनिस्ट क्रान्तियों को टालने का कुछ समय मिल जाने के अलावा कोई खास फायदा तब तक न होगा जब तक कि इन प्रस्तावों के साथ ही एशिया-निवासियों के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करने की योजनाएं होशियारी से शुरू न की जायं।

केवल संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने प्रयत्नों से एशिया के रहन-सहन का स्तर ऊँचा नहीं कर सकता—यह प्रयत्न ऐसा ही होगा जैसे कि मैं एक बड़ी झील के जल की सतह नीचा करने के लिए एक चम्मच से पानी बाहर निकालूँ। लेकिन अगर मैं झील के बाँध में छेद कर दूँ तो पानी आप-ही-आप कम हो जायगा।

आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सामने सबसे जरूरी सवाल है उस बाँध में छेद करना जो कि सुदूर पूर्व की प्रगति को रोके हुए है।

"लोगों को पूंजीवाद का कोई टोस अनुभव दिखाओ," पाकिस्तान के अर्थ-मन्त्री गुलाम मोहम्मद का कहना है, "संयुक्त राष्ट्र अमरीका में जब

...हुई कमजोरी सदा से जकड़े हुई है; जिनको लोगों के [illegible] और औपनि-
...वेशवाद के प्रति रोष है, जिन्हें 'एशिया एशियावासियों के लिए' का
...[illegible] वाला [illegible] दे दिया गया है; जिनको अधिकार, हम-
...ताओं [illegible] ने हस्तगत कर लिया है—ऐसे लोगों के जीवन में
...[illegible] हमेशा [illegible] के ही लिए मालूम होगा। क्या इसमें कोई ताज्जुब
...कि चीन को हड़प करने के बाद कम्युनिस्ट गवर्नमेंट की सम्भावना से इन
...विचारों को और कहीं न दोहरायेंगे!

...चाहे आप भौतिकवाद के कितने ही कड़े आलोचक क्यों न हों, यह
...र मानेंगे कि जीवित रहने की अत्यन्त आवश्यकताओं के प्राप्त न होने
...र आत्मा तथा शरीर दोनों ही बुद्धिहीन हो जाते हैं। उस भारतीय कन्या
...ा हृदय आनन्द से आलोड़ित न होगा जिसका विवाह बारह वर्ष की आयु
... होगा। वह जीवन के प्रति सदा उदासीन हो बनी रहेगी जो अपना भविष्य
...ानती है कि उसे दस या अधिक बच्चों को जन्म देना है, जिनमें से कम-से-
...म एक तो पैदा होते ही मर जायगा, बाकी के तीन बचपन को पार न कर
...केंगे और शायद सौभाग्यवश उनमें से एक किसी दिन अपना नाम लिखना-
...र सीख सके।

...यदि कन्या के जीवन में आशा नहीं तो क्या उसके पति के जीवन में
...! उसके बड़े-बड़े मनसूबे रखे ही रह जायेंगे जब एक दिन बंगाल के
...काल-जैसी भीषण आपत्ति आ पड़ी होगी, जिसने कम-से-कम १५ लाख
...ानें ले लीं; जब कि अच्छे-से-अच्छे समय में उसे जमीन के एक अदने-से
...ुकड़े पर लकड़ी के हल से काम करना पड़ता है; जब कि यह सम्भावना
...नी रहती है कि कहीं उसे पच्चीस साल की उम्र में ही चिता पर न चढ़
...ाना पड़े।

दक्षिण पूर्वी एशिया को कम्युनिज्म से बचाने के लिए हमारे पास तरह-
...तरह का असर दिखाने वाले हथियार मौजूद हैं :

१. हम प्रजातन्त्रवाद तथा पूँजीवाद की सुन्दरता और गुणों को लगा-
...तार समझाते रह सकते हैं।

कि हरेक मील में ४२ आदमी रहते हैं हमारे यहाँ २२६ रहते हैं। अगर आप हमसे यह कहें कि पहले आप अपना रहने का दर्जा ऊँचा करना चाहते हैं तो मेरे मुल्क के लोग जवाब देंगे कि आप जहन्नुम में जाइए और वे लोग किसी और तरफ अपनी निगाहें लगायेंगे।"

पाकिस्तानी अर्थ-मन्त्री ने यह भी कहा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका किसी मुल्क को अपने फौजी माल से सहारा देने की अपनी योग्यता को जरूरत से ज्यादा समझ बैठा है। उनका ख्याल था कि अन्दरूनी कम्युनिज्म को रोकने के लिए सबसे पक्का तरीका है "जहाँ अनाज का एक दाना पैदा होता था वहाँ दो दाने पैदा करना" जो कि कोई भी एशियायी सरकार बिना मदद के खुद नहीं कर सकती।

अगर सिर्फ यही जरूरी है तो समस्या का हल मुश्किल नहीं। एशिया के अनाज की पैदावार को बढ़ाने के तरीके मौजूद हैं। बहुत-से तरीके काम में भी लाये जा रहे हैं।

मिसाल के लिए रिण्डरपेस्ट रोग को ही लीजिए। रिण्डरपैस्ट ऐसा रोग है जो हर साल एशिया में करीब २० लाख चौपायों को बरबाद करता है। सिर्फ चीन में ही एक लाख चौपाए हर साल मरते हैं जहाँ के किसान गाय और भैंस से अपने पुराने खेत जोतते हैं।

लेकिन पिछली लड़ाई के दौरान में बुद्धि की प्रतियोगिता ने रिण्डरपैस्ट को जीत लिया। ब्रिटिश जासूसों ने पता लगाया कि जर्मनी यह रोग अमरीका में फैलाना चाहता है। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के सहयोग से प्रयोग के बाद प्रयोग किये गए और अन्त में शत-प्रतिशत प्रभावोत्पादक औषधि का आविष्कार किया गया।

सन् १९४८ में खाद्य और कृषि-संगठन ने चीन की राष्ट्रीय सरकार के सहयोग द्वारा इस औषधि को सस्ते दामों पर बनाना शुरू किया। खाद्य और कृषि-संगठन का विश्वास है कि अगले दस वर्षों में इस बीमारी को कम खर्च पर सारी दुनिया मे गायब किया जा सकेगा।

चावल को ही लीजिए, जो कि संसार की आधी से ज्यादा आबादी का

काम में लाया जाना चाहिए, पर ...

जितना ही किसान को क्यों न समझाया जाय वह इन आवश्यक चीजों का प्रयोग बदलेगा नहीं, क्योंकि उसके पास इतना पैसा नहीं कि वह दूसरे साधनों से खाद या अपने जानवरों के लिए चारा प्राप्त कर सके।

मशीनों द्वारा खेती की तात्कालिक आवश्यकता पूरी नहीं होगी। दूसरे पिछड़े हुए इलाकों की तरह खेती के औजारों में थोड़ा परिवर्तन करके बहुत सुधार किया जा सकता है। धीरे-धीरे गाँव की सहयोगी संस्थाएं व्यक्तियों तथा समूहों के लिए ट्रैक्टर तथा दूसरी मशीनें उपलब्ध कर सकेंगी।

दक्षिणपूर्वी एशिया औद्योगिक दृष्टि से मध्य-पूर्व से बढ़ा-चढ़ा है और वह इस स्थिति में है कि बड़े पैमाने के कामों से तात्कालिक लाभ उठा सके। बड़े-बड़े इलाके टी० वी० ए०-जैसी योजनाओं के लिए तैयार हैं ताकि सस्ती खाद और बिजली मिल सके, जमीन का बचाव किया जा सके और सबसे ज्यादा जल उपलब्ध हो सके। बहुत-सी ऐसी योजनाएं शुरू हो चुकी हैं या होने वाली हैं।

उदाहरण के लिए पूर्वी लंका में मारिसन-नुडसन नामक अमरीकन इंजीनियरिंग कम्पनी गाल ओया का बड़ा बाँध बना रही है, जिससे सिंचाई के लिए पानी मिल सकेगा, बाढ़ों को रोका जा सकेगा और बिजली पैदा की जा सकेगी। एक लंकावासी एक अमरीकन के मुकाबले में बिजली का सौवाँ हिस्सा काम में लाता है। गाल ओया का बाँध न सिर्फ १६५३ के अन्त तक १ लाख २० हजार एकड़ की सिंचाई करेगा बल्कि देश की विद्युत्-शक्ति २० प्रतिशत बढ़ा देगा।

स्याम के चौरस मैदानों में, जहाँ कि चावल पैदा होता है, चाओफ्या योजना के अन्तर्गत सिंचाई की १४ भिन्न योजनाएं ५० लाख एकड़ जमीन के दायरे पर काम कर रही हैं।

सबसे बड़ी योजना, जो तत्काल ही प्रारम्भ होने की सम्भावना रखती है, भारत में है, जिसके द्वारा भारत-सरकार न केवल अतिरिक्त १० प्रतिशत

भारत में अनाज की पैदावार बढ़ाने की इतनी गुञ्जाइश है कि कृषि-उत्पादन-विभाग के डाइरेक्टर बी० डी० आर० सेठी ने सन १९४५ में हिसाब लगाया था कि सिर्फ सिंचाई द्वारा पैदावार ५० या १०० प्रतिशत बढ़ाई जा सकती है जब कि अच्छी खाद से २० या ३० प्रतिशत और भी वृद्धि की जा सकती है। आज भी भारत की कुल उपजाऊ भूमि के २६ प्रतिशत भाग का उपयोग नहीं किया जा रहा है।

एशिया निवासियों की कृषि के आधुनिक साधनों से लाभ उठाने की इच्छा ऐसे स्कूलों के अनुभवों से निश्चित होती है जैसे कि इलाहाबाद की मिशनरी कृषि-संस्था। इस संस्था ने लोहे के चौड़े हल बनाए और फौरन ही हिन्दुस्तानी ऐसे हलों की माँग करने लगे। इसने गायों की नसलें मिलाकर दूध का उत्पादन एक तिहाई बढ़ा दिया और हिन्दुस्तानी अपनी गायों पर भी यही प्रयोग करने लगे।

लेकिन ये सीधी-सादी सस्ती योजनाएं सुदूर-पूर्व के अन्नोत्पादन के एक अंश को ही बढ़ा सकेंगी। प्रधानतः भूमि-सुधार होना चाहिए। खेत बड़े होने चाहिएं ताकि अच्छी खेती की जा सके। खाद में भी सुधार होना चाहिए; खाद ऐसे दामों की होनी चाहिए कि किसान आसानी से खरीद सकें। सिंचाई के लिए पानी भी ज्यादा होना चाहिए और बाद में मशीनों से खेती की जानी चाहिए। इन सब परिवर्तनों में बहुत समय लगेगा और बहुत रुपया भी।

दक्षिण-पूर्वी एशिया के एक किसान के पास जब कि केवल ५ एकड़ भूमि है संयुक्त राष्ट्र अमरीका के किसान के पास १४५ एकड़। कम्युनिस्टों का चीन में नारा था—भूमि-सुधार और कोआपरेटिवों द्वारा खेती करनी चाहिए। जितना जरूरी भूमि-सुधार है उतनी ही अच्छे खाद की भी जरूरत है।

चीन में १३ करोड़ ४० लाख एकड़ और भारत में १६ करोड़ ७० लाख एकड़ भूमि बरबाद हो चुकी है। चीन में जंगलों के नष्ट हो जाने से बड़ी-बड़ी बाढ़ आने लगी हैं। भारत में गोबर का खाद के रूप में प्रयोग

तीव्र गति की आवश्यकता इसलिए है कि औद्योगीकरण बढ़ती हु
आबादी से आगे रह सके। पश्चिमी यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति के ७
वर्ष बाद भी जन्म-संख्या मृत्यु-संख्या से अधिक थी। आबादी का इ
प्रकार बढ़ना एशिया के आर्थिक सुधार के लिए घातक होगा, जहाँ कि जनत
ठूँस-ठूँसकर पहले ही भरी हुई है।

अतः भारत के औद्योगीकरण की बम्बई-योजना के अन्तर्गत औद्योगी
करण के विकास को धीरे-धीरे बढ़ाने के बजाय औसत आमदनी १५ वर्ष
ही दुगुनी कर देने का विचार है।

यह स्पष्ट है कि एक कृषि-प्रधान देश को, जिस पर बढ़ती हुई आबाद
का भार है, यूरोप या संयुक्त राष्ट्र अमरीका से शीघ्र औद्योगीकरण
करने में बहुत-सी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। लेकिन आज
दक्षिण-पूर्वी एशिया को तीन विशेष सुविधाएं उपलब्ध हैं, जिनक
अस्तित्व पिछली शताब्दी में न था। आज उत्पादन के तरीके बहुत उन्नत
हैं; दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाया जा सकता है; बे-तरतीब कामों को
उठाने की बजाय आज व्यवस्थापूर्वक योजनाएं कार्यान्वित करना सम्भव है
और न केवल पूँजी और मशीनों के लिए बल्कि टेकनिकल शिक्षा औ
सहायता के लिए आज वैदेशिक सहयोग उपलब्ध है।

भारत में तो औद्योगीकरण की बुनियाद मौजूद ही है। भारत चाहे
कितना ही पिछड़ा क्यों न हो चीन से तो वह औद्योगिक दृष्टि से सौ साल
आगे बढ़ा हुआ है। यह अन्तर आप प्रति व्यक्ति की आय की उन्नति मे
देख सकेंगे : भारत में सन् १८६७-६८ में प्रति व्यक्ति की आय ४४'
रुपए थी, सन् १८९५ में यद्यपि भारत के प्रति व्यक्ति की आय संयुक्त राष्ट्र
अमरीका से पाँच गुनी कम थी फिर भी चीन से तिगुनी ज्यादा थी।

औद्योगीकरण की मूल आवश्यकता है विद्युत्-शक्ति; अतः सुदूर पूर्व

४४ लाख टन अनाज प्रतिवर्ष उत्पादित करने का प्रयत्न करेगी बल्कि २ करोड़ टन प्रतिवर्ष कर सकेगी।

भारत की योजना प्रायः अपनी सभी प्रमुख नदियों पर बाँध बनाने की है—अजीब सुन्दर नामों वाली नदियाँ; जैसे कि कोसी, तिस्ता, गोदावरी, तुंगभद्रा, धीरनगढ़; चम्बल, दामोदर, केनू, भाखरा, लरजो आदि। इन बाँधों से बाढ़ों को रोका जा सकेगा, भूमि-सुधारी जा सकेगी और ५० लाख एकड़ से ज्यादा जमीन की सिंचाई की जा सकेगी; भारत का विद्युत्-शक्ति-उत्पादन भी प्रतिवर्ष २६ अरब किलोवाट घंटे बढ़ जायगा-वर्तमान उत्पादन से चौगुना हो जायगा और इस प्रकार भारत संसार के सबसे बड़े औद्योगिक देशों की गिनती में आ जायगा।

लेकिन शायद मलाया, बर्मा, लंका, फ्रेंच, हिन्द चीन और थाईलैंड को आधुनिक कृषि के रास्ते पर लाने का समय न मिले, जब तक कि इस समय को प्राप्त करने के लिए हम स्वयं इन देशों और लाल चीन के बीच दीवार न खड़ी कर दें।

इस ध्येय को दृष्टि में रखते हुए अमरीका के कुछ प्रभावपूर्ण व्यक्तियों ने हमारी सहायता को भारत और पाकिस्तान में केन्द्रित करने की सलाह दी है। इन सलाहकारों का कहना है कि ये सरकारें काफी ताकतवर हैं और इन देशों में कम्युनिस्ट-आन्दोलन अभी कमजोर है। इसलिए जब कि आर्थिक सुधार चल रहे हों कम्युनिस्ट-आन्दोलन या आक्रमण को दूर ही रोका जा सकता है।

लेकिन अगर यह मान भी लिया जाय कि चीनी कम्युनिस्ट अभी काफी समय तक अपने देश में व्यस्त रहेंगे और इस बीच बाकी एशिया को सोंस लेने का मौका मिल सकेगा, तो भी भूमि-सुधार और खाद्य में वृद्धि ज्यादा समय के लिए एशिया के रहन-सहन का स्तर न उठा सकेंगे।

हमने यह देखा है कि जैसे-जैसे अनाज की पैदावार बढ़ती है उतनी ही आबादी भी बढ़ती है, जिससे जनता का दारिद्र्य कम नहीं होता बल्कि अधिक जनता को अधिक दारिद्र्य का मुकाबला करना पड़ता है जब तक कि

लेकिन बहुत जरूरी कामों के लिए, जैसे कि भारत में, व्यक्तिगत पूँजी से पूर्व सार्वजनिक पूँजी की आवश्यकता होगी। इस मदद की एवज़ में यह माँग पेश करना अनुचित नहीं है कि देशी, विदेशी और व्यक्तिगत पूँजियों के बीच अन्तर न रखा जाय, नहीं तो एशिया से स्वतन्त्र व्यापार के अवशेष सदा के लिए मिट जायंगे।

भारत ने डालरों की जरूरत महसूस करते हुए न सिर्फ व्यक्तिगत व्यापार पर लगाये हुए बन्धन ढीले कर दिये हैं बल्कि दस वर्ष की अवधि के लिए इसे सुरक्षित रखने की भी गारंटी दी है। इस अवधि के बाद यह पूँजी सुरक्षित रहेगी या नहीं यह कई अदृष्ट परिस्थितियों पर निर्भर करता है। "भारत में शांतिपूर्ण आर्थिक उन्नति की सम्भावना इस बात पर निर्भर करती है," एक परीक्षक का कथन है, "कि किसी हद तक देश के साधनों का विकास व्यक्तिगत पूँजी द्वारा किया जाना तय किया जाय और यह निर्णय जनता की आशाओं और उद्देश्यों से किसी हद तक मेल खाता है।"

अमरीकन पूँजी एशियायी व्यवसाय की सबसे बड़ी सेवा उसका पथ-निर्देशक, दार्शनिक और मित्र बनकर कर सकती है। अधिकांश अमरीकन व्यापारियों ने—कइयों ने तो मुश्किल से—यह सीखा है कि सबसे लाभप्रद व्यापार वही है जो अपने कर्मचारियों के साथ सबसे अच्छा बर्ताव और अपने ग्राहकों की सबसे ज्यादा सेवा करता है। इसमें सन्देह है कि रूढ़िवादी भारतीय उद्योगी इस सबक को सीख सके हैं।

जब पिछले वर्ष भारत को अपनी रेलें बढ़ाने के लिए व्यक्तिगत पूँजी उधार दी गई थी तो इस पूँजी ने न सिर्फ तात्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही की बल्कि औद्योगिक विकास को बढ़ावा भी दिया। 'न्यूयार्क टाइम्स' ने टिप्पणी करते हुए लिखा था, "एक जरूरी व्यावहारिक कार्य के लिए पूँजी उधार देने में 'विश्व-परोपकार' की कोई बात नहीं।...यह तो चतुर्थ-लक्ष्य काम कर रहा है।"

की जल द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति की सम्भावनाओं पर बहुत ज्यादा जोर दिया जा रहा है।

जल द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति की सम्भावनाओं का केवल ५ प्रतिशत भाग इस समय एशियायी महाद्वीप में काम में लाया जा रहा है। भारत और पाकिस्तान के ४० करोड़ से भी अधिक व्यक्ति एक वर्ष में जितनी बिजली काम में लाते हैं उतनी १५ करोड़ अमरीकन सिर्फ एक हफ्ते में खर्च कर देते हैं। ६० प्रतिशत जनता को बिजली उपलब्ध ही नहीं है। अमरीका का प्रति व्यक्ति एशिया के प्रति व्यक्ति से १८० गुनी ज्यादा बिजली खर्च करता है।

अतः बम्बई-योजना ने बिजली पैदा करने पर सबसे ज्यादा जोर दिया है।

बम्बई-योजना ने दूसरी जरूरी चीज समझी है उन्नत यातायात के साधन। जिस देश में यातायात बैलगाड़ी, खच्चर, हाथगाड़ी तथा मानव के कन्धों पर निर्भर है वहाँ अनाज घर में ही खाया जा सकता है। हो सकता है एक घाटी में अकाल पड़ रहा हो जब कि पहाड़ी के पार अनाज की बहुतायत हो। यातायात का जहाँ तक सम्बन्ध है भारत चीन से विशेष अच्छा नहीं है।

मिलें या कारखाने बनाने से पहले शिक्षा की एक भीषण लहर से देश को छा देना होगा; निरक्षर व्यक्ति योजनाओं के ब्यौरे को न पढ़ सकेंगे। मिलों और कारखानों के माल की माँग होनी चाहिए और लोगों के पास इतना रुपया भी होना चाहिए कि वे माल खरीद सकें।

अतः पिछड़ी हुई अर्थ-व्यवस्था और समाज के सुधार की किसी भी बम्बई-योजना-जितनी बड़ी पैमाने की योजना में सैकड़ों बातों का एक-साथ ख्याल रखना होगा—एक भी बात का बिगाड़ना घातक सिद्ध हो सकता है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के विकास की इतनी बड़ी योजनाएँ व्यक्तिगत कम्पनियों द्वारा नहीं चलाई जा सकतीं। हमारे देश में भी ऐसी योजनाएँ सरकार द्वारा या प्रादेशिक अधिकारियों के संरक्षण में चलाई जाती हैं। इन

है। उनके अनुसार अकेला आस्ट्रेलिया ही अमरीकन पूँजी के ५० करोड़ से ७५ करोड़ रुपए प्रतिवर्ष उपयोग कर सकेगा। इस प्रस्तावित योजना के दायरे में न केवल समूचा द्वीप-समूह होगा बल्कि भारत, पाकिस्तान और लंका भी होंगे।

पश्चिमी यूरोप और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सहायता से ऐसी योजना का बनाया जाना सम्भव है, लेकिन इस समय तो यह प्रतीत नहीं होता कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका इतनी बड़ी रकम सुदूर पूर्व में लगा सकेगा। अभी तो यूरोप को ही जीवित बनाए रखने में संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपनी पूरी शक्ति लगा रहा है।

इस द्वीप-समूह के पारस्परिक सम्बन्धित विकास की कुञ्जी जापान में होगी जो कि इस सुदूर पूर्वी कंठमाला का कुन्दा है और अभी जापान को लोकप्रिय बनने तथा अपने दक्षिणी पड़ोसियों का विश्वास-पात्र बनने में काफी समय लगेगा।

अगर यह मान भी लिया जाय कि इस द्वीप-समूह में पारस्परिक सहयोग सम्भव है और इस सहयोग को दक्षिण-पूर्वी एशिया के विकास में संलग्न कर दिया जाय तो भी समस्या के अन्तःकरण तक न पहुँचा जा सकेगा, क्योंकि इस समस्या का अन्तःकरण चीन में स्थित है। जब तक चीन में शान्ति स्थापित न होगी तब तक यह द्वीप-समूह सुरक्षित न हो सकेगा। इस द्वीप-समूह एवं एशिया के एकीकरण की संयुक्त राष्ट्र अमरीका द्वारा चालित अथवा निर्देशित किसी योजना का परिणाम होगा—संयुक्त राष्ट्र अमरीका का अविश्वास।

किन्तु इस ध्येय-पूर्ति का दूसरा साधन भी उपलब्ध है। यदि एशियायी राष्ट्र आपस में सैनिक, राजनीतिक तथा आर्थिक समझौता कर सकें तो चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र अमरीका अन्नोत्पादन की वृद्धि, औद्योगीकरण की सुविधाएं और लोगों का रहन-सहन का स्तर ऊँचा करने के लिए

चतुर्थ-लक्ष्य का सुदूर पूर्व में पहला जरूरी काम होगा यह दिखाना कि जमीन के बचाव के साथ-साथ पानी से बिजली पैदा की जानी चाहिए और बाद में औद्योगिक विकास किया जाना चाहिए—इस काम की योजना सन् १९५० के अन्त तक बनाई जा सकती है और काम अगले वर्ष आरम्भ किया जा सकता है।

मैं एक बार फिर दोहराता हूँ कि पश्चिम केवल योजनाएं शुरू कर सकता है, बाकी काम पिछड़े हुए इलाकों को खुद ही करना होगा।

हम एशिया को कम्युनिज्म से नहीं बचा सकते। लेकिन, हमारी मदद से, एशियावासी स्वयं अपने-आपको बचा सकते हैं।

: ६ :

एशिया एशियावासियों द्वारा ही बचाया जाना चाहिए :

(ख) द्वीप समुदाय तथा चीन

पूर्वी एशिया के कंठ पर द्वीपों की एक कंठमाला बनी है जिसके सुनहरे चमकते हुए मुक्ता रूपी द्वीप जापान से झूलते हुए फारमोसा, फिलीपाइन्स, संयुक्त राष्ट्र इण्डोनेशिया और न्यूगिनी होते हुए आस्ट्रेलिया के अर्द्ध-महाद्वीप और न्यूजीलैंड के लोलक पर समाप्त होते हैं।

इन सुदूर-स्थित द्वीप-समूहों के लिए विकास की योजनाएं बनाने की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि मुख्य स्थल भाग के लिए। संयुक्त राष्ट्र जनरल असेम्बली में सन् १९४९ में भाषण देते हुए फिलीपाइन्स के जनरल कारलोस पी० रोमुलो ने कहा, "सुदूर पूर्व के कृषि तथा उद्योग-सम्बन्धी कार्यों को सुधारना बहुत आवश्यक है...अमरीकन विशेषज्ञों द्वारा आवश्यक आर्थिक निरीक्षण करने तथा अमरीकन औद्योगिक प्रविधियों की सूचना देने की तात्कालिक आवश्यकता है।"

आस्ट्रेलियन अर्थशास्त्री डगलस बेरी कोपलैंड ने सुदूर पूर्वी विकास की

आस्ट्रेलिया का आय युद्ध-पूर्व से १६४७-४८ में दुगुनी से ज्यादा हो गई। प्रति व्यक्ति आय के हिसाब से आस्ट्रेलिया संसार के सबसे धनी देशों में से है। आस्ट्रेलियन कौशल का नमूना उस नए आविष्कार में प्रदर्शित होता है जिसके द्वारा शीघ्र ही रैमी पौधा रुई और नाइलोन का कपड़े के बाजार में प्रतियोगी हो जायगा। अमरीका में रैमी गैस की लालटेनों के काम में लाया जाता है; चीन में इसका प्रयोग कपड़ों के किनारी, फीते, बेल और मछली के जाल आदि बनाने में होता है। रैमी का धागा रेशम या रुई से आठ गुना ज्यादा और पटसन से तीन गुना ज्यादा मजबूत होता है। लेकिन धागे को पौधे से अलग करने में काफी मेहनत और खर्च पड़ता है।

सिडनी के एक व्यापारी मार्क एम० वाइज ने रैमी तैयार करने की एक आसान और सस्ती विधि निकाली है। रैमी से रेशम-जितना पतला कपड़ा भी बनाया जा सकता है और रस्से और किरमिच-जितनी मोटी चीजें भी—यह कपड़ों की दुनिया में क्रान्ति कर सकता है और आस्ट्रेलियन कोष में करोड़ों रुपए भी।

जिस आस्ट्रेलियन कौशल द्वारा रैमी का आविष्कार किया गया वही राष्ट्रीय विकास के बृहत् क्षेत्र में काम कर रहा है। उदाहरण के लिए दक्षिणी आस्ट्रेलिया के दक्षिणी पूर्वी भाग में ६००० वर्ग मील का एक लम्बा-चौड़ा रेगिस्तान है। इस रेगिस्तान में भेड़ें छोड़ देने पर साल-भर में ही मर जाती थीं। कुछ आस्ट्रेलियन नेताओं के सतत प्रयत्न से प्रति ५० एकड़ भूमि पर एक भेड़ जिन्दा रखना सम्भव हो सका है।

आखिर वहाँ की जमीन इतनी खराब क्यों थी? भेड़ें वहाँ क्यों न जिन्दा रह पाती थीं? आस्ट्रेलिया की वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसन्धान संस्था ने इसका कारण ढूँढने का दृढ़ निश्चय किया। वे जानते थे कि खून की कमी की एक पुरानी बीमारी से भेड़ें मर रही थीं; वे यह भी जानते थे कि यह बीमारी लीवर एक्सट्रैक्ट से ठीक की जा सकती है। लेकिन आप

टेक्नीकल सहायता दे सकेगा। यदि चीन के अतिरिक्त सभी युद्ध-पूर्व अपनी समस्याओं को शान्तिपूर्वक सुलझाने का आश्वासन दे सकेगा तो क्रमशः व्यक्तिगत अमरीकन पूँजी प्राप्त हो सकेगी। ऐसा एशियाई संघ, जो अपने विभिन्न अंगों का आर्थिक और सामाजिक सुधार शीघ्र करने में सफल होगा, अवश्य ही कम्युनिस्ट चीन पर प्रभाव डालेगा जो कि संसार के व्यापार में लाभ न उठा रहा होगा।

ऐसी योजना से संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अमूल्य सहायता प्राप्त हो सकेगी; लेकिन केवल एशिया-वासी ही एशिया को बचा सकेंगे।

अपने अनुभव के आधार पर मेरा अमरीकन व्यवसायी इथोपिया में अपनी पूँजी लगाने के बजाय, जहाँ कि अभी तक केवल दस लाख डालर लगे हैं कैनेडा में लगाना पसन्द करेगा; जहाँ इस समय तक साढ़े बीस अरब डालर अमरीका द्वारा लगाया जा चुका है। इसी मापदण्ड से अमरीकन व्यवसायी इण्डोनेशिया की अपेक्षा न्यूज़ीलैंड या आस्ट्रेलिया की प्रति व्यक्ति आय प्रायः अमरीका जितनी ही है जबकि इण्डोनेशिया की प्रति व्यक्ति आय सम्भवतः हमारी आय से बीस गुनी कम है।

न्यूज़ीलैंड-निवासी अपने को अमरीकनों से अच्छा समझते हैं। बेकारी वहाँ बिलकुल नहीं है, जिस कारण आर्थिक विकास की प्रगति सीमाबद्ध हुई प्रतीत होती है जब तक कि न्यूज़ीलैंड दूसरे देशों के लोगों को अपने यहाँ न बसाए। भूमि-रक्षा तथा जल एकत्रित करने की राष्ट्र-व्यापी योजनाओं द्वारा न्यूज़ीलैंड उस हानि की पूर्ति कर रहा है जिसने उत्तर-द्वीप की २० प्रतिशत भूमि और दक्षिण-द्वीप की ६५ लाख एकड़ भूमि को बरबाद कर दिया था। वह ५० करोड़ रुपए के खर्चे पर कागज़ की नई मिलें खोल रहा है। मांस तथा मक्खन आदि के निर्यात में २५ प्रतिशत वृद्धि करने की योजना भी चालू हो चुकी है।

न्यूज़ीलैंड के औद्योगिक विस्तार का चित्र आप जल द्वारा विद्युत्-शक्ति के उत्पादन की उसकी योजनाओं में पायेंगे। उत्तरी द्वीप पर केटावा, मारेराई और हाकामारु में बिजली के नए कारखाने खड़े हो रहे हैं।

जापानी पानी से बिजली पैदा करने वाले बाँधों से डरते हैं। जापान की नदियाँ भी छोटी हैं इसलिए ज्यादा बिजली भी नहीं पैदा हो सकती। अतः बिजली की सम्भावनाएं जापान में सीमित हैं।

एक वक्त था जब कि जापान के पास कोरिया और मंचूरिया के बीच यालू नदी पर दुनिया के सबसे बड़े बिजली के कारखानों में से एक था। लेकिन इण्डोनेशियन तेल और उत्तरी चीनी लोहे के समान यह कारखाना भी अब जापान के हाथ में नहीं है।

फिर भी अन्नोत्पादन में जापान युद्ध पूर्व की स्थिति प्राप्त कर चुका है। सन् १९४८-४९ में वह अपने चावल की पैदावार मे इस मुख्य खाद्य की अपनी ८० प्रतिशत आवश्यकता पूरी कर सका। भूमि-सुधार ने अच्छे बीज से ज्यादा जापान को लाभ पहुँचाया है। प्रायः जापान का शत-प्रति-शत चावल अच्छे धान से पैदा किया जाता है जब कि भारत में अच्छा धान केवल ५ प्रतिशत और चीन में १ प्रतिशत काम में लाया जाता है।

लेकिन मुख्य बात यह है कि जापान निर्यात पर निर्भर रहकर ही पनप सकता है। उसका सबसे पुराना, सबसे पहला और स्वाभाविक बाजार है चीन —वर्तमान लाल चीन।

और चीन, जो अब कम्युनिस्टों के हाथ में है, उसका क्या हाल है?

प्रथम महायुद्ध के पश्चात् चीनी जनतन्त्र के प्रतिष्ठापक डॉक्टर सन यात सेन ने चीन की शक्तियों को काम में लगाने की एक योजना बनाई। उन्होंने आधुनिक कृषि, यातायात और उद्योगों को आरम्भ करने का सुझाव पेश किया। उनके प्रस्तावों ने लोगों के दिमाग लड़खड़ा दिए। तीन बड़े और कई छोटे बन्दरगाह; यातायात के सब केन्द्रों पर आधुनिक नगर और आधुनिक सुविधाएं; बिजली, लोहा, इस्पात और सीमेण्ट के कारखाने; संख्या में पेड़ों का लगाया जाना, बड़ी नई नहरें, हजारों मील ता

करोड़ों भेड़ों को लगातार अधिक दिनों तक नहीं रख सकते। ब्रिटिश और अमरीकन वैज्ञानिकों ने आखिर इस समस्या का हल निकाला और अब इस प्रदेश में लाखों स्वस्थ भेड़ें चर रही हैं।

सिर्फ इतना ही नहीं हुआ—वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि प्रति एकड़ थोड़े-से जिंक और तांबे के चूर्ण का सुपर फास्फेट के साथ मिश्रण करके प्रयोग करने से रेगिस्तान को उपजाऊ बनाया जा सकता है। इस विधि द्वारा आस्ट्रेलियनों ने लड़ाई के बाद से २० लाख एकड़ जमीन को उपजाऊ बनाकर उस पर बस्तियाँ बसा डाली हैं। शीघ्र ही ८० लाख भेड़ें उस जमीन पर चरने लगेंगी जो कि अब तक रेगिस्तान पड़ा था—जिसका मतलब होगा प्रतिवर्ष १ करोड़ पौंड मांस उपलब्ध किया जा सकेगा।

लकड़ी दो प्रकार की होती है—मुलायम और सख्त। आस्ट्रेलिया प्रधानतः सख्त लकड़ी का देश है। आस्ट्रेलिया अपना फर्नीचर आदि बनाने के लिए अधिकांश मुलायम लकड़ी बाहर से मँगाता है; लेकिन डालरों के प्रतिबन्ध के कारण उसका संयुक्त राष्ट्र अमरीका और कैनेडा से लकड़ी मँगाना करीब करीब बन्द ही हो चुका है। अतः आस्ट्रेलिया मुलायम लकड़ी उगाने लगा। आज ढाई लाख एकड़ जमीन पर मुलायम लकड़ी उग रही है और इसकी तादाद दिन-पर-दिन बढ़ती ही जा रही है।

आस्ट्रेलिया का सबसे बड़ा सार्वजनिक कार्य स्नोई नदी पर हो रहा है जो कि आस्ट्रेलिया की विद्युत्-शक्ति दुगुनी कर देगा। दक्षिण-पूर्व से बहती हुई स्नोई नदी तसमान सागर में गिरती है। पिछले साल की एक योजना द्वारा सौ मील लम्बी सुरंगों से स्नोई का आधा पानी मर्रमबिजी और मरे नदियों में लाया जा सकेगा। इस योजना द्वारा १७ लाख २० हजार किलोवाट बिजली पैदा की जा सकेगी जिस पर २ अरब ५६ करोड़ और ३ अरब २० करोड़ रुपए के बीच खर्च आयगा। सिंचाई के लिए पहले-पहल पानी मिलने में आठ साल लगेंगे और सम्पूर्ण योजना पूरी होने में लगभग २५ वर्ष।

आस्ट्रेलिया और जापान के बीच के टापुओं पर औद्योगिक जीवन

बाँधों की योजना तैयार ६—४६ २९ ५ ५ ९ -
फ्रांस, जर्मनी, रूस और ब्रिटेन का संयुक्त उत्पादन था।

इन प्रस्तावित योजनाओं में सबसे बड़ी शंघाई से ६०० मील दू यांगत्सी नदी पर बाँध बनाने की है। यह अनोखी योजना १ करोड़ एक जमीन पर सिंचाई करना सम्भव बना देगी, उन बाढ़ों को रोकेगी जो सदि से इस इलाके को बरबाद करती रही हैं और यहाँ तक कि समुद्र पर चल वाले जहाज चुंगकिंग तक पहुँच सकेंगे। खनिज पदार्थों के उद्योग, सड़क पर बिजलियाँ और चीन के खेतों के लिए बड़ी मात्रा में खाद इस योजन द्वारा उपलब्ध हो सकेगी।

बड़े-बड़े अमरीकन इंजीनियरों के मतानुसार, जिनका नाम पिछले पृष्ठ पर आ चुका है, यांगत्सी-योजना इंजीनियर-कार्य-कौशल की चरम सीम होगी।

पिछली लड़ाई के दौरान में एलैक्स टाउब नामक अमरीकन इंजीनिय ने प्राथमिक विकास की एक योजना पेश की। अमरीकन कम्पनियों ने चीन में नये उद्योगों को चलाने पर आने वाले खर्च का ब्यौरा बताया। यह योजना सबसे पहले कोयले और इस्पात के उत्पादन से आरम्भ होने वाली थी। इसके बाद तेल के उत्पादन की बारी थी।

लेकिन औद्योगीकरण को सामाजिक शक्ति बनाना चाहिए जो सर्वसाधारण के हितार्थ काम में लाया जा सके। शंघाई औद्योगीकरण का अनुभव कर चुका है, उसका प्रभाव वैसा ही हुआ है जैसा कि आज से सौ बरस पहले अमरीकन या ब्रिटिश औद्योगीकरण हुए शहरों पर हुआ था। इस विषय पर मॉरिस कुक ने लिखा है :

"सस्ती मजदूरी के क्षेत्र में आधुनिक मशीनरी लाई गई है। सस्ते खर्च पर माल बनाया गया" लेकिन उसे बेचा विदेशी बाज़ार में ही गया ताकि विदेशों से माल खरीदने के लिए पूँजी प्राप्त की जा सके। शंघाई अपनी खाद्य रसद का अधिकांश भाग चीनी किसानों से नहीं खरीदता था, विदेशों

और टेलीफोन की लाइनें और रेडियो-स्टेशन—यह भी उनकी लहलहा देने वाली योजना।

अभी कुछ समय पहले तक चीनियों का विश्वास था कि अमरीकनों की मदद से वे सन यात सेन के उद्देश्यों की पूर्ति बीस वर्ष में कर सकेंगे। थियोडर एच० वाइट के अनुसार इस अवधि के बीच १ लाख मील लम्बी रेल की लाइनें बनाई जाने की आशा थी, जिनमें आधी दुतरफा लाइनें होनी थीं। जिन पर २५ हजार रेलवे एञ्जिन, ३ लाख मालगाड़ियाँ और ३० हजार सवारी-गाड़ियाँ चलाए जाने की आशा थी। पाँच लाख मोटरकार हर साल लाई जातीं, १० लाख मील सड़कें बनाई जातीं; २ करोड़ किलो-वाट शक्ति के बिजली के कारखाने बनाए जाते; ८ करोड़ नये टेलीफोन लगाए जाते; प्रतिवर्ष १० लाख नये मकान बनाए जाते। १ करोड़ टन के समुद्र पर जाने वाले जहाज होते। ३ लाख २० हजार रुई के, १६ हजार ऊन के और ६४ हजार रेशम के करघे बनाए जाने वाले थे।

लेकिन युद्ध के बाद की परिस्थितियाँ ऐसी नहीं रहीं जैसी कि योजना के निर्माताओं ने सोच रखी थीं। और अन्त में चीनी कम्युनिस्टों ने उस सहायता को नष्ट कर दिया जो कि चीन को सम्पूर्णतः औद्योगिक राष्ट्र बना देती—वह सहायता थी संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सहायता।

पिछले पचास वर्षों से अमरीकन चीनियों के विश्वसनीय मित्र रहे हैं। हमारी सदा यही इच्छा रही है कि चीन स्वतन्त्र रहे, उस पर किसी का भी अंकुश न हो। हमने इस सिद्धान्त के लिए कई बार संसार की दूसरी बड़ी ताकतों का सामना किया है। भविष्य में भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका चीनी स्वतन्त्रता और एकता को प्रोत्साहन देगा। यह अनुमान किया जा सकता है कि जैसे-जैसे चीन की जनता यह महसूस करेगी कि रूसी परोपकारिता का कितना भारी मूल्य अदा करना पड़ रहा है, वह हमारे गुणों की पुनः प्रशंसा करेगी।

अगर वह दिन फिर कभी आया कि जब संयुक्त राष्ट्र अमरीका द्वारा चीन को सहायता देना सम्भव हो तो उसके लिए योजनाएं तैयार हैं।

देशों पर लागू हो सकती है।

चीनी और अमरीकन विशेषज्ञों ने मिलकर चौपायों की तरह-तरह की बीमारियाँ दूर करने के इलाज निकाले हैं और उनका प्रयोग किसानों को सिखाया है। उन्होंने ग्रामीण स्वास्थ्य-केन्द्रों को मानवीय रोगों को दूर करने के इलाज भी सिखाए हैं।

संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कृषि-विभाग के डब्ल्यू० आर० लेडेजिन्स्की, ने जो कि एशियायी कृषि-समस्याओं के विशेषज्ञ हैं और जनरल मेकार्थर के मुख्य सलाहकार रह चुके हैं, संयुक्त कमीशन की कार्यवाहियों का निरीक्षण करके बताया कि करोड़ों किसानों का जीवन सुधारा जा चुका है। उन्होंने विश्वास दिलाया कि चीनियों की संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रति सद्भावना कम्युनिस्टों के अधीन रहकर भी दूर न होगी।

श्री लेडेजिन्स्की ने इस बात पर जोर दिया कि चीन में किया हुआ कार्य यह प्रदर्शित करता है कि चीन और भारत-जैसे इलाकों में टेकनिकल सहायता के साथ-साथ ही बुनियादी आर्थिक और सामाजिक सुधारों का करना ज़रूरी है ताकि किसान की रहन-सहन की स्थिति में क्रमशः सुधार होने की सम्भावना बनी रहे।

इस योजना ने चमत्कार तो नहीं दिखाया पर चीनी किसान के लिए यह सबक जरूर पेश किया कि अमरीकन सहायता और रूस से मिलने वाली सहायता में कितना अन्तर है ?

सिर्फ कम्युनिस्ट चीन को अलग रखने के उद्देश्य से बनाए हुए एशियायी संघ की संभवतः तात्कालिक आवश्यकता है, लेकिन केवल ऐसा संघ ही पर्याप्त न होगा। ऐसा संघ होना चाहिए जो स्वस्थ, साक्षर और स्वतन्त्र नर-नारियों का निर्माण करके आत्म-निर्भर एशिया की अर्थ-व्यवस्था कायम कर सके, जिसकी नींव पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सामाजिक औद्योगीकरण की योजनाएं बनाई जा सकें। ऐसा संघ, जिसको पश्चिम का

से मँगाता था। किसी हद तक चावल भी बाहर से ही मँगाया जाता था। इसके विपरीत चीनी किसान अपने और परिवारों की आवश्यकता से अधिक अनाज पैदा नहीं कर पाते थे। उनके पास अनाज की इतनी बचत न होती थी कि वे उसको बेच सकें या उसके बदले में और कुछ खरीद सकें। अतः उनकी क्रय-शक्ति लगातार कम ही बनी रही और वे शंघाई के कारखानों के बने हुए माल को खरीदने में असमर्थ रहे।

"अगर चीन में औद्योगीकरण इस प्रकार का होता है तो चीन की कृषि-जीवी जनता तथा २५ करोड़ से भी अधिक व्यक्तियों को कृषि पर निर्भर करने के सिवाय और कुछ न मिलेगा। जिसका अर्थ है कम क्रय-शक्ति जिसके फलस्वरूप चीन सामाजिक अव्यवस्था और क्रान्ति का क्षेत्र बन सकता है।"

जब सन् १६४६ में मॉरिस कुक ने उक्त पंक्तियाँ लिखी थीं उसे मालूम न था कि उसकी आशंका शीघ्र ही यथार्थ में परिणत हो जायगी।

चीन इस नियम का अपवाद नहीं है कि उन्नत कृषि, स्वास्थ्य और शिक्षा सुदृढ़ औद्योगीकरण की पहली सीढ़ी है।

गत महायुद्ध से पूर्व आधुनिक कृमि-हत्या का प्रयोग केवल धनी किसान ही करते थे, यद्यपि घर में बनाए हुए विषों का प्रयोग शताब्दियों से चला आ रहा है। लड़ाई के दौरान में जापानियों ने शंघाई के एक साबुन के कारखाने को गैस मास्क सम्बन्धी पदार्थ बनाने के काम में लाना शुरू कर दिया। लड़ाई के बाद एफ० ए० ओ० और यू० एन० आर० आर० ए० (उनरा) ने इस कारखाने में कृषि-हत्या सम्बन्धी औषधि बनाना शुरू किया। पेपिंग में एक दूसरा कारखाना भी खोला गया। कृषि-हत्या के इस नूतन साधन से सब्जियों का उत्पादन बढ़ाया जा सका।

गैर-कम्युनिस्ट चीन में ई० सी० ए० ने एक अति सफल ग्रामीण रचनात्मक योजना द्वारा नीतियों को कृषि, प्रौढ़-शिक्षा, स्वास्थ्य और स्थानीय शासन आदि के कार्यों की शिक्षा दी।

यद्यपि चतुर्थ-लक्ष्य निकट भविष्य में चीन में लागू नहीं किया जा

को स्वतन्त्र व्यक्तियों-जैसा वेतन और वर्ताव मिलना चाहिए; उन्हें रूस या चीन की तरह जबरदस्ती काम पर नहीं लगाया जा सकता। लेकिन अन्त में अच्छा वेतन पाने वाला स्वतन्त्र व्यक्ति एक गुलाम की अपेक्षा अधिक उत्पादन करेगा। और स्वतन्त्र एशिया अपनी जन-शक्ति के प्रकृत साधनों को पश्चिमी संसार की मशीनें, पूंजी, कौशल और लोकतन्त्रीय गतिशीलता का सहयोग दे सकेंगे, जिससे कि चीनियों ने जान-बूझकर अपने-आपको हटा दिया है।

यदि उन साधनों की गणना की जाय, जिनके सुव्यवस्थित उपयोग से मानवता का स्तर उठाया जा सकता है तो यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य, चाहे वह मशीन की जगह हाथों से ही काम करे, सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

: ७ :

स्वतन्त्र यूरोप—शरीर-रहित सिर

यूरोप में डालरों की कमी युद्ध के बाद से उस अशुभ ज्वालामुखी की तरह बनी रही है जो गड़गड़ाहट पूर्वक धुआँ फेंककर शान्त हो जाता है, और फिर गड़गड़ाने लगता है।

डालर की कमी का मतलब है कि यूरोप संयुक्त राष्ट्र अमरीका की तुलना में, फिलहाल एक पिछड़ा हुआ इलाका है। पिछली दो लड़ाइयों ने उसकी अन्तड़ियाँ खून से लथ-पथ करके चीर दी हैं, उसकी जवानी उजाड़ दी है, उसकी दौलत को टूटे-फूटे पत्थर का ढेर बना दिया है। उसके कारखाने पुराने और उपयोगहीन बन चुके, उसके बाजार टूट-फूटकर विलीन हो हो गए—इस पिछड़ जाने पर ताज्जुब नहीं होना चाहिए। यूरोप न तो अमरीका में और न संसार के दूसरे बाजारों में हमारी प्रतियोगिता कर

सहयोग या निर्देश न हो, एशिया को बना सकेगा।

सुदूर पूर्व के पुनर्निर्माण के लिए किया गया चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा कार्य तात्कालिक नाटकीय प्रभाव न दिखा सकेगा। न तो वह रातों-रात दारिद्र्य दूर कर सकता है और न सशरीर कम्युनिस्टों को रूस की सीमा तक खदेड़ सकता है।

जब कम्युनिस्ट शंघाई में घुसे तो शहर से बाहर एक मैदान में पड़े हुए उनरा के ३००० ट्रैक्टरों पर जंग लग रहा था। चतुर्थ-लक्ष्य इन ट्रैक्टरों का प्रयोग किसानों को सिखा देता। इस विनाशक कीटाणु को, जो चीन, फिलीपाइन्स, बर्मा, थाईलैंड और ईस्ट इंडीज में बहुत पाया जाता है, चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा मारा जा सकता है।

जब लड़ाई के बचे हुए माल में से एक सिंचाई के पम्प का प्रयोग पूर्वी बंगाल में दिखाया गया तो उसमें सौ-सौ मील दूर से किसान पहुँचे। ऐसी सीधी विधियों का प्रयोग चतुर्थ-लक्ष्य एशिया के हर स्वतन्त्र देश में दिखा सकता है। यातायात की कमी के कारण सुदूर पूर्वी बन्दरगाहों में पड़ा चावल सड़ रहा है। चतुर्थ-लक्ष्य अपने विशेषज्ञों और इञ्जीनियरों द्वारा नए जहाज बना और पुरानों की मरम्मत करने में मदद दे सकता है। सुदूर पूर्व की अर्थ-व्यवस्था को गति प्रदान करने में चतुर्थ-लक्ष्य ऐसे बीसों दूसरे काम और कर सकता है।

कुछ ऐसी जरूरी चीजें हैं जिन्हें शायद चीनी कम्युनिस्ट चीन की अर्थ-व्यवस्था को गतिशील बनाने के लिए करें। उदाहरण के लिए, वे लाखों को खेती से हटाकर सड़कें, बाँध और हवाई अड्डे बनाने के काम में लगा सकते हैं—हो सकता है कि चीन के कृषि-उत्पादन में कमी भी न हो अगर वे साथ ही कृषि की उन्नत विधियों का प्रयोग भी करें। इसलिए यह सोचना मूर्खता होगी कि कम्युनिस्ट शासन के अन्तर्गत चीन में कोई आर्थिक सुधार न होगा।

लेकिन अगर कम्युनिस्ट चीन में बड़े पैमाने पर काम न भी हो तो भी बाकी एशिया के लिए निराश नहीं होना चाहिए। अगर दूसरे देशों के

देशों के बीच व्यापार सुगमता से हो सके। ई० सी० ए० का उद्देश्य पश्चिमी यूरोप को २५ करोड़ व्यक्तियों के स्वतन्त्र व्यवसाय का बाजार बनाना है।

लेकिन यदि ई० सी० ए० अपने ऐतिहासिक कार्य में सफल भी हो तो भी वह संयुक्त राष्ट्र अमरीका की तुलना में पिछड़ा हुआ इलाका ही रहेगा। बड़ी कोशिश के बाद और अमरीका की मदद से यूरोप करीब-करीब सन् १९३८ के उत्पादन-स्तर तक पहुँच सका है। लेकिन इस बीच सन् १९३८ से अब तक अमरीका अपनी उत्पादन-शक्ति दुगुनी कर चुका है, जिसके परिणामस्वरूप यूरोप ने अपनी उत्पादन-शक्ति इतनी तो बढ़ा ली है कि उसे बाहरी बाजारों की जरूरत है पर अभी इतनी नहीं बढ़ी है कि वह इन बाज़ारों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका से प्रतियोगिता कर सके।

अनाज के आयात को कम करने के लिए यूरोप को अपनी प्राचीन जमींदारी-प्रथा को सुधार कर उतनी ही भूमि पर अधिक अनाज उपजाना होगा। पूर्वी और पश्चिमी गोलार्धों के बीच उत्पादन का लगातार संतुलन बनाए रखने के लिए यूरोप को अमरीकन औद्योगिक प्रविधियों को अपनाना होगा। उदाहरण के लिए, बिजली की कमी के कारण ब्रिटेन के कारखानों को काफी नुकसान होता है फिर भी १५ प्रतिशत विद्युत्-शक्ति की मरम्मत लगातार खराब रहने के कारण होती रहती है जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका में केवल २ प्रतिशत विद्युत्-शक्ति ऐसी है जो लगातार मरम्मत में रहती है। मरम्मत की सारी जरूरत सिर्फ इसीलिए नहीं होती कि मशीनें पुरानी पड़ गई हैं। यदि ब्रिटेन इस नुकसान को १५ प्रतिशत से ५ प्रतिशत भी कर दे तो उसे १३ लाख किलोवाट अधिक शक्ति मिल सकेगी—जिसे पैदा करने में एक वर्ष समय और २५ करोड़ पौंड लगेंगे। यूरोप के दूसरे देशों में इस प्रकार का नुकसान शायद १५ प्रतिशत के बजाय २५ प्रतिशत होता हो।

अतः यूरोप की समस्या मुख्यतः टेकनिकल समस्या है। इसीलिए ई०

सी० ए० के विशेषज्ञों के दल-के-दल उद्योग, यातायात, आँकड़े, शासन और कृषि-सम्बन्धी कार्यों की दक्षता बढ़ाने के लिए सारे यूरोप में काम कर रहे हैं।

इन कार्यों को करने में ई० सी० ए० चतुर्थ-लक्ष्य के सिद्धान्तों को प्रयोग में ला रहा है। नई निर्भीक योजना का उद्देश्य केवल पिछड़े हुए इलाकों की प्रगति करना नहीं है बल्कि जहाँ-जहाँ गलत तरीकों और कम पूँजी के कारण अर्थ-व्यवस्था रुकी हुई है वहाँ वहाँ उन्नत साधनों और व्यक्तिगत पूँजी की मदद से स्वस्थ अर्थ-व्यवस्था निर्माण करना है।

चतुर्थ-लक्ष्य को अपना पूरा असर दिखाने के लिए पहले यूरोप में दूरदर्शिता से किये गए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सुधार होने चाहिएं। उदाहरण के लिए नई निर्भीक योजना पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की खाई नहीं भर सकती, न वह पूर्वी यूरोप और पश्चिमी यूरोप के पारस्परिक विरोध को दूर कर सकती है। लेकिन फिर भी वह बहुत-कुछ कर सकती है :

१. कृषि-क्षेत्र में टेकनिकल सहायता प्रदान करके अन्नोत्पादन में वृद्धि और स्वास्थ्य-सुधार किया जा सकता है।

२. उद्योगों में पूँजी लगाकर तथा साथ ही टेकनिकल सहायता प्रदान करके उत्पादन-दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

३. स्थानीय विकास की योजनाओं को प्रोत्साहित करके घरेलू व्यय में वृद्धि की जा सकती है। सुव्यवस्थित बहुमुखी उन्नति द्वारा, उन्नत प्रदेश स्वयं अपने उत्पादित माल का प्रयोग कर सकेगा। उत्पादन और सामाजिक हित की वृद्धि साथ-साथ ही होती है।

४. टेकनिकल और इञ्जीनियरिंग कार्यों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग अप्रत्यक्ष रूप में एक संयुक्त पश्चिमी यूरोप की नींव डाल सकेगा और पुनः पूर्वी यूरोप के साथ यथाक्रम व्यापारिक सम्बन्ध कायम करना सम्भव हो सकेगा। लौह-आवरण के पीछे स्थित देशों के कच्चे माल और खाद्य-सामग्री के बिना पश्चिमी यूरोप शरीर-रहित सिर के समान है।

करने के नए साधनों को सीख रहे हैं—कोई भी देश यह दावा नहीं कर सकता कि वह इन नए साधनों में परिपक्व हो गया है। जितना ही देश औद्योगिक दृष्टि से बढ़ा-चढ़ा होगा उतनी ही उसकी नदियाँ गन्दगी से भरी होंगी। उदाहरण के लिए, यद्यपि ब्रिटेन ने कृषि में बहुत प्रगति की है फिर भी टेम्स नदी में इतनी गन्दगी है कि मॉरिस कुक के अनुसार "समुद्र के पक्षी तक अपने पंखों की गन्दगी के कारण मर जाते हैं, और मछलियाँ सम्पूर्णतया नष्ट हो जाती हैं...।"

हालाँकि ब्रिटेन के कई खेत संसार के सबसे अच्छे खेतों में हैं, हमारे खेतों से भी ज्यादा मशीनों द्वारा चालित हैं और हमारे-जितनी ही पैदावार भी करते हैं; लेकिन फिर भी दूसरे देशों पर निर्भरता करने के लिए ब्रिटेन अपनी अनाज की पैदावार को बढ़ा रहा है—युद्धकालीन उत्पादन को सन् १९५२ तक ५० प्रतिशत बढ़ा देने के लिए काम कर रहा है।

ईडनबर्ग के पास ही थोड़े-से आदमियों ने हाल ही में एक १२ एकड़ का खेत शुरू करके भविष्य का द्वार खोला है। इस खेत की जमीन को नलों द्वारा भाप और गरम पानी से सींचा जाता है। इस जादू-भरे खेत में साल में एक या दो फसलें नहीं बल्कि लेटस, फूल-गोभी, गाजर, शलजम और दूसरी सब्जियों की आठ फसलें मुनाफे के साथ की जाती हैं। स्कॉटलैंड में भी लड़ाई के बाद से वैज्ञानिक मानव-कृत सागर में बड़ी संख्या में मछलियाँ पैदा कर रहे हैं। इस तरीके से ब्रिटेन में मछली के खर्च को बढ़ाना सम्भव है।

यदि इन क्रान्तिकारी तरीकों से उन्नत देशों में खाद्य-उत्पादन बढ़ाना सम्भव है तो प्रचलित सिद्धान्तों द्वारा इटली और यूनाना-जैसे परिवर्तित होते हुए इलाकों में न केवल खाद्य का स्तर बल्कि स्वास्थ्य का स्तर भी ऊँचा उठाया जा सकता है।

सन् १९४८ में इटालियन संसद ने कृषि-विकास के साढ़े बासठ करोड़

सी० ए० के विशेषज्ञों के दल-के-दल उद्योग, यातायात, आँकड़े, शासन और कृषि-सम्बन्धी कार्यों की दक्षता बढ़ाने के लिए सारे यूरोप में काम कर रहे हैं।

इन कार्यों को करने में ई० सी० ए० चतुर्थ-लक्ष्य के सिद्धान्तों को प्रयोग में ला रहा है। नई निर्भीक योजना का उद्देश्य केवल पिछड़े हुए इलाकों की प्रगति करना नहीं है बल्कि जहाँ-जहाँ गलत तरीकों और कम पूँजी के कारण अर्थ-व्यवस्था दबी हुई है वहाँ वहाँ उन्नत साधनों और व्यक्तिगत पूँजी की मदद से स्वस्थ अर्थ-व्यवस्था निर्माण करना है।

चतुर्थ-लक्ष्य को अपना पूरा असर दिखाने के लिए पहले यूरोप में दूरदर्शिता से किये गए राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक सुधार होने चाहिएं। उदाहरण के लिए नई निर्भीक योजना पूर्वी जर्मनी और पश्चिमी जर्मनी के बीच की खाई नहीं भर सकती, न वह पूर्वी यूरोप और पश्चिमी यूरोप के पारस्परिक विरोध को दूर कर सकती है। लेकिन फिर भी वह बहुत-कुछ कर सकती है :

१. कृषि-क्षेत्र में टेकनिकल सहायता प्रदान करके अन्नोत्पादन में वृद्धि और स्वास्थ्य-सुधार किया जा सकता है।

२. उद्योगों में पूँजी लगाकर तथा साथ ही टेकनिकल सहायता प्रदान करके उत्पादन-दक्षता बढ़ाई जा सकती है।

३. स्थानीय विकास की योजनाओं को प्रोत्साहित करके घरेलू व्यय में वृद्धि की जा सकती है। सुव्यवस्थित बहुमुखी उन्नति द्वारा, उन्नत प्रदेश स्वयं अपने उत्पादित माल का प्रयोग कर सकेगा। उत्पादन और सामाजिक हित की वृद्धि साथ-साथ ही होती है।

४. टेकनिकल और इन्जीनियरिंग कार्यों में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग अप्रत्यक्ष रूप में एक संयुक्त पश्चिमी यूरोप की नींव डाल सकेगा और पुनः पूर्वी यूरोप के साथ यथाक्रम व्यापारिक सम्बन्ध कायम करना सम्भव हो सकेगा। लौह-आवरण के पीछे स्थित देशों के कच्चे माल और खाद्य-सामग्री के बिना पश्चिमी यूरोप शरीर-रहित सिर के समान है।

रुपए मंजूर किए। कृषि के आधुनिकीकरण के लिए ई० सी० ए० के विशेषज्ञ-मंडल इटालियन सरकारी अधिकारियों और व्यक्तिगत व्यवसायियों के साथ काम कर रहे हैं। जो जमीनें वरसों से काश्त होते रहने के कारण शक्तिहीन हो चुकी थीं, उन्हें फिर खाद द्वारा उपजाऊ बनाया जा रहा है; गेहूँ के साथ-साथ ही फल और सब्जियाँ भी उगाई जा रही हैं। इटली के लिए अखरोट के पेड़ बहुत महत्त्व रखते हैं— ये आदमियों के लिए खाना, चौपायों के लिए चारा, आग के लिए ईंधन और कुर्सियों के लिए लकड़ी पैदा करते हैं। थोड़े-से खर्च पर एफ० ए० ओ० ने अखरोट के इन पेड़ों को रोग-रहित बना दिया है।

अमरीका से भेजे हुए विभिन्न नस्लों के योग से पैदा हुए अनाज द्वारा इटालियनों ने एक इलाके में ३२ प्रतिशत, दूसरे में ५४ प्रतिशत और तीसरे में १२८ प्रतिशत पैदावार बढ़ा ली। ये प्रयोग इतने सफल रहे कि आस्ट्रिया, चेकोस्लोवेकिया, फ्रांस, यूनान, हंगरी, इटली, नीदरलैंड्स, नार्वे, पोलैंड, पुर्तगाल, इंगलैंड, युगोस्लाविया—सारे यूरोप में छा गए।

इटली उन थोड़े-से यूरोपीय देशों में है जो अपनी डालरों की कमी शीघ्र ही पूरी करता नजर आता है; उसके लिए ऐसा करना निर्यात में वृद्धि करके ही सम्भव है न कि आयात में कमी करके। इटालियन शराबों, मेवों, सूत और ऊनी कपड़ों ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के बाजारों में अपना स्थान बना लिया है।

चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत कृषि-सम्बन्धी टेकनिकल सहायता निश्चय ही आर्थिक तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर न कर सकेगी। यूरोप में, और इसी तरह एशिया में, सुदृढ़ अर्थ-व्यवस्था और गैर-तानाशाही कायम रखने की असली कुन्जी है भूमि-सुधार। जमींदारी-प्रथा की कुरीतियाँ कम्युनिस्टों को बढ़ने का मौका देती हैं। कुछ लोगों का मत है कि भूमि-सुधार की कमी ही रूस में सन् १९१७ की क्रान्ति में बोलशेविकों की सफलता के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार थी। इटली का भविष्य भी इस बात पर निर्भर करता है कि किस शीघ्रता से द गास्पेरी सरकार किसानों को ३ करोड़ ७५

यूनान का पुनर्निर्माण पानी से पैदा की जाने वाली बिजली के विकास की योजना पर आधारित होना चाहिए। ऐसी योजना द्वारा, एफ० ए० ओ० का कहना है कि रोजगार बढ़ेगा, बिजली मिलेगी और खेतों की पैदावार बढ़ेगी। पहले तीन वर्षों में लगभग साढ़े ३१ करोड़ रुपया खर्च होगा। योजना को पूरा करने में १ अरब ८० करोड़ ५० लाख रुपए और पच्चीस वर्ष से भी अधिक समय लगेगा।

चतुर्थ-लक्ष्य स्वयं एफ० ए० ओ० की प्रस्तावित योजना के लिए पूँजी देने की स्थिति में नहीं है। लेकिन यह कैसे माना जा सकता है कि यह देश, जिसने अरबों रुपए यह युद्ध की समाप्ति पर खर्च किए—जो कि यूनानी रोग का लक्षण था अब वह स्वयं रोग को दूर करने के प्रयत्न में करोड़ों रुपए खर्च करने में हिचकेगा।

उद्योग में पूँजी लगाने के साथ ही टैकनिकल सहायता

यूरोपीय देशों में औद्योगिक दृष्टि से सबसे निपुण देश ब्रिटेन ने उन्नत साधनों के प्रयोग से अपना इस्पात का उत्पादन ५० से १०० प्रतिशत तक बढ़ा लिया है। ब्रिटेन की कोयला-बचाव समिति का कहना है कि अगर सावधानी से बिजली का प्रयोग किया जाय तो प्रतिवर्ष साढ़े पाँच करोड़ टन कोयला बचाया जा सकता है।

अमरीकनों के दृष्टिकोण से सारे यूरोप के कारखाने बहुत ही उज्ज्वल तरीके से चलाए जा रहे हैं, इन कारखानों में कार्य-दक्षता बेहद कम है। इसका कारण यह नहीं कि मशीनें खराब हैं या कार्य-कौशल की कमी है, बल्कि एक तो बाजार सिकुड़कर छोटे हो चुके हैं और दूसरे माल कम बनाने और कीमतें ज्यादा रखने की पुरानी आदत चली आ रही है। माल बनाने पर कम खर्च करने की कठिनता फ्रांस की इस्पात-मिलों के उदाहरण से चित्रित होती है। गत वर्ष 'न्यूयार्क टाइम्स' में माइकल एल० हॉफमैन ने इस विषय पर लिखते हुए बताया :

"अर्थ-शास्त्रियों ने हिसाब लगाया कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका में लोहे की चादरें बनाने वाली मिलों के शुरू होने से पहले लोहे की ईंटों और

वर्ष और कीमतों का पारस्परिक सम्बन्ध ११६ : १०० २
बनाने पर कम खर्च का लाभ इस उद्योग ने माल को काम में लाने वालों को दिया; और एक इस्पात-विशेषज्ञ ने बताया कि लोहे की चादरों का उत्पादन संयुक्त राष्ट्र अमरीका में इसी काल में ३०० प्रतिशत बढ़ गया।

"यह सर्वसम्मत बात है कि यूरोप को अपने इस्पात की कीमतें कम करनी चाहिए ताकि इस्पात काम में लाने वाली मिलों का सब माल सस्ता हो और वह पहले की तरह ८० प्रतिशत इस्पात का निर्यात कर सके... लेकिन पहले से ही यह लक्षण दिखाई दे रहे हैं कि फ्रांस में लोहे की चादरें बनाने वाली मिलों के शुरू होने पर यह कोशिश की जायगी कि कीमतों को उस स्तर पर रखा जा सके जहाँ कि पुरानी मशीनों से काम करने वाली छोटी मिलें मुनाफा उठा सकें।

"अगर ऐसा हुआ तो फ्रांस के औद्योगीकरण पर खर्च की हुई बड़ी रकम व्यर्थ हो जायगी, चूँकि इस्पात-मिलों को आधुनिकीकरण होने से पूर्व जितना मंहगा माल मिलेगा और माल की खपत भी न बढ़ेगी।"

अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिबन्धों द्वारा यूरोपीय कार्य-दक्षता को घटाने की सैंकड़ों दूसरी मिसालें भी हैं। उन्नत उत्पादन-दक्षता का अपना अलग प्रभाव है। चतुर्थ-लक्ष्य के सिद्धान्तों पर ई० सी० ए० यूरोपीय उद्योग को टेकनिकल सहायता दे रहा है। सन् १९४९ में यूरोपीय देशों के विशेषज्ञों के दर्जनों दल हमारे कृषि और उद्योग की विधियों का अध्ययन करने आये। सिर्फ ब्रिटेन के विशेषज्ञों ने ही ५० निरीक्षण करने के लिए दौरे किये।

जिस परिमाण में यूरोपीय उद्योग अमरीकन डॉलरों को अपने यहाँ आमंत्रित करेंगे उसी परिमाण में माल बनाने पर कम खर्च आयगा, कीमतें कम होंगी और बाजार बढ़ेंगे। यूरोप में और उसी तरह पूरी तरह पिछड़े हुए देशों में अमरीकन डॉलरों का भय कम और उन्हें प्राप्त करने की इच्छा अधिक है। यह अभी देखना बाकी है कि दोनों ओर के प्रलोभन और

आश्वासन द्वारा किस मात्रा में अमरीकन डॉलर यूरोपीय उद्योगों में लगाए जा सकेंगे।

स्थानीय विकास की योजनाएं

किसी भी पिछड़े इलाके को अपने पैरों पर खड़ा करने के लिए कृषि और उद्योग के आधुनिकीकरण को सहायता देना आवश्यक है। पृथक् कार्यों को एक संयुक्त विकास-योजना के अन्तर्गत सम्मिलित करना प्रायः संभव है जैसा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने टेनेसी वैली ऑथेरिटी में किया गया है। कभी-कभी इन पृथक् कार्यों का मुख्य उद्देश्य जल द्वारा विद्युत्-शक्ति उत्पादित करना होता है जैसा कि स्केण्डिनेवियन देशों में इस समय हो रहा है या नीदरलैंड्स की तरह भूमि को पुनः उपजाऊ बनाना हो सकता है या फ्रांस की मोनेट योजना की तरह विभिन्न उद्देश्यों की एक सगठित योजना द्वारा पूर्ति की जाती है।

बहुत वर्षों पहले फ्रांस ने अपनी २५ लाख एकड़ दलदली भूमि को साफ करके और ५ लाख एकड़ रेतीली भूमि में जंगल उगाकर अपने लाखों नागरिकों को लाभान्वित किया; चूँकि फ्रांस को लाभ हुआ अतः समूचे महाद्वीप को लाभ पहुँचा।

इससे भी बड़ा कार्य, जिससे कि स्कूल जाने वाला हरेक अमरीकन बच्चा परिचित है, हालैंड की जूडेरजी-योजना है, जिसने कि सामुद्रिक लवण के स्थान में हरे-भरे खेत खड़े कर दिए। हालैंड की २५ प्रतिशत भूमि समुद्र की सतह से नीचे है; ४० प्रतिशत भूमि को हमेशा बाढ़ों का डर बना रहता है और सारी भूमि शनैः-शनैः धँसती जा रही है। यहाँ तक १२०० ईस्वी में ही हालैंड-निवासियों ने जूडरेजी की भूमि को खेती के लायक बनाना शुरू कर दिया था। सन् १६३० के अन्त तक ४६ हजार एकड़ भूमि समुद्र से बचाई गई। अन्य दो समान योजनाओं द्वारा साढ़े पाँच लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि खेती के लायक बनाई जा सकेगी, जिसके फलस्वरूप १० प्रतिशत खेती की जमीन बढ़ जायगी।

हालैंड के कार्यों-जितना ही पेचीदा कार्य स्काटलैंड के उत्तर में हो रहा

परिमाण के २६ कार्य आरम्भ किये जाय। इन कार्यों द्वारा स्काट० विद्युत्-शक्ति ८ लाख ११ हजार किलोवाट बढ़ जायगी और इस प्रकार वार्षिक उत्पादन में ६० प्रतिशत वृद्धि होगी। चूँकि स्काटलैंड की जल द्वारा उत्पादित शक्ति इंगलैंड की वाष्प द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति से सस्ती पड़ेगी इसलिए इस बिजली का अधिकांश भाग इंगलैंड को मिलेगा और उसकी एवज़ में स्काटलैंड इंगलैंड से धन प्राप्त करेगा। इससे सुदूर स्थित गाँवों और खेतों को भी बिजली पहुँचाई जा सकेगी; और ऐसे इलाके जो केवल एक ही उद्योग पर निर्भर करते थे जैसे कि पानी के जहाज़ बनाना—अब रेफ्रीजरेटर, एलूमिनियम के बर्तन, रेडियो, घड़ियाँ, वैज्ञानिक यंत्र, फर्नीचर आदि विभिन्न सामग्रियाँ बनाना शुरू करेंगे।

फ्रांस की मोनेट-योजना फ्रांस की अर्थ-व्यवस्था के छः आवश्यक अंगों को प्रभावित करेगी—जैसे कि ईंधन, बिजली, इस्पात, सीमेण्ट, कृषि की मशीनें और यातायात।

इस योजना द्वारा मार्सेल और पेरिस को नहरों और नदियों द्वारा सम्बन्धित किया जा सकेगा। फ्रांस की कुल विद्युत्-शक्ति दुगुनी हो जायगी। फ्रांस के किसानों और खेतों को अच्छी मशीनरी प्राप्त हो सकेगी।

यूरोपीय विकास के लिए उत्तर-पश्चिमी स्विट्ज़रलैंड की आर घाटी नमूना है। १९वीं शताब्दी में इस घाटी के रहने वाले बहुत पिछड़े हुए थे; यहाँ भेड़िये और जंगली सूअर पहाड़ों में घूमा करते थे। मौरिस कुक ने बताया कि "राथ्रिस्ट कस्बे के रहने वाले गरीब लोगों ने पहाड़ों के पेड़ों को काटकर लकड़ी बेचकर अपने लिए संयुक्त राष्ट्र अमरीका पहुँचने का किराया अदा किया। इसके थोड़े दिनों बाद ही इस गाँव का और आर घाटी का औद्योगिक विकास शुरू हुआ और जब कि वे ३०० राथ्रिस्ट निवासी अमरीका में नये अवसरों की तलाश कर रहे थे और गंदी औद्योगिक बस्तियों में बस रहे थे, आर घाटी शनैः-शनैः सावधानी से किये हुए विकास-कार्यों द्वारा सामाजिक और आर्थिक समृद्धि का इलाका बनाया जा रहा था।

और घाटी का विकास जल द्वारा बिजली पैदा करके संभव हो सका है। "हालांकि इस प्रदेश का बहुत औद्योगीकरण हो चुका है," मारिस कुक का कथन है, "फिर भी देखने में यह ऐसा मालूम होता है जैसा कि एक साफ-सुथरा बगीचा। इसके कारखाने, मकान और खेत सब समृद्धि के सूचक हैं।"

अमरीकनों का बिजली का प्रति व्यक्ति व्यय संसार के सब देशों से अधिक नहीं है। उनके बराबर ही उनसे अधिक नार्वे, स्विट्ज़रलैंड और स्वीडन के लोग बिजली खर्च करते हैं, जिनके देशों में बहती नदियों और गरजते झरनों की भरमार है।

स्वीडन में तेल या प्राकृतिक गैस नहीं मिलती, वहाँ तो केवल बहती नदियाँ हैं। स्वीडन अपनी नदियों से ६० प्रतिशत से अधिक बिजली प्राप्त करता है जो कि अमरीका की १६१० किलोवाट प्रति व्यक्ति की तुलना में २०६० किलोवाट-घंटे प्रति व्यक्ति है। लेकिन फिर भी वह संतुष्ट नहीं है। उसकी नई योजनाओं द्वारा उसकी नदियाँ ५० अरब किलोवाट-घंटे बिजली पैदा करेंगी।

यद्यपि स्वीडन के ६२ प्रतिशत घरों और ८५ प्रतिशत ग्रामीण घरों में बिजली है फिर भी बिजली के चूल्हे और हीटर-जैसी सुविधाएं अभी सब क्षेत्रों में नहीं हैं। इस नई योजना द्वारा बिजली का पूरा फायदा उठा जायगा और विभिन्न प्रकार के उद्योग खोले जायगे।

स्वीडन में डॉलरों की कमी है लेकिन उसे इस बात की चिन्ता नहीं। स्वीडन का कहना है कि डॉलरों से कहीं अच्छी विद्युत्-शक्ति है।

अधिकाधिक मात्रा में विद्युत्-शक्ति प्राप्त करने की उत्कट इच्छा में फिनलैंड पीछे नहीं है। गत महायुद्ध के बाद फिनलैंड को अपनी २५ प्रतिशत जल द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति सोवियत रूस को देनी पड़ी जिसके फलस्वरूप उसे बिजली की कमी के कारण बहुत नुकसान उठाना पड़ा; अनावृष्टि के कारण स्थिति और भी विषम हो गई जब कि मुख्य नदियाँ, जिनसे ६० प्रतिशत बिजली मिलती थी, सूखकर आधी रह गईं।

[illegible]
भाग स्वीकार कर लिया।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग

विकास कार्यों की सफलता के लिए राष्ट्रीय सीमाओं का उल्लंघन किया जा सकता है। इतिहास और धर्म की भिन्नता के कारण इंग्लैंड और आयरलैंड में पारस्परिक कटु विरोध होते हुए भी दोनों देशों की विवेक-बुद्धि और अहिंसात्मक राजनीतिक सहयोग द्वारा आयरलैंड में शैनान नदी से बिजली पैदा की गई जिसके फलस्वरूप अधिकांश आयरलैंड को बिजली प्राप्त हुई।

यूरोपीय महाद्वीप पर भी पारस्परिक संघर्ष बनाए रखने वाले राष्ट्रों को स्थानीय विकास के कार्य यह आवश्यक सीख दे सकते हैं कि सबके लिए सुविधाजनक वातावरण बनाने के लिए संयुक्त रूप से काम करने में लाभ है।

प्रस्तावित राइन-डेन्यूब नहर फ्रांस, जर्मनी, बेलजियम, हालैंड और लक्जमबर्ग के ७६ हजार वर्ग मील में रहने वाले साढ़े चार करोड़ व्यक्तियों के जीवन पर प्रभाव डालेगी; पारस्परिक व्यावसायिक बन्धनों को कम करने में यह नहर सहायक हो सकती है; भौगोलिक राजनीतिक दृष्टि से अभिन्न देशों का आपसी विरोध भी इसी नहर द्वारा दूर किया जा सकना सम्भव है। यही नहीं, यह नहर पश्चिमी और मध्य यूरोप को मिलाकर शायद किसी दिन लौह आवरण को ही विलीन कर दे।

पश्चिम और पूर्व, आजादी और गुलामी के बीच के इस नये सम्बन्ध के महत्व का मूल्यांकन करना कठिन है। बीस विभिन्न भाषा-भाषी देशों का आर्थिक संयोग एक लम्बी और कष्टसाध्य विधि है। इस विधि के पूरे होने से पूर्व यूरोप को अपने माल के लिए बाजार भी चाहिए।

पश्चिमी यूरोप के लिए हमेशा से यह बाजार मध्य और पूर्वी यूरोपीय देशों में रहा है, जिसका अधिकांश भाग इस समय सोवियत रूस के अधीन है। हथियारों बिना चलने वाली आज की लड़ाई के हम इतने आदी हो

गए हैं कि पश्चिम और पूर्व के पारस्परिक स्वाभाविक संयोग को भूल बैठे हैं। लेकिन पूर्वी यूरोप के पास अनाज, खनिज पदार्थ और कच्चे माल की बहुतायत है जिसकी पश्चिमी यूरोप को ज़रूरत है और पश्चिमी यूरोप के पास औद्योगिक कौशल और मशीनें हैं जिनकी पूर्वी यूरोप में कमी है।

पश्चिम सिर है, पूर्व शरीर है। दोनों मिलकर इकाई बनाते हैं। अलग-अलग, चाहे सिर में मस्तिष्क बना रहे और शरीर में मांसल शक्ति, किन्तु कोई भी उनका उपयोग नहीं कर सकती, दोनों मृतप्राय हैं।

अतः पश्चिम के आर्थिक सयोग के अतिरिक्त यूरोप को कभी-न-कभी लौह आवरण के पीछे स्थित देशों से व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ना ही होगा।

: ८ :

परतन्त्र यूरोप—सिर-रहित शरीर

डेन्यूब जलाशय के ३ लाख ८० हजार वर्गमील के सारे प्रदेश में सात करोड़ व्यक्ति आज परतन्त्रता के वातावरण में पल रहे हैं। यूरोप की मानव-द्वारा निर्मित राष्ट्रीय सीमाओं का सबसे बड़ा प्राकृतिक विरोध डेन्यूब नदी प्रस्तुत करती है। आज भी रूस द्वारा अपने अधीन देशों और बाकी संसार के बीच बनाई हुई दीवार को भेदती हुई डेन्यूब नदी समुद्र तक पहुँचती है।

एक हजार वर्ष पहले भी डेन्यूब के विकास का विचार यूरोप के शासकों को आकर्षित करता था। डेन्यूब पर किये हुए विकास के संयुक्त कार्य सारे इलाके को संसार के सबसे समृद्धिशील प्रदेशों में से बना सकते हैं इससे न केवल यातायात की सुविधाएं बढ़ेंगी बल्कि कृषि-उत्पादन में भी वृद्धि होगी और शिक्षा और समाज का स्तर ऊँचा उठाया जा सकेगा। कोयला, तेल, सीसा, जस्ता, बॉक्साइट, क्रोमाइट आदि बहुतायत से पाये जाने वाले खनिज पदार्थों के आधार पर नये उद्योग खोले जा सकेंगे।

कम्युनिज्म हो या पूँजीवाद, पूर्वी यूरोप बड़े पैमाने पर सहयोग किये

बिना नहीं पनप सकता। अपना भाग्य-
पश्चिमी यूरोप से मिलना ही होगा।

पूर्वी यूरोप, जिसमें रूस भी शामिल है, शायद ही कभी पश्चिमी यूरोप के उत्पादन और समृद्धि के स्तर तक पहुँच सके; संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ तुलना करना तो व्यर्थ ही है, लेकिन यह सम्भव हो सकता है यदि लौह आवरण को तोड़कर पश्चिमी और पूर्वी संसार के बीच पुल बाँध दिया जाय।

संसार-भर के कम्युनिस्ट कम्युनिज्म की दुहाई देते वक्त यह कहते हैं कि स्टालिन के नेतृत्व में सोवियट-संघ का उत्पादन बढ़ गया है। किन्तु वास्तव में प्रति व्यक्ति १६०० के स्तर से ऊँचा नहीं उठा है जब कि अमरीकन मजदूर का प्रति व्यक्ति उत्पादन १६०० से तिगुना बढ़ गया है। प्रति घंटे के हिसाब से एक अमरीकन मजदूर रूसी मजदूर के मुकाबले में साढ़े आठ गुना ज्यादा उत्पादन करता है।

जब तक कि सोवियट संघ लौह आवरण की मनोवृत्ति बनाए रखेगा तब तक इसमें सन्देह है कि उक्त परिमाण में विशेष अन्तर हो सकेगा। कोयला, लोहा और जल-शक्ति के उपयोग में पश्चिम का अनुकरण करके भी सोवियट संघ उक्त परिमाण में अन्तर न कर सका और न अब वह अणु-शक्ति के प्रयोग के अनुकरण से इस परिमाण को अपने हक में बदल सकेगा। बतीस वर्ष के सतत प्रयत्न के बाद भी आज रूस के पास न तो वह टेकनिकल कौशल है और न वह औद्योगिक नींव है जिसके आधार पर शान्तिकाल में वह संसार के बाजारों को सफलतापूर्वक जीत सके और न लम्बे युद्ध में ही वह संसार को जीत सकता है। यह सच है कि बहुत-सी परिस्थितियाँ इसके का[bू] के बाहर हैं। क्रान्तिकारी अव्यवस्था, वैदेशिक हस्तक्षेप, अकाल, जर्मन आक्रमण—सबने मिलकर उसकी प्रगति में रोड़ा अटकाया है। लेकि[न] असली बात तो यह है कि वह लगातार पिछड़ता जा रहा है।

अगर रूस ही संसार का औद्योगीकरण करने में पिछड़ रहा है तो उस[के] अधीन देशों से क्या आशा की जा सकती है?

गए हैं कि पश्चिम और पूर्व के पारस्परिक स्वाभाविक संयोग को भूल बैठे हैं। लेकिन पूर्वी यूरोप के पास अनाज, खनिज पदार्थ और कच्चे माल की बहुतायत है जिसकी पश्चिमी यूरोप को ज़रूरत है और पश्चिमी यूरोप के पास औद्योगिक कौशल और मशीनें हैं जिनकी पूर्वी यूरोप में कमी है।

पश्चिम सिर है, पूर्व शरीर है। दोनों मिलकर इकाई बनाते हैं। अलग-अलग, चाहे सिर में मस्तिष्क बना रहे और शरीर में मानव शक्ति, किन्तु कोई भी उनका उपयोग नहीं कर सकती, दोनों मृतप्राय हैं।

अतः पश्चिम के आर्थिक संयोग के अतिरिक्त यूरोप को कभी-न-कभी लौह आवरण के पीछे स्थित देशों से व्यापारिक सम्बन्ध जोड़ना ही होगा।

: ८ :

परतन्त्र यूरोप—सिर-रहित शरीर

डेन्यूब जलाशय के ३ लाख ८० हजार वर्गमील के सारे प्रदेश में सात करोड़ व्यक्ति आज परतन्त्रता के वातावरण में पल रहे हैं। यूरोप की मानव-द्वारा निर्मित राष्ट्रीय सीमाओं का सबसे बड़ा प्राकृतिक विरोध डेन्यूब नदी प्रस्तुत करती है। आज भी रूस द्वारा अपने अधीन देशों और बाकी संसार के बीच बनाई हुई दीवार को भेदती हुई डेन्यूब नदी समुद्र तक पहुँचती है।

एक हजार वर्ष पहले भी डेन्यूब के विकास का विचार यूरोप के शासकों को आकर्षित करता था। डेन्यूब पर किये हुए विकास के संयुक्त कार्य सारे इलाके को संसार के सबसे समृद्धिशील प्रदेशों में से बना सकते हैं इससे न केवल यातायात की सुविधाएं बढ़ेंगी बल्कि कृषि-उत्पादन में भी वृद्धि होगी और शिक्षा और समाज का स्तर ऊँचा उठाया जा सकेगा। कोयला, तेल, सीसा, जस्ता, ऑक्साइड, क्रोमाइट आदि बहुतायत में पाये जाने वाले खनिज पदार्थों के आधार पर नये उद्योग खोले जा सकेंगे।

कम्युनिज्म हो या पूँजीवाद, पूर्वी यूरोप बड़े पैमाने पर सहयोग किये

पृष्ठभूमि चाहिए, ऐसी मशीनें जो दूसरी मशीनें बना सकें, यह बातें पूर्व में उपलब्ध नहीं, पश्चिम में हैं।

पूर्वी शरीर के लिए पश्चिमी सिर की आवश्यकता सार्वजनिक दृष्टि में तब आई जब कि जैकोस्लोवाकिया और पोलैंड ने खुल्लम-खुल्ला मार्शल-योजना के अन्तर्गत सहायता की माँग की। केवल रूस के कारण ही यह देश मार्शल-योजना में भाग न ले सके। यह आवश्यकता एक बार फिर प्रदर्शित हुई जब कि इन देशों ने अपनी सस्ती विद्युत्-शक्ति पश्चिमी यूरोप में बेचनी चाही। यद्यपि इन देशों को नई विद्युत्-शक्ति की आवश्यकता विशेष नहीं है, किन्तु इनको पश्चिम की मशीनों की आवश्यकता बनी हुई है। वे अपनी बिजली के बदले, जो कि बेवेरिया और राइनलैंड के बीच से पाइपों द्वारा भेजी जायगी, मशीनरी प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं।

इससे भी अधिक, पूर्व को पश्चिम की आवश्यकता मार्शल-टीटो और सोवियट-संघ के पारस्परिक नाटकीय सम्बन्ध-विच्छेद द्वारा प्रबल रूप में प्रदर्शित होती है। मार्शल टीटो और रूस के संघर्ष का आर्थिक पहलू यह है कि युगोस्लाविया अपने देश का औद्योगीकरण करना चाहता था जब कि रूस उसे केवल कच्चे माल का स्रोत बनाए रखना चाहता था। यदि रूस इसके विपरीत चाहता तो भी उसके पास अपने पड़ोसी का औद्योगीकरण करने के साधन नहीं थे। या तो टीटो को औद्योगीकरण की गति बन्द करनी पड़ती अथवा मशीनरी और विशेषज्ञों के लिए पश्चिम से सहायता माँगनी पड़ती।

युगोस्लाविया को आयात-निर्यात बैंक द्वारा अपनी खानों का आधुनिकीकरण करने के लिए १० करोड़ रुपए का ऋण मिल चुका है। विश्व-बैंक ने १२ करोड़ ५० लाख रुपए का दूसरा ऋण देना सिद्धान्त रूप में स्वीकृत कर लिया है। जितनी जल्दी युगोस्लाविया अपनी खानों से उत्पादन कर सकेगा उतने ही ज्यादा उसको डॉलर मिलेंगे; जितने ज्यादा उसे डॉलर मिलेंगे उतनी ही ज्यादा मशीनें वह औद्योगीकरण के लिए खरीद सकेगा। आर्थिक विकास के लिए लोहा, कोयला, ताँबा आदि आवश्यक खनिज-पदार्थों की युगोस्लाविया में बहुतायत है। युगोस्लाविया-निवासी मेहनती और लगन

पोलैंड ने अपने इस निर्णय की घोषणा की है कि वह सारे देश को सम्पूर्णतया कम्युनिस्ट बना देगा और साथ ही १९५५ के अन्त तक रहन-सहन के स्तर को दुगुना ऊँचा उठा देगा। इस ध्येय-पूर्ति के लिए उसे पश्चिम से लगातार मशीनें मँगाते रहना होगा; उसे अपने किसानों को सुखी बनाए रखना होगा, जिसके माने हैं कृषि का सामूहीकरण। ऐसा वह अभी न कर सकेगा; न वह अपने बढ़े हुए उत्पादन का भाग रूस को ले जाने दे सकता है। वह कम्युनिज्म को रोककर ही अपनी ध्येय-पूर्ति कर सकता है।

चैकोस्लोवाकिया की औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था काफी उन्नत है। बिजली के उत्पादन में वृद्धि की उसकी योजना दृढ़ नींव पर आधारित है। इस्पात के उत्पादन को ५० प्रतिशत बढ़ाना, कृषि की मशीनरी का उत्पादन दुगुना करना, इलेक्ट्रिक मोटरों का उत्पादन चौगुना करना आदि घोषित ध्येयों में वह सफल हो सकता है। लेकिन पश्चिम से व्यापार बन्द होने से चैकोस्लोवाकिया को भी हानि पहुँचने लगी है। सन् १९४९ के प्रथम सात महीनों में चैकोस्लोवाकिया का रूस के साथ व्यापार ४५ प्रतिशत बढ़ गया और पश्चिमी यूरोप तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ ३० प्रतिशत घट गया। जिसके फलस्वरूप चैकोस्लोवाकिया का बनाया हुआ माल पहले-जितना अच्छा नहीं रहा।

पूर्वी यूरोप के अन्य राष्ट्रों की दशा और भी बुरी है हालाँकि वे विकास की उपयोगी योजनाएं कार्यान्वित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, रूमानिया में एक ऐसी बड़ी नहर बनाई जा रही है, जो न सिर्फ यातायात की सुविधाएं देगी बल्कि बाढ़ों, अनावृष्टि और मलेरिया को दूर करने में भी सहायक होगी। रूमानिया ४० लाख एकड़ भूमि में जंगल उगा रहा है और २५ लाख दलदली भूमि को खेती के लायक बना रहा है।

किन्तु सुदृढ़ औद्योगीकरण मानव-कौशल के आधार पर ही खड़ा हो सकता है; इस दिशा में तीस वर्षों के सतत प्रयत्न के बाद भी रूस अभी कमजोर है। इसके अलावा औद्योगीकरण के लिए आधुनिक मशीनों की

पृष्ठभूमि चाहिए, ऐसी मशीनें जो दूसरी मशीनें बना सकें, यह बातें पूर्व में उपलब्ध नहीं, पश्चिम में हैं।

पूर्वी शरीर के लिए पश्चिमी सिर की आवश्यकता सार्वजनिक दृष्टि में तब आई जब कि जैकोस्लोवाकिया और पोलैंड ने खुल्लम-खुल्ला मार्शल-योजना के अन्तर्गत सहायता की माँग की। केवल रूस के कारण ही यह देश मार्शल-योजना में भाग न ले सके। यह आवश्यकता एक बार फिर प्रदर्शित हुई जब कि इन देशों ने अपनी सस्ती विद्युत्-शक्ति पश्चिमी यूरोप में बेचनी चाही। यद्यपि इन देशों को नई विद्युत्-शक्ति की आवश्यकता विशेष नहीं है, किन्तु इनको पश्चिम की मशीनों की आवश्यकता बनी हुई है। वे अपनी बिजली के बदले, जो कि बेवेरिया और राइनलैंड के बीच से पाइपों द्वारा भेजी जायगी, मशीनरी प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं।

इससे भी अधिक, पूर्व को पश्चिम की आवश्यकता मार्शल-टीटो और सोवियट-संघ के पारस्परिक नाटकीय सम्बन्ध-विच्छेद द्वारा प्रबल रूप में प्रदर्शित होती है। मार्शल टीटो और रूस के संघर्ष का आर्थिक पहलू यह है कि युगोस्लाविया अपने देश का औद्योगीकरण करना चाहता था जब कि रूस उसे केवल कच्चे माल का स्रोत बनाए रखना चाहता था। यदि रूस इसके विपरीत चाहता तो भी उसके पास अपने पड़ोसी का औद्योगीकरण करने के साधन नहीं थे। या तो टीटो को औद्योगीकरण की गति बन्द करनी पड़ती अथवा मशीनरी और विशेषज्ञों के लिए पश्चिम से सहायता माँगनी पड़ती।

युगोस्लाविया को आयात-निर्यात बैंक द्वारा अपनी खानों का आधुनिकीकरण करने के लिए १० करोड़ रुपए का ऋण मिल चुका है। विश्व-बैंक ने १२ करोड़ ५० लाख रुपए का दूसरा ऋण देना सिद्धान्त रूप में स्वीकृत कर लिया है। जितनी जल्दी युगोस्लाविया अपनी खानों से उत्पादन कर सकेगा उतने ही ज्यादा उसको डॉलर मिलेंगे; जितने ज्यादा उसे डॉलर मिलेंगे उतनी ही ज्यादा मशीनें वह औद्योगीकरण के लिए खरीद सकेगा। आर्थिक विकास के लिए लोहा, कोयला, ताँबा आदि आवश्यक खनिज-पदार्थों की युगोस्लाविया में बहुतायत है। युगोस्लाविया-निवासी मेहनती और लगन

के साथ काम करने वाले लोग भी होते हैं। युगोस्लाविया का रहन-सहन का स्तर यद्यपि यूरोप के सब देशों से नीचा है। उदाहरण के लिए, गत महा-युद्ध से पहले एक औसत युगोस्लाव प्रतिवर्ष केवल ७१ किलोवाट-घण्टे बिजली खर्च करता था, जो कि बलगेरिया के अलावा अन्य यूरोपीय देशों से कहीं कम है। अतः युगोस्लाव औद्योगीकरण योजना का प्रथम उद्देश्य बिजली के उत्पादन को तिगुना बढ़ा देना है। इस ध्येय-पूर्ति के लिए युगोस्लाविया ने बाहरी सहायता की प्रतीक्षा नहीं की है; युगोस्लावों ने स्वयं घुटनों तक के पानी में खड़े होकर खुदाई की है; उन्होंने अपने नंगे हाथों से चट्टानें तोड़-कर सुरंगें निकाली हैं। आज जगह-जगह कठिन परिश्रम के बाद बाँध खड़े हो रहे हैं। वे अलबानिया की सीमा के निकट ४५ हजार एकड़ दलदली भूमि की सफाई करके उसे खेती के लायक बना रहे है।

सैद्धान्तिक मतभेद के कारण अलबानिया ने इस कार्य में सहयोग न देने का निश्चय किया है, जिसके परिणामस्वरूप युगोस्लाव सरकारी समाचार-पत्र का कथन है कि जब कि युगोस्लाविया "इस दलदली भूमि को सबसे उपजाऊ और समृद्धिशाली प्रदेश में परिणत कर देगा।" झील के दूसरे तट पर रहने वाले अलबानिया-निवासी "दलदल, गरीबी, गन्दगी और बीमारी में रहते रहेंगे।"

युगोस्लाविया एक शताब्दी की प्रगति केवल पाँच वर्षों में ही करने का प्रयत्न कर रहा है। यदि पश्चिम की सहायता से उसकी योजनाएं किसी अंश तक सफल होती हैं—जैसा कि होना सम्भव है—तो रूस के अधीन दूसरे देशों की पश्चिम से व्यापार करने की इच्छा इतनी उत्कट हो सकती है कि जिसे रोकने के लिए रूस को हथियारों का सहारा लेना पड़े।

लेकिन रूस को स्वयं पश्चिम की आवश्यकता है। वह इतिहास के एक महान् राष्ट्र के देह और दिमाग को एक ऐसी औद्योगिक नींव निर्माण करने में जुटा रहा है जो कि संसार में उसकी महत्त्वपूर्ण स्थिति के लिए आवश्यक है। लेकिन अभी उसे लम्बा रास्ता तय करना है। सन् १९४९ में उसकी आर्थिक सम्भावनाएं संयुक्त राष्ट्र अमरीका से २५ प्रतिशत कम थीं।

उसका तेल का उत्पादन युद्ध-पूर्व-जितना ही था। उसने २ करोड़ १३ लाख टन कच्चा इस्पात पैदा किया जब कि हमने उससे चौगुना अधिक किया। उसके जूते के कारखानों ने एक साल में प्रत्येक रूसी के लिए एक जोड़ा जूते से भी कम जूते बनाए। केवल बिजली के उत्पादन में वह सन् १९४० से आगे बढ़ सका।

इसका मतलब यह नहीं कि रूसी-उत्पादन में वृद्धि न होगी या उसने महत् कार्य नहीं किये हैं। कुछ बड़े कार्यों की सूची नीचे दी जाती है:

१. सन् १९२४ और १९४८ के बीच सोवियट-संघ ने २५ लाख एकड़ भूमि में पेड़ लगाए। युद्ध के बाद की एक योजना द्वारा डेढ़ करोड़ एकड़ भूमि पर—इंगलैंड का आधा क्षेत्रफल—पेड़ लगाए जायंगे और इस प्रकार २० करोड़ एकड़ जमीन का बचाव किया जायगा। इन पेड़ों की कतार ४ हजार मील तक फैली होगी।

२. राष्ट्रीय परिश्रम का अधिकांश भाग अभी भी साइबेरिया में लगाया जा रहा है। मध्य एशिया में उजबेकिस्तान की बड़ी नदी सीर-दरिया पर जल द्वारा विद्युत्-शक्ति उत्पादित करके बीसों नई मिलों और कारखानों को बिजली दी जा सकेगी। इस सूखे, ऊसर प्रदेश के लाखों एकड़ों को हरे-भरे चरागाह, बाग-बगीचे और रुई के खेतों में परिणत किया जा सकेगा। थोड़ी ही दूर पर एक इतना ही बड़ा बिजली का दूसरा कारखाना बनाकर सिंचाई के लिए पानी इकट्ठा किया जायगा।

३. रूसी कल्पना-शक्ति और लगन का प्रतीक निरन्तर हिमाच्छादित भूमि-संस्था का कार्य है। इस संस्था का कार्य-क्षेत्र उत्तर की बर्फीली झीलें और नदियाँ हैं। फ्रांस और जर्मनी के सम्मिलित क्षेत्रफल से भी बड़ा प्रदेश खेती के लायक बनाया जा चुका है। कई प्रदेशों में तो यूक्रेन से भी अधिक फसलें हो रही हैं। पीले सागर के तट पर औद्योगिक नगर खड़े हो गये हैं और साइबेरिया में सैनिक अड्डे भी।

४. इतने ही बड़े पैमाने पर वोल्गा नदी पर काम हो रहा है। रूसियों ने बताया है कि अणुशक्ति द्वारा बड़ी नदियों का पथ परिवर्तित

किया जा रहा है, उत्तर की ओर बहने वाली नदियों को दक्षिण की ओर बहाया जा रहा है। वोल्गा-नदी-योजना उत्तर और दक्षिण के बीच २००० मील का जल-पथ बना देगी, साथ ही ५ करोड़ एकड़ जमीन काश्त के लायक भी बनाई जा सकेगी। इस योजना द्वारा उत्पादित विद्युत्-शक्ति फ्रांस और इटली की युद्ध-पूर्व संयुक्त विद्युत्-शक्ति से भी अधिक होगी।

अगर रूस और उसके अधीन देश टी० वी० ए०-जैसे बड़े कार्यों पर इतनी लगन से जुटे हुए हैं तो क्या कारण है कि वे पश्चिम की तरह प्रगति न करके पिछड़ते जा रहे हैं? मेरे खयाल में इसका उत्तर है स्वतन्त्रता के गुणों की कमी। और इस उत्तर में वह कारण निहित है, जिसने चतुर्थ-लक्ष्य को सार्वजनिक पूँजी की अपेक्षा व्यक्तिगत पूँजी के प्रयोग के लिए प्रेरित किया है।

हमारी टैनेसी वैली ऑथोरिटी एक सार्वजनिक कारपोरेशन है। इसने जमीन का बचाव किया, बाढ़ों को रोका, बिजली पैदा की। जैसे ही टी० वी० ए० ने इस इलाके को लाभप्रद क्षेत्र में परिणत कर दिया, व्यक्तिगत पूँजी वहाँ स्वतः ही आने लगी। व्यक्तिगत पूँजी ने छोटे और बड़े कारखाने अपनी आवश्यकतानुसार बनाए। व्यक्तिगत पूँजी के बिना टी० वी० ए० अभी भी जमीन के बचाव और बाढ़ को रोकने में लगी होती; वह स्वयं अपने प्रयत्नों से सारे प्रदेश की अर्थ-व्यवस्था गतिशील न बना सकती थी।

इसके विपरीत, रूस और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों में व्यक्तिगत पूँजी नहीं है। नई उपलब्ध शक्ति का प्रयोग सरकारी कामों में होता है। ट्रैक्टर बनाए जाते हैं, *शौकिया घूमने की मोटरकारें नहीं; काम करने के जूते* बनाए जाते हैं, नाच के जूते नहीं; फौजी वर्दियाँ बनाई जाती हैं, खेल-कूद के कपड़े नहीं।

लेकिन जरूरी चीज यह नहीं कि प्रजातन्त्रवाद में प्रतियोगी व्यवसाय ट्रैक्टर और शौकिया मोटरकारें, नाच के जूते और काम के जूते दोनों ही बनाता है। जरूरी बात समझने की यह है कि प्रतियोगी व्यवसाय इन चीजों को सरकार से जल्दी, सस्ता और अच्छा बनाएगा, साथ ही वह अपने

कर्मचारी नर-नारियों का अधिक ध्यान रखेगा।

नई निर्माण योजना का बुनियादी मकसद पिछड़े हुए इलाकों में व्यक्तिगत पूँजी को तलाश करके उसे प्रोत्साहित करना है ताकि स्वस्थ मध्य वर्ग का विकास किया जा सके।

इतने बड़े पैमाने पर शुरू किये हुए कामों के बावजूद भी रूस में मशीनों की कमी है और साथ ही टेकनिकल कौशल की भी। अतः आर्थिक और राजनीतिक पृथक्ता मानसिक पृथक्ता को भी जन्म देती है। आज सारी दुनिया विज्ञान में मार्क्सवादी रूढ़िवाद से हानि उठा रही है, लेकिन सबसे अधिक हानि तो स्वयं रूस और उसके अधीन देश उठा रहे हैं।

संसार का सबसे बड़ा देश भी, चाहे उसमें हर तरह के कच्चे माल की अधिकता हो, चाहे उसकी जनता में अटूट लगन और अपूर्व कल्पना-शक्ति हो—वह अकेला आगे नहीं बढ़ सकता।

रूस और पूर्वी यूरोप पिछड़ा हुआ ही नहीं है, उसके आर्थिक और राजनीतिक बन्धन निश्चय ही अभी उसे और पीछे ढकेलेंगे। यदि संयुक्त राष्ट्र अमरीका और अन्य पश्चिमी राष्ट्र लौह आवरण के पीछे स्थित देशों की सन्तुलित आर्थिक प्रगति करने के इच्छुक भी हों तो भी वहाँ की प्रचलित राष्ट्र की गुलामी इस इच्छा को फलीभूत न होने देगी।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता प्रगति की दासी है : स्वतन्त्रता का अर्थ है सर्वहित की सीमा में रहकर प्रयोग करना, और अपनी गलती से सीख लेकर फिर काम शुरू करना; व्यक्तिगत उद्देश्यों का बनाना और उनकी पूर्ति करना। जब तक कि कम्युनिस्ट रूस और उसके अधीन देश ऐसी स्वतन्त्रता को अंगीकार न करेंगे तब तक वे अमरीकन मशीन और व्यक्ति की प्रतियोगिता न कर सकेंगे। और यदि वे इस स्वतन्त्रता को स्वीकार कर लेते हैं तो कम्युनिस्ट ही नहीं रह जाते।

तीसरा भाग

परिचय

नई निर्भीक योजना की सफलता केवल टेकनिकल सुधार और अमरीकन डॉलरों पर निर्भर नहीं करती; इसकी सफलता के लिए सहयोग की भावना भी चाहिए और सहयोग को फलीभूत करने की प्राकृतिक शक्ति भी। इसकी सफलता राष्ट्रों के स्वार्थ-रहित संयुक्त कार्यों पर निर्भर करती है। नई निर्भीक योजना यह मानकर चलती है कि औद्योगिक संसार को बनाए रखने और आगे बढ़ाने के लिए प्राकृतिक साधनों की कमी कभी न होगी। और यह हमारे देश से स्वयं माँग पेश करती है कि हम स्वतन्त्रता में विश्वास बनाए रखें—ऐसा विश्वास, जिसमें किसान और मजदूर, व्यापारी और सरकारी नौकर सब आस्था रखें और जिसकी सब घोषणा करें।

इस पुस्तक के अगले पृष्ठ कुछ उन स्रोतों का उल्लेख करेंगे जो धरती में तथा मानव-मस्तिष्क और हृदयों में प्रतीक्षा कर रहे हैं।

: १ :

सहयोग ही कुन्जी है

गत महायुद्ध में धुरी राष्ट्रों के कोड़े ने मित्र राष्ट्रों के लिए आर्थिक और सैनिक सहयोग आवश्यक बना दिया। चतुर्थ-लक्ष्य अज्ञान और

दारिद्रय के विरुद्ध इससे भी बड़ा जिहाद चाहता है।

"हमारा उद्देश्य," प्रेसीडैंट ट्रूमैन ने सन् १९४९ के भाषण में कहा, "संसार के स्वतन्त्र लोगों द्वारा उनके ही प्रयत्नों से ज्यादा अनाज, ज्यादा कपड़ा, ज्यादा मकान बनाने का सामान तथा ज्यादा मशीनें बनाना है ताकि उनका बोझ हल्का हो सके। इस कार्य में हम दूसरे देशों के टैकनिकल ज्ञान का सहयोग भी चाहते हैं; उनका सहयोग खुशी से स्वीकार किया जायगा। यह कार्य सब लोगों के सहयोग से होना चाहिए जिसमें संयुक्त राष्ट्रों द्वारा भाग लिया जाय और जहाँ तक सम्भव हो विशेषज्ञों को भेजा जाय। शान्ति, समृद्धि और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए यह एक विश्व-व्यापी प्रयास होना चाहिए।"

पिछड़े हुए इलाकों में चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा छलनी के छेद बन्द करने का अर्थ है—व्यवसाय, धर्म, स्वास्थ्य, शिक्षा, शासन और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं और संगठनों का एकीकरण। दूसरे देशों की पृथक्, किन्तु सम्बन्धित योजनाएं भी साथ ही चलती रहेंगी जैसे कि अफ्रीका में ब्रिटेन, फ्रांस और बेलजियम की योजनाएं; और सोवियट संघ की अपनी और अपने अधीन देशों के विकास की योजनाएं।

नई निर्भीक योजना का नामकरण होने से पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने विभिन्न भागों और प्रतिनिधि-संस्थाओं द्वारा विदेशों में टैकनिकल और वैज्ञानिक सूचनाओं का वितरण करता चला आ रहा है। अन्तर-अमरीकन-विषयक संस्था दक्षिण अमरीका में खाद्य, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि विषयों का प्रयोग कर रही है। फुलब्राइट एक्ट द्वारा हमारा दूसरे देशों से शिक्षकों और छात्रों का आदान-प्रदान हो रहा था। ई० सी० ए० यूरोप और उसके उपनिवेशों, चीन और कोरिया में औद्योगिक और कृषि-सम्बन्धी आधुनिक प्रविधियों का प्रदर्शन करता चला आ रहा है।

चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत ये विभिन्न कार्य और भी बढ़ जायंगे। व्यक्तिगत पूँजी का संधियों आश्वासनों और कर-नीति में परिवर्तन करके मदद दी जायगी। आरम्भिक काल में हमें कार्य-पूर्ति के लिए विभिन्न देशों से

अलग समझौते करने होंगे, जिन कार्यों को करने की स्थिति में इस समय संयुक्त राष्ट्रों की संस्थाएं नहीं हैं। जैसे-जैसे संयुक्त राष्ट्रों की सुविधाएं बढ़ती जायेंगी उनकी प्रतिनिधि-संस्थाएं काम सँभाल लेंगी, केवल उन योजनाओं को छोड़कर, जिनमें कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका का विशेष स्वार्थ निहित है। अभी काफी समय तक जितनी मदद मिल सकती है उससे कहीं ज्यादा मदद की माँग होगी।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र अमरीका चतुर्थ-लक्ष्य पर २२ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च करने की आशा रखता है जिसमें से पाँच करोड़ रुपया नई निर्भीक योजना से पहले शुरू किये हुए कामों पर खर्च किया जायगा। इस रकम को काफी हिस्सा संयुक्त राष्ट्रों और उनकी प्रतिनिधि-संस्थाओं को भी दिया जायगा जिसे कि वे पिछड़े हुए इलाकों को टेकनिकल मदद देने की अपनी योजना पर खर्च करेंगे।

अधिक-से-अधिक लाभ पहुँचाने के लिए चतुर्थ-लक्ष्य को विभिन्न साधनों और कार्य-कौशलों का सहारा लेना होगा। सन् १६४६ में यू० एन० ओ० के सेक्रेटरी जनरल ने कहा कि "एक सुदृढ़ राष्ट्रीय योजना को बहुत-से राष्ट्रों के विभिन्न सामाजिक ढाँचे और सांस्कृतिक परम्पराओं पर आधारित अनुभवों का उपयोग करना चाहिए...। इस प्रयास में उन्नत राष्ट्रों का अधिक सहयोग तो होगा ही लेकिन अन्य राष्ट्र भी कई बातों में जरूरी मदद दे सकेंगे...। इसलिए यह जरूरी है कि बहुत-से देशों का टेकनिकल सहयोग प्राप्त करके उसका उपयोग किया जाय।"

उन्होंने यह भी कहा कि कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय कार्य की अपेक्षा संयुक्त कार्य अनिवार्य हो जाता है। बीमारियाँ और कीड़े-मकौड़े राष्ट्रीय सीमाओं की परवाह नहीं करते; नदियों का सही उपयोग राष्ट्रीय समस्या न होकर प्रादेशिक समस्या है; वायुयान-सम्बन्धी नियम सारे संसार में समान ही होने चाहिएं; मशीनों के पुर्जे संसार के सब देशों में एक-से ही होने चाहिएं।

यू० एन० ओ० के लेख-पत्र में सदस्य राष्ट्रों ने शपथ ली है कि वे

रहन-सहन के सुधार, रोजगार, आर्थिक और सामाजिक प्रगति के लिए किये गए कार्यों में सहयोग देंगे।

प्रेसीडेंट के चतुर्थ-लक्ष्य प्रस्ताव के फलस्वरूप यू० एन० ओ० ने विश्व-प्रगति की अपनी योजनाएं दस गुनी बढ़ा लीं। विशेषज्ञों का एक दल निर्मित किया गया जिसका कार्य पिछड़े हुए इलाकों की माँगों को देखना, समझना और परखना था। हिसाब लगाया गया कि अगले दो साल में करीब ५,० करोड़ रुपया खर्च होगा। विशेषज्ञों और व्यवस्था की कमी के कारण प्राथमिक व्यय सम्भवतः कम हो।

यू० एन० ओ० की विभिन्न प्रतिनिधि-संस्थाओं में पारस्परिक सहयोग सन् १६४६ से आम चीज बन चुका है। यू० एन० ओ० के सेक्रेटरी जनरल ने बताया कि "विश्व-स्वास्थ्य-संघ (डब्ल्यू० एच० ओ०) और संयुक्त राष्ट्र शिक्षा, विज्ञान तथा सांस्कृतिक संघ (यूनेस्को) ने मिलकर एक बुनियादी शिक्षा योजना पर कुछ कार्य किया है जिसका एक जरूरी पहलू स्वास्थ्य-सम्बन्धी शिक्षा देना था। डब्ल्यू० एच० ओ० और एफ० ए० ओ० के कार्यकर्ता दक्षिणी एशिया में मलेरिया को रोकने और खाद्य उत्पादन के एक संयुक्त कार्य की नींव डाल रहे हैं...।"

संयुक्त राष्ट्र अमरीका की संस्थाओं की परिपूरक अन्य वैदेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं किस प्रकार कार्य करेंगी इसका चित्र चतुर्थ-लक्ष्य के सन् १६५० की योजना के कुछ अंगों को देखने से सामने आ जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संघ (आइ० एल० ओ०) उन सामाजिक नीतियों का निरीक्षण करेगा जो कि दक्षिण अमरीकन श्रम-उत्पादकता में रुकावट पैदा कर रही हैं। जंगलात की देख-भाल के लिए एफ० ए० ओ० संयुक्त राष्ट्र अमरीका के कृषि-विभाग के सहयोग में काम करेगा, अंतर-अमरीकन कृषि-विज्ञान-संस्था के सहयोग में सिंचाई आदि के कार्य करेगा। यूनेस्को हैटी में में पाठशालाएं स्थापित करेगा और संयुक्त राष्ट्र अमरीका लाइबेरिया में आठ ग्रामीण और एक शहरी स्कूल खोलेगा। डब्ल्यू० एच० ओ०, एफ० ए० ओ० और चतुर्थ-लक्ष्य के विशेषज्ञ उन इलाकों में, जहाँ अनाज उप-

जाने की ज्यादा संभावनाएं हैं, यह सिखायगे कि मलेरिया को किस प्रकार रोका जाय। यू० एन० ओ० की बच्चों-सम्बन्धी एक संस्था डब्ल्यू० एच० ओ० के साथ बच्चों को इस रोग से बचाने के लिए काम कर रही है। आकाश-यात्रा सम्बन्धी सुविधाएं और एक-से नियम बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय संस्था और संयुक्त राष्ट्र अमरीका की इस विषय की एक सरकारी संस्था सम्मिलित कार्य कर रही हैं। नामकरण के क्षेत्र में भी, 'कपड़ा' और 'उद्योग'-जैसे आम शब्द भी विभिन्न देशों में विभिन्न अर्थ रखते हैं; यू० एन० ओ० के विशेषज्ञ ऐसे सैंकड़ों शब्दों की परिभाषाएं बना रहे हैं। संसार-भर में सड़कों पर मोटरकारों के लिए एक-से ही चिह्न बनाने का काम तो हो भी चुका है।

चतुर्थ-लक्ष्य के जीवन के प्रथम वर्ष में सहयोग की आवश्यकता और पहले शुरू किये हुए कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास चित्रित होता है। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :

१. साधारण आर्थिक विकास : इससे पहले कि हम कुछ कर सकें, हमें यह जानना चाहिए कि करना क्या है ? चतुर्थ-लक्ष्य-मण्डल पिछड़े हुए इलाकों में घूम-घूमकर देखेगा कि उन इलाकों की कौन-सी आवश्यकताएं हैं और उनके कितने साधन हैं ? किस काम को तुरन्त ही शुरू करना है और कौन-सा आगे के लिए रोका जा सकता है। सन् १९५० में तीन दल दक्षिणी अमरीका में, एक ईरान में और तीन सुदूर पूर्व में जायगे। इनमें से कुछ यू० एन० ओ० के अधीन काम करेंगे और कुछ संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रति जिम्मेदार होंगे। प्रत्येक देश में टेकनिकल शिक्षा को बढ़ाया जायगा, इसके अतिरिक्त विदेशी छात्र संयुक्त राष्ट्र अमरीका में आयगे। पिछले वर्ष संसार के विभिन्न देशों से २४ हजार २०० छात्र हमारे यहाँ आए। चतुर्थ-लक्ष्य ३००० से ५,००० तक विदेशी विशेषज्ञों को आगे की शिक्षा देने के लिए अमरीका लायगा।

२. कृषि तथा वन-विज्ञान : किसी के लिए भी शिक्षा पर ध्यान लगाना कठिन है जब तक कि उसके पास खाना न हो। हमारे कृषि-विभाग

और एफ० ए० ओ० के विशेषज्ञ बिगड़ी हुई भूमि को सुधारने, सिंचाई, बाढ़ रोकने, जंगल लगाने आदि की शिक्षा देंगे। अभी तक कृषि-सम्बन्धी जितनी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने खेती के जितने तरीकों का अध्ययन किया है उस ज्ञान को एक स्थान पर एकत्रित किया जायगा। फसल के निरीक्षण के तरीके निकाले जायंगे; किसानों को अच्छे बीज भी दिये जायंगे।

इन विशेषज्ञों को अनगिनत मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। सुदूर पूर्व में प्रतिवर्ष कीड़े-मकोड़ों द्वारा बहुत-सारा चावल बरबाद होता है। काली मक्खी मैक्सिको और हमारी नीबू-संतरों की फसलों को बरबाद करती है। मध्य अमरीका में टिड्डी दल बेहद नुकसान पहुँचाते हैं—लेकिन फिर भी कुछ इलाकों में लोग इनके जीवन के इतिहास से अनभिज्ञ हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य के अन्तर्गत संयुक्त राष्ट्र अमरीका कृषि-विरोधक योजनाएं शुरू करेगा।

हर एक इलाके में यह देखा जायगा कि उसको किन खास मशीनों की जरूरत है और वह किन मशीनों को अपना सकता है। उनकी ज़रूरतों के मुताबिक मशीनें बनाई जायंगी।

बहुत-से देशों में चौपायों से पर्याप्त मात्रा में मांस और दूध, मक्खन आदि नहीं मिलता; वे जल्दी ही मर जाते हैं क्योंकि वे अधिकतर अपने वातावरण के अनुकूल नहीं होते। चतुर्थ-लक्ष्य इस दिशा में भी सुधार करेगा। चौपायों की बीमारियों से, गायों के थन सूज जाने की एक बीमारी से यूरोप में ५० लाख टन दूध खराब जाता है। विशेषज्ञ इन बीमारियों को दूर करने के इलाज बतायंगे। ईरान और मलाया-जैसे हर दूर फैले इलाकों में चौपायों के रोग दूर करने का काम किया जायगा। मछली पकड़ने के कारगर तरीके ईजाद किये जायंगे।

३. स्वास्थ्य : एक आम बीमारी को दूर करने से यह देखा गया है कि उस प्रदेश के अनाज की उपज ५० प्रतिशत तक बढ़ गई। दुनिया की देर तक चलने वाली कई बीमारियों को आज काबू करना सम्भव हो

सका है। दुनिया के वे लाखों-करोड़ों नर-नारी, जिन्हें प्रतिवर्ष मलेरिया की कँपकँपी चढ़ती है यदि अपने घरों की दीवारें और कुएं-तालाबों में डी० डी० टी० का प्रयोग करें तो मलेरिया की मार बहुत-कुछ कम हो जायगी। डब्ल्यू एच० ओ० दक्षिण और मध्य अमरीका, मध्य अफ्रीका, निकट पूर्व, दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी एशिया में मलेरिया रोकने के लिए विशेषज्ञों के दल भेजेगी।

छूत की बीमारियाँ हवाई जहाज में बैठकर राष्ट्रीय सीमाएं पार कर सकती हैं—आज भारत, तो कल काहिरा, तो परसों लन्दन वे पहुँच जाती हैं। डब्ल्यू० एच० ओ० इनकी ओर विशेष ध्यान दे रहा है।

स्वास्थ्य के लिए सफाई-सुथराई आवश्यक है। लेकिन रायो द जनेरियो में बहुत-से लोग बन्द नालियों में अपना घर बनाए हुए हैं। बोलिविया की सब म्युनिसिपैलटियों में पानी और सफाई की कमी है जिसका नतीजा है पेचिश, हैजा, मियादी बुखार तथा दूसरी बीमारियाँ। चतुर्थ-लक्ष्य दक्षिण अमरीकन, अफ्रीकन तथा एशियायी लोगों को अच्छे कुएं और साफ पाखाने, बाजार और बूचड़खाने में मदद देगा।

४. यातायात : यातायात की कमी औद्योगिक विकास में रुकावट है। खानों में खनिज पदार्थ और जंगलों में लकड़ी यातायात बिना व्यर्थ ही हैं; खेतों मे फसलें यातायात की सुविधा बिना सड़ जाती हैं। चतुर्थ-लक्ष्य देहातों में सड़कें बनाना सिखायगा; वह सिखायगा कि किस प्रकार पास ही मिलने वाले सामान से सड़कें बनाई जा सकती हैं। चतुर्थ-लक्ष्य रेलों के सुप्रबन्ध की शिक्षा देगा। वह यह भी बतायगा कि नदियों पर किस प्रकार सुगमता से माल लाया और भेजा जा सकता है।

५. शिक्षा : पिछड़े हुए इलाकों की छलनी में निरक्षरता कम छोटा छेद नहीं है। यह नई बात नहीं है कि स्वास्थ्य-योजनाओं को वहाँ सफल बनाना ज्यादा आसान है जहाँ लोग दवा की बोतल के ऊपर लगे हुए लेबिल को पढ़ सकें; खेती और मशीनों सम्बन्धी बातें पढ़े-लिखे आदमी ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे; लोकतन्त्र वहाँ ज्यादा सफल होगा जहाँ के

जायगे, जब प्रतिवर्ष आर्थिक सुधार होगा—चाहे कितना थोड़ा क्यों न हो—यह इलाके पिछड़े हुए इलाके न कहलायेंगे बल्कि परिवर्तित स्थिति के इलाके कहलायेंगे। यदि राजनीतिक परिस्थितियाँ अनुकूल हुईं तो ये इलाके व्यक्तिगत और सार्वजनिक पूँजी प्राप्त करने के लिए तैयार होंगे जिससे कि वे स्वयं लाभ उठा सकेंगे और पूँजीपति को भी लाभान्वित कर सकेंगे।

इसके बाद चतुर्थ-लक्ष्य दूसरी सीढ़ी पर होगा।

आर्थिक जीवन की गति बढ़ने के बाद नदी की घाटियों के विकासार्थ पूँजी लगाना आम चीज हो जायगी। अगर छलनी के छेद ठीक तरह से बन्द किये गए तो टी० वी० ए० जैसे इलाकों में व्यक्तिगत पूँजी बहुत लाभदायक सिद्ध होगी।

सन् १९४९ के अन्त में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने दस दक्षिण अमरीकन देशों से व्यक्तिगत पूँजी को सुरक्षित रखने के लिए सधियाँ कीं। इन संधियों में एक शर्त यह भी थी कि वैदेशिक आय को डालरों में परिणत कर दिया जायगा। फ्रांस और इटली-जैसे उन्नत देशों ने भी इस सिद्धान्त को मान लिया है कि प्रतिवर्ष वैदेशिक पूँजी की आय का एक अंश पूँजीपतियों को मिलता रहेगा। सन् १९४२ के बाद से अन्तर्राष्ट्रीय दोहरे कर को मिटाने के लिए ग्यारह देशों ने संधियाँ की हैं और छः देशों ने पुनः सधिकाल बढ़ाने के हस्ताक्षर किये हैं।

बहुत-से पिछड़े इलाकों में जितना ख्याल किया जाता है उससे कहीं ज्यादा स्थानीय पूँजी छिपी हुई है। या तो वह जमीन के अन्दर गड़ी हुई है या तिजोरियों में बन्द है या आभूषणों के रूप में शरीरों को शोभायमान करती है। जब तक कि यह पूँजी विकास की जड़ में जल न डालेगी, बाहर की मदद बन्द होते ही जड़ सूख जायगी।

जिस प्रकार कि आज नई निर्भीक योजना के अन्तर्गत बहुमुखी टेकनिकल संस्थाओं का पारस्परिक सहयोग आवश्यक है उसी प्रकार नई निर्भीक

योजना की दूसरी सीढ़ी पर स्थानीय और वैदेशिक पूँजी का सहयोग आवश्यक होगा।

ऐसे सहयोग द्वारा सचेतन और आशामयी जनता के बीच उर्वरा भूमि पर नये उद्योग खड़े होंगे; वैदेशिक पूँजी को आज जो खतरा है वह कम हो जायगा।

सहयोग ही कुंजी है।

: २ :

क्या संसार के द्रव्य-साधन पर्याप्त हैं ?

किन्तु यदि हम संसार के अन्य भागों में औद्योगीकरण की गति बढ़ा देते हैं तो क्या संसार के द्रव्य-साधनों का अन्त करके हम उस भंडार को खाली न कर देंगे जिस पर हमारा अपना औद्योगिक जीवन निर्भर है ?

जहाँ तक कि मुख्य खनिज पदार्थों का सम्बन्ध है, उक्त प्रश्न का उत्तर है 'नहीं'। भूगर्भ में लोहा और ताँबा भरा पड़ा है। लेकिन एक क्षेत्र में हमारे साधनों का अन्त अनिवार्य ही नहीं बल्कि बहुत निकट है। यह क्षेत्र है कोयला, तेल और गैस का, जो कि हमारी मशीनों को चलाये रखने में ईंधन का काम देते हैं। लोहा और ताँबा पृथ्वी की स्थायी हड्डियों की तरह हैं, लेकिन कोयला और तेल जवानी के मुहासे की तरह हैं। कुछ सन्देहशील व्यक्तियों का विचार है कि एक दिन ये द्रव्य समाप्त हो जायंगे और हमें अपने मिल-कारखाने छोड़कर खेतों पर निर्भर करना पड़ेगा।

यदि इन निराशावादी भविष्य-वक्ताओं की बात सच है तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका को अपने भूगर्भ-द्रव्यों की रक्षा उसी लगन से करनी चाहिए जैसे कि डूबते हुए जहाज का नाविक पीने के पानी की रक्षा करता है। हमें उन इलाकों से भी इन पदार्थों को लाना चाहिए जहाँ औद्योगीकरण न होने के कारण अभी इन पदार्थों की आवश्यकता नहीं है। इससे भी ज्यादा हमें इन

इलाकों में औद्योगीकरण न होने देना चाहिए ताकि हमारे उपयोग के लिए इन द्रव्यों की कमी न हो जाय।

लेकिन चतुर्थ-लक्ष्य द्वारा तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका व्यक्तिगत व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए सारे संसार में औद्योगीकरण फैलाना चाहता है। इस मूल विचार से विभिन्न मतों की संस्थाएं भी सहमत हैं। तो फिर या तो ये संस्थाएं बहुत बड़ी गलती पर हैं या निराशावादियों द्वारा दिखाया हुआ भविष्य इतना अन्धकारमय नहीं। कौनसी बात ठीक है?

निराशावादियों का भय कई सही बातों पर आधारित है। एक तो यह कि वर्तमान औद्योगिक अमरीका तेल और कोयले के द्रव्य-साधनों पर निर्मित हुआ है। दूसरा यह कि हम इन द्रव्यों का विलक्षण गति से व्यय कर रहे हैं और तीसरा यह है कि एक बार व्यय कर देने पर द्रव्यों की पूर्ति मनुष्य के जीवन-काल में होनी सम्भव नहीं।

सन् १९४९ में केवल १५ प्रतिशत शक्ति हमने ऐसे स्रोतों से पाई जिसकी पूर्ति की जा सकती है जैसे कि बिजली पैदा करने वाले बाँध, जंगलात और मेहनत करने वाले जानवर। कोयला, गैस और तेल से ही हमने इस्पात ढाला, अपनी मोटरकारें, पानी के जहाज और रेलें चलाईं।

आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका सौ बरस पहले से एक सौ साठ गुना ज्यादा शक्ति काम में लाता है। इस शताब्दी के आरम्भ से हमने जितने खनिज पदार्थ पैदा और खर्च किए हैं, सारे संसार ने अपने पिछले इतिहास में इतने नहीं किये।

यह प्रत्यक्ष है कि हम हमेशा इसी रफ्तार से खर्च करते नहीं रह सकते। सन् १९०० से अब तक हमने पृथ्वी के गर्भ से ३५ अरब पीपे मिट्टी का तेल निकाला है, आयरस के मतानुसार अब इससे कम ही मिट्टी का तेल धरती के नीचे बचा है। अगर हम अपनी मौजूदा रफ्तार से तेल निकालते रहे तो बीस साल में ही सारा तेल खत्म हो जायगा।

कई इंजीनियरों का मत है कि हमारे वर्तमान व्यय की रफ्तार से हमारे ईंधन के सब साधन साढ़े तीन सौ वर्ष में ही समाप्त हो जायगे।

इलाकों में औद्योगीकरण न होने देना चाहिए ताकि हमारे उपयोग के लिए इन द्रव्यों की कमी न हो जाय।

लेकिन चतुर्थ-सूत्र द्वारा तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका व्यक्तिगत व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए सारे संसार में औद्योगीकरण फैलाना चाहता है। इस मूल विचार से विभिन्न मतों की संस्थाएं भी सहमत हैं। तो फिर या तो ये संस्थाएं बहुत बड़ी गलती पर हैं या निराशावादियों द्वारा दिखाया हुआ भविष्य इतना अन्धकारमय नहीं। कौनसी बात ठीक है?

निराशावादियों का भय कई सही बातों पर आधारित है। एक तो यह कि वर्तमान औद्योगिक अमरीका तेल और कोयले के द्रव्य-साधनों पर निर्मित हुआ है। दूसरा यह कि हम इन द्रव्यों का विलक्षण गति से व्यय कर रहे हैं और तीसरा यह है कि एक बार व्यय कर देने पर द्रव्यों की पूर्ति मनुष्य के जीवन-काल में होनी सम्भव नहीं।

सन् १९४९ में केवल १५ प्रतिशत शक्ति हमने ऐसे स्रोतों से पाई जिसकी पूर्ति की जा सकती है जैसे कि बिजली पैदा करने वाले बाँध, जंगलात और मेहनत करने वाले जानवर। कोयला, गैस और तेल से ही हमने इस्पात ढाला, अपनी मोटरकारें, पानी के जहाज और रेलें चलाई।

आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका सौ बरस पहले से एक सौ साठ गुना ज्यादा शक्ति काम में लाता है। इस शताब्दी के आरम्भ से हमने जितने खनिज पदार्थ पैदा और खर्च किए हैं, सारे संसार ने अपने पिछले इतिहास में इतने नहीं किये।

यह स्पष्ट है कि हम हमेशा इसी रफ्तार से खर्च करते नहीं रह सकते। सन् १९०० से अब तक हमने पृथ्वी के गर्भ से ३५ अरब पीपे मिट्टी का तेल निकाला है, आयरस के मतानुसार अब इससे कम ही मिट्टी का तेल धरती के नीचे बचा है। अगर हम अपनी मौजूदा रफ्तार से तेल निकालते रहे तो बीस साल में ही सारा तेल खत्म हो जायगा।

कई इंजीनियरों का मत है कि हमारे वर्तमान व्यय की रफ्तार से हमारे ईंधन के सब साधन साढ़े तीन सौ वर्ष में ही समाप्त हो जायंगे।

इन विवाद के विपक्षी तर्कों से हम परिचित हैं। आशावादियों का कथन है कि द्रव्य-साधनों का समाप्त होना अनिवार्य नहीं। हम अन्य इलाकों का उपयोग करके नए स्रोतों का पता लगाकर और कुशलता से अपने प्राप्य साधनों का उपयोग करके भविष्य को बचा सकते हैं। अणु-शक्ति का प्रयोग भी हमारी सहायता कर सकता है।

वे कहते हैं कि हम प्रतिवर्ष २ अरब पीपे तेल अपने घरेलू साधनों से न लेते रहेंगे। हमने तेल का आयात इस समय भी बढ़ा रखा है। उनका कहना है कि यह कोई नहीं जानता कि अमरीकन भूमि के नीचे ईंधन के कितने साधन छिपे हुए हैं। नये साधनों का दिन-पर-दिन पता लगता ही जा रहा है और नये तरीकों से उन स्थानों से ज्यादा द्रव्य निकाले जा रहे हैं, जहाँ पहले कम निकलते थे। दूसरे तरीकों से शक्ति की उतनी ही मात्रा से ज्यादा काम किया जा रहा है।

निराशावादियों के बताये हुए आँकड़े अमरीका के लिए ही हैं, लेकिन अमरीका तो आखिर विश्व के ५ प्रतिशत क्षेत्रफल में स्थित है। यदि बाकी दुनिया अति तीव्र गति से औद्योगीकरण करे तो भी हमारे द्रव्य-साधन समाप्त हो जाने के बाद बाकी दुनिया के साधन बने ही रहेंगे।

लेकिन यह मर्ज का इलाज नहीं, राहत देने वाली गोलियाँ हैं।

अगर यह सारा किस्सा है तो विश्व-व्यापी औद्योगीकरण, जो कि चतुर्थ-लक्ष्य का अंतिम ध्येय है, कोरा पागलपन है। तब तो न केवल सारे संसार का औद्योगीकरण ही असम्भव है बल्कि वर्तमान औद्योगिक स्तर को भी गिराना होगा। गौरवशाली यूनान और रोम की तरह एक दिन औद्योगिक काल भी विलीन होकर इतिहास का एक परिच्छेद बन जायगा।

किन्तु क्या यही सच्ची कहानी है? क्या सचमुच औद्योगीकरण, तेल, और गैस से पृथक् नहीं किया जा सकता? किन्तु नहीं, इसके विरुद्ध प्रमाण मौजूद है। हमारी आँखों के सामने आज इंसान शक्ति के उन नये साधनों का पता लगा रहा है जो कभी खत्म नहीं होंगे। वह हवा और पानी, जंगल

और ज़मीन उससे शक्ति खींच रहा है। इससे भी ज्यादा, अब उसने अपना ध्यान सूर्य की ओर लगाया है।

निराशावादियों की बात मानने से पूर्व हमें देखना चाहिए कि इस दिशा में क्या-क्या किया जा चुका है।

पाँच साल पहले हमने अणु में शक्ति की एक नई संभावना पैदा की। कुछ आशावादियों ने अणु-शक्ति को औद्योगिक संसार के घटते हुए ईंधन की समस्या का हल बताया।

लेकिन अणु-शक्ति का औद्योगिक उपयोग अभी दूर है। यह सही है कि एक पौंड कोयले जितने वज़न में छिपी अणु-शक्ति बड़े-से-बड़े जहाज़ को दूर तक ले जायगी, लेकिन कोयले से अणु-शक्ति प्राप्त करने की संभावना नहीं है। अभी तक सिर्फ थोरियम और यूरेनियम से ही अणु-शक्ति निकाली जा सकी है। ये पदार्थ लगभग ५० हज़ार टन संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ५ लाख टन सारे संसार में हैं। इन पदार्थों का हमारा वार्षिक व्यय हमारी कुल पैदावार का तीसरा भाग है। अतः अगर हम अपने घरेलू साधनों पर ही निर्भर रहें तो तीस वर्षों में ही हम अपना सारा यूरेनियम खो बैठेंगे।

लेकिन अणु के अलावा दूसरे साधन भी मौजूद हैं।

शक्ति का एक अनन्त साधन जल-शक्ति है जिससे कि अमरीकन भली-भाँति परिचित हैं। अभी तक संसार की जल-शक्ति की संभावनाओं का केवल दसवाँ भाग ही उपयोग में लाया गया है। दुर्भाग्यवश, संसार को जितनी शक्ति की आवश्यकता है उसका केवल चौथाई भाग ही जल द्वारा उत्पादित किया जा सकता है। पिछड़े हुए इलाकों में औद्योगीकरण की आरम्भिक आवश्यकताएँ नदियों द्वारा शक्ति उत्पादित करके पूरी की जा सकती हैं किन्तु औद्योगीकरण के बढ़ने पर यह शक्ति सागर में जल की एक बूँद के बराबर होगी।

समुद्र की लहरों से बिजली पैदा करने की भी चर्चा है, लेकिन सारे संसार की इस प्रकार पैदा की हुई बिजली हमारी आवश्यकता की आधी ही होगी। समुद्र के जल से शक्ति पैदा करने का एक दूसरा तरीका समुद्र की

सतह और समुद्र की गहराई के तापमान के अन्तर से लाभ उठाना है। फ्रांसीसी इस दिशा में प्रयोग भी कर रहे हैं। यदि फ्रांसीसी प्रयोग सफल हुआ तो इस प्रकार के दूसरे प्रयोग भी किये जायंगे, जिनसे कुल उत्पादित बिजली संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जल द्वारा उत्पादित शक्ति के बराबर ही होगी। संसार की बिजली की सम्पूर्ण आवश्यकता की पूर्ति के लिए २० हजार मील लम्बे समुद्र तट पर कारखाने खोलने होंगे।

अतः यह प्रतीत होता है कि दिन-पर-दिन घटते तेल और कोयले की कमी को केवल थोड़ी ही मात्रा में जल द्वारा पूरा किया जा सकता है। अन्य दूसरे साधन भी विशेष आशाजनक नहीं हैं। उदाहरण के लिए वायु-शक्ति का प्रयोग किया गया है। जमीन से १० मील ऊपर हवा सौ मील फी घंटे की रफ्तार से चलती है। अगर इतनी ऊँचाई पर हम अपने इञ्जिनों को लटका सकें तो ईंधन की हमारी चिन्ता बहुत-कुछ पूरी हो जायगी।

पृथ्वी पर हवा का इतना भरोसा नहीं किया जा सकता तो भी १००० किलोवाट बिजली पैदा करने वाला स्टेशन वरमाण्ट, अमरीका में खोला गया है और एक ७५०० किलोवाट की हवाई-चक्की की योजना बनाई जा चुकी है। प्यूरटोरीको पानी की कमी को हवा से बिजली पैदा करके पूरा करने की कोशिश कर रहा है। हालाँकि हवाई चक्कियों से कुछ शक्ति जरूर मिल जायगी, लेकिन इससे दुनिया की बिजली की आवश्यकता पूरी करना व्यावहारिक नहीं है।

यह भी सुझाव पेश किया गया है कि पृथ्वी के अन्दर की गर्मी का उपयोग किया जाना चाहिए। संसार की शक्ति की आवश्यकता से दस गुनी ज्यादा गर्मी भू गर्भ में स्थित है। लेकिन रेथकजाविक, आइसलैंड के अलावा जहाँ कि गरम चश्मों के उबलते हुए पानी से दफ्तर, स्कूल और घरों को गरम रखा जाता है, शक्ति का यह स्रोत अभी उपलब्ध नहीं है। ६ मील गहरा और ३०० गज चौड़ा धुरा केवल १५ हार्सपावर बिजली देगा।

ईंधन का एक और साधन, जो सदियों से काम में लाया जा रहा है

और इंजीनियरों ने शक्ति खींच रहा है। इससे भी ज्यादा, अब उसने अपना ध्यान सूर्य की ओर लगाया है।

विज्ञानवादियों की बात मानने से पूर्व हमें देखना चाहिए कि इस दिशा में क्या-क्या किया जा चुका है।

लगभग दस वर्ष पहले हमने अणु में शक्ति की एक नई संभावना पैदा की। कुछ आशावादियों ने अणु-शक्ति को औद्योगिक संसार के घटते हुए ईंधन की समस्या का हल बताया।

लेकिन अणु-शक्ति का औद्योगिक उपयोग अभी दूर है। यह सही है कि एक पौंड कोयले जितने वजन में स्थित अणु-शक्ति बड़े-से-बड़े जहाज को दूर तक ले जायगी, लेकिन कोयले से अणु-शक्ति प्राप्त करने की संभावना नहीं है। अभी तक सिर्फ थोरियम और यूरेनियम से ही अणु-शक्ति निकाली जा सकी है। ये पदार्थ लगभग ५० हजार टन संयुक्त राष्ट्र अमरीका और ५ लाख टन सारे संसार में हैं। इन पदार्थों का हमारा वार्षिक व्यय हमारी कुल पैदावार का बीसवाँ भाग है। अतः अगर हम अपने घरेलू साधनों पर ही निर्भर रहे तो बीस वर्षों में ही हम अपना सारा यूरेनियम खो बैठेंगे।

लेकिन अणु के अलावा दूसरे साधन भी मौजूद हैं।

शक्ति का एक अनन्त साधन जल-शक्ति है जिससे कि अमरीकन भली-भाँति परिचित हैं। अभी तक संसार की जल-शक्ति की संभावनाओं का केवल दसवाँ भाग ही उपयोग में लाया गया है। दुर्भाग्यवश, संसार को जितनी शक्ति की आवश्यकता है उसका केवल चौथाई भाग ही जल द्वारा उत्पादित किया जा सकता है। पिछड़े हुए इलाकों में औद्योगीकरण की आरम्भिक आवश्यकताएं नदियों द्वारा शक्ति उत्पादित करके पूरी की जा सकती हैं किन्तु औद्योगीकरण के बढ़ने पर यह शक्ति सागर में जल की एक बूँद के बराबर होगी।

समुद्र की लहरों से बिजली पैदा करने की भी चर्चा है, लेकिन सारे संसार की इस प्रकार पैदा की हुई बिजली हमारी आवश्यकता की आधी ही होगी। समुद्र के जल से शक्ति पैदा करने का एक दूसरा तरीका समुद्र की

सतह और समुद्र की गहराई के तापमान के अन्तर से लाभ उठाना है। फ्रांसीसी इस दिशा में प्रयोग भी कर रहे हैं। यदि फ्रांसीसी प्रयोग सफल हुआ तो इस प्रकार के दूसरे प्रयोग भी किये जायंगे, जिनसे कुल उत्पादित बिजली संयुक्त राष्ट्र अमरीका की जल द्वारा उत्पादित शक्ति के बराबर ही होगी। संसार की बिजली की सम्पूर्ण आवश्यकता की पूर्ति के लिए २० हजार मील लम्बे समुद्र तट पर कारखाने खोलने होंगे।

अतः यह प्रतीत होता है कि दिन-पर-दिन घटते तेल और कोयले की कमी को केवल थोड़ी ही मात्रा में जल द्वारा पूरा किया जा सकता है। अन्य दूसरे साधन भी विशेष आशाजनक नहीं हैं। उदाहरण के लिए वायु-शक्ति का प्रयोग किया गया है। जमीन से १० मील ऊपर हवा सौ मील फी घंटे की रफ्तार से चलती है। अगर इतनी ऊँचाई पर हम अपने इञ्जिनों को लटका सकें तो ईंधन की हमारी चिन्ता बहुत-कुछ पूरी हो जायगी।

पृथ्वी पर हवा का इतना भरोसा नहीं किया जा सकता तो भी १००० किलोवाट बिजली पैदा करने वाला स्टेशन वरमाण्ट, अमरीका में खोला गया है और एक ७५०० किलोवाट की हवाई-चक्की की योजना बनाई जा चुकी है। प्यूरटोरीको पानी की कमी को हवा से बिजली पैदा करके पूरा करने की कोशिश कर रहा है। हालाँकि हवाई चक्कियों से कुछ शक्ति जरूर मिल जायगी, लेकिन इससे दुनिया की बिजली की आवश्यकता पूरी करना व्यावहारिक नहीं है।

यह भी सुझाव पेश किया गया है कि पृथ्वी के अन्दर की गर्मी का उपयोग किया जाना चाहिए। संसार की शक्ति की आवश्यकता से दस गुनी ज्यादा गर्मी भू गर्भ में स्थित है। लेकिन रेथकजाविक, आइसलैंड के अलावा जहाँ कि गरम चश्मों के उबलते हुए पानी से दफ्तर, स्कूल और घरों को गरम रखा जाता है, शक्ति का यह स्रोत अभी उपलब्ध नहीं है। ६ मील गहरा और ३०० गज चौड़ा धुरा केवल १५ हार्सपावर बिजली देगा।

ईंधन का एक और साधन, जो सदियं

लकड़ी है। आज भी मनुष्य द्वारा काम में लाई जाने वाली शक्ति का बारहवाँ हिस्सा लकड़ी जलाकर ही प्राप्त होता है। अगर संयुक्त राष्ट्र अमरीका-जितने क्षेत्र में ठीक तरह से जंगल लगाया जाय तो हमेशा के लिए संसार की शक्ति की आवश्यकता पूरी की जा सकती है। लेकिन खर्च असुविधा आदि का खयाल करते हुए इस काम का तब तक किया जाना सम्भव नहीं है जब तक कि इसके अलावा और कोई चारा न हो।

इसी प्रकार यदि हम संसार की सारी वनस्पति से महाभाग उत्पादित करें तो हम अपनी आवश्यकता से थोड़ी अधिक शक्ति पा सकेंगे, लेकिन तब दुर्भाग्यवश हमारे चौपायों के खाने के लिए कुछ न रहेगा।

सबसे ज्यादा व्यावहारिक चीज है लकड़ी से गैसोलीन बनाना। संसार के दस प्रतिशत जंगलों की लकड़ी से इतना गैसोलीन बनाया जा सकता है जितना कि सन् १९४७ का उत्पादन था और एक गैलन की कीमत एक रुपया ही पड़ेगी।

ऊपर बताये हुए शक्ति के साधन तेल और कोयले पर हमारी निर्भरता कम कर देंगे पर उसे दूर न कर सकेंगे। शक्ति का सबसे बड़ा साधन, जो अन्य साधनों का स्रोत है, इस समस्या की सदा के लिए पूर्ति कर सकेगा। सैकड़ों व्यक्तिगत अनुसंधानशालाएँ ही नहीं बल्कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका तथा रूस की सरकारें और निश्चय ही दूसरे राष्ट्र भी सूर्य से शक्ति खींचने की दौड़ में जुटे हुए हैं।

संसार की सारी शक्ति सूर्य से प्राप्त होती है। सूर्य की शक्ति का केवल बीस अरबवाँ भाग पृथ्वी पर पहुँचता है और इसका अधिकांश भाग प्रकाश के फैलने से गायब हो जाता है, लेकिन जो कुछ बचता है—और जिसका उपयोग करना सैद्धान्तिक रूप से सम्भव माना जा चुका है—वह विश्व की शक्ति की आवश्यकता से ५० गुना ज्यादा है।

बहुत वर्षों से वैज्ञानिक लोग सूर्य से वह शक्ति निकालने की कोशिश में लगे हुए हैं जो स्वयं लाखों-करोड़ों वर्षों बाद कोयला, तेल और गैस में परिणत होगी। इस कोशिश के परिणामस्वरूप ऐसे प्रायोगिक घर

आज संयुक्त राष्ट्र अमरीका, जिसकी जन-संख्या संसार की जन-संख्या का ७ प्रतिशत भाग है, मशीनों से पैदा हुई संसार की शक्ति का आधा भाग खर्च करता है। आधुनिक जीवन की सुविधाओं का आधा भाग हमारे १५ करोड़ व्यक्तियों की गोद में आ पड़ा है जब कि दूसरा भाग जैसे-तैसे संसार के १ अरब व्यक्तियों के बीच बँट गया है। जैसा कि पहले भी कहा गया है कि अगर आप एक साधारण अमरीकन हैं तो आपके जीवन का स्तर संसार में सबसे ऊँचा ही नहीं, बाकी मानवता से वह करीब आठ गुना ऊँचा है।

आप अपने परदादा से कई गुना ज्यादा मशीनों की शक्ति के मालिक हैं। आपका पोता तो मशीन-रूपी हजारों गुलामों को उँगलियों के इशारे से नचायगा, और हफ्ते में बृहस्पति और शुक्रवार की छुट्टी भी मनायगा।

एक अर्थ-शास्त्री का कथन है कि "सौ साल बाद हमारे रहने-सहने का स्तर आज से १६ गुना ऊँचा होगा।" सुनने में यह बहुत ज्यादा मालूम होता है, लेकिन अगर आप हिसाब लगाएं तो यह ३ फीसदी ब्याज सूद-दर-सूद से भी कम ही होगा। मुश्किल यह है कि लोग ३ फीसदी ब्याज सुनकर व्याकुल हो जाते हैं। वे यह नहीं देखते कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी कितनी ज्यादा तरक्की हो जायगी।"

अगले तीस वर्षों में, अर्थ शास्त्री समनर स्लिशटर का कथन है कि "अमरीकन प्रति व्यक्ति का व्यय आज से ५० प्रतिशत ज्यादा होगा।" शायद ७५ से १०० प्रतिशत ज्यादा हो। संसार के अन्य भागों में भी असीम प्रगति होगी। आज आधी से ज्यादा मानवता वहीं खड़ी है, जहाँ सन् १७५० में थी। अगर उनका औद्योगीकरण उसी तरह प्रगति करे जिस तरह हमारे यहाँ औद्योगीकरण ने किया है, तो जब कि हमारी व्यय-शक्ति ५० प्रतिशत बढ़ जायगी उनकी व्यय-शक्ति दुगुनी, तिगुनी, चौगुनी, पाँच गुनी हो जायगी।

चतुर्थ-लक्ष्य चाहे कितना भी सफल क्यों न हो अब से पचास या सौ बरस बाद भी एक इथोपिया-निवासी अमरीकनों के रहन-सहन के स्तर पर न पहुँच सकेगा। लेकिन वह प्रगति और समृद्धि के मार्ग पर चल पड़ा होगा।

फ्लन्ड के हिसाब के अनुसार दो सौ से १२०० खरब हार्स पावर-घण्टे किन्हीं ऐसे साधनों से प्राप्त की जानी थी जो कभी समाप्त न होंगे जिनमें से 'फोटोसिन्थेसिस' से १००० खरब, बहते पानी से ६०० खरब और सूर्य से २००० खरब भी आ सकेगी।

अतः हमारे कोयले-तेल के साधनों को समाप्त होने की आवश्यकता न होगी। एक दिन कोयले की खानें और तेल के कुएँ अतीत के इतिहास की चीज़ बन जायेंगी जिन्हें भूगर्भ के लड़के घूम-घूम कर देखेंगे। जैसे कि यह सोचा जा सकता है कि ज्यादा अनाज उगाने से ज्यादा लोग पैदा होंगे जिसके फलस्वरूप ज्यादा लोग भूखे मरेंगे उसी प्रकार यह भी सोचा जा सकता है कि ज्यादा कुशलतापूर्वक माल बनाने से संसार के साधन इतने कम हो जायेंगे कि एक दिन माल बनाना ही बन्द करना होगा। यह भयावह तस्वीर बुद्धि की कमी के कारण पेश की जाती है न कि ऐसी भयावह स्थिति से मुकाबला करने के साधनों की कमी के कारण।

यदि बुद्धिमानी से काम लिया जाय तो चतुर्थ-लक्ष्य की विश्व-औद्योगीकरण की कल्पना कार्यान्वित होने पर संसार को अधिक स्वास्थ्य, अधिक धन और अधिक सुख पहुँच सकेगा। अतीत में मानव छोटी चुनौतियों के सामने भी झुक गया है और साथ ही उसने उनका मुकाबला भी किया है। आज जब उसे अपने विध्वंस और मुक्ति के बीच चुनने के लिए देव-तुल्य शक्ति प्राप्त हो चुकी है तो यह आशा करना गलत न होगा कि वह एक बार पुनः इस चुनौती का मुकाबला करेगा।

: ३ :

मशीनें और पूँजी

अब समय आ गया कि औद्योगीकरण के साथ-साथ रहन-सहन के स्तर को ऊँचा करने और वास्तविक धन-प्राप्ति के बारे में कही हुई बातों का संक्षेप में सिंहावलोकन किया जाय।

अर्थ-शास्त्रियों के पास किसी भी देश की आय का पता लगाने का एक आसान तरीका है। वे पूछते हैं कि देश के अनाज पैदा करने में कितने लोग लगे हैं। जितने अधिक किसानों की जरूरत होगी उतनी ही आय कम होगी। सन् १६३० के लगभग चीन की तीन-चौथाई आबादी खेती में लगी हुई थी, उस समय चीन की प्रति व्यक्ति आय १०० रुपए और २५० रुपए के बीच थी। भारत में, जहाँ ६२ प्रतिशत जनता कृषि-प्रधान थी, प्रति व्यक्ति आय ४५० रुपए। इटली में ४३ प्रतिशत आबादी अन्न-उत्पादन में लगी थी, उनकी प्रति व्यक्ति आय ७७० रुपए थी। नार्वे में केवल ३५ प्रतिशत लोग खेती में थे, और उनकी प्रति व्यक्ति आय ११८५ रुपए थी।

अगर पाँच में से चार आदमी अनाज पैदा करने में लगते हैं तो सिर्फ एक ही दूसरी चीजें पैदा करने के लिए बच जाता है। लेकिन अगर एक आदमी बाकी चार के लिए अनाज पैदा कर सकता है तो बाकी चार अपने को जूते, जहाज़ और दूसरी ज़रूरी चीजें बनाने में लगा सकते हैं।

किसी देश के औद्योगीकरण को नापने का तरीका है यह देखना कि वह उत्पादन पर कितनी शक्ति व्यय करता है। शक्ति व्यय करने का एक तरीका लकड़ी जलाना है; इसी तरह गैसोलीन और बिजली जलाना भी है। अगर एक आदमी प्रतिदिन आठ घण्टे अपने हाथों से काम करता है तो वह एक वर्ष में १८० किलोवाट घण्टे के बराबर शक्ति पैदा कर सकता है। जितनी ज्यादा मशीनें चलेंगी उतनी ही ज्यादा शक्ति काम में लगेगी; जितनी ज्यादा शक्ति काम में लगेगी उतना ही ज्यादा पैसा आपकी जेब में आयगा और आपकी खूँटी पर उतने ही ज्यादा कपड़े लटकते होंगे।

१६३७ में एक औसत अमरीकन ने ७००० किलोवाट-घण्टे शक्ति खर्च की, जिससे कि उसकी आय २५४० रुपए हुई। एक फ्रांसीसी ने केवल २८०० किलोवाट घण्टे शक्ति खर्च की और उसकी आय १४६० रुपए थी। जापानी द्वारा खर्च की हुई १२५० किलोवाट घण्टे शक्ति ने उसे ५७० रुपये दिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, एक चीनी ने, जिसके

अर्थ-शास्त्रियों के पास किसी भी देश की आय का पता लगाने का एक आसान तरीका है। वे पूछते हैं कि देश के अनाज पैदा करने में कितने लोग लगे हैं। जितने अधिक किसानों की तादाद होगी उतनी ही आय कम होगी। सन् १९३० के लगभग चीन की तीन-चौथाई आबादी खेती में लगी हुई थी, उस समय चीन की प्रति व्यक्ति आय १०० रुपए और २५० रुपए के बीच थी। भारत में, जहाँ ६२ प्रतिशत जनता कृषि-प्रधान थी, प्रति व्यक्ति आय ४५० रुपए। इटली में ४२ प्रतिशत आबादी अन्न-उत्पादन में लगी थी, उनकी प्रति व्यक्ति आय ७७० रुपए थी। नार्वे में केवल ३६ प्रतिशत लोग खेती में थे, और उनकी प्रति व्यक्ति आय ११८५ रुपए थी।

अगर पाँच में से चार आदमी अनाज पैदा करने में लगते हैं तो सिर्फ एक ही दूसरी चीजें पैदा करने के लिए बच जाता है। लेकिन अगर एक आदमी बाकी चार के लिए अनाज पैदा कर सकता है तो बाकी चार अपने को जूते, कपड़े और दूसरी जरूरी चीजें बनाने में लगा सकते हैं।

किसी देश के औद्योगीकरण को नापने का तरीका है यह देखना कि वह उत्पादन-पर कितनी शक्ति व्यय करता है। शक्ति व्यय करने का एक तरीका लकड़ी जलाना है; इसी तरह गैसोलीन और बिजली जलाना भी है। अगर एक आदमी प्रतिदिन आठ घण्टे अपने हाथों से काम करता है तो वह एक वर्ष में १८० किलोवाट घण्टे के बराबर शक्ति पैदा कर सकता है। जितनी ज्यादा मशीनें चलेंगी उतनी ही ज्यादा शक्ति काम में लगेगी; जितनी ज्यादा शक्ति काम में लगेगी उतना ही ज्यादा पैसा आपकी जेब में आयगा और आपकी खूँटी पर उतने ही ज्यादा कपड़े लटकते होंगे।

१९३७ में एक औसत अमरीकन ने ७००० किलोवाट-घण्टे शक्ति खर्च की, जिससे कि उसकी आय २५४० रुपए हुई। एक फ्रांसीसी ने केवल २८०० किलोवाट घण्टे शक्ति खर्च की और उसकी आय १४६० रुपए थी। जापानी द्वारा खर्च की हुई १२५० किलोवाट घण्टे शक्ति ने उसे ५३० रुपये दिए। जैसा कि हम देख चुके हैं, एक चीनी ने, जिसके

उन्हें अग चाव ५ ५ाल ५ ९

बाँधों पर काम पूरा हो जाने पर पिछड़े हुए इलाकों को अपनी नई शक्ति को काम में लाने के लिए इंजिनों की आवश्यकता होगी। अमरीका कम-से-कम एक पीढ़ी तक तो माल बनाने के लिए मशीनें और मशीनें बनाने के लिए औज़ार देता रहेगा।

नई निर्भीक योजना अपनी चरम सीमा पर तब पहुँचेगी जब आज के पिछड़े हुए इलाकों की समृद्धि उन्हें विदेशों से मनमाना माल खरीदने की स्थिति में कर देगी। ऐसी स्थिति का हमारे ऊपर क्या असर पड़ेगा यह कल्पना करने के लिए हमें औद्योगिक कनैडा का उदाहरण देखना चाहिए जिसके १ करोड़ २० लाख निवासी कृषि-प्रधान चीन और भारत के ८० करोड़ निवासियों से ज्यादा माल बाहर से मँगाते हैं। ब्रिटेन, जिसकी आबादी चीन की आबादी का दसवाँ भाग है, चीन से १७ गुना माल ज्यादा बाहर से मँगवाता है।

उद्योगों की कमी के कारण भारत और चीन की आबादी संसार की आबादी का ३० प्रतिशत भाग होते हुए भी, उनका संसार के व्यापार में ५ प्रतिशत भाग ही है।

सन् १८५० और सन् १९२९ के बीच में जब कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका का बुनियादी औद्योगीकरण हो रहा था, हमारा निर्यात ३६ गुना बढ़ गया और आयात २५ गुना। सन् १८८० और सन् १९१४ के बीच जर्मनी के औद्योगीकरण ने उसका निर्यात साढ़े तीन गुना और आयात चार गुना बढ़ा दिया। जापान के औद्योगीकरण ने (सन् १८८९-१९२९) उसके निर्यात को दस गुना और आयात को ग्यारह गुना बढ़ा दिया।

एक स्वस्थ औद्योगिक संसार अमरीका के वैदेशिक व्यापार पर क्या प्रभाव डालेगा, इसका मोटा हिसाब लगाने के लिए संसार के गैर-अमरीकन निवासियों की संख्या को ५० रुपए से गुणा कर दीजिए; और संसार की उस आबादी का भी खयाल रखिये जो कल बढ़ जायगी।

ऊपर के आँकड़े इसलिए नहीं दिये गए कि वे वैज्ञानिक अचूकता से

है। सन् १९३६ और १९४० के बीच इन देशों की औसत आय २०५ रुपए प्रति वर्ष थी।

… देश, जिनमें रूस और उसके अधीन देश शामिल हैं, आर्थिक रूप से 'उन्नत' हैं। इनके ४,८८,२२,००० निवासियों की वार्षिक आय ७७० रुपए थी।

… औद्योगीकरण हुए या 'उन्नत' देश हैं। इनकी आबादी ३८ करोड़ ९२ लाख ३८ हजार है, लेकिन इनकी औसत आय १९५६ रुपए थी; और इनकी कुल आय संसार के अन्य देशों की कुल आय से भी ज्यादा थी।

यदि पिछड़े हुए देश परिवर्तनशील देशों में परिणत हो जायं तो उनकी आय ८७५ अरब रुपए से बढ़ जायगी। यदि पिछड़े हुए देश और परिवर्तनशील देश दोनों ही औद्योगिक देशों के युद्ध-पूर्व स्तर पर पहुँच सकें तो सारा संसार धनी हो जायगा।

चतुर्थ-सूत्र का अमरीकन व्यवसाय पर बलपूर्वक प्रभाव डालने के लिए आय में उपरोक्त वृद्धि की प्रतीक्षा न करनी होगी।

उदाहरण के लिए, बिजली पैदा करने वाले बाँध पिछड़े हुए इलाकों के औद्योगीकरण करने की पहली सीढ़ी हैं क्योंकि वे कृषि-सुधार करने के साथ-साथ ही औद्योगीकरण का रास्ता बनाते हैं। जब टेकनिकल दल अपना काम कर चुकेंगे, जब मरम्मत का 'वर्कस' और दूसरे छोटे औज़ार सीमेण्ट मिलों और पिन्सीलिन-फैक्ट्रियों के रास्ते बना चुके होंगे तब बाँध खड़ा होना शुरू होंगे। पहले नदी के मुहाने पर प्रायोगिक बाँध होंगे और बाद में जब उपयुक्त समय आयगा नीचे की धारा पर बाँध बनाये जायगे। इन बाँधों को बनाने के लिए अमरीका से सिर्फ टेकनिकल सहायता ही न माँगी जायगी, बल्कि मशीनें भी देनी होंगी। मशीनों का ज्यादा भाग अमरीका में बनाया जायगा।

परिवर्तित होने पर आत्म-घातक बन जाता है।"

उनकी सूची की अन्य समस्याएं ये हैं :—

चतुर्थ-लक्ष्य को कुछ वर्षों तक नहीं बल्कि शताब्दियों तक चला रखने की आवश्यकता।

अमरीकन और विदेशी वैज्ञानिकों और टेकनिकल-विशेषज्ञों की संख्या में भीषण वृद्धि करने की आवश्यकता।

साम्राज्यवादी शोषण के प्रति सचेत बने रहने की आवश्यकता।

सरकारी अंकुशों से बचे रहने की आवश्यकता।

चतुर्थ-लक्ष्य उन्हीं इलाकों में लागू करना जिन्हें वास्तव में उसकी आवश्यकता हो।

अपनी शक्तियों को बिखेर देने की अपेक्षा कार्य को चुने हुए इलाकों में ही केन्द्रित करने की आवश्यकता, सम्भवतः पहले दक्षिण अमरीका और मध्य-पूर्व में।

बढ़ती हुई आबादी पर काबू करने की आवश्यकता।

और, जो सबसे आवश्यक है, भूमि के उचित प्रयोग की शिक्षा देने की आवश्यकता।

वोग्ट ने कहा कि "अगर चतुर्थ-लक्ष्य जमीन की बरबादी बढ़ाता है, जंगलों को उखाड़ फेंकता है, जमीन का उपजाऊपन कम करता है, पानी के हौजों को तोड़-फोड़ देता है....और प्राकृतिक जीवन और प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है तो हम परोपकारी सहयोगी कहलाने के बजाय बर्बर वैज्ञानिक कहलायंगे।" उसने सुझाव पेश किया कि भूमि-सुरक्षा के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय साधन सुरक्षा-बोर्ड स्थापित किया जाय।

वोग्ट की बताई हुई बहुत-सी बाधाएं सद्भावना और धैर्य द्वारा पार की जा सकती हैं। कुछ मुश्किलें—खास तौर पर आबादी पर काबू करने की समस्या—विवादग्रस्त हैं। अगर कृषि-प्रधान जनसंख्या की प्रवृत्ति अधिकाधिक ने की न होती तो चतुर्थ-लक्ष्य का कार्य कृषि-प्रविधियों की उन्नति करके भूमि के उपयोग की शिक्षा देकर पूरा हो जाता। लेकिन यदि कार्य

संसार का भविष्य बता सके पर वे यह बताते हैं कि भविष्य मे कितनी बड़ी तब्दीलियाँ होने वाली हैं। यह निश्चय है कि नई निर्भीक योजना संसार की दो-तिहाई जनता के मानसिक और शारीरिक वातावरण को प्रभावित करेगी।

: ४ :

महान् निर्णय

"संसार का सबसे धनी और सबसे शक्तिशाली देश होना," असिस्टैण्ट सैक्रेटरी ऑफ स्टेट श्री विलार्ड थार्प ने कहा, "एक भीषण उत्तरदायित्व है।"

अमरीकन जिस प्रकार इस उत्तरदायित्व को निभा रहे हैं उसमें उन्हें लज्जा न अनुभव होनी चाहिए। हमने कई बार अनजाने ही अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में ऐसी निस्वार्थ नीति को अपनाया है कि जिसका यदि ठीक उपयोग किया गया तो संयुक्त राष्ट्र अमरीका और बाकी मानवता के लिए सुखी संसार बनाना सम्भव होगा।

हम स्वयं अपने प्रयत्नों के बिना ही इस महान् निर्णय पर पहुँच गए हैं कि केवल एक सुरक्षित संसार मे ही हम सुरक्षित रह सकते हैं, समृद्धिशाली और शांतिपूर्ण संसार मे ही हम समृद्धिशाली बनकर शांतिपूर्वक रह सकते हैं।

किन्तु इस मूल निर्णय पर पहुँचने के बाद हमें नित नए निर्णयों का सामना करना होगा—सिद्धान्त और कार्य-सम्बन्धी निर्णय।

भूमि और जन-संख्या-सम्बन्धी समस्याओं के विख्यात ज्ञाता विलियम वोग्ट ने कुछ उन समस्याओं की सूची बनाई है जिन पर हमें चतुर्थ-सूत्र के अन्तर्गत तत्काल निर्णय लेते रहना होगा।

"एक अति आवश्यक समस्या," वोग्ट ने बताया, "वह वातावरण है—(और जिसके लाखों-करोड़ों आदमियों के तौर-तरीके) जो विज्ञान द्वारा

मुख्यतः व्यक्तिगत पूँजी से चलाई जायगी या सार्वजनिक पूँजी से ?

चतुर्थ-लक्ष्य की वर्तमान रूपरेखा में व्यापारी का बहुत बड़ा स्थान है। वह यह मानकर चला है कि पिछड़े हुए इलाकों के जीवन को सुधारने में वही तरीके उच्चतम सिद्ध होंगे जिन्होंने अमरीकन जनता को अलादीन के स्वप्नों से भी ऊँचे शिखर पर पहुँचा दिया है।

हो सकता है कि इस महान् ऐतिहासिक कार्य में व्यक्तिगत व्यापार सफल न हो; लेकिन यह निश्चय है कि व्यक्तिगत व्यापार के सहयोग के बिना सरकार भी असफल रहेगी।

सीमित अपवादों को छोड़कर, यूरोप सदा व्यक्तिगत व्यापार-प्रथा से डरता रहा। उसने मुद्रा की चतुराइयों से और शासन के अंकुरों से व्यक्तिगत व्यापार के पंख काट दिए।

मार्क्स और एंजिल्स ने कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो में लिखा था कि "धनिक समाज ने अपने सौ साल से कम राज्य में ही इतनी महान् और भीषण उत्पादन-शक्तियों का निर्माण कर लिया है कि वे पिछली पीढ़ियों के कुल प्रयत्नों से भी अधिक हैं। प्राकृतिक शक्तियों को मनुष्य का दास बनाना, मशीनरी, रसायन-शास्त्र का उद्योग और कृषि में प्रयोग, वाष्प द्वारा जलयान चलाना, रेलवे, बिजली के तार, समूचे महाद्वीपों को खेती के लायक बनाना ....पिछली किस शताब्दी में कल्पना भी की जा सकती थी कि सामाजिक श्रम की गोद में इतनी उत्पादन-शक्तियाँ सो रही हैं ?"

दुर्भाग्यवश—जिसके लिए किसी अंश तक मार्क्स और एंजिल्स का जीवन भी जिम्मेदार है—उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में यूरोपीय पूँजीवाद का विकास विकृत हो गया। व्यापारी सुरक्षा के लिए राष्ट्र पर निर्भर रहने लगे। पूँजीवाद ने प्रतियोगिता करना और बढ़ना बन्द कर दिया। साथ-ही-साथ समाजवाद और आर्थिक राष्ट्रीयता का विकास होने लगा; युद्ध ने इसको और भी बढ़ावा दिया। बीसवीं शताब्दी के पहले पच्चीस वर्ष बाद यूरोप पृथक् आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक विचार-धाराओं का ढेर बन गया। रहन-सहन के स्तर की उन्नति भी धीमी पड़ गई।

यदि बन्द कर दिया गया तो जन-संख्या की बाढ़ बढ़े हुए अन्नोत्पादन से भी अधिक बढ़ जायगी।

जन-संख्या को सीमित करने या सदाचार के नियमों द्वारा कोई-न-कोई गर्भ-रोधक साधन जरूर होना चाहिए जो कि सन्निपात के टीके की तरह बाहर से लागू किया जा सके। लेकिन यदि ऐसा कोई तरीका है भी तो वह अभी सर्व-साधारण के ध्यान में नहीं आया है। जब तक कि ऐसा गर्भ विरोधी उपाय न निकले जन-संख्या को शिक्षा, रहन-सहन के तरीके, आन्तरिक उतर-दायित्व और आर्थिक परिस्थितियों आदि पर निर्भर रहना पड़ेगा। औद्योगीकरण ही केवल ऐसी परिस्थितियाँ पैदा करता है जिनमें स्वतः जन-संख्या सीमित हो जाती है।

औद्योगीकरण आरम्भ में तो जन-संख्या की वृद्धि ही करता है। इस बीच आवश्यकता से अधिक आबादी वाले इलाकों के लिए देशान्तर-गमन ही समस्या को आंशिक रूप में हल कर सकता है। हम इस बात से कुछ सान्त्वना पा सकते हैं कि जैसे कई पिछले ऐतिहासिक व्यक्ति देशान्तर-गमन और विचार की प्रगति के जिम्मेदार रहे हैं, उसी प्रकार आज जन-संख्या की वृद्धि हमें प्रकृति से अपने सम्बन्ध को पुनः निरीक्षण तथा पुनः मूल्यांकन करने के लिए बाध्य कर रही है। हो सकता है इसका परिणाम विनाशकारी हो और यह भी हो सकता है कि इसका परिणाम उन जानकारी खोजों में हो जिनका अन्यथा पता लगाना सम्भव न होता।

ऊपर के बताए हुए निर्णयों के अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र अमरीका को कई बलिदानों के लिए भी तैयार रहना चाहिए। उदाहरण के लिए हमें विदेशों से सामरिक महत्त्व के पदार्थों को अधिकाधिक मात्रा में खरीदने के लिए तत्पर रहना चाहिए। हम सारे संसार के खनिज पदार्थों का उपयोग कर सकते हैं और सारा संसार हमारे डालरों का। हमें उन देशों के लिए अपनी चुंगी की दीवारें भी नीची करनी होंगी जो हमारे साथ सहयोग करने के इच्छुक हैं।

और इन सबके बाद आता है सबसे बड़ा निर्णय : क्या नई निर्भीक योजना

अमरीकन कम्पनियों ने दिया। इस पूँजी का अधिकांश भाग थोड़े-से दे में—कैनेडा, ब्राज़ील, वेन्जुला, पनामा और मध्य-पूर्व में लगा; जिनमें दो-तिहाई मिट्टी का तेल निकालने में लगा। जब कि उद्योग ने विदेशों २ अरब रुपए लगाए, संयुक्त राष्ट्र अमरीका की सरकार ने १२ अरब रु लगाए।

अगर व्यक्तिगत व्यवसाय इस कमी की पूर्ति न करेगा तो सरकार करनी होगी। विदेशों में सरकारी व्यय अधिक बढ़ेगा। और तब सचमु सरकारी अंकुशों और सामूहिकता का प्रादुर्भाव होगा। अमरीका जिस स्व को पिछले दो सौ वर्षों से देखता आया है वह एक भद्दे स्वप्न में परिण हो जायगा क्योंकि अगर हम स्वतन्त्रता का निर्यात बन्द कर देंगे तो हमा अन्य चीजों के निर्यात का, चाहे वे कितनी ही ज्यादा तादाद में क्यों न हे विशेष मूल्य न होगा।

यदि सरकार के प्रति व्यवसाय का संशय चतुर्थ-लक्ष्य के लिए खतरा तो उतना ही खतरा चतुर्थ-लक्ष्य को व्यवसाय के प्रति नरम दल वालों संशय द्वारा है।

पिछले कुछ सालों में नरम दल वालों ने देश को केन्द्रित सरकार क ओर ले जाने की कोशिश की है। वे समझ बैठे हैं कि सरकार उनक स्वभावतः साथ देगी। यदि दूरदर्शिता से देखा जाय तो वे गलत रास्ते पर हैं। सामाजिक और आर्थिक कुरीतियों को दूर करने के लिए प्रजातन्त्रीय सरकार उपयोगी अवश्य है, लेकिन ऐसी सरकार, जो बहुत शक्तिशाली हो, स्वभावतः व्यक्ति की शत्रु होगी।

कुछ नरम दल वालों का विश्वास है कि चतुर्थ-लक्ष्य व्यवसाय के सहयोग से भ्रष्ट हो रहा है। वे नई निर्भीक योजना को सम्पूर्णतया सरकार के हाथों में सौंप देना चाहते हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य-सम्बन्धी एक सभा में एक विख्यात नरमदली ने चतुर्थ-लक्ष्य के तरीके को 'बुद्धिहीन और अपर्याप्त' बताया। उसकी दलील यह थी, [illegible]-लक्ष्य द्वारा हम 'स्वतन्त्र व्यापार का विश्व-व्यापी प्रचार'

इसके विपरीत, कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो के प्रकाशित होने के अगले सौ वर्षों में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रतियोगितावादी पूँजीवाद में मजदूरी ग्यारह गुनी बढ़ गई। सिर्फ सन् १९४५ के बाद ही हमने २५० अरब रुपया मशीनों पर खर्च किया है। 'हमारी उत्पादनशीलता दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है और उसकी रफ्तार संसार के सब देशों से ज्यादा है। और हमारी अर्थ-व्यवस्था के गमन के अनुसार और अर्थ-व्यवस्था को स्वस्थ बनाने के लिए उसे दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही रहना होगा। अतः व्यवसाय को चतुर्थ-लक्ष्य की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी कि चतुर्थ-लक्ष्य को व्यवसाय की है।

सरकार चाहे कितनी ही सद्भाव्य क्यों न हो, वह दूसरे देशों के नागरिकों को बड़े पैमाने पर माल बनाने और वितरण करने के गुण न समझा सकेगी। न वह यह समझा सकेगी कि किस प्रकार प्रतियोगिता द्वारा कार्य-कौशल की वृद्धि होती है और शरीर पुष्ट बनता है।

यदि व्यक्तिगत व्यवसाय इस देश में अपना लचीलापन बनाए रखे तो वह चतुर्थ-लक्ष्य को जीवनदायिनी शक्ति और संसार की मुक्ति प्रदान कर सकेगा। अगर इस लचीलेपन की जगह सख्त नसें और कड़कते जोड़ ले लेंगे तो सिर्फ पिछड़े हुए इलाकों के लिए ही आशा न रहेगी बल्कि स्वयं व्यक्तिगत व्यवसाय का भविष्य भी अन्धकारमय हो जायगा।

मार्क्विस डब्ल्यू० चाइल्ड्स का कथन है कि "कुरीतियों को दूर करके थोड़े-से मामूली सुधार करके और आवश्यक स्वतन्त्रता को बनाए रखकर व्यक्तिगत व्यवसाय अपनी सफलता से 'समाजवाद की अनिवार्यता' का खण्डन कर सकता है। यद्यपि उद्योगपतियों ने आय-कर, आठ घंटे का दिन, और बच्चों के काम करने की मनाही आदि सुधारों को 'समाजवादी' कहकर इनका घोर विरोध किया लेकिन अन्त में उनको स्वीकार किया और इससे उनको लाभ ही हुआ। आज अमरीकन आय-कर कुल राष्ट्रीय आय के ... होता है—हालाँकि अमरीका पूँजीवादी देश है।

ऐसी परिस्थितियाँ भी हैं। जिनमें सरकारी पूँजी द्वारा व्यक्तिगत पूँजी

दोनों के विचारों का समावेश है। नरमदली को यह देखना चाहिए कि इसके द्वारा विश्व-हित को हानि पहुँचाकर व्यक्तिगत लाभ तो नहीं किया जा रहा। और व्यापारी को यह देखना चाहिए कि यह सरकारी नौकरशाही की दलदल में तो नहीं फँस रहा और राष्ट्र को लाभ पहुँचाने के बजाय केवल राष्ट्र के गौरव के गीत तो नहीं गाए जा रहे। एक की गलती दूसरे को रोकनी चाहिए।

संसार के विकास की योजना को, जिस पर बेहद सरकारी और व्यक्तिगत पूँजी खर्च की जाय, एक दिन सब चाहेंगे और उसको कार्यान्वित करना भी सम्भव हो सकेगा। लेकिन व्यापारी को जानना चाहिए कि आज वह सम्भव नहीं है; उसे यह जानना चाहिए कि बीज बोने से पहले जमीन को तैयार करना पड़ता है। आज जरूरत है एक सुव्यवस्थित और बहुमुखी योजना की, जिसमें संसार के सब देशों के प्राप्य टेकनिकल और आर्थिक साधनों को सम्मिलित किया जा सके; जरूरी है पहली चीजों को पहले शुरू करना; जरूरी है नक्शे बनाने में गलती न करना; न कि ५० करोड़ रुपए के बाँध बनाते वक्त गलती करना; जरूरी है अपना उदाहरण पेश करना न कि बाध्य करना और साम्राज्यवाद के प्रति सचेष्ट रहना, साथ ही मुनाफे की प्रथा की निहित प्रेरणा को नष्ट न होने देना।

दक्षिण अमरीका, अफ्रीका, एशिया और मध्य-पूर्व के नागरिकों के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना महाजन के दृष्टिकोण से व्यावहारिक है, लेकिन यह है इससे भी बड़ी बात। यह वह उद्देश्य है जो अमरीका की शिराओं को स्फुरित कर देगा। यह अमरीका की अपूर्व बुद्धि की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

चतुर्थ-लक्ष्य के विरोध में दी हुई कुछ दलीलों पर ज्यादा गौर से सोचना भी जरूरी नहीं है। कुछ अखबारों की दलील है कि अमरीकन पूँजी की सुरक्षा विदेशों में संधियों पर निर्भर है, और संधियाँ भंग भी हो जाती हैं, अतः चतुर्थ-लक्ष्य नहीं होना चाहिए। इस मूर्खतापूर्ण दलील का यह जवाब है कि यह बात उस हर सन्धि के लिए लागू हो सकती है जो कि

संयुक्त राष्ट्र अमरीका दूसरे देशों से करता है। जब तक दूसरे देश रहेंगे संधियाँ तो होती ही रहेंगी।

कुछ दूसरी दलीलें भी हैं जो किसी हद तक समझी जा सकती हैं।

कुछ लोगों को इस बात पर आपत्ति है कि काले, पीले, लाल, भूरे लोगों को शक्ति प्रदान करने में हमें लाभ नहीं। उनका कहना है कि हम ऐसा करके रूसी रीछ के लिए मुर्गियाँ मोटी कर रहे हैं।

इसमें शक नहीं कि इस काम में खतरा है। यह सम्भव है कि रूस पिछड़े हुए इलाकों पर कब्जा कर ले, चाहे हमने उनको अपने पैरों पर खड़ा होने में मदद दी हो या नहीं। यह भी सम्भव है कि औद्योगीकरण की पहली लहर के साथ ही कोई देश लड़ने-मरने को तैयार हो जाय। लेकिन हम सिर्फ एक ही खतरा मोल ले रहे हैं, चतुर्थ-लक्ष्य के बिना ऊपर बताये दोनों खतरे कहीं ज्यादा खतरनाक साबित होंगे।

किसी देश के कम्युनिस्ट होने का कारण (सिवा इसके कि सोवियट सेना पास हो) है उस देश की अपनी अज्ञानता, गरीबी, भ्रष्टाचार और सामाजिक कुरीतियों का शान होना। इसका सबसे अच्छा इलाज है लोगों के जीवन-स्तर को ऊँचा करना। और अगर सोवियट रूस को अपने पड़ोसी देशों का प्रलोभन है तो उनकी बढ़ी हुई शक्ति और स्थिरता तथा उनके यहाँ पश्चिमी देशों का हित रूस का ज्यादा अच्छी तरह मुकाबला कर सकेगा।

कम्युनिस्ट खतरे की चर्चा करते हुए अक्सर लोग यह भूल जाते हैं कि रूस भी बाहरी आक्रमण से डरता है। चतुर्थ-लक्ष्य रूस और पश्चिम के सम्बन्ध को ज्यादा सुलझा सकता है, हालाँकि रूस दूसरे देशों की गरीबी का अपने मतलब के लिए फायदा उठाना चाहता है, फिर भी हमारी ही तरह उसका भी भविष्य संसार के सुव्यवस्थित तथा निर्भयतापूर्ण विकास पर निर्भर करता है।

यह समझना कि हम भारत या ब्राजील का औद्योगीकरण करके एक देश को अन्न दे रहे हैं यह भान देखना है कि औद्योगीकरण का भान केवल

थोड़े-से आदमियों को होगा और बाकी जनता तो शोषित रहेगी। यह सच है, ऐसा औद्योगीकरण दूसरे देशों को हिंसात्मक तरीकों से अपने अधीन बनाकर ही पनप सकता है। हम अपने अनुकम्पण निरीक्षण में ऐसे लुटेरे औद्योगीकरण को नहीं पनपा सकते।

यदि कोई पिछड़ा हुआ देश अपने ही प्रयत्नों से औद्योगीकरण करता है तो यह स्वाभाविक है कि वह पिछली गलतियाँ दोहराये, जिनमें सर्वहारा का शोषण, आर्थिक साम्राज्यवाद आदि कुरीतियाँ शामिल हैं। लेकिन किसी-न-किसी तरह का औद्योगीकरण तो होगा ही और इस समय भी हो ही रहा है। चूंकि हम इसको रोक नहीं सकते इसलिए हमारे लिए सबसे अच्छा रास्ता यही है कि इसे हम राष्ट्रीय परोपकारिता और अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के पथ पर लाएं।

हम अपना बचाव दो ही तरीकों से कर सकते हैं—या तो बाकी दुनिया को कमजोर बनाकर या उसे मजबूत बनाकर। एक कमजोर दुनिया में मजबूत संयुक्त राष्ट्र अमरीका बनाना अपने विनाश के बीज बोना है।

इसके विपरीत सारे संसार को शक्तिशाली बनाने में वही खतरा है जो एक अनजान शक्ति को खुला छोड़ देने में है, चाहे वह एक नया शक्तिशाली देश हो या विद्युत्-शक्ति हो या अणु शक्ति। खतरा शक्ति में नहीं है बल्कि उसके प्रयोग में है। हमें अपने सब साधनों से इस बात की पूरी कोशिश करनी चाहिए कि ये राष्ट्र अपनी नई शक्ति मानवता के हित में लगाएं।

और अगर हमारे ऊपर यह दोष लगाया जाय कि हम पूँजी और पूँजीवाद का निर्यात कर रहे हैं तो यह हम स्वीकार करते हैं। पिछड़े हुए इलाकों की दुर्दशा के लिए सामूहिकवाद का बहुत प्रचार किया जा रहा है। हमें इस बात में तनिक भी लज्जा अनुभव नहीं होती कि हम लाखों-करोड़ों व्यक्तियों को स्वयं यह देखने को अवसर दे रहे हैं कि व्यक्तिगत साहसिक कार्यों द्वारा कितने अधिक लाभ प्राप्त होते हैं।

चतुर्थ-लक्ष्य संसार में और अपने स्वयं में हमारी निष्ठा का प्रतीक है।

यह हमारे इस विश्वास की अभिव्यक्ति है कि विश्व-औद्योगीकरण संसार के अहित के बजाय हित के लिए, युद्ध के बजाय शान्ति के लिए और कदाचार के बजाय सदाचार के लिए है। अगर मिस्र के प्राचीन सम्राटों ने अपने देश की श्रम-शक्ति का उपयोग पिरामिड न बनाकर नील नदी पर बाँध बनाने में किया होता तो आज इतिहास अधिक सुखी होता। आज अमरीका को इससे भी बड़ा फैसला करना है। हम संसार को भुखमरी, महामारी और युद्ध में मरने के लिए छोड़ सकते हैं और अन्त में अपने भाइयों के साथ अपना भी विनाश कर सकते हैं। अथवा हम संसार को अधिक स्वास्थ्य, अधिक उत्पादनशीलता, अधिक बुद्धि प्राप्त करने में सहायक हो सकते हैं। हम संसार को युद्ध की निश्चयात्मकता अथवा समृद्धिपूर्ण शान्ति की सम्भावना प्रदान कर सकते हैं।